श्रीराम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा विशेषांक

UPBIL 04831

संस्कृति, साहित्य, अध्यात्म और जीवन दर्शन की मासिक द्विभाषी पत्रिका

मूल्य ₹200

संस्कृति पर्व

Sanskritiparva

विदेश के लिए मूल्य : $20

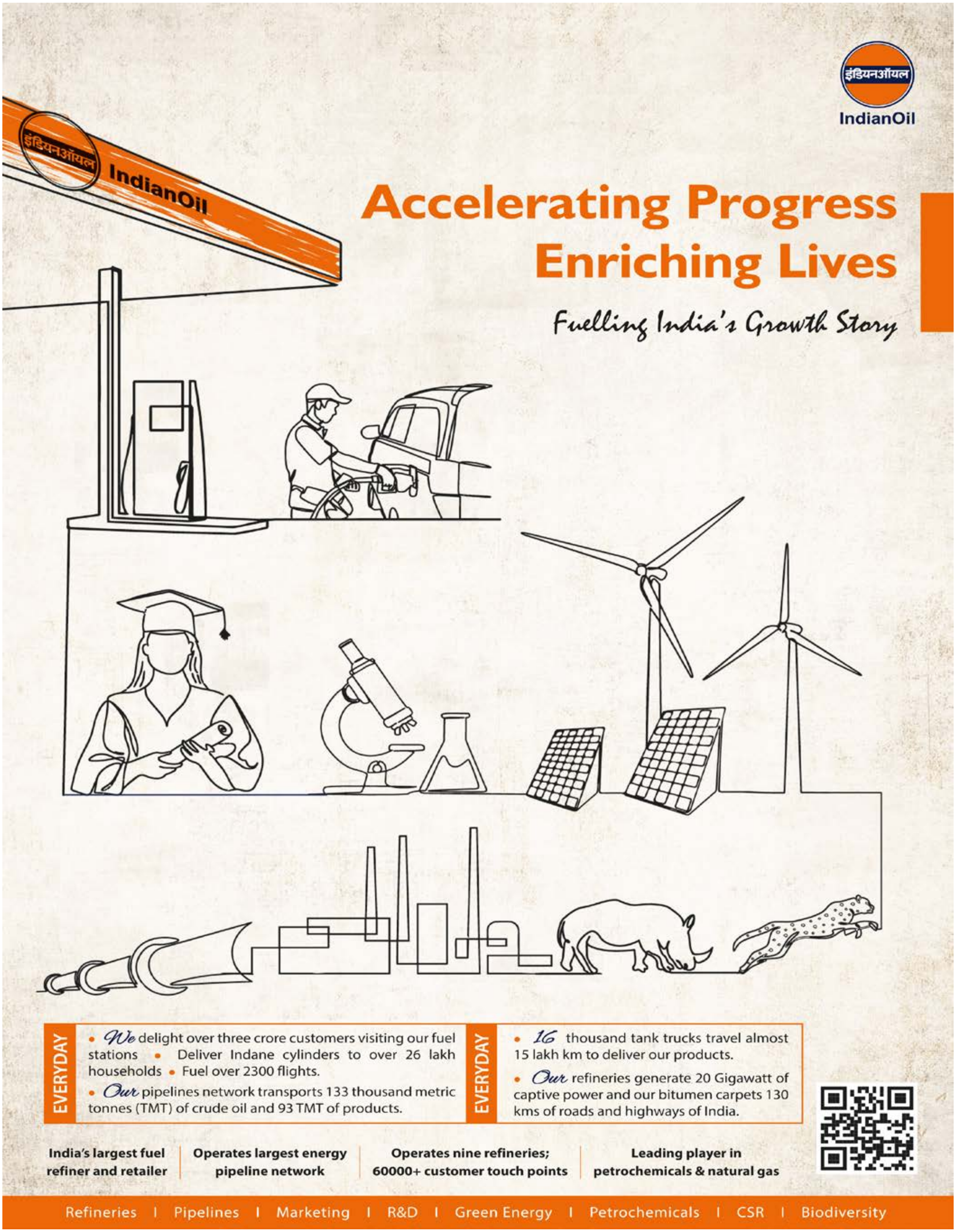
इंडियनऑयल
IndianOil
Accelerating Progress
Enriching Lives
Fuelling India's Growth Story
EVERYDAY
• We delight over three crore customers visiting our fuel stations • Deliver Indane cylinders to over 26 lakh households • Fuel over 2300 flights.
• Our pipelines network transports 133 thousand metric tonnes (TMT) of crude oil and 93 TMT of products.
EVERYDAY
• 16 thousand tank trucks travel almost 15 lakh km to deliver our products.
• Our refineries generate 20 Gigawatt of captive power and our bitumen carpets 130 kms of roads and highways of India.
India's largest fuel refiner and retailer
Operates largest energy pipeline network
Operates nine refineries; 60000+ customer touch points
Leading player in petrochemicals & natural gas
Refineries | Pipelines | Marketing | R&D | Green Energy | Petrochemicals | CSR | Biodiversity

॥ जय सियाराम ॥

अंदर के पन्नों पर

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं०
01	प्राण प्रतिष्ठा के लिए 11 दिन के अनुष्ठान पर प्रधानमंत्री		06
02	श्री अयोध्या पुरी से श्री काशी जी का नैसर्गिक संबंध	अतिथि संपादक की कलम से	16
03	अयोध्या, राम, हनुमान और भक्ति	शिव प्रताप शुक्ल	20
04	Archaeology of Ramayana and Mahabharata sites	Dr. KK Muhammed	24
05	संस्कृति स्वरूपा सीता धर्म विग्रह राम	डॉ. प्रमोद कुमार दुबे	36
06	ऐतिहासिक स्रोतों में अयोध्या	प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी	46
07	पुराण और साहित्यिक स्त्रोतों के आईने में अयोध्या	प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी	50
08	राम मंदिर आंदोलन भारत का संक्रान्ति काल	आचार्य वीनू पंत	52
09	रामकाज में समर्पित योद्धा अशोक सिंहल	डॉ. राकेश कुमार उपाध्याय	54
10	भारत के भाल पर 'राम तिलक'	के के उपाध्याय	58
11	2024 में राम ही राम	योगेश मिश्र	60
12	अदालतों में 70 साल	नीलमणि लाल	62
13	अयोध्या विवाद पैरवी, परिणाम और परमहंस	संजय तिवारी	66
14	अयोध्या : आक्रांता बाबर से सनातन के महानायक मोदी तक	डॉ. ए. के. पाण्डेय	72
15	पांच सौ वर्षों की संघर्ष यात्रा	डॉ. अर्चना तिवारी	76
16	नव्य अयोध्या	प्रज्ञा मिश्रा	82
17	ढांचा गिरा, सांचा उभरा	भास्कर दूबे	90
18	फिल्मों में राम कथा	अनंत विजय	92
19	अयोध्या : अवतरण से अब तक	संजय तिवारी	94
20	मेरे राम	कैप्टन सुभाष ओझा	106
21	कैसा था वह ज्वार	हरिहर शर्मा	110
22	राम, तुलसी और मानस का मर्म	आचार्य गोविंद शर्मा	112
23	गोरक्षपीठ की तीन पीढियां	डॉ. सिन्धु कुमार मिश्र	116
24	गोली नहीं चलेगी चाहे सरकार चली जाय	सिद्धार्थ मणि त्रिपाठी	118
25	भारत की संत परपम्परा के आधुनिक उन्नायक स्वामी जीतेन्द्रानन्द सरस्वती		120

पाठकों से

संस्कृति पर्व का यह विशेष अंक आपके हाथों में है। इस अंक के लिये चित्रों का संकलन गूगल से किया गया है जिसके लिए हम उन सभी छायाकारों के प्रति कृतज्ञ हैं। इस अंक मे संभव है कि संपादन अथवा संयोजन में कुछ त्रुटियां रह गयी हों इसलिए हम अपने सुधी पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वे त्रुटियों को नजरअंदाज करेंगें। यह अंक आपको कैसा लगा इस बारे में हमें अपने विचारों से अवश्य अवगत कराईएगा। सनातन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में आपका योगदान अत्यंत मूल्यवान है। - सम्पादक

सनातन प्रकाश पुंज
जगद्गुरू स्वामी वासुदेवाचार्य जी स्वामी विद्याभास्कर जी महाराज
स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती जी
(महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति एवं गंगा महासभा)
जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी (श्री अयोध्या जी)
स्वामी राजकुमार दासजी (श्री अयोध्या जी)

संरक्षक
श्री शिव प्रताप शुक्ल
(महामहिम राज्यपाल हिमांचल)

विद्वत परिषद

प्रो. सभाजीत मिश्र – (पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, (गो.वि.वि.)
श्री मनोजकांत – (निदेशक, राष्ट्रधर्म)
प्रो. सुरेन्द्र दुबे – (उपाध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)
प्रो. एम. एम. पाठक – (कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,नई दिल्ली)
प्रो. संजय द्विवेदी – (माखनलाल चतुर्वेदी रा.प.वि., भोपाल)
डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव – (अवकाशप्राप्त आई.ए.एस.)
श्री कृष्णकांत उपाध्याय – (सम्पादक,जनता टीवी, उ.प्र.)
प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी – (सदस्य, आईसीएचआर, इतिहास विभाग, गो.वि.वि.)
प्रो. रामदेव शुक्ल – (पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गो.वि.वि.)
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय – (पूर्व अध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)
प्रो. अजित के चतुर्वेदी – (निदेशक, आईआईटी, कानपुर)
प्रो. मुन्ना तिवारी (अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग बु.वि.वि. झांसी)
श्री प्रफुल्ल केतकर – (सम्पादक, ऑर्गनाइजर)
डॉ मृणालिनी चतुर्वेदी – (अध्यक्ष क्रायोबैंक इंटरनेशनल, नई दिल्ली)
भास्कर दूबे – (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)
डॉ. योगेश मिश्र – (समूह सम्पादक, अपना भारत/न्यूज ट्रैक, लखनऊ)
डॉ. देवर्षि शर्मा – (लेखक एवं समाजसेवी, कानपुर)
प्रो. राजेन्द्र सिंह – (पूर्व प्रतिकुलपति, (गो.वि.वि.)
डॉ. नरेश अग्रवाल – (वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ, गोरखपुर)
राकेश त्रिपाठी – (आई. आर. एस.)

संस्कृति पर्व
sanskritipurva

चक्रस्थ अयोध्या – 2024
वर्ष-6 अंक-3 जनवरी-2024

प्रेरणा
परम पूज्य स्वामी अखण्डानंद जी महाराज
संत साहित्य मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
ब्रह्मर्षि रेवती रमण पाण्डेय

सलाहकार परिषद

अध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार उपाध्याय

सदस्य
श्री कुणाल तिलक, (पुणे)
श्री अनीश गोखले, (बेंगलुरु)
श्री अंबरीष फडणवीस, (मुम्बई)
श्री अजय उपाध्याय (वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली)
श्री सुजीत कुमार पाण्डेय (वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)
दयानंद पाण्डेय (लेखक एवं पत्रकार)
डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव (चिकित्सक एवं लेखक, वाराणसी)
डॉ. वाई के मद्धेशिया (वरिष्ठ चिकित्सक, कुशीनगर)
प्रो. पुनीत विसारिया(हिन्दी विभाग, बुं.वि.वि. झांसी)
आचार्य सोमदत्त द्विवेदी (वाराणसी)
श्री अरुणकांत त्रिपाठी (सम्पादक, कमलज्योति, लखनऊ)
श्री दीप्तभानु डे (वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)
श्री रतिभान त्रिपाठी (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)
श्री पुरुषोत्तम तिवारी (वरिष्ठ पत्रकार, कोलकाता)
डॉ. राम शर्मा(शिक्षाविद्, मेरठ)
दिवाकर शर्मा (वरिष्ठ पत्रकार, शिवपुरी)
आमोदकांत मिश्र (वरिष्ठ पत्रकार, कुशीनगर)

प्रधान सम्पादक
श्री हनुमानजी महाराज
सम्पादकीय संरक्षक
पद्मश्री आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
अतिथि सम्पादक
स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती
प्रबंध सम्पादक
बी के मिश्र
सम्पादक
संजय तिवारी
कार्यकारी सम्पादक
डॉ. अर्चना तिवारी
सहायक सम्पादक
डॉ. अनिता अग्रवाल
सह सम्पादक
आचार्य गोविन्द शर्मा
प्रज्ञा मिश्रा
संयुक्त सम्पादक
सिद्धार्थ मणि त्रिपाठी
समन्वय सम्पादक
कैप्टन सुभाष ओझा
विशेष सम्पादकीय परामर्श
आचार्य लालमणि तिवारी
(गीता प्रेस, गोरखपुर)
श्री रसेन्दु फोगला
(गीता वाटिका, गोरखपुर)
श्री अजीत दुबे
(सदस्य साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)
केन्द्र प्रभारी, अमेरिका
आचार्य रत्नदीप उपाध्याय

विधि सलाहकार
श्री अमिताभ चतुर्वेदी
(वरिष्ठ अधिवक्ता, नई दिल्ली)
असित के चतुर्वेदी
(वरिष्ठ अधिवक्ता, लखनऊ)
लेखा परीक्षक
अरुण गुप्ता
लेआउट, ग्राफिक्स एवं डिजाइन
संजय मानव
सूचना तकनीक एवं प्रबंधन
उत्कर्ष तिवारी
क्रिएटिव
प्रकर्ष तिवारी
(shot by inflict)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक संजय तिवारी द्वारा स्वास्तिक ग्रफिक्स, महागनगर, लखनऊ उ0प्र0 से मुद्रित एंव बी–64, आवास विकास कॉलोनी, सूरजकुण्ड, गोरखपुर, उ.प्र. से प्रकाशित

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के लिए संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। किसी भी प्रकार के न्यायिक विवाद का क्षेत्र गोरखपुर जिला न्यायालय के अधीन होगा।

पंजीकृत कार्यालय : बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड, गोरखपुर-273001
लखनऊ कार्यालय : 2/43, विजय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010
दिल्ली कार्यालय : बी-38 डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024
सम्पर्क - : **+ 9194508 87186-87**

USA Office : 17413 B lackhawk St. Granada Hills, CA 91344 USA
Ce l l : 1-818-815-9826

- DISTRIBUTER -
Universal Book Sellers
82, Hazratganj, Lukcnow.
1/10, Vivek Khand,
Mithaiwala Chauraha,
Gomtinagar, Lucknow.
Cont : 9335912652
www.universbooksellers.com

(भारत संस्कृति न्यास और संस्कृति पर्व प्रकाशन का प्रकल्प)
editor.sanskritiparva@gmail.com
www.bharatsanskritinyas.org
Follow us

प्राण प्रतिष्ठा के लिए 11 दिन के अनुष्ठान पर प्रधानमंत्री

'सियावर रामचंद्र की जय, मेरे प्यारे देश वासियों राम-राम', जीवन के कुछ क्षण ईश्वरीय आशीर्वाद की वजह से ही यथार्थ में बदलते हैं. आज हम सभी भारतीयों के लिए, दुनिया भर में फैले रामभक्तों के लिए ऐसा ही पवित्र अवसर है. हर तरफ प्रभु श्रीराम की भक्ति का अद्भुत ववातावरण है।

मेरा सौभाग्य है कि मैं भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बनूंगा, प्रभु ने मुझे प्राण प्रतिष्ठा के दौरान, सभी भारतवासियों का प्रतिनिधित्व करने का निमित्त बनाया है। जीवन के कुछ क्षण ईश्वरीय आशीर्वाद की वजह से ही यथार्थ में बदलते हैं. आज हम सभी भारतीयों के लिए, दुनिया भर में फैले रामभक्तों के लिए ऐसा ही पवित्र अवसर है। हर तरफ प्रभु श्रीराम की भक्ति का अद्भुत वातावरण है, चारों दिशाओं में राम नाम की धुन, राम भजनों की अद्भुत सौंदर्य माधुरी, हर किसी को इंतजार है 22 जनवरी के उस एतिहासिक पवित्र पल का और अब अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा में केवल 11 दिन ही बचे हैं।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बनने का अवसर मिल रहा है. ये मेरे लिए कल्पनातीत अनुभूतियों का समय है. मैं भावुक हूं, भाव विह्वय हूं. मैं पहली बार जीवन में इस तरह के मनोभाव से गुजर रहा हूं. मैं एक अलग ही भाव-भक्ति की अनुभूति कर रहा हूं. मेरे अंतर्मन की ये भाव यात्रा मेरे लिए अभिव्यक्ति का नहीं अनुभूति का अवसर है. चाहते हुए भी मैं इसकी गहनता, व्यापकता और तीव्रता को शब्दों में बांध नहीं पा रहा हूं. आप भी भली भांति मेरी स्थिति समझ सकते हैं. जिस स्वप्न को अनेकों पीढ़ियों ने वर्षों तक एक संकल्प की तरह अपने ह्दय में जिया.

मुझे उसकी सिद्धि के समय उपस्थित होने का सौभाग्य मिला है. प्रभु ने मुझे सभी भारतवासियों का प्रतिनिधित्व करने का निमित्त बनाया है. 'निमित्त मात्रम भव सव्य-साचिन' ये एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है. जैसा हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है हमें ईश्वर के यज्ञ के लिए , आराधना के लिए, स्वयं मे भी दैवीय चेतना जाग्रत करनी होती है. इसके लिए शास्त्रों में व्रत और कठोर नियम बताए गए हैं. जिन्हें प्राण-प्रतिष्ठा से पहले पालन करना होता है. इसलिए आध्यात्मिक यात्रा की कुछ तपस्वी आत्माओं और महापुरुषों से मुझे जो मार्गदर्शन मिला है. उन्होंने जो यम-नियम सुझाए हैं उसके अनुसार मैं आज से 11 दिन का विशेष अनुष्ठान आरंभ कर रहा हूं.

इस पवित्र अवसर पर मैं परमात्मा के श्रीचरणों में प्रार्थना करता हूं, ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों का पुण्य स्मरण करता हूं और जनता-जनार्दन, जो ईश्वर का रूप है उनसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे आशीर्वाद दें ताकि मन से, वचन से, कर्म से, मेरी तरफ से कोई कमी ना रहे। साथियों , मेरा ये सौभाग्य है कि 11 दिन के अपने अनुष्ठान का आरंभ मैं नासिक धाम पंचवटी से कर रहा हूं. पंचवटी वो पावन धरा है जहां प्रभु श्रीराम ने काफी समय बिताया था और आज मेरे लिए एक सुखद संयोग ये भी है कि आज स्वामी विवेकानंद जी की जन्मजयंती है। आप मुझसे सीधे नमो ऐप के माध्यम से जुड़ कर अपनी भावनाओं से मुझे अवगत करा सकते हैं। आइए हम सब प्रभु श्रराम की भक्ति में डूब जाएं। आप अपनी भवानाएं जरूर प्रकट करें, मुझे आशीर्वाद दें।

।। जय सियाराम ।।

(प्रधानमंत्री के ऑडियो सन्देश पर आधारित)

युग चक्रवर्ती नरेंद्र मोदी

वेद कहते हैं, राजा यदि सात्विक है तो राष्ट्र को वैभवशाली बन जाने में कोई बाधा ही नहीं है। श्रीराम चरित मानस के उत्तर काण्ड में यही धारणा गोस्वामी तुलसीदास जी स्थापित करते हैं - सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। वेद का कथन और गोस्वामी जी की धारणा केवल लिखित या वाचिक शब्द नहीं हैं। ये प्रयोगोपरांत की स्थापनाएं हैं। ये वही स्थापनाएं हैं जिनके आधार पर भारत को केंद्र मानकर पृथ्वी संचालित होती थी। समस्त आवर्त एक था जिसको एक ही सात्विक चक्रवर्ती संचालित करता था। आज का परिदृश्य कई शताब्दियों के बाद ऐसी ही परंपरा का निर्माण करता दिख रहा है।

इस तथ्य को कुछ उदाहरणों से समझ सकते हैं। भारत के राष्ट्रपति भवन प्रति दिन शिवार्चन हो रहा है। प्रधानमंत्री निवास में योग, साधना और आराधना की जाती है। गृहमंत्री का आवास शुद्ध सात्विक शाकाहारी और सनातनी परंपरा में अवस्थित है। अधिकांश राज्यों के राजभवनों और मुख्यमंत्री आवासों में भी सात्विक वातावरण है। राजभवन और मुख्यमंत्री आवासों में अधिकांश में सनातन ,सात्विक संस्कृति उपस्थित है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के आवास या कार्यालय को तो अलग ही स्वरूप में देखना होगा। स्वयं एक योगी और संत ही विराजमान हैं।

तात्पर्य यह कि भारत का राजनीतिक फलक इस समय सात्विक श्रद्धा से परिपूर्ण दिख रहा है। भारत के सभी तीर्थों में अब प्रतिपल संबंधित तीर्थ देव पूजित और आराधित हैं। सभी के उन्नत स्वरूप के दर्शन लोग कर रहे हैं। विश्व भारत के इस नवीन स्वरूप को देख रहा है, यद्यपि यह स्वरूप अतिप्राचीन है। त्रेता में चक्रवर्ती महाराज दशरथ को धर्मधुरंधर की संज्ञा दी गई थी। धर्म अर्थात जीवन संस्कृति के लिए स्थापित सभी मानविंदुओं पर खरे। धर्म मूल्य था। समस्त सृष्टि और प्रकृति के प्रति कर्तव्य पालन था। समस्त जीवों की सुरक्षा का दायित्व था। मनुष्य को जीवन जीने की कला से परिपूर्ण करने की राजव्यवस्था की जिम्मेदारी थी। राजा को प्रजा की चिंता थी। राज्य बचाने की नहीं बल्कि राज्य को समस्त जीवों, वनस्पतियों, प्रकृति और संस्कृति के साथ सुरक्षित करने की जिम्मेदारी चक्र स्वरूप थी। वैसे ही जैसे कालचक्र सदैव घूम रहा है। वही राज चक्र भी है और धर्म चक्र भी।

वर्तमान भारत की ओर इस समय दुनिया बड़ी उम्मीद से देख रही है। दुनिया भारत की सात्विक शक्ति से परिचित हो रही है। राजप्रासादों से लेकर नगरों और गांवों तक में व्यापक स्वरूप ले रही सात्विकता अब दुनिया को भा रही है। भारत का प्रत्येक स्वर दुनिया को आकर्षित कर रहा है। विश्व परिदृश्य में भारत का वर्तमान नेतृत्व प्राचीन चक्रवर्ती की भूमिका में दिख रहा है। भारत के भीतर अपने नेतृत्व के प्रति जितना समर्पण और विश्वास है उससे कहीं ज्यादा भारत की भौगोलिक सीमा के बाहर है।

यह सात्विक श्रद्धा की शक्ति है जिसने नरेंद्र मोदी नाम के नायक को पिछले 10 वर्षों में महानायक बना दिया है। सनातन का महायोद्धा जो अब युगचक्रवर्ती बन चुका है। विश्व का दृश्य इसी चक्रवर्ती को दिखा भी रहा है और इसी से उम्मीदें भी पाले हुए है। सात्विक भारत वैभव के शिखर चूमने को आतुर है। वेद वचन प्रमाणित हो रहा है। मानस की चौपाई का अर्थ भी समझ में आ रहा है और निहितार्थ भी।

।। वंदे मातरम।।

- संपादक

श्रीराम मंदिर भूमि पूजन के अवसर पर 05 अगस्त 2020 को श्री अयोध्याजी में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

सियावर रामचंद्र की जय!

जय सियाराम। जय सियाराम।

आज ये जयघोष सिर्फ सियाराम की नगरी में ही नहीं सुनाई दे रहा बल्कि इसकी गूंज पूरे विश्व भर में है। सभी देशवासियों को और विश्व भर में फैले करोड़ों भारत भक्तों को, राम भक्तों को, आज के इस पवित्र अवसर की कोटि-कोटि बधाई। मंच पर विराजमान यूपी की गवर्नर श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, पूज्य नृत्य गोपालदास जी महाराज और हम सभी के श्रद्धेय श्री मोहन भागवत जी, ये मेरा सौभाग्य है कि श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने मुझे आमंत्रित किया, इस ऐतिहासिक पल का साक्षी बनने का अवसर दिया। मैं इसके लिए हृदय पूर्वक श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का आभार व्यक्त करता हूं।

राम काजु कीन्हे बिनु
मोहि कहाँ बिश्राम॥

भारत, आज,भगवान भास्कर के सानिध्य में सरयू के किनारे एक स्वर्णिम अध्याय रच रहा है। कन्याकुमारी से क्षीरभवानी तक, कोटेश्वर से कामाख्या तक, जगन्नाथ से केदारनाथ तक, सोमनाथ से काशी विश्वनाथ तक, सम्मेद शिखर से श्रवणबेलगोला तक, बोधगया से सारनाथ तक, अमृतसर से पटना साहिब तक, अंडमान से अजमेर तक, लक्ष्यद्वीप से लेह तक, आज पूरा भारत,राममय है। पूरा देश रोमांचित है, हर मन दीपमय है। आज पूरा भारत भावुक भी है। सदियों का इंतजार आज समाप्त हो रहा है। करोड़ों लोगों को आज ये विश्वास ही नहीं हो रहा कि वो अपने जीते-जी इस पावन दिन को देख पा रहे हैं।

साथियों, बरसों से टाट और टेंट के नीचे रह रहे हमारे रामलला के लिए अब एक भव्य मंदिर का निर्माण होगा। टूटना और फिर उठ खड़ा होना, सदियों से चल रहे इस व्यतिक्रम से रामजन्मभूमि आज मुक्त हो गई है। मेरे साथ फिर एक बार बोलिए, जय सियाराम, जय सियाराम!!!

साथियों, हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के समय कई-कई पीढ़ियों ने अपना सब कुछ समर्पित कर दिया था। गुलामी के कालखंड में कोई ऐसा समय नहीं था जब आजादी के लिए आंदोलन न चला हो, देश का कोई भूभाग ऐसा नहीं था जहां आजादी के लिए बलिदान न दिया गया हो। 15 अगस्त का दिन उस अथाह तप का, लाखों बलिदानों का प्रतीक है, स्वतंत्रता की उस उत्कंठ इच्छा, उस भावना का प्रतीक है। ठीक उसी तरह, राम मंदिर के लिए कई-कई सदियों तक, कई-कई पीढ़ियों ने अखंड अविरत एक-निष्ठ प्रयास किया है। आज का ये दिन उसी तप, त्याग और संकल्प का प्रतीक है।

राम मंदिर के लिए चले आंदोलन में अर्पण भी था तर्पण भी था, संघर्ष भी था, संकल्प भी था। जिनके त्याग, बलिदान और संघर्ष से आज ये स्वप्न साकार हो रहा है, जिनकी तपस्या राममंदिर में नींव की तरह जुड़ी हुई है, मैं उन सब लोगों को आज नमन करता हूँ, उनका वंदन करता हूं। संपूर्ण सृष्टि की शक्तियां, राम जन्मभूमि के पवित्र आंदोलन से जुड़ा हर व्यक्तित्व, जो जहां है, इस आयोजन को देख रहा है, वो भाव-विभोर है, सभी को आशीर्वाद दे रहा है।

साथियों, राम हमारे मन में गढ़े हुए हैं, हमारे भीतर घुल-मिल गए हैं। कोई काम करना हो, तो प्रेरणा के लिए हम भगवान राम की ओर ही देखते हैं। आप भगवान राम की अद्भुत शक्ति देखिए। इमारतें नष्ट कर दी गईं, अस्तित्व मिटाने का प्रयास भी बहुत हुआ, लेकिन राम आज भी हमारे मन में बसे हैं, हमारी संस्कृति का आधार हैं। श्रीराम

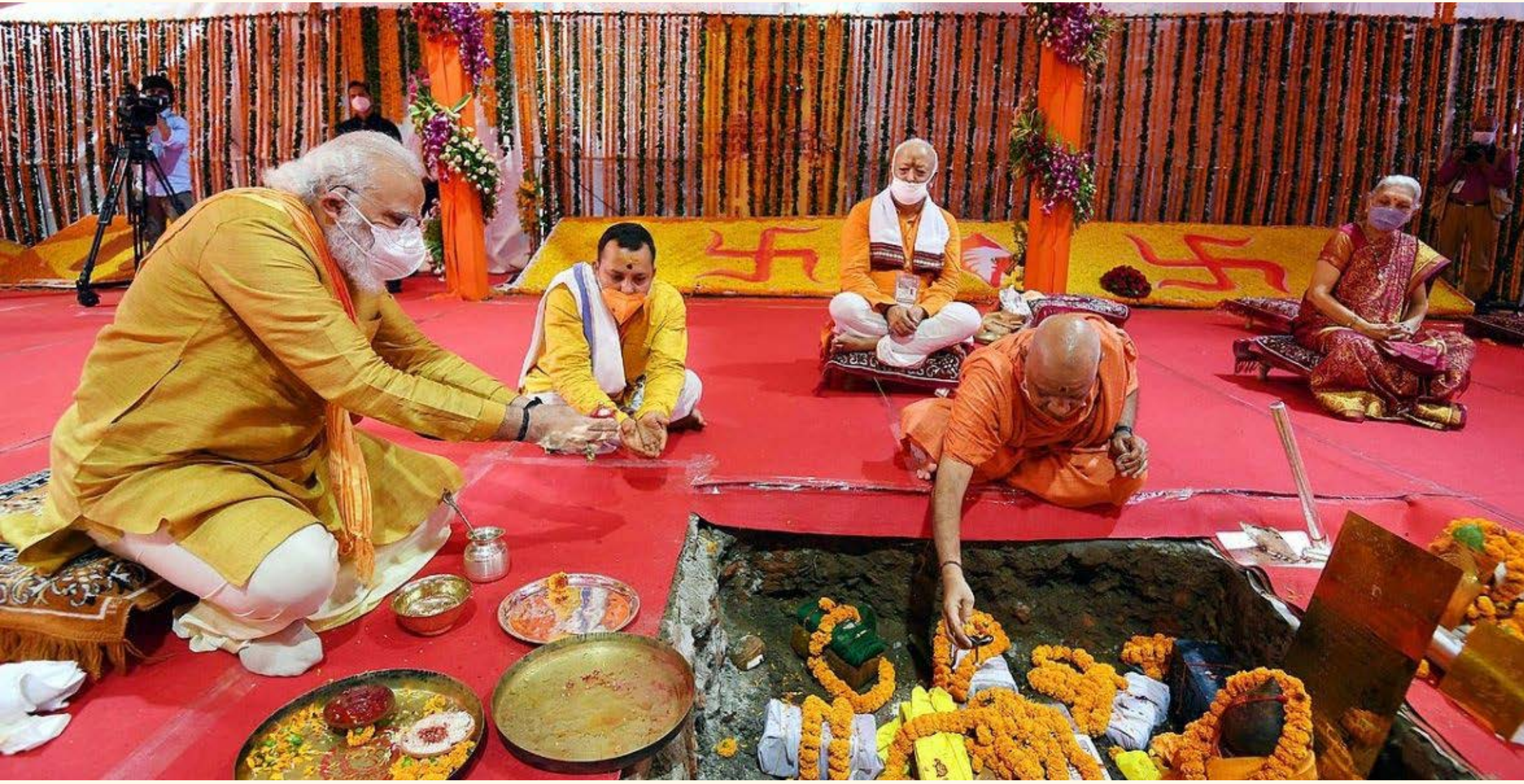

भारत की मर्यादा हैं, श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

इसी आलोक में अयोध्या में राम जन्मभूमि पर, श्री राम के इस भव्य-दिव्य मंदिर के लिए भूमिपूजन हुआ है। यहां आने से पहले, मैंने हनुमानगढ़ी का दर्शन किया। राम के सब काम हनुमान ही तो करते हैं। राम के आदर्शों की कलियुग में रक्षा करने की जिम्मेदारी भी हनुमान जी की ही है। हनुमान जी के आशीर्वाद से श्री राममंदिर भूमिपूजन का ये आयोजन शुरू हुआ है।

साथियों, श्रीराम का मंदिर हमारी संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा, हमारी शाश्वत आस्था का प्रतीक बनेगा, हमारी राष्ट्रीय भावना का प्रतीक बनेगा, और ये मंदिर करोड़ों-करोड़ लोगों की सामूहिक संकल्प शक्ति का भी प्रतीक बनेगा। ये मंदिर आने वाली पीढ़ियों को आस्था, श्रद्धा, और संकल्प की प्रेरणा देता रहेगा। इस मंदिर के बनने के बाद अयोध्या की सिर्फ भव्यता ही नहीं बढ़ेगी, इस क्षेत्र का पूरा अर्थतंत्र भी बदल जाएगा। यहां हर क्षेत्र में नए अवसर बनेंगे, हर क्षेत्र में अवसर बढ़ेंगे। सोचिए, पूरी दुनिया से लोग यहां आएंगे, पूरी दुनिया प्रभु राम और माता जानकी का दर्शन करने आएगी। कितना कुछ बदल जाएगा यहां।

साथियों, राममंदिर के निर्माण की ये प्रक्रिया, राष्ट्र को जोडने का उपक्रम है। ये महोत्सव है- विश्वास को विद्यमान से जोड़ने का। नर को नारायण से, जोड़ने का। लोक को आस्था से जोड़ने का। वर्तमान को अतीत से जोड़ने का। और स्वं को संस्कार से जोडने का। आज के ये ऐतिहासिक पल युगों-युगों तक, दिग-दिगन्त तक भारत की कीर्ति पताका फहराते रहेंगे। आज का ये दिन करोड़ों रामभक्तों के संकल्प की सत्यता का प्रमाण है।

आज का ये दिन सत्य, अहिंसा, आस्था और बलिदान को न्यायप्रिय भारत की एक अनुपम भेंट है। कोरोना से बनी स्थितियों के कारण भूमिपूजन का ये कार्यक्रम अनेक मर्यादाओं के बीच हो रहा है। श्रीराम के काम में मर्यादा का जैसा उदाहरण प्रस्तुत किया जाना चाहिए, देश ने वैसा ही उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसी मर्यादा का अनुभव हमने तब भी किया था जब माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपना ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। हमने तब भी देखा था कि कैसे सभी देशवासियों ने शांति के साथ, सभी की भावनाओं का ध्यान रखते हुए व्यवहार किया था। आज भी हम हर तरफ वही मर्यादा देख रहे हैं।

साथियों, इस मंदिर के साथ सिर्फ नया इतिहास ही नहीं रचा जा रहा, बल्कि इतिहास खुद को दोहरा भी रहा है। जिस तरह गिलहरी से लेकर वानर और केवट से लेकर वनवासी बंधुओं को भगवान राम की विजय का माध्यम बनने का सौभाग्य मिला, जिस तरह छोटे-छोटे ग्वालों ने भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने में बड़ी भूमिका निभाई, जिस तरहमावले, छत्रपति वीर शिवाजी कीस्वराज स्थापना के निमित्त बने, जिस तरह गरीब-पिछड़े, विदेशी आक्रांताओं के साथ लड़ाई में महाराजा सुहेलदेव के संबल बने, जिस तरह दलितों-पिछड़ों-आदिवासियों, समाज के हर वर्ग ने आजादी की लड़ाई में गांधी जी को सहयोग दिया, उसी तरह आज देशभर के लोगों के सहयोग से राम मंदिर निर्माण का ये पुण्य-कार्य प्रारंभ हुआ है।

जैसे पत्थरों पर श्रीराम लिखकर रामसेतु बनाया गया, वैसे ही घर-घर से, गांव-गांव से श्रद्धापूर्वक पूजी शिलाएं, यहां ऊर्जा का स्रोत बन गई हैं। देश भर के धामों और मंदिरों से लाई गई मिट्टी और नदियों का जल, वहां के लोगों, वहां की संस्कृति और वहां की भावनाएं, आज

यहां की शक्ति बन गई हैं। वाकई, ये न भूतो न भविष्यति है। भारत की आस्था, भारत के लोगों की सामूहिकता की ये अमोघ शक्ति, पूरी दुनिया के लिए अध्ययन का विषय है,शोध का विषय है।

साथियों, श्रीरामचंद्र को तेज में सूर्य के समान, क्षमा में पृथ्वी के तुल्य, बुद्धि में बृहस्पति के सदृश्य और यश में इंद्र के समान माना गया है। श्रीराम का चरित्र सबसे अधिक जिस केंद्र बिंदु पर घूमता है, वो है सत्य पर अडिग रहना। इसीलिए ही श्रीराम संपूर्ण हैं। इसलिए ही वो हजारों वर्षों से भारत के लिए प्रकाश स्तंभ बने हुए हैं। श्रीराम ने सामाजिक समरसता को अपने शासन की आधारशिला बनाया था। उन्होंने गुरु वशिष्ठ से ज्ञान, केवट से प्रेम, शबरी से मातृत्व, हनुमानजी एवं वनवासी बंधुओं से सहयोग और प्रजा से विश्वास प्राप्त किया।

यहां तक कि एक गिलहरी की महत्ता को भी उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। उनका अद्भुत व्यक्तित्व, उनकी वीरता, उनकी उदारता उनकी सत्यनिष्ठा, उनकी निर्भीकता, उनका धैर्य, उनकी दृढ़ता, उनकी दार्शनिक दृष्टि युगों-युगों तक प्रेरित करते रहेंगे। राम प्रजा से एक समान प्रेम करते हैं लेकिन गरीबों और दीन-दुखियों पर उनकी विशेष कृपा रहती है। इसलिए तो माता सीता, राम जी के लिए कहती हैं-

'दीन दयाल बिरिदु संभारी'।

यानि जो दीन है, जो दुखी हैं, उनकी बिगड़ी बनाने वाले श्रीराम हैं।

साथियों, जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है, जहां हमारे राम प्रेरणा न देते हों। भारत की ऐसी कोई भावना नहीं है जिसमें प्रभु राम झलकते न हों। भारत की आस्था में राम हैं, भारत के आदर्शों में राम हैं! भारत की दिव्यता में राम हैं, भारत के दर्शन में राम हैं! हजारों साल पहले वाल्मीकि की रामायण में जो राम प्राचीन भारत का पथ प्रदर्शन कर रहे थे, जो राम मध्ययुग में तुलसी, कबीर और नानक के जरिए भारत को बल दे रहे थे, वही राम आज़ादी की लड़ाई के समय बापू के भजनों में अहिंसा और सत्याग्रह की शक्ति बनकर मौजूद थे! तुलसी के राम सगुण राम हैं, तो नानक और कबीर के राम निर्गुण राम हैं!

भगवान बुद्ध भी राम से जुड़े हैं तोसदियों से ये अयोध्या नगरी जैन धर्म की आस्था का केंद्र भी रही है। राम की यही सर्वव्यापकता भारत की विविधता में एकता का जीवन चरित्र है! तमिल में कंब रामायण तो तेलगू में रघुनाथ और रंगनाथ रामायण हैं। उड़िया में रूइपाद-कातेड़पदी रामायण तो कन्नड़ा में कुमुदेन्दु रामायण है। आप कश्मीर जाएंगे तो आपको रामावतार चरित मिलेगा, मलयालम में रामचरितम् मिलेगी। बांग्ला में कृत्तिवास रामायण है तो गुरु गोबिन्द सिंह ने तो खुद गोबिन्द रामायण लिखी है। अलग अलग रामायणों में, अलग अलग जगहों पर राम भिन्न-भिन्न रूपों में मिलेंगे, लेकिन राम सब जगह हैं, राम सबके हैं। इसीलिए, राम भारत की 'अनेकता में एकता' के सूत्र हैं।

साथियों, दुनिया में कितने ही देश राम के नाम का वंदन करते हैं, वहां के नागरिक, खुद को श्रीराम से जुड़ा हुआ मानते हैं। विश्व की सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या जिस देश में है, वो है इंडोनेशिया। वहां हमारे देश की ही तरह 'काकाविन'रामायण, स्वर्णद्वीप रामायण, योगेश्वर रामायण जैसी कई अनूठी रामायणें हैं। राम आज भी वहांपूजनीय हैं। कंबोडिया में 'रमकेर'रामायण है, लाओ में 'फ्रा लाक फ्रा लाम' रामायण है, मलेशिया में 'हिकायत सेरी राम'तो थाईलैंड में

'रामाकेन'है! आपको ईरान और चीन में भी राम के प्रसंग तथा राम कथाओं का विवरण मिलेगा।

श्रीलंका में रामायण की कथा जानकी हरण के नाम सुनाई जाती है, और नेपाल का तो राम से आत्मीय संबंध, माता जानकी से जुड़ा है। ऐसे ही दुनिया के और न जाने कितने देश हैं, कितने छोर हैं, जहां की आस्था में या अतीत में, राम किसी न किसी रूप में रचे बसे हैं! आज भी भारत के बाहर दर्जनों ऐसे देश हैं जहां, वहां की भाषा में रामकथा, आज भी प्रचलित है। मुझे विश्वास है कि आज इन देशों में भी करोड़ों लोगों को राम मंदिर के निर्माण का काम शुरू होने से बहुत सुखद अनुभूति हो रही होगी। आखिर राम सबके हैं, सब में हैं।

साथियों, मुझे विश्वास है कि श्रीराम के नाम की तरह ही अयोध्या में बनने वाला ये भव्य राममंदिर भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत का द्योतक होगा। मुझे विश्वास है कि यहां निर्मित होने वाला राममंदिर अनंतकाल तक पूरी मानवता को प्रेरणा देगा। इसलिए हमें ये भी सुनिश्चित करना है कि भगवान श्रीराम का संदेश, राममंदिर का संदेश, हमारी हजारों सालों की परंपरा का संदेश, कैसे पूरे विश्व तक निरंतर पहुंचे। कैसे हमारे ज्ञान, हमारी जीवन-दृष्टि से विश्व परिचित हो, ये हमारी, हमारी वर्तमान और भावी पीढ़ियों की ज़िम्मेदारी है। इसी को समझते हुए, आज देश में भगवान राम के चरण जहां जहां पड़े, वहाँ राम सर्किट का निर्माण किया जा रहा है!

अयोध्या तो भगवान राम की अपनी नगरी है! अयोध्या की महिमातो खुद प्रभु श्रीराम ने कही है-

'जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि'

यहां राम कह रहे हैं- मेरी जन्मभूमि अयोध्या अलौकिक शोभा की नगरी है। मुझे खुशी कि आजप्रभु राम की जन्मभूमि की भव्यता, दिव्यता बढ़ाने के लिए कई ऐतिहासिक काम हो रहे हैं!

साथियों, हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है-'न्राम सदृशो राजा, प्रथिव्याम् नीतिवान् अभूत'॥ यानि कि, पूरी पृथ्वी पर श्रीराम के जैसा नीतिवान शासक कभी हुआ ही नहीं! श्रीराम की शिक्षा है-'नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना'॥ कोई भी दुखी न हो, गरीब न हो। श्रीराम का सामाजिक संदेश है- 'प्रहृष्ट नर नारीकः,समाज उत्सव शोभितः'॥ नर-नारी सभी समान रूप से सुखी हों। श्रीराम का निर्देश है- 'कच्चित् ते दयितः सर्वे, कृषि गोरक्ष जीविनः'। किसान, पशुपालक सभी हमेशा खुश रहें। श्रीराम का आदेश है-'कश्चिद्वृद्धान्चबालान्च, वैद्यान् मुख्यान् राघव। त्रिभिः एतैः वुभूषसे'॥ बुजुर्गों की,बच्चों की, चिकित्सकों की सदैव रक्षा होनी चाहिए। श्रीराम का आह्वान है- 'जौंसभीतआवासरनाई। रखिहंउताहिप्रानकीनाई'॥ जो शरण में आए,उसकी रक्षा करना सभी का कर्तव्य है। श्रीराम का सूत्र है- 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'॥ अपनी मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है। और भाइयों और बहनों, ये भी श्रीराम की ही नीति है- 'भयबिनुहोइन प्रीति'॥ इसलिए हमारा देश जितना ताकतवर होगा, उतनी ही प्रीति और शांति भी बनी रहेगी।

राम की यही नीति और रीति सदियों से भारत का मार्गदर्शन करती रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने, इन्हीं सूत्रों, इन्हीं मंत्रों के आलोक में, रामराज्य का सपना देखा था। राम का जीवन, उनका चरित्र ही गांधीजी के रामराज्य का रास्ता है।

साथियों, स्वयं प्रभु श्रीराम ने कहा है-

देशकाल अवसर अनुहारी। बोले बचन बिनीत बिचारी॥

अर्थात, राम समय, स्थान और परिस्थितियों के हिसाब से बोलते हैं, सोचते हैं, करते हैं। राम हमें समय के साथ बढ़ना सिखाते हैं, चलना सिखाते हैं। राम परिवर्तन के पक्षधर हैं, राम आधुनिकता के पक्षधर हैं। उनकी इन्हीं प्रेरणाओं के साथ, श्रीराम के आदर्शों के साथ भारत आज आगे बढ़ रहा है!

साथियों, प्रभु श्रीराम ने हमें कर्तव्यपालन की सीख दी है, अपने कर्तव्यों को कैसे निभाएं इसकी सीख दी है! उन्होंने हमें विरोध से निकलकर, बोध और शोध का मार्ग दिखाया है! हमें आपसी प्रेम और भाईचारे के जोड़ से राममंदिर की इन शिलाओं को जोड़ना है। हमें ध्यान रखना है,जब जबमानवता ने राम को माना है विकास हुआ है, जब जब हम भटके हैं विनाश के रास्ते खुले हैं! हमें सभी की भावनाओं का ध्यान रखना है। हमें सबके साथ से, सबके विश्वास से, सबका विकास करना है। अपने परिश्रम, अपनी संकल्पशक्ति से एक आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करना है।

साथियों,

तमिल रामायण में श्रीराम कहते हैं-

'कालम् ताय, ईण्ड इनुम इरुत्ति पोलाम्' ॥

भाव ये कि, अब देरी नहीं करनी है, अब हमें आगे बढ़ना है!

आज भारत के लिए भी, हम सबके लिए भी, भगवान राम का यही संदेश है! मुझे विश्वास है, हम सब आगे बढ़ेंगे, देश आगे बढ़ेगा! भगवान राम का ये मंदिर युगों-युगों तक मानवता को प्रेरणा देता रहेगा, मार्गदर्शन करता रहेगा! वैसे कोरोना की वजह से जिस तरह के हालात हैं,प्रभु राम का मर्यादा का मार्ग आज और अधिक आवश्यक है।

वर्तमान की मर्यादा है, दो गज की दूरी- मास्क है जरूरी। मर्यादाओं का पालन करते हुए सभी देशवासियों को प्रभु राम स्वस्थ रखें, सुखी रखें, यही प्रार्थना है। सभी देशवासियों पर माता सीता और श्रीराम का आशीर्वाद बना रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, सभी देशवासियों को एक बार फिर बधाई!

बोलो सियापति रामचंद्र की...जय !!!

॥ श्री हरि ॥

श्री शंकराचार्यो विजयतेतराम्

अनंत श्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर भगवत्पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य

श्री स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज

ज्योतिर्मठ, बद्रीका आश्रम, जोशीमठ, बद्रीनाथ
ज्योतिर्मठ, जोशीमठ चमोली उत्तराखंड
श्री ब्रह्मनिवास शंकराचार्य आश्रम 56/15,
अलोपीबाग प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनंत श्री विभूषित ज्योतिष्पीठोद्धारक भगवत्पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य ब्रह्मलीन श्री स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी महाराज

आशीर्वाद

मुझे यह जान कर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि सनातन संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए सतत प्रयत्नशील पत्रिका संस्कृति पर्व श्री अयोध्या जी में श्री राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर हेतु एक विशिष्ट अंक आयोजित कर रही है। भारत में भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार के बाद संजय तिवारी की यह दृष्टि सदैव आशीर्वाद के योग्य है। इस अंक के अतिथि संपादक स्वामी जीतेंद्रानंद सरस्वती के इस महती प्रयास के लिए भी आशीर्वाद। मुझे विश्वास है कि संस्कृति पर्व के इस अंक में वह सब कुछ पढ़ने को मिलेगा जिसके बारे में आज का समाज उत्सुक है। यह अंक चक्रस्थ अयोध्या के रूप में प्रकाशित करने का आशय भी स्पष्ट है। श्री अयोध्या पुरी भगवान श्री हरि के सुदर्शन चक्र पर विराजमान है। इस अंक के माध्यम से पाठकों को श्री अयोध्या जी, श्री रामजन्म भूमि के लिए विगत 500 वर्षों के संघर्ष और सनातन महात्म्य के बारे में निश्चित रूप से शुद्ध और गंभीर जानकारी प्राप्त होगी।

इतने गंभीर और महत्वपूर्ण अंक की सफलता की मंगल कामना। आशीर्वाद

14/01/2024

स्वामी जीतेन्द्रानन्द सरस्वती
शिष्य : अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य
ज्योतिष्पीठाधीश्वर श्री स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती जी महाराज

दुर्गा शंकर मिश्र
मुख्य सचिव
Durga Shanker Mishra
Chief Secretary

आज़ादी का अमृत महोत्सव

उत्तर प्रदेश शासन
लोक भवन, लखनऊ – 226001
Government of Uttar Pradesh
Lok Bhawan, Lucknow-226001

दिनांक : 12 जनवरी, 2024

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मासिक पत्रिका संस्कृति पर्व द्वारा अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में भगवान श्रीरामलला के प्राण–प्रतिष्ठा के अवसर पर विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

2. मर्यादा पुरुषोतम भगवान श्रीराम जी की जीवन यात्रा का हर क्षण समाज के आदर्शों का प्रतिमान है। विकट परिस्थितियों में भी उन्होंने धैर्य व मर्यादा का पालन करते हुये मानव जगत का उद्धार किया। प्रभु श्रीराम का अद्भुत व्यक्तित्व प्रकाशपुंज की भांति हर काल एवं परिस्थिति में सभी के लिये सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा।

3. प्रभु श्रीराम की जन्मस्थली होने के कारण अयोध्या लोगों की सनातन आस्था का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। लगभग 500 वर्षों के पश्चात् 22 जनवरी, 2024 को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में भगवान श्रीरामलला की प्राण–प्रतिष्ठा होने जा रही है। यह अभूतपूर्व, अलौकिक, अविस्मरणीय एवं भावुक करने वाला क्षण है। श्रीराम मंदिर भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक एकता का प्रतीक बनेगा।

4. आशा है कि विशेषांक में ऐसी सामग्री का समावेश किया जायेगा, जो पाठकों के लिये ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

5. पत्रिका के सफल एवं उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

(दुर्गा शंकर मिश्र)

Office Address : Room No. 101 'B' Wing, Lok Bhawan, U.P. Secretariat, Lucknow-226001
Tel.: 0522-2289212, 2289296; Fax: 0522-2239283; Resi.: 0522-2239461, 2237299; Email: csup@nic.in
Website: https://up.gov.in/

Legal Research Foundation

(Registered Trust And Society Incorporated With Trust Registration Number - F/2445 / Rajkot And Society Registration - Guj/2817 Society Registration Act, 1860)

303-305 City Shop, Dr. Yagnik Road, Rajkot -360 001 Gujarat (INDIA)
Phone No. : 0281 - 2462430 Email : legalreserchfoundation@gmail.com

दिनांक: १ जनवरी, २०२४

आत्मीय संजय तिवारीजी ,

सप्रेम सादर नमस्कार

सनातन संस्कृति के संवर्धन एवं प्रचार प्रसार में सदैव सक्रियता से योगदान देने के लिए उत्कृष्ट जागृति प्रेरक कार्य करने के लिए प्रयत्नशील सुविख्यात मासिक पत्रिका **'संस्कृति पर्व'** ने अयोध्या धाम में भगवान राम की परम पवित्र जन्म भूमि पर निर्मित भव्य एवं दिव्य श्री राम मंदिर के लोकार्पण के ऐतिहासिक प्रसंग पर विशिष्ट अंक **"चक्रस्थ"** का प्रकाशित करने का निर्णय किया है वह सराहनीय और प्रशंसनीय है। इस अंक में श्री राम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन श्री राम जन्मभूमि का इतिहास और उनके भिन्न-भिन्न आयाम, ऐतिहासिक प्रमाण शाहिद विभिन्न पहलुओं पर संशोधन आधारित अभ्यास पूर्ण ऐसे लेख सम्मिलित किया है , यह जानकर प्रसन्नता हुई।

विशेष करके युवा पीढ़ी के लिए इस प्रकार की सामग्री का वांचन बहुत उपयोगी रहेगा एवं समाज जीवन में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में कार्यरत ऐसे सभी लोगों के लिए भी यह जानकारी विशेष रूप से उपयुक्त रहेगी ऐसी श्रद्धा है ।

इस नूतन और दिव्य भाव प्रकल्प को हमारी ओर से शुभकामनाएं.

।। जय श्री राम ।।

(प्रोफेसर कमलेश जोशीपुरा)
(डा. भावना जोशीपुरा)

Institution Working in the Area of Legal and Social Research, Extension activities, Capacity Building, Training, Orientation, Counselling, ADR, Legal Literacy, Inter-Continental Harmony, Preservation of Human Rights and multi-dimensional socio-legal incentives and initiatives...

सृष्टि प्रवाह में श्रीराम की भव्य नव्य अयोध्या के युग में हम मंगलमय प्रवेश कर रहे हैं। नवीन कैलेंडर वर्ष में श्रीराम की मंगलमय उपस्थिति के साथ सनातन विश्व की नवीन यात्रा शुरू हो रही है। संस्कृति पर्व का यह अंक एक ऐसा ही आरंभ है।

श्रीराम सर्वशक्तिमान, हैं, सर्वगुणाधार हैं, सृष्टिकर्ता हैं, सबके एकमात्र स्वामी हैं, ऐश्वर्य, माधुर्य, कारुण्य, प्रेम, दया, संबंध और मर्यादा के अथाह समुद्र हैं, हमारे परम सुहृद हैं। इस बातपर विश्वास होते ही उनके प्रति अपने-आप हृदय खिंच जाता है। शास्त्र और पूज्य संतोंकी वाणीपर विश्वास करके अब श्रीराम की नवीन छवि को ऐसा समझ लेने का नवयुग आरंभ हो रहा। जगत के कल्याण का सनातन युग। श्रीराम के सदृश कोई वस्तु हमारी दृष्टिमें न रहेगी, तब हमारा हृदय उन्हींका निवासस्थान बन जायगा। हमारा चित्त उन्हींके चिन्तनमें डूब जायगा।

श्रीराम के चिंतन के साथ सृष्टि सब रच रही है। मनु से बाल्मीकि, व्यास और तुलसी तक की इस नव यात्रा में सभी का मंगल होगा ही। प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, विश्वगुरु स्वरूप भारत की स्थापना हो। इसी कामना के साथ संस्कृति पर्व ने चक्रस्थ अयोध्या अंक का आयोजन किया है। इस अंक में श्री अयोध्या जी और श्री राम जभूमि के सदियों के संघर्ष को एक साथ प्रस्तुत करने की कोशिश संस्कृति पर्व की संपादकीय परिषद ने की है। इसमें देश के स्थापित विद्वानों के साथ ही प्रख्यात इतिहासकारों ने जो योगदान किया है उसके लिए भारत संस्कृति न्यास और संस्कृति पर्व परिवार उनका सदैव ऋणी है। इस अंक के संपादन की जिम्मेदारी स्वयं अखिल भारतीय संत समिति के महामंत्री पूज्य स्वामी जीतेंद्रानंद जी सरस्वती ने सम्हाली है, यह हमारे लिए अत्यंत गौरव का विषय है।

इस अतिविशिष्ट अंक को सभी का आशीर्वाद मिले, इसी कामना के साथ सभी सुधी पाठकों को जयसियाराम।।

बी के मिश्रा

श्री अयोध्यापुरी से श्री काशी जी का नैसर्गिक संबंध

“

सप्तपुरियों में श्री शब्द का प्रयोग श्रीअयोध्याजी और श्रीकाशीजी के लिए होता है। स्वभाविक है कि अयोध्या और काशी का अन्योन्याश्रित सम्बंध धर्म के दृष्टि से अद्भुत है। जहां भगवान शिव मां सती से कहते हैं कि 'जोई राम व्यापक ब्रह्म अवतरेउ अपने भगत हित।' वहीं गोस्वामी तुलसीदासजी श्रीराम के अवतरण का कारण विप्र, धेनु, सुर, सन्त, हित बताते हैं। हजारों वर्षों से काशी के महाश्मशान की आग कभी बुझी नहीं और भगवान शिव का निवास केंद्र भी महाश्मशान को ही बताया गया। भगवान शिव के वहां रहने का कारण एकमात्र यह है कि हर समय अखण्ड रुप से राम-नाम सत्य है... का उद्घोष उन्हें सुनाई पड़ता है। बिना रामाश्रय के तारक मन्त्र देने का विधान भी पूर्ण नहीं होता है।

”

श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण के साथ सभ्यता और संस्कृति का संघर्ष अपने समापन की तरफ बढ़ चला है। ऐसे तो लाखों वर्षों के किसी राष्ट्र की जीवनयात्रा में हजारों वर्ष भी मूल्यांकन के लिए कम होते हैं, परन्तु भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को बचाने का लगभग 700 वर्षों का संघर्ष श्रीरामजन्मभूमि के दिव्य एवं भव्य मन्दिर निर्माण के संकल्प के साथ पूरा हो रहा है। भगवान राम के इष्ट भगवान शिव ही हैं। अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार) काशी, कांची, अवंतिका, पुरीद्वारावतीश्चैव (द्वारिका) सप्तर्ते मोक्षदायिका।

सप्तपुरियों में श्री शब्द का प्रयोग श्रीअयोध्याजी और श्रीकाशीजी के लिए होता है। स्वभाविक है कि अयोध्या और काशी का अन्योन्याश्रित सम्बंध धर्म के दृष्टि से अद्भुत है। जहां भगवान शिव मां सती से कहते हैं कि 'जोई राम व्यापक ब्रह्म अवतरेउ अपने भगत हित।' वहीं गोस्वामी तुलसीदासजी श्रीराम के अवतरण का कारण विप्र, धेनु, सुर, सन्त, हित बताते हैं। हजारों वर्षों से काशी के महाश्मशान की आग कभी बुझी नहीं और भगवान शिव का निवास केंद्र भी महाश्मशान को ही बताया गया। भगवान शिव के वहां रहने का कारण एकमात्र यह है कि हर समय अखण्ड रुप से राम-नाम सत्य है... का उद्घोष उन्हें सुनाई पड़ता है। बिना रामाश्रय के तारक मन्त्र देने का विधान भी पूर्ण नहीं होता है। जीव-जगत को 84 लाख योनियों में भ्रमण के बाद मनुष्य योनि प्राप्ति के उपरान्त मोक्ष के लिए सप्तमोक्ष नगरी में जाना होता है, उसमें काशी और अयोध्या विशिष्ट है। 'काशी मरत जन्तु अवलोकी जासु नाम फल करई विशोकी।' कलिकाल में भगवान राम के नाम के आश्रय से जीव-जगत को मुक्ति का मन्त्र भगवान शिव दे देते हैं। वहीं, भगवान राम अपने इष्ट के लिए 'लिंग थापि विधिवत् करि पूजा। शिव समान मोहि प्रियहि न दूजा।। शिव द्रोही मम् दास कहावा, सो नर मोहि सपनेहु नहिं पावा।' जो सम्बंध भगवान राम और भगवान शिव का है वही सम्बंध श्रीकाशीजी का अयोघ्या से है।

जब दिल्ली में अकबर का शासन था और कुछ विद्वान राजाश्रय के फलःस्वरुप दिल्लीश्वरोवा-जगदीश्वरोवा अर्थात जो दिल्ली का ईश्वर है, वही जगदीश्वर है। अकबर को जब परमात्मा के समकक्ष रखने का प्रयास कुछ वेतनभोगियों के द्वारा प्रारम्भ हुआ, उस समय समूचे भारत के सांस्कृतिक-राष्ट्रीय सीमा में भक्तिकाल का आन्दोलन प्रस्फुटित हुआ, जिसका सही अर्थों में नेतृत्व काशी से प्रारम्भ हुआ और गोस्वामी तुलसीदासजी ने स्वरमुखरित करते हुए कहा कि संसार में सिर्फ एक ही राजा है और इसके लिए शब्द प्रयोग किया कि 'राजा रामचन्द्र की जय।' कबीर ने भगवान राम को भरतार शब्द से सम्बोधित किया कि 'दुलहिन गांवहु मंगल चार। मोरे घर अइहै राजा राम भरतार।।' फिर रैदास की कुटिया रामभजन से बरबस भींगी रहने लगी। यह सब अयोध्या को पुनर्स्थापित करने के लिए काशी के भक्त कवियों का प्रयास था जब गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस की रचना की तो इसको प्रमाणिकता कौन प्रदान करे? इसको लेकर काशी के विद्वानों से बहुत मतभेद हुए। गोस्वामीजी को अपमानजनक स्थिति का भी सामना करना पड़ा। गोस्वामीजी को यह कहना पड़ा कि 'स्वान्त सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा। भाषा निबन्ध मन्जुल मात नोति।।' पुनः यह निर्णय कौन करे? श्रीकाशीविश्वनाथ (वर्तमान का ज्ञानवापी मन्दिर) में रात्रि में शयन आरती के पश्चात् सभी के लिखित ग्रन्थों को एक साथ रखा गया, जिसमें गोस्वामीजी का रामचरितमानस सबसे नीचे था और प्रातःकाल जब मन्दिर का कपाट खुला तो रामचरितमानस सबसे ऊपर जिस पर 'सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्' का हस्ताक्षर भगवान शिव के द्वारा स्वयं किया गया था। हो भी क्यों नहीं, उनके आराध्य की गाथा थी और यह पहला प्रबन्ध काव्य था जो प्रभु श्रीराम को ईष्ट मानकर गोस्वामीजी ने रचना की थी। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि काशी में गंगा के तट पर बैठकर लिखे गए रामचरितमानस

ने अयोध्या में अवतरित होने वाले भगवान राम को जन-जन के राम के रुप में लोक गाथाओं में भी स्थापित कर दिया। राम के होने का अर्थ बाल्मिकीजी के शब्दों में 'रामो विग्रहवान् धर्मः।' जो धर्म के विग्रह स्वरुप हैं। बाल्मिकीजी द्वारा रचित 'रामायण' संस्कृत में होने के कारण आमजन के पहुंच से दूर थी। भगवान राम, शास्त्रों और विद्वानों के शास्त्रार्थ के विषय होते थे परन्तु रामचरितमानस के आने के बाद 'जन-जन के राम' के स्वरुप में स्थापित हुए। परन्तु काशी यही नहीं रुकी। काशी ने यह तय कर लिया था कि भले ही भगवान श्रीराम का अवतार मर्यादा पुरुषोत्तम के रुप में अयोध्या के धराधाम पर हुआ हो परन्तु उनकी लीला का महिलामण्डन उनके ईष्ट भगवान शिव के नगर काशी के साहित्यकार, विद्वान एवं भक्त कवियों के द्वारा ही नहीं बल्कि लोक गायकों के द्वारा भी की जाएगी। परिणामस्वरुप संसार की पहली रामलीला काशी में ही प्रारम्भ हुई। गोस्वामीजी परममित्र मेधा भगतजी के द्वारा काशी के विभिन्न स्थानों पर रामलीला का मंचन प्रारम्भ हुआ। अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग लीलाओं का महत्व होने के कारण वह लाखों की संख्या वाले मेले के कारण परिवर्तित होते चले गए। चेतगंज की नक्कटैया, नाटी ईमली का भरत मिलाप, रामनगर का श्रीराम राज्याभिषेक, जो पूर्णिमा के प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व की अरुणिमा बेला में सम्पन्न होता है, इन सब ने काशी के लक्खा मेले का रुप ले लिया। आज भगवान राम के लीलाओं की गाथा थोड़े-बहुत मतभेदों के बाद संसार के 18 भाषाओं में अलग-अलग क्षेत्रों में विधिवत् धार्मिक कर्मकाण्ड के स्वरुप में पढ़ी जाती है। समय परिवर्तन के साथ आज भी भगवान राम को लेकर कुछ भी नहीं बदला है।

काशी और अयोध्या का सम्बंध बाबर के सेनापति मीरबाकी के द्वारा श्रीरामजन्मभूमि के मन्दिर को भग्न किए जाने के बाद संघर्षों के कालखण्ड के रुप में भी जीवन्त बना रहा। 1528 से लेकर 2019 तक श्रीरामजन्मभूमि के मुक्ति संघर्ष में काशी में धर्म-संसदों के आयोजन से लेकर आन्दोलन की रुप-रेखा तय करने के लिए जमीन के रुप में प्रयोग हुआ। श्रद्धेय अशोक सिंघल जी का काशी आना-जाना बहुत रहता था। अखिल भारतीय सन्त समिति के संकल्पों ने अयोध्या, काशी और मथुरा, तीनों स्थानों की मुक्ति का संयुक्त संकल्प था। 1994 में काशी में आयोजित धर्म-संसद में ये सारे प्रस्ताव पास हुए थे। श्रीरामजन्मभूमि के 1986 में ताला खुलने के बाद 9 नवम्बर, 1989 तक के संघर्षों की सफलता यह थी कि श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण के लिए शिलान्यास का प्रथम मुहूर्त काशी के प्रकाण्ड ज्योतिषी पण्डित जनार्दन शास्त्री कुण्ठे ने दिया था। उस समय के विघ्न सन्तोषी मुहूर्त को लेकर तब भी विवाद खड़ा किया गया था परन्तु न्यायालयीय विवाद और तत्कालीन सरकार के बाबरी मस्जिद के पक्ष में होने के कारण कोर्ट से निर्णय नहीं आने देना है... इस बात की हठधर्मिता बनी रही। 1990 में रामज्योति यात्रा एवं कारसेवा के संकल्प को बाधित करने के लिए उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री मुलायम सिंह यादवजी के द्वारा यह कहना कि परिन्दा भी पर नहीं मार सकता...। इस दम्भ को रामभक्त कारसेवकों ने चूर-चूर कर दिया। परिणामःस्वरुप अयोध्या में रामभक्त कारसेवकों की लाशें बिछा दी गईं। 6 दिसम्बर, 1992 को शिखर पर चढ़े कारसेवकों में काशी के भी कारसेवक थे। समूचे संघर्ष में अयोध्या के लिए काशी ने अनादिकाल से सहयोग किया। सितम्बर 2009 में श्रीरामन्मभूमि पर उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय का निर्णय आने के बाद भी सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई प्रारम्भ न हो सकी परन्तु काशी के इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात हुआ जब गुजरात के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी ने 2014 का लोकसभा चुनाव काशी से लड़ने का निर्णय लिया और यह कहा कि मुझे मां गंगा ने बुलाया है...। तब काशी को लगा कि गंगा के तट पर बैठकर लिखे गए गोस्वामी तुलसीदासजी के रामचरितमानस का एक अध्याय जो श्रीरामजन्मभूमि के मुक्ति के रुप में लम्बित है, वह बिना बोले अवश्य पूर्ण होगा। परन्तु 2017 तक अखिलेश यादव की सरकार होने के कारण उत्तर प्रदेश सरकार ने श्रीरामजन्मभूमि के वाद में कोई पैरवी नहीं की। उच्चतम न्यायालय ने यह झूठ बोला जाता रहा कि 80 से 90 हजार पृष्ठ हैं जो उर्दू-अरबी-फारसी भाषा में है, जिनका अनुवाद उत्तर प्रदेश सरकार को कराना है। उत्तर प्रदेश सरकार ने यह अनुवाद नहीं कराया। सत्य यह था कि यह सिर्फ 22 हजार पृष्ठ थे। प्रदेश में योगी आदित्यनाथजी के मुख्यमन्त्री बनने के साथ यह अनुवाद का कार्य प्रारम्भ हुआ और श्रीरामजन्मभूमि के उच्चतम न्यायालय में वाद की सुनवाई को पुनः बाधित करने का प्रयास कांग्रेस के पूर्व केन्द्रिय मन्त्री और सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता कपिल सिब्बल जैसे लोग रहे। लोकसभा चुनाव 2019 के बाद सुनवाई और सुप्रीम कोर्ट के संविधान बेन्च के सर्वसम्मत निर्णय से श्रीरामन्मभूमि हिन्दू समाज को प्राप्त हुई।

काशी के सांसद और देश के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के द्वारा मन्दिर निर्माण के लिए 5 अगस्त 2020 को भूमि पूजन कर कार्य का शुभारम्भ किया गया। आज जब मन्दिर के प्रथम तल का कार्य पूर्ण हो रहा है तो पौष शुक्ल पक्ष के द्वादशी संवत् 2080 तद्नुसार 22 जनवरी, 2024 को भगवान रामलला 495 वर्षों के संघर्ष के बाद अपने जन्मस्थान पर विराजेंगे, तब भी काशी के सांसद और प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदीजी प्राण-प्रतिष्ठा के मुख्य यजमान होंगे। काशी और अयोध्या का सम्बंध ऐसा है कि काशी के कर्मकाण्डी आचार्य पण्डित लक्ष्मीकान्त दिक्षित के नेतृत्व में सम्पूर्ण आयोजन पूर्ण किए जाएंगे, वहीं इस मुहूर्त को निकालने वाले ज्योतिषी आचार्य गणेश्वर द्रविड़ शास्त्री भी काशी के ही हैं। अर्थात् काशी के प्रतिनिधि, काशी के मुहूर्त वेत्ता और काशी के कर्मकाण्डी आचार्य, ये सभी अयोध्या में काशी के देवाधिदेव महादेव के इष्ट भगवान श्रीराम के जन्मस्थान पर बन रहे भव्य श्रीराममन्दिर की प्राण-प्रतिष्ठा के साक्षी बनेंगे। यह अनादिकाल से काशी और अयोध्या का सम्बंध दर्शाता है। न तब कुछ बदला था, न आज कुछ बदला है।

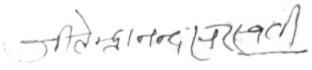

स्वामी जीतेन्द्रानन्द सरस्वती

(राष्ट्रीय महामंत्री)

अखिल भारतीय संत समिति, गंगा महासभा

संजय तिवारी

"22 जनवरी 2024 को सदियों की एक प्रतीक्षा समाप्त हो रही है। जिसके लिये भारत के महानायक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ग्यारह दिनों का अनुष्ठान उपवास रखा है। यह वर्तमान युग में सनातन की शिखर यात्रा की पावन शुरूआत है। प्रतीक्षा के लिए संकल्प जरूरी है। संकल्प के लिए नायकत्व चाहिए और आज का भारत इस परिवेश और पराक्रम के साथ विश्वपटल पर उदीयमान है। श्रीअयोध्याजी में श्रीराम जन्मभूमि पर श्रीराम के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के लिये प्रधानमंत्री का अयोध्या आगमन उनकी संकल्पशक्ति ही तो है।"

हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं॥

जय सियाराम। श्री अयोध्या जी सृष्टि की प्रथम पुरी हैं। यह एक नगर मात्र नहीं बल्कि पृथ्वी पर श्रीहरि के निवास अर्थात साक्षात बैकुंठ के समान हैं, ऐसा शास्त्र मत है। श्रुति कहती है कि जिस प्रकार श्री काशी जी भगवान विश्वेश्वर के त्रिशूल पर विराजमान हैं, उसी प्रकार श्री अयोध्या जी श्रीहरि के सुदर्शन चक्र पर विराज रही हैं। सृष्टि में सृजन की प्रथम पुरी जिनके राज कण में भगवान मनु और श्री शतरूपा जी की गहन तपस्या के परिणाम स्वरूप उन्ही के रूप में धर्मधुरंधर चक्रवर्ती महाराज दशरथ और मां कौशल्या के आंगन में मंगल भवन अमंगल हारी प्रभु श्री राम का अवतरण होता है। 22 जनवरी 2024 जब इसी भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के लिए भारत के प्रधानमंत्री सनातन के अप्रतिम योद्धा श्री नरेंद्र मोदी जी स्वयं 11 दिनों के अनुष्ठान पर हैं। यह युग परिवर्तन और सनातन की स्थापना का अद्भुत क्षण है।

आखिर 500 वर्षों के संघर्ष और प्रतीक्षा के बाद यह शुभ घड़ी आ गई है कि विश्व श्रीराम का पूरी आस्था के साथ उद्घोष कर रहा है। ये श्री राम आखिर कौन से तत्व हैं। बाल्मीकि के राम। तुलसी के राम । नानक के राम। गोरख के राम। कबीर के राम। राजा राम। दशरथसुत राम। कौशल्या के राम। शबरी के राम। अहिल्या के राम। सरभंग के राम। विश्वामित्र के राम। वशिष्ठ के राम। हनुमान के राम। सिया के राम। शिव के राम। नारद के राम। कागभुशुण्डि के राम। अयोध्या के राम या कि लोक के राम। राम के बिना वेद, उपनिषद, स्मृति, इतिहास, पुराण याकि कोई शास्त्र पूरा नही हो सकता। राम के बिना न तो सनातन संस्कृति की कल्पना की जा सकती है और न ही मनुष्य की। ऐसे राम के जन्मस्थान के लिए 500 वर्षों का रक्तिम संघर्ष। हृदय विदीर्ण हो जाता है यह कल्पना मात्र से कि लाखों मनुष्यों को बलिदान हो जाना पड़ा। वर्ष 1989 से अब तक की घटनाओं का साक्षी मैं स्वयं भी रहा हूं। 1990 की कार सेवा और 6 दिसंबर 1992 को संयोग से श्री अयोध्या के दृश्य भी वहीं से देखे हैं। आखिर सनातन सभ्यता इतनी निरीह क्यो हो चुकी थी? जिसके आधार में लोक कल्याण के लिए युद्ध हो वही सभ्यता ऐसी अवस्था मे ? चिंता होती है। यह चिंता इसलिए भी क्योंकि सभी मानक सामने हैं। कहीं किसी से कुछ पूछने तक कि जरूरत नही। कभी स्वयं का मूल्यांकन क्यो नही किया इस समुदाय ने। यह पृथ्वी आपकी थी। आप के लिए ही थी। आप ही चक्रवर्ती होते थे धरा के। आप ही भोक्ता थे। आपके लिए आपके साथ आपके सभी देवता थे। आपने अपने देवता को ही ठीक से देखा होता। ठीक से उसके स्वरूप से सीख पाते। इतने पतन के गर्त में तो नही जाते। आपका प्रत्येक देवता आपका रोलमॉडल है। कोई देवता ऐसा है क्या जो अस्त्रविहीन हो। सनातन सभ्यता के सभी देवता अपने विशिष्ट रूप, रंग, आकार, प्रकार, वाहन आदि से ही पहचाने जाते हैं। हमारे प्रत्येक देवता के पास एक कोई पशु अवश्य है। एक पुष्प है। एक अस्त्र और एक शास्त्र भी अवश्य है। यानि प्रत्येक का संदेश स्पष्ट है। पशु ,पक्षी, जीव, वनस्पति सभी की सुरक्षा। शक्ति से सन्निहित इकाई ही क्षमाशील भी हो सकती है। जो शक्तिहीन होगा उसके क्षमा का क्या मतलब। वह तो उसकी कायरता ही होगी। यही शक्तिहीन क्षमाशीलता धारण करने की एक वैकल्पिक सभ्यता विकसित कर ली थी हमने, और खुद को पता नहीं क्या क्या घोषित करते रहते थे।

सदियों के बाद आज वह स्थिति आयी है जब खुद सनातन का हिस्सा होने पर गर्व होने लगा है। यदि श्री अयोध्या जी मे श्रीरामजन्मभूमि स्थल अब एक भव्य श्रीराममंदिर से आच्छादित हो चुका है तो यह ऐसा गर्व है जो आने वाली पीढ़ियों को सनातन से तो जोड़ेगा ही, इतिहास की दबी हुई ऐसी परतों को भी उजागर करने की शक्ति देगा, जिसका साहस इससे पूर्व हम खो चुके थे। यहां अपने राष्ट्रीय नेतृत्व की संकल्प शक्ति की चर्चा बहुत आवश्यक लगती है। वैसे भी मैं यह मानता हूँ कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी यदि कभी भी कुछ बोल रहे होते हैं तो उनके शब्दो

पर न जा कर उन्हें दूर तक डिकोड करने की जरूरत पड़ती है। यह हमारे प्रधान मंत्री की विशेषता ही है जो उनको विश्व पटल पर सनातन के महायोद्धा के रूप में स्थापित करती है। वस्तुतः श्रीअयोध्या जी से भारत का प्राचीनतम महान वह चक्रवर्ती युग अब आरम्भ हो रहा है जिसकी प्रतीक्षा सदियों से सनातन को रही है। यह प्रतीक्षा ही सनातन की सबसे बड़ी शक्ति भी है। भगवान श्रीराम का पूरा जीवन ही इस प्रतीक्षा का प्रमाण है। पहले प्रेम उसके आगे भक्ति और सबसे ऊपर प्रतीक्षा। जिसकी जितनी लम्बी प्रतीक्षा, राम उसके उतने निकट। इसके लिए श्रीरामचरितमानस अथवा बाल्मीकि रचित रामायण के एक एक पात्र को विवेचित किया जा सकता है। मनु और सतरूपा के तप से लेकर कौशल्या नंदन राम के अवतरण, अहिल्या का उद्धार, पिनाक के टूटने की प्रतीक्षा, परशुराम के राम से मिलने की प्रतीक्षा और यहां तक कि धर्म धुरंधर चक्रवर्ती महाराज दशरथ के परलोक गमन और कैकेयी को राम के निर्माण के लिए स्वयं को विधवा बना लेने की प्रतीक्षा। यहां तो असुर और असुरों के सर्वशक्तिमान प्रतिनायक भी श्रीराम के हाथों अपनी मुक्ति और उद्धार की प्रतीक्षा में मिलते हैं। यह प्रतीक्षा निश्चित रूप से प्रभु से प्रेम और भक्ति का चरम है। आगे की कथाओं में कोई स्वयं देख सकता है कि राम की प्रतीक्षा करते कौन लोग हैं और राम किनकी किनकी प्रतीक्षा में हैं।

22 जनवरी 2024 को सदियों की एक प्रतीक्षा समाप्त हो रही है। जिसके लिये भारत के महानायक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ग्यारह दिनों का अनुष्ठान उपवास रखा है। यह वर्तमान युग में सनातन की शिखर यात्रा की पावन शुरूआत है। प्रतीक्षा के लिए संकल्प जरूरी है। संकल्प के लिए नायकत्व चाहिए और आज का भारत इस परिवेश और पराक्रम के साथ विश्वपटल पर उदीयमान है। श्रीअयोध्याजी में श्रीराम जन्मभूमि पर श्रीराम के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के लिये प्रधानमंत्री का अयोध्या आगमन उनकी संकल्पशक्ति ही तो है। जिस सलीके से इतने गंभीर मुद्दे को उन्होंने सुलझाया, 05 अगस्त 2020 को कोरोना की महामारी के बीच इसकी आधारशिला रखी और उतने ही गर्व से अब मंदिर निर्माण के बीच वह प्राण प्रतिष्ठा के लिये श्रीअयोध्या जी आ रहे हैं। यह अभूतपूर्व है। सच मे यह नया भारत है। यह आयोजन नए भारत के निर्माण और सनातन संस्कृति के लिए वैश्विक गर्व का विषय है। यही है सनातन संकल्प। यही है राम की शक्ति। इसी शक्ति से नये भारत का उदय हो रहा है। यह मंगलमय है और स्वर्णिम भी। सशक्त नेतृत्व और सबल संकल्प के माध्यम से अब भारत अग्रसर है विश्वगुरु बनने के पथ पर। इस अवसर पर संस्कृति पर्व के इस विशेषांक के लिए अखिल भारतीय संत समिति के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती जी ने इस अंक के अतिथि सम्पादक का दायित्व स्वीकार किया इसके लिए संस्कृति पर्व परिवार उनके प्रति कृतज्ञ है। पद्म श्री के के मोहम्मद, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के आचार्य हिमांशु चतुर्वेदी, आचार्य वीनू पंत, आचार्य हेरम्ब चतुर्वेदी, प्रो प्रमोद दुबे जी , प्रो. राकेश कुमार उपाध्याय और ऐसे अनेक विद्वानों ने जो सहयोग किया है उसके लिए हम आभारी हैं। इस अंक में यह प्रयास रहा है कि जब आपके हाथ में यह पत्रिका पहुंचे तो आपको श्री अयोध्या जी के महात्म्य के साथ ही इसके इतिहास, संघर्ष, वैभव, परंपरा और प्रभु श्रीराम से संबंधित वह प्राथमिक जानकारी अवश्य मिल जाय जिसके बारे में जानने के लिए विश्व व्याकुल है। आज केवल भारत ही नहीं, विश्व श्रीराम के प्रेम में डूब गया है। पूरी पृथ्वी श्रीराम की जैसे प्रतीक्षा कर रही हो। दुनिया में स्थान स्थान पर मंगल आयोजन हो रहे हैं। श्री अयोध्या जी में केवल एक मंदिर नहीं बन रहा बल्कि विश्व को शांति, सद्भाव, प्रेम, करुणा , दया, क्षमा और नवसृजन का एक आधार मिल रहा है। विश्वगुरु भारत की इस पावन भूमि से प्राणिमात्र के कल्याण का यही संदेश पृथ्वी के कोने कोने में पहुंच रहा है। सर्वत्र मंगल का वातावरण है। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे श्री हनुमान जी ने पृथ्वी के वायुमंडल में राम नाम की धुन छेड़ दी हो। अद्भुत और अविस्मरणीय क्षणों का साक्षी होना सभी के लिए गर्व की अनुभूति है। ऐसा होना स्वाभाविक ही तो है। आखिर श्री राम जो प्रत्यक्ष पधार रहे हैं। इन्ही के लिए तो गोस्वामी तुलसीदास जी के स्वरूपें ब्रह्मर्षि बाल्मीकि गाते हैं_

श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की॥
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥

हे राम! आप वेद की मर्यादा के रक्षक जगदीश्वर हैं और जानकीजी (आपकी स्वरूप भूता) माया हैं, जो कृपा के भंडार आपका रुख पाकर जगत का सृजन, पालन और संहार करती हैं। जो हजार मस्तक वाले सर्पों के स्वामी और पृथ्वी को अपने सिर पर धारण करने वाले हैं, वही चराचर के स्वामी शेषजी लक्ष्मण हैं। देवताओं के कार्य के लिए आप राजा का शरीर धारण करके दुष्ट राक्षसों की सेना का नाश करने के लिए चले हैं। ऐसे श्रीराम जगत का मंगल करें। गोस्वामी जी के ही शब्दों में_

सीयराममय सब जग जानी, करहुं प्रणाम जोरि जुग पानी।।

जयसियाराम।।

संजय तिवारी

अयोध्या, राम, हनुमान और भक्ति

शिवप्रताप शुक्ल

(लेखक सनातन चिंतक और हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल हैं।)

भगवान राम का पूरा जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए यही प्रेरणा तो देता है। जितनी गहरी भक्ति, उतना गहरा प्रेम और उतनी ही बड़ी प्रतीक्षा। सृष्टि में सबकुछ इसी क्रम में है। मनु को इक्ष्वाकु चाहिए। इक्ष्वाकु को दशरथ चाहिए। दशरथ को राम चाहिए। विश्वामित्र को भी और अहिल्या को भी। शिव के धनुष को भी और विदेह की वैदेही को भी। निषाद राज गुह्य को भी और केवट को भी। बाल्मीकि एवं भारद्वाज जी को भी और शरभंग को भी। हनुमान को भी और शबरी को भी। सूर्पनखा, विराज, मरीचि, खर, दूषण और रावण को भी प्रतीक्षा है स्वयं की मुक्ति की। विभीषण को प्रतीक्षा है राम शरण की।

श्री अयोध्या जी इस सृष्टि की प्रथमपुरी। सूर्य वंश की इक्ष्वाकु से चली परंपरा के अधिनायक श्रीराम। श्री राम के अनन्य भक्त श्री हनुमान जी। इन तीनों के केंद्र में शक्ति। साक्षात शक्ति माता सीता और इनके कथा चरित्र के रूप में रचित अनगिनत रामायण। आज यह सभी संज्ञा और स्वरूप के साथ चर्चा में हैं। विश्व नई अयोध्या का निर्मित होता भव्य स्वरूप भी देख रहा और श्री राम के साथ के उन सभी चरित्रों का अति गहन अन्वेषण भी कर रहा। यह सनातन संस्कृति के पुनरुत्थान और स्थापना का नवीन युग है। महानायक नरेंद्र मोदी के यशस्वी नायकत्व का नया भारत है। 22 जनवरी 2024 का दिन विश्व में संस्कृति के इतिहास का वह स्वर्णिम आरंभ है जिसकी प्रतीक्षा सहस्त्राब्दियों ने की है। यह प्रतीक्षा अब प्रेम, भक्ति और आस्था के साथ आगे बढ़ने लगी है। यात्रा अविरल है।

इस सनातन यात्रा के हम सभी काल दृष्टा के रूप में इस सृष्टि में उपस्थित हैं तो यह हमारा सौभाग्य है। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से लेकर अब तक की इस यात्रा को बहुत निकट से भी देखने का अवसर मिला है। इस आंदोलन के युग नायकों के अनगिनत बलिदान और त्याग की कथाएं इतनी व्यापक हैं कि सभी को शब्द में बांध पाना संभव नहीं। 1528 से लेकर 22 जनवरी 2024 तक की यह गाथा कोई सामान्य घटना भर नहीं है। इतिहास के 40 युगों का यह सत्य है जो बहुत पीड़ा देता है। श्री अयोध्या जी के पुनरुत्थान और नवस्थापना की यह यात्रा जितनी भावुक करने वाली है उससे भी ज्यादा नए भारत को उत्साह से भर देने वाली है।

भारत सदा से ही सृष्टि को सृष्टि की दृष्टि से ही देखता रहा है। पश्चिम और अन्य आक्रमणकारी सभ्यताओं ने इस दृष्टा भाव को विचलित किया अथवा कोशिश की। सदियों तक एक धुंध छाई रही। बहुत कुछ पीढ़ियों तक या तो भूल गया अथवा याद नहीं आया। 2014 से 2024 के बीच बहुत कुछ पुनर्निर्मित होना शुरू हुआ। अब अयोध्या सामने है। सजी धजी अपनी संपूर्णता के साथ धर्मधुरंधर चक्रवर्ती सम्राट दशरथ की तरह। जिनकी प्रतीक्षा थी, वह पधार रहे।

याद कीजिए, राजकुमार राम जब बनवासी होकर माता सीता और भाई लक्ष्मण जी के साथ महर्षि बाल्मीकि के आश्रम पहुंचे तो महर्षि ने उनके पूर्ण स्वरूप को पहचान कर ही तो कहा था -

श्रुति सेतु पालक राम तुम जगदीश माता जानकी।
जो सृजति जग, पालति, हरति, रुख पाई कृपा निधान की।।

महर्षि बाल्मीकि के इस परिचय के बाद भला राम को जानने के लिए बचता ही क्या है। प्रेम और रामभक्ति में प्रतीक्षारत बाल्मीकि अपने राम से कितने परिचित है, यह इस तथ्य का प्रमाण है कि राम ही इस सृष्टि के प्राणतत्व हैं जिसको बिना अयोध्या के पाया भी नहीं जा सकता और जाना भी नहीं जा सकता।

भगवान राम का पूरा जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए यही प्रेरणा तो देता है। जितनी गहरी भक्ति, उतना गहरा प्रेम और उतनी ही बड़ी प्रतीक्षा। सृष्टि में सबकुछ इसी क्रम में है। मनु को इक्ष्वाकु चाहिए। इक्ष्वाकु को दशरथ चाहिए। दशरथ को राम चाहिए। विश्वामित्र को भी और अहिल्या को भी। शिव के धनुष को भी और विदेह की वैदेही को भी। निषाद राज गुह्य को भी और केवट को भी। बाल्मीकि एवं भारद्वाज जी को भी और शरभंग को भी। हनुमान को भी और शबरी को भी। सूर्पनखा, विराज, मरीचि, खर, दूषण और रावण को भी प्रतीक्षा है स्वयं की मुक्ति की। विभीषण को प्रतीक्षा है राम शरण की।

यह अद्भुत है। प्रतीक्षा, कहीं वन में, कहीं आश्रमों में, कहीं महलों में। इस क्रम को पूर्ण बनाती है भक्ति जिसको हनुमान जी के माध्यम से रामकथा के सभी गायकों और रचनाकारों ने रचा है। श्री हनुमान जी का प्रेम, उनकी भक्ति और प्रतीक्षा की उनकी अद्भुत यात्रा जब किष्किंधा से शुरू हुई तो आज तक, इस कलियुग तक अविरल, अविराम चल ही रही है। श्रीराम को माता जानकी से मिलाने

“भगवान राम का पूरा जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए यही प्रेरणा तो देता है। जितनी गहरी भक्ति, उतना गहरा प्रेम और उतनी ही बड़ी प्रतीक्षा। सृष्टि में सबकुछ इसी क्रम में है। मनु को इक्ष्वाकु चाहिए। इक्ष्वाकु को दशरथ चाहिए। दशरथ को राम चाहिए। विश्वामित्र को भी और अहिल्या को भी। शिव के धनुष को भी और विदेह की वैदेही को भी। निषाद राज गुह्य को भी और केवट को भी। बाल्मीकि एवं भारद्वाज जी को भी और शरभंग को भी। हनुमान को भी और शबरी को भी। सूर्पनखा, विराज, मरीचि, खर, दूषण और रावण को भी प्रतीक्षा है स्वयं की मुक्ति की। विभीषण को प्रतीक्षा है राम शरण की।”

> भगवान श्रीराम की कथा केवल एक कथा भर नहीं है, इसलिए आज की अयोध्या को भी केवल आज के परिदृश्य में देखना उचित नहीं। रामकथा स्वयं में ब्रह्माण्ड की रचना का लोक स्वरूप है। इसको पावन, पानी, अग्नि, आकाश और वायु जैसे पांच महाभूतों के रूप में ही देखा जाना चाहिए। राम स्वयं सूर्य से आते हैं। सीता स्वयं भूमिजा। हनुमान स्वयं पवन पुत्र। सीता स्वयं शक्ति। समुद्र स्वयं उपस्थित। अग्नि स्वयं प्रत्येक स्थान पर, रामजन्म की हवन अग्नि से लेकर रावण मुक्ति के अग्नि बाण तक।

से लेकर, विभीषण, अंगद, सुग्रीव, जामवंत, भरत आदि सभी से वह श्रीराम को मिलाते चलते हैं। राम के लिए प्रतीक्षा रत प्रत्येक को हनुमान जी या तो सीधे मिला देते हैं या श्रीराम और उस के बीच ऐसा संबंध बना देते हैं जिससे राम के राम तत्व को याचक अवश्य प्राप्त कर ले। श्री हनुमान जी के इस एक ही कार्य पर जितना लिखा जायेगा वह बहुत कम ही होगा।

राम को समझने के लिए हनुमान को समझना भी उतना ही आवश्यक है। बिना हनुमान जी को समझे राम तक पहुंचा नहीं जा सकता।

यदि आधुनिक और प्रचलित साहित्य में झांकेंगे तो दिखेगा कि श्रीहनुमान जी की क्षमताओं को आंशिक रूप से वायु से उनकी वंशावली के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, जो भौतिक और ब्रह्मांडीय दोनों तत्वों के साथ संबंध का प्रतीक है। समर्थ रामदास जैसे भक्ति आंदोलन की हस्तियों ने हनुमान जी को राष्ट्रवाद और उत्पीड़न के खिलाफ अवज्ञा के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। वैष्णव परंपरा के अनुसार, ऋषि माधवाचार्य ने कहा कि वायु विष्णु को उनके सांसारिक अवतारों में सहायता करता है, जो राम को हनुमान की सहायता के समान है। हाल के दिनों में, प्रतिमा विज्ञान और मंदिर पूजा के माध्यम से हनुमान की पूजा में काफी वृद्धि हुई है। वह अपने भगवान राम के प्रति प्रेमपूर्ण, भावनात्मक भक्ति के साथ शक्ति, वीरतापूर्ण पहल और मुखर उत्कृष्टता के मिश्रण का प्रतीक है, जो शक्ति और भक्ति दोनों का प्रतीक है।

जब अयोध्या, श्रीराम और इसके महात्म्य के साथ नवनिर्माण की चर्चा हो रही है तो यहां एक महत्व का आख्यान स्मृति पटल पर उभरता ही है। श्री अयोध्या महाम्य के आधिकारिक विद्वान जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी बताते हैं कि भगवान राम ने जब शरीर रूप समाप्त कर जब बैकुंठ की यात्रा शुरू की तों वह अपने साथ समस्त अयोध्या वासियों एवं तृण तक को साथ ही ले लिया लेकिन पांच लोग ऐसे थे जिनको वह साथ नहीं ले गए। इनमे से विभीषण जी को समुद्र के सौ योजन नीचे बसी लंका में एक कल्प तक राज्य करने की घोषणा के साथ उन्होंने स्थापित कर दिया। श्री जामवंत जी को द्वापर में कृष्णावतार तक प्रतीक्षा के लिए छोड़ दिया जिनसे कृष्ण के रूप में मणि प्राप्ति के समय उनकी मुलाकात हुई और जामवंत जी की पुत्री जामवंती से कृष्ण का विवाह भी संपन्न हुआ। एक पात्र द्वीमंद थे जिनको महाभारत काल में बलराम जी हाथों मुक्ति मिली। एक पात्र मंदक की मुक्ति भी महाभारत काल में ही हुई। अब बचे सबसे महत्वपूर्ण श्री हनुमान जी। श्री हनुमान जी इच्छा थी कि जब तक पृथ्वी पर सृष्टि में श्रीराम कथा होती रहेगी, वह पृथ्वी से नहीं जायेंगे। श्री हनुमान जी की इसी इच्छा के सम्मान में भगवान ने उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान दिया और आज भी श्री हनुमान जी यहीं रह कर श्रीराम कथा सुन रहे हैं। वही इस युग के अधिपति भी हैं।

यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं तत्र तत्र
कृतमस्तकंजलम् वैरावैरिपरिपूर्णालोचनं
मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

श्री हनुमान जी की उपस्थिति से हम सभी भलीभांति परिचित हैं। उनकी अनुभूति और कृपा सभी पा भी रहे हैं। यह सहज समझने वाली बात है कि श्रीराम जन्म भूमि आंदोलन के बाद आज की नवनिर्मित अयोध्या से श्री हनुमान जी का जुड़ाव कैसा होगा। अब यहां बात हो रही एक लंबे संघर्ष के बाद भारत के वर्तमान नेतृत्व अर्थात श्री नरेंद्र मोदी जी के नायकत्व और गृहमंत्री अमितशाह जी की रणनीति के साथ नया अस्तित्व प्राप्त कर रही वर्तमान अयोध्या की। बात है अयोध्या जी में निर्मित भव्य राम मंदिर की और इस युग के कल्पवृक्ष कहे जाने वाले श्री हनुमान जी की।

कथा और संदर्भ में पड़ेंगे तो आलेख बहुत लंबा हो जाएगा लेकिन वर्तमान की दृष्टि से इस संदर्भ को देखने का प्रयास करेंगे तो यह संकेत स्पष्ट है कि जब श्रीराम की यह नवीन विग्रह स्थापना हो रही है तो निश्चित रूप से

श्री हनुमान जी की दृष्टि कुछ अलग से देख रही होगी ही। यहां एक संशय स्पष्ट करना आवश्यक है कि राम शिव के आराध्य भी हैं। शिव, राम के आराध्य भी हैं। हनुमान जी शिव के भी पुत्र कहे गए और माता सीता ने भी उन्हें अपना पुत्र कह कर अष्ट सिद्धि नव निधि से संपन्न कर दिया। राम तो यहां तक कहते हैं कि इस पुत्र यानी हनुमान के ऋण से मैं ऋण मुक्त ही नहीं हो सकता। दशरथ पुत्र के रूप में बैकुंठ गमन के समय ही राम इस सृष्टि को हनुमान जी को सौप देते हैं।

भगवान श्रीराम की कथा केवल एक कथा भर नहीं है, इसलिए आज की अयोध्या को भी केवल आज के परिदृश्य में देखना उचित नहीं। रामकथा स्वयं में ब्रह्माण्ड की रचना का लोक स्वरूप है। इसको पावन, पानी, अग्नि, आकाश और वायु जैसे पांच महाभूतो के रूप में ही देखा जाना चाहिए। राम स्वयं सूर्य से आते हैं। सीता स्वयं भूमिजा। हनुमान स्वयं पवन पुत्र। सीता स्वयं शक्ति। समुद्र स्वयं उपस्थित। अग्नि स्वयं प्रत्येक स्थान पर, रामजन्म की हवन अग्नि से लेकर रावण मुक्ति के अग्नि बाण तक।

यह कथा प्रसंग है। इसको ठीक से समझने की आवश्यकता है। राम सृष्टि भी हैं और स्रष्टा भी। राम दृष्टि भी हैं और दृष्टा भी। राम विजित भी हैं और विजेता भी। राम आस्था भी हैं और भक्ति भी। राम भक्ति भी हैं और प्रतीक्षा भी। राम साक्षात धर्म हैं। राम स्वयं रस हैं। राम को न तो कहीं से आना है और न ही कहीं जाना है। वे सृष्टि से पूर्व भी हैं, वर्तमान भी हैं और भविष्य में भी हैं। राम से इतर कुछ है ही नहीं। ऐसे में स्वाभाविक रूप से कलियुग कल्प श्री हनुमान जी और सृष्टि पुरी श्री अयोध्या जी का आविर्भाव नहीं, नवनिर्माण की यह बेला है। यह नवावतरण है जिसमें भारत अपने निर्माता के आलोक में नव प्रकाश प्राप्त कर पृथ्वी के लिए नवसूर्य के रूप में स्थापना के लिए तत्पर हो रहा है। आसुरी वृत्तियों के पराभव की घड़ी है यह क्योंकि अपने राम को नव स्वरूप में पाकर हनुमान शक्तिमान हो उठे हैं। नवजामवंत ने हनुमान जी को पुनः उनकी शक्तियों से परिचित करा दिया है। अब वह प्रत्येक भारतीय, प्रत्येक सनातनी के हृदय में स्थान पाकर नवरचना में जुट चुके हैं। यह निर्मित हो रहा शुद्ध सनातन भारत ही विश्व के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाला है। श्रीराम और उनकी अयोध्या से यह शक्ति श्री हनुमान जी सभी में प्रवाहित करने के लिए तत्पर हैं। प्रेम और भक्ति के साथ आस्था की प्रतीक्षा एक नए पड़ाव पर है। यही कल्याण पथ है और रामराज की नवकिरण भी।

आइए स्वागत करें।

।। जयसियाराम।।

Special Article

Archaeology of Ramayana and Mahabharata sites

Padmashri
Dr. KK Muhammed

"However, the Marxist historians in an attempt to outsmart archaeologists came forward to deny the existence of pillar bases. None of these historians had visited Ayodhya during the excavation and their knowledge of archaeological techniques and excavation was scanty."

Former Regional Director, Archaeological Survey of India (ASI)

The emergence of archaeology as a scientific verifying tool to study both occidental and oriental epics has always fascinated archaeologists. The attempt of Heinrich Julius Schliemann, a German businessman turned scholar made such an attempt in 1871 to prove Hissarlik as Troy, the site mentioned in the Trojan War in the Greek epic Iliad written by Homer. This excavation created a stir in the academic world about the possibility of excavating the sites associated with epics to ascertain the historicity of the epics. (1)

Before this, in 1845 Austen Henry Layard had excavated Nimrud(Calah) the city founded by the Assyrian King Shalmaneser (1274-45) and Ashur Nasirpal (883-859). A reference in the Old Testament about Nimrud 'As a mighty hunter before the Lord' provided another turning point for the understanding and interpretation of archaeological evidence in the light of the ancient religious literature. (2) The excavation in 1850 at Kuyunjik also exposed the palace of the Kings Sennacharib and Ashurbanipal, consisting of 80 rooms (1650x794ft) lined with colossal figures of winged bulls weighing 9 to 27 tons. (3) The discovery of the flood tablet by Mr George Smith in 1872, among the clay tablets excavated by Leonard Wooley at Ur in Mesopotamia, added another dimension to archaeology and Biblical literature. The fact that it contained the flood story of Gilgamesh, a mythological hero of Sumeria was exactly like the Biblical flood story of Noh whetted the appetite of the archaeologists for further research. In all these works the archaeologists were careful not to accept anything that was supernatural and superhuman.

Although India has two important epics Ramayana and Mahabharata, no attempt was made to ascertain their historicity in the light of the archaeological excavation till 1950. The credit goes to Prof BB Lal, the former Director of the Archaeological Survey of India, for taking the bold initiative of proposing the exploration and excavation of the

Mahabharata sites. He not only explored and excavated all the sites such as Hastinapura, Ahichatra, Kampil, Mathura, Kurukshetra, Bairat, Barnawa, panipat, sonipat, Indrapat and Tilpat and found out that the earliest pottery in most of the sites is Painted Grey ware. The conclusive proof for the PGW hypothesis came from the 'flood layer' of Hastinapura which forced the refugees to shift from Hastinapura to Kosambi, near Allahabad. In a meticulous excavation, Prof Lal could not only excavate the flood layer but also correlate it with a hymn in Matsya/ vayupuranawhich reads as under:

Phot, A, Hasthinapura mound excavated by BB LalS

"Gangeaapahrite tasmin nagare nagasah Tyakta Nchaksur Nagaram kausambeyam sa nivatsayati."

When the city of Nagasahvaya(Hastinapur) is flooded by Ganga, Nichaksu will abandon it and dwell in Khaushambi.

Subsequent excavation at Khausmbi proved the veracity of this hymn as degenerated variety of PGW was reported from the excavation.

The recent spectacular discovery of chariots, wooden coffins, copper swords, helmets, etc at Sinauli in 2018 by Dr Sanjai Manjul, although provided the archaeologist with a new angle of associating OCP with Mahabharata, the extremely rudimentary nature of the material culture at OCP sites such as Saipai, Atranjikhera, Nasirpur, Bisauli, Jhinjana, Lalqila, Hastinapura and Ahichatra, do not support such an interpretation. Moreover, most of the OCP sites are not in any way associated with Mahabharata and the heroes mentioned in it.

In 1976-77, BB Lal took up a project titled 'Archaeology of Ramayana sites which explored and excavated Ayodhya, Sringaverpur, Bharadwaj Ashram, Nandigram, and Chitrakoot, etc. (5) Before this in 1969-1970 Prof AK Narayan of Benares Hindu University had taken up the excavation at Ayodhya and dated the earliest antiquity of the site to early 17th century BCE.

The present author was a member of the excavation team of prof. Lal and camped in an inn in the immediate vicinity of the Ram Janam Bhumi. As a prelude to the excavation, an exploration of the periphery of the site was conducted including the inside of the Janam Bhumi Mosque. On inspection, it was found that the mosque was supported by twelve temple pillars of 11-12 th, century. Purna Kalasha, one of the 'Ashtamangala chinnas'(eight auspicious symbols) had been carved on it, as is the case in all the Gujjar Pratihara temples of the period. It also had a few figures of badly mutilated Hindu Gods and Goddesses also. The best example is Quwat ul Islam Mosque, by the side of Qutb Minar where even now one can see plenty of such temple pillars with Hindu symbols carved on them. It includes not only Purna kalashas and kirthi mukhas of shiva but also a number of mutilated Gods and Goddesses on the pillars and brackets. There is an Arabic inscription on the right side of the eastern doorway of the mosque about the demolition of temples and the conversion in to Quwat ul Islam Mosque.

Photo, B, One of the temple pillars inside the mosque carved with Purna kalasha, Courtesy, BB Lal.

Phot, C, one of the brick bases excavated beneath the Babri Mosque, courtesy, BB Lal

As the mosque was standing Prof Lal excavated the site, on the western side behind the Qibla wall and also on the southern side beyond the structure. It exposed pillar bases, just 50 centimeters below the surface, made of bricks and brickbats which enabled the temple pillars, to stand properly on them. The pillar bases were tolerably larger than the bottom part of the pillars which was necessary to support the structure. (60) A few floor levels made of lime mixed with brick jelly was also exposed. Dr. Lal did not highlight the discovery of the pillar bases, below the mosque, as he was excavating the site to study the cultural sequence of Ayodhya in a scientific way and not to raise controversial issues to gain popularity and create fissures in the society.

However, the Marxist historians in an attempt to outsmart archaeologists came forward to deny the existence of pillar bases. None of these historians had visited Ayodhya during the excavation and their knowledge of archaeological techniques and excavation was scanty. When they were confronted with the photographs of the pillar bases taken during the excavation and the pillars inside the temple which was still existing (the mosque was destroyed in 1992) they were tongue-tied and badly exposed. On 15.12.1990 the present writer came up with a press statement in Indian Express confirming the excavation of the pillar bases behind the mosque which was a severe blow for the Marxists. My statement said,

'I can reiterate this (the excavation of the pillar bases) with greater authority- for I was the only Muslim who had participated in the Ayodhya excavations in 1976-77 under Prof Lal as a trainee in the School of Archaeology. I was at the Hanuman Garhi site, but I have visited the excavation near the Babri Masjid and seen the excavated pillar bases. The JNU historians have highlighted only one part of our findings

Photo, D, Vishnu Hari Shila phalak inscription. Courtesy, Meenakshi Jain.

while suppressing the other. I often wondered why Prof. Lal was keeping quiet about it while the JNU group went on a publishing spree…….. Ayodhya is as holy to Hindus as Mecca and Madina is to Muslims. Muslims should respect the sentiments of millions of their Hindu brethren and voluntarily hand over the structure for constructing the Rama temple'. Since the letter was published by Indian express with my full address and designation not to give room for authenticity, the machinations of the Marxists were once more exposed and their publishing spree came to a grinding halt.

In the din and clatter for the possession of Janmasthan, the controversial mosque was destroyed by karsevaks which was condemned by all right-thinking citizens. One of the important antiquities that came to light after the demolition of the Babri mosque was a revealing stone plaque with Devanagari script. It was embedded in one of the walls of the mosque. It fell down while the demolition was in progress. Prof Ajai Mitra Shastri, a specialist in Epigraphy and Numismatics, identified it as Vishnu Hari Shila inscription, written in chaste classical Nagari script of eth eleventh and twelfth century AD. He read it as 'that this temple, built with heaps of stone and beautified with a golden spire, was constructed in the temple city of Ayodhya, situated in Saketa Mandala. Vishnu is the destroyer of Bali and dasanana (ten-headed Ravana).' When it was referred by the Hon Court to Dr. KV Ramesh, the former Chief Epigraphist of India, he also dated it to the 12th century, on the palaeographic ground and found the name of Govindachandra of Gahadvala dynasty, who ruled from 1114-1145. (7) This inscription was another unassailable proof of the existence of the temple before Babri Mosque.

The Marxist historians came with various opinions, although none of them had expertise

in epigraphy. The initial attempt was to discredit it as a fake inscription planted by the VHP and their camp followers. When that was not supported by the academic fraternity they resorted to another gimmick. Mr D. Mandal, a Marxist historian sat on the fence and said that the inscription may or may not be a fake one and if it is the right inscription, it does not speak about the temple at Babri site, but it should be looked for, somewhere else in Ayodhya. (8) Sitaram Roy, another scholar from their group, who has no knowledge of epigraphy dated it to the 18th century. But when he was confronted with its decipherment by two living authorities on epigraphy, Dr Ajai Mitra Shastri and Dr KV Ramesh, he confessed that he had not seen the full photograph of it.(9)

Initially, Irfan Habib declared it as an inscription, originally belonging to some private collection but cleverly planted by VHP to misguide the public. When that argument did not attract traction, he revised his opinion and asserted that it is not from the private collection but the 'Treta ka Thakur' inscription from the Lucknow Museum, stolen and planted at the demolition site, by VHP, to hoodwink the general public. But unfortunately for Irfan Habib, the confirmation of the Lucknow Museum that the 'Treta ka Thakur' inscription, alleged to have been asserted by Irfan Habib, as stolen and planted by VHP, is in their safe custody, completely exposed the Professor of Emeritus of AMU'. (10) This Professor is in the habit of resorting to such gimmicks with impunity.

On 18th June 1992, while the land in front of Baburi masjid was levelled up, several architectural members associated with temples such as amalaka and chadya jala were encountered. While Chadya jala is used for constructing shikhera, the amalaka is the crowning member of the temple, just below kalasha. With the help of these two parts, one can reconstruct the upper part of a North Indian temple. The list prepared and submitted to the Hon Court by Dr. Rakesh Tiwari, Director, UP State archaeology, included 263 antiquities, associated with the Hindu temples. (11) With every passing day, strong evidence, in favour of the temple, below the Masjid was coming out which naturally embarrassed Marxist Historians.

The direction of the Hon High Court on 5th March, 2003 to the Archaeological Survey of India to undertake excavation to ascertain 'whether there was any temple/structure which was demolished and a mosque was constructed on the disputed site' created much confusion in the Marxist group.

Consequently, a GPR Survey (Ground Penetrating Radar Survey) conducted by Tojo Vikas International, a Canadian Company, on 17th March 2003, indicated that there are ancient structures below the mosque. This caused much anxiety in the dovecot of the Marxist group. What is the nature and size of the structures below the mosque? Only an excavation would reveal. The Aligarh Historians were now restless because they had earlier declared that the Babri mosque was built on virgin land and there was nothing below it. But now GPR Survey was sending them wrong signals and proving them wrong.

The High Court's order on 5th March 2003, to the Archaeological Survey of India, to excavate the site and determine, whether there was any temple below the Babri Masjid, came as another rude shock to the Marxist group. On 10th, March 2003, Irfan Habib and others realizing the fact that the excavation would expose them fully, tried to make one feebler attempt, to stop the excavation at any cost on various flimsy grounds. In their panic reaction, they questioned the ability and impartiality of

the ASI to conduct such a scientific excavation. Indirectly he was painting all the archaeologists of the Archaeological Survey of India as Hindu chauvinists. The medieval historian, who had no training in archaeology, had the arrogance to question the competence of the Archaeological Survey of India, the Premier Institution of the country.

Now they wanted to stop the excavation at any cost. The inevitable was happening closer than what they had expected. Generally, the Aligarh Marxists and I are at daggers drawn. In their frustration and as a last attempt, they pressed Saiyid Zaheer Husain Jafri, a former student of Irfan Habib and now Professor of Delhi University, to talk to me to find out ways to get the excavation stopped. At that time, I was posted in Agra as Superintending Archaeologist. When Jafry contacted me over the phone, I informed him that nobody could stop it, as the excavation is as per the directions of the Hon High court. I further told him, in the excavations under Prof Lal, I was there in the team and seen the temple remains under the mosque. Reminding him about my press statement to this effect in 1990, I requested him to join the country in settling a problem that has been troubling it for the last many years. When Dr Jafry found me firm in my stand, he did not further continue the discussion. It appeared to me that he was speaking to me as per the instruction of some other person. This panic reaction was an implicit admission of the possibility of getting Hindu structures below the mosque.

It was quite a U-turn and a full reversal from the earlier stand of the Marxist group says Dr. Meenakshi Jain, the Professor of History, at Gargi College. Earlier their stand was that the mosque was built on virgin and vacant land. If the excavations of the site would bring out temple remains below the mosque, which now seems to be sure that would further seal the fate of Marxist historians. Hence they started shifting the goalposts according to their convenience.

As per the court order, the Archaeological Survey, undertook the excavation, under the veteran Archaeologist Dr. BR Mani, assisted by an able team of archaeologists and technical staff. Between March 12th and August 7th, 2003, the team excavated a total of 90 trenches. Dr. BR Mani, known for the meticulous care and precision with which he excavates, has explained under what adverse conditions he and his team had to work.

The excavation exposed more than fifty brick bases in seventeen rows, suggesting that the demolished temple was not ordinary, but a huge one. It may be recalled that during the excavation of BB Lal, only a few temple pillar bases were exposed. The huge structure excavated by Dr. BR Mani ran in North-South and East-Wedirections, with a minimum dimension of 50x30m. The temple brick bases in the central part could not be exposed, as Ram Lalla was enshrined there. However, recently in May 2020, while the ground was being leveled, after transplanting Ram Lalla, several temple pillars, idols, and Shivalingas were again reported, confirming the earlier discovery. The five feet Shivalinga, seven pillars of black stone, and broken idols, further strengthened the argument in favour of the temple. The Makara pranala, (Crocodile faced gargoyle) for draining out Abhisheka Jala (sacred water poured over the deity) exclusively used in temple architecture was another conclusive proof in favor of the existence of an earlier temple. Several other temple architectural members, also emerged one after the other from the excavated trenches. Carved architectural members with foliage patterns, amalaka, door jamb with semi-circular pilaster, broken octagonal shaft of black schist

pillar, lotus motif, and circular shrine having pranala were all, irrefutable evidence of the presence of a temple below the mosque.

Photo,E, Makara-pranala, the gargoyle of the temple to drain out jala, courtesy, Meenakshi Jain.

Photo, F, A richly adorned lady figure of Sunga period from the Janma Bhumi site. Courtesy, Meenakshi Jain.

Phot, G, An apsidal temple from the Janma bhumi site, courtesy, Meenakshi Jain.

The way the Marxist historians opposed the ASI report submitted by Prof Lal and Dr. BR Mani, showed not only their lack of experience in understanding the archaeological strata but also a hardened mind-set not to accept anything new. They went to the extent of saying that brick bases were not original ones, but fabricated by the ASI officials. The simple question is, how could one fabricate, while everything is being recorded with videography, under the surveillance of independent judicial members, appointed by the Honourable Court? Besides the Judicial Members, the Babri Masjid Action Committee, Members and their experts and lawyers also oversaw everything very minutely. If fabrication was going on, why didn't they stop it at that time? As a measure of extraordinary precautions to make excavation free from all types of manipulations, fifty-two Muslims were included in the team of one hundred and thirty-one labourers. When all such precautionary measures are in place, how does one manipulate the data?

The discovery of a circular temple of 10th century, with a pranala on the north, for draining out the water was interpreted by Babri experts, as a Buddhist stupa without knowing the fact that stupas are solid structures, whereas,

this is a circular temple, with a hollow space in the Centre, like Shiva temples of Chandreh, Masaun and Indore all in Madhya Pradesh. Similar temples made of brick are found in Kurari and Tindauli in Fatehpur district. Most of the Chausat yogini temples like Dudhai in Jhansi, Mitauli in the Morena and Bheraghat in Jabalpur are also circular temples. I carried out a lot of conservation works in the last two temples and both of them are now pilgrimage and tourist centers.

Moreover, Baburi experts were unaware of the fact that pranala is never part of a stupa but an essential part of a temple. And that too, this pranala was oriented towards North, as is mandated by Hindu temple architecture. Where ever the holy rivers take a turn towards North that is a holy place in Hinduism. Holy places like Gangotri, yamunotri, Hardwar, Lakshman Jula, Prayag and Kashi etc. are the prominent places where Ganga and Yamuna are taking a turn towards the north and it is known as Uttara Vahini. Unable to find support from any corner in the face unassailable evidence coming from scholars like Dr BR Mani, there was another losing attempt to prove that it was a Muslim shrine. Everything that ends in the mosque was the best form of excavation for them.

The discovery of a wall and three niches at the site were interpreted by the ASI as temple remains based on associated finds of terracotta images and the Babri group claimed them as qanati Mosque or idgah mosque. During the cross-examination when it was pointed out that Babri Action Committee has not made any claim for the idgah and had asserted then that the Baburi mosque was standing on virgin land, the Aligarh experts had to cut a sorry figure. Dr Meenakshi Jain sums up the embarrassing condition of Babri experts, in her book, Rama & Ayodhya, 'The court took cognizance of the shifting stance of the Pro Baburi archaeologists. Initially, they claimed that the disputed structure was constructed on a spot that was neither a place of worship, nor the site of a previous Hindu religious structure, nor was there any evidence to associate it with the birthplace of Lord Rama. 'However, as the excavation progressed, a marked change in the approach of the plaintiffs became evident'. Some archaeologists, appearing on behalf of the plaintiffs (Baburi Masjid Action Committee) tried to 'set up a new case' that there appeared to be an Islamic structure, beneath the disputed structure. (12) It was one of the strongest judicial indictments on the integrity of an academic group.

The excavation also threw up a number of terracotta objects of humans, animals, kirthimukhas, divine couples, lady figures, figures of cobra, horses, elephants, tortoises, and crocodiles. (62 human figures and131 animal figurines and a carved yakshi). In short, all the items recovered from the excavation conclusively proved that there was a temple at the Baburi site before the construction of the mosque. Keeping any such figures in the mosque is prohibited in Islam. How do they then explain the presence of such terracotta images and sculptures, in such large numbers on the premises of a mosque?

The archaeological evidence presented by the Archaeological Survey of India in favour of the temple was so overwhelming that the Honorable High Court was left with no other choice but to give the entire disputed land to the temple party. Still, in the spirit of accommodating all the contending parties, the Hon Court in its order dated, 30th September 2010 divided the property and tried to find out a solution to the nagging problem. But the judgment of the High court satisfied none.

Consequently, the issue was taken up in the

Hon Supreme court of India and as the final days of arguments in October- November 2019, were drawing closer, I knew the Marxist Historians headed by Irfan Habib would come out with some press statement to create confusion. At this juncture I gave a statement to Kumar Shakti Shekhar, in Times of India, describing in detail, the temple remains I had seen in the 1976-77 excavation and the large volume of evidence provided by the excavation conducted under Dr BR Mani in 2003.

In the meanwhile, a concerted attempt was in progress, to paint the excavation report presented by Dr BR Mani, as communally prejudiced and as such should not be accepted. Their earlier stand was that the ASI was not competent to excavate Ayodhya. In my statement, I defended the excavation report fully and said that the report is not an ordinary report which could be rejected by the Court but it is a 'Court Commissioner's Report' as the ASI had conducted the excavation, as per the order of the Hon High Court. Hence the report should be accepted in totality.

Hon Supreme court of India and as the final days of arguments in October- November 2019, were drawing closer, I knew the Marxist Historians headed by Irfan Habib would come out with some press statement to create confusion. At this juncture I gave a statement to Kumar Shakti Shekhar, in Times of India, describing in detail, the temple remains I had seen in the 1976-77 excavation and the large volume of evidence provided by the excavation conducted under Dr BR Mani in 2003.

I also argued that four Muslim officers of the Archaeological Survey of India, namely, Dr Ghulam Sayyidain Khawaja (Director, Arabic and Persian Epigraphy) Dr Atiqul Rahman Siddiqui (Former Superintending Archaeologist, Agra) Dr Afsar Adil Hashmi (Former Dy Superintending Archaeologist, Bhopal) and Dr Zulfiqar Ali (Superintending Archaeologist Chandigarh) were co-authors of the excavation report submitted by Dr BR Mani. The storm it unleashed in the religious, political and social spheres were phenomenal. This unknown fact, known to officers of Archaeological Survey of India only, took the wind out of the sail of the Communist rhetoric and the accompanying communal propaganda. Now it was clear to them that it is a gone case and their communal propaganda cannot whip up the communal frenzy.

It was a new revelation for liberals and Muslim intellectuals that the report was co-authored by four Muslim archaeologists. Several people telephoned me to verify the facts. The Aligarh Communists for the first time came to know that their Communal rhetoric is not yielding the earlier dividends. Muslim intelligentsia has started seeing through their nefarious and divisive games.

Thus, as a rejoinder to what I had published in Times of India, the statement Dr Nadeem Rizavi, Chairman Deptt of history, AMU and a close confidant of Irfan Habib, came that KK Muhammed was not a member of the excavation team headed by Prof Lal in 1976-77. He said before making this statement he had scrutinized my documents in AMU, and in 1976-77 I was in Aligarh Muslim University. While serving the AMU, how could I participate in an excavation conducted by Prof Lal?

I was in the School of Archaeology when I participated in the excavation at Ayodhya under Prof Lal in1976-77. I joined the Aligarh Muslim University, the Archaeology section as Technical Asstt, in August 1978 only. This is a matter of records and anyone can get all this information under the right of Information (RTI) also. But

by manipulating, mixing and confusing data, Dr Nadeem, who had earlier on two occasions also resorted to such substandard tricks, tried to argue that I was not a member of the excavation team of Prof Lal. Sometimes the dignity of the teaching profession is seriously undermined the presence of persons in Academic institutions. As per journalistic ethics, the Times of India should have sought my clarification, before publishing such a defamatory statement against me. In a clear cut violation of the all moral and journalistic ethics, the Times of India tried to give credence to the view that I was not part of the excavation in 1976-77 under Prof Lal.

Prof Lal was not in India as he had gone to America. I contacted him via email with the help of Ms Neera Mishra of Draupadi Trust and apprised him the content of the combined efforts of Times of India and Marxist historians. Prof Lal immediately wrote back to Kumar Shakti Shekhar, who had filed my original story that KK Muhammed was very well a member of his excavation team in the year 1976-77. Shakti Shekhar, as part of his research work, contacted the living members of the team under Prof BB Lal, such as Rajnath kaw, the Chief Photographer, ASI, Ashok Kumar Pandey, the former Superintending Archaeologist and Rama Kant Chaturvedi, the former, Director, Municipal Museum, Gwalior. All of them confirmed my presence throughout the excavation in detail and spoke about the various aspects of the Ayodhya excavation. Although Shakti Shekhar contacted Shri Jayaram Ramesh, the former Union Minister, in the Congress Ministry, as his wife Shmt Jayashri Jayaram was also a member of the team, Shri Jayaram Ramesh informed Kumar Shakti Shekhar that Mrs Jayashri passed away a few months back. Times of India had no other way but to publish our version with equal prominence which once more exposed the Marxist historians of AMU.

In Kerala, Madhyamam, a newspaper associated with the Jamat I Islami, published the version of the Aligarh Marxists with all the frills. Apart from Nadeem Razavi's version, it also published a separate independent version from Irfan Habib himself. In a bizarre statement, he categorically asserted that KK Muhammed had no association with Ayodhya at all, what to talk of participating in the excavation. Later on, the Jamat newspaper published a corrigendum that I had participated in the Ayodhya excavation under BB Lal as a trainee when they knew that I would file a defamation case against them.

References -

1) Warwick Bray and David Trump, The penguin Dictionary of Archaeology, Middle Sex, 1975, p.238.

2) Ibid, p.162; The Catholic Biblical Association of Great Britain, The Holy Bible, revised standard version, 1957, p.10.' Like Nimrod, a mighty hunter before the Lord. The beginning of his Kingdom was Babel, Erech and Accad, all of them in the land of Shinar. From that land he went to Assyria and built Ninev and Calah.'

3)Werner Keller, The Bible as History, second revised edition, Newyork,1981, p.33; The Penguin Dictionary of Archaeology, Op. cit.p.163. The city spans over an area of 1900 acers and the most important discoveries were two clay libraries found in the palaces.

4)BB Lal, Historicity of Mahabharata, Evidence of Literature, Art7 Archaeology, New Delhi,2013, pp.60-85.

5)BB Lal, Rama, His Historicity, Mandir and Setu, Evidence of Literature, Archaeology and other sciences, new delhi,2008, p.49.

6)Ibid, p.23.

7)Meenakshi Jain, Rama & Ayodhya, New Dehi2013, pp.186-190.

8) Ibid, pp .193.

9) Ibid, Pp.192-3.

10) Ibid, pp.196-200.

11) Ibid, pp. 186-87.

12) Ibid, pp.220-221.

पद्मश्री के के मोहम्मद जी को जय सियाराम

श्री अयोध्या जी में श्रीराम जन्मभूमि के उस समय के विवादित स्थल के उत्खनन में शामिल रहे एएसआई के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक पद्मश्री के के मोहम्मद जी का अनुमान और विश्वास है कि श्री अयोध्या जी में विवादित ढांचे से कई गुना विशाल श्रीराम जी का मंदिर पहले स्थापित रहा होगा। वह कहते हैं कि करीब 48 वर्ष पहले जब मैं 1976 में विवादित ढांचे का सर्वे करने गया, तो वहां पहली नजर में देखने पर ही पता चल गया था, यह मंदिर ही है। हालांकि कई लोगों ने इस तथ्य को झुठलाने के भरसक प्रयास किए, अन्यथा राममंदिर का मसला 2019 के बजाय वर्षों पहले ही सुलझ गया होता। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के उत्तर के क्षेत्रीय निदेशक रहे और विवादित ढांचे के सर्वेक्षण से जुड़े पद्मश्री केके मोहम्मद जी ने बहुत ही खुश होकर संस्कृति पर्व के अतिविशिष्ट अंक चक्रस्थ अयोध्या के लिए अपना सबसे महत्वपूर्ण शोध पत्र सचित्र प्रकाशित करने के लिए उपलब्ध कराया है जिसके लिए संस्कृति पर्व परिवार उनका सदैव ऋणी है। वह बताते हैं कि श्री अयोध्या जी में मिले हर प्रमाण स्वयं गवाही दे रहे थे कि मंदिर विवादित ढांचे से कई गुना विशाल रहा होगा। वह बहुत खुशी से बताते हैं कि प्राण प्रतिष्ठा यज्ञ में शामिल होने के लिए मुझे भी निमंत्रण मिला है। बेहद खुश हूं। मैंने अयोध्या में काम करने के दौरान सर्दी, गर्मी, बरसात में लोगों को आते देखा है। वहां तब मंदिर भले ही नहीं था, लेकिन आस्था अद्भुत थी। यह 500 साल की लड़ाई थी, जो अब समाप्त हुई है। भारतीयों के दिल पर आघात था, अब अच्छा लग रहा है। व्यक्तिगत रूप से यही कहूंगा, इस ऐतिहासिक, विराट काम के लिए प्रभु श्रीराम ने मेरे गिलहरी योगदान के लिए मुझे चुना। मेरा जीवन धन्य हो गया।

1976 में प्रो. बीबी लाल के नेतृत्व में हमारी दस लोगों की टीम अयोध्या पहुंची। यहां विवादित ढांचे के पास गए तो एक पुलिस वाले ने अंदर जाने से रोक दिया। उससे कहा कि हमलोग छात्र हैं और शोध के लिए आए हैं। बस इतना पता लगाना है कि यह किस जमाने में बना। उसके बाद अंदर जाने दिया गया। अंदर जाने पर 12 पिलर सामने से ही ऐसे दिख रहे थे कि ये 12वीं शताब्दी के हों और उन पर मंदिरों से जुड़े साक्ष्य मौजूद हैं। देवी-देवताओं के चित्र भी थे, मगर उनके चेहरे खराब हो गए थे। मगर मंगलाकलश उन पर छपे हुए थे। पहला प्रमाण तो यही सामने था। इसके बाद अहम प्रमाण 2003 के उत्खनन में डॉ. बीआर मणि के निर्देशन में मिले। मंदिर में होने वाले अभिषेक से जुड़ी महत्वपूर्ण वस्तुएं थीं। शिलालेख मिले, नींव में 90 पिलर मिले, जिन पर कभी विशाल मंदिर खड़ा रहा होगा। 216 से अधिक टेराकोटा की मूर्तियां मिलीं। इन सभी की जांच के लिए हमारी टीम गई और पता किया कि यहां पर क्या है। मगर 1990 में वामपंथी इतिहासकार इरफान हबीब, रोमिला थापर आदि ने अखबारों में बयान दिया कि अयोध्या में विवादित ढांचे के नीचे कुछ नहीं मिला है और ढांचा सपाट जमीन पर खड़ा है। इसके पीछे तर्क यह दिया कि पुरातत्वविद प्रोफेसर बीबी लाल को भी वहां उत्खनन में ऐसा कुछ नहीं मिला है। इसलिए यह बात गलत है कि ढांचे के नीचे मंदिर के प्रमाण हैं। दूसरे दिन बीबी लाल जी ने मीडिया से कहा कि आपके यहां गलत तथ्य छपे हैं। वहां मंदिर होने के प्रमाण मिले हैं। इसके बाद बीबी लाल जी अकेले पड़ गए और सभी उन्हें झुठलाने लग गए तो मैंने सोचा यह गलत हो रहा है। तब मैंने मीडिया में कहा कि अयोध्या में हुई उत्खनन में मैं शामिल था। वहां मंदिर के प्रमाण मिले हैं, बीबी लाल जी सही बोल रहे हैं। मेरा बयान छपने के बाद जब हंगामा हुआ तो मेरी नई नौकरी थी। प्रोबेशन पीरियड में था। मुझे निकालने की तैयारी हो गई। दिल्ली बुलाकर काफी फटकार लगाई गई। मगर मैंने कहा कि मैं झूठ नहीं बोल सकता और अपनी बात पर कायम रहूंगा, भले नौकरी चली जाए। उस समय वरिष्ठ आईएएस एच महादेवन और मद्रास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर केबी रमन ने मेरी मदद की तो नौकरी तो बच गई, मगर मेरा ट्रांसफर मद्रास से गोवा कर दिया गया। अब जहां तक अयोध्या का प्रश्न था तो वैसे तो पर्याप्त प्रमाण मिल चुके थे। मगर सोचा गया कि और भी कुछ जगहों पर साक्ष्य जुटाने चाहिए तो हनुमान गढ़ी, मणिपर्वत, भरद्वाज आश्रम और चित्रकूट समेत कई जगहों पर खुदाई की गई। मणिपर्वत पर से भरत के प्रशासन चलाने के साक्ष्य मिले। इसके बाद तो अनगिनत साक्ष्य मिले, जिनसे यह स्पष्ट हो गया कि यहां राम मंदिर ही था। अयोध्या में हर जगह मंदिर के साक्ष्य मिल रहे थे। उत्खनन में कुल 137 मजदूर लगाए गए थे, जिनमें से 52 मुसलमान थे। 2003 में एक शिलालेख मिला। वह भी 11वीं 12वीं शताब्दी का था। उस पर लिखा था कि यह मंदिर भगवान महाविष्णु के उस अवतार को समर्पित है, जिसने बालि का वध किया। रावण का वध किया। इससे साफ हो गया कि यहां श्रीराम का जिक्र आ

रहा है। भगवान गणेश की भी मूर्तियां मिली थीं। घड़ियाल के आकार की प्रणाली (जलाभिषेक के बाद पानी बहाने वाला स्ट्रक्चर) पाई गई। टेराकोटा की मूर्तियों से साफ था कि मस्जिद में जीवित प्राणियों के चित्र नहीं बनाए जा सकते तो यह मस्जिद कैसे हो सकती है। मोहम्मद ने रिपोर्ट में कहा था-नक्काशियां इस्लामिक शैली की नहीं हैं। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में दावा किया था कि विवादित ढांचे की जगह पहले बड़ा मंदिर था। अयोध्या में उत्खनन के दौरान देवी-देवताओं की मूर्तियां तो नहीं मिलीं, लेकिन अष्ट मंगल चिह्न मिले, जो कि मंदिरों में ही पाए जाते हैं। 1976-77 में मंदिर-मस्जिद मामले में हुई जांच के समय वे टीम का हिस्सा थे। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि स्तंभों के ऊपर जो नक्काशियां मिली थीं, उनका इस्लामिक शैली से दूर-दूर तक रिश्ता नहीं था। यह एक और महत्वपूर्ण विंदु है कि मथुरा और काशी के मामले में भी उनकी राय स्पष्ट है। वह बताते हैं कि ये दोनों मामले कोर्ट में हैं। इसलिए अधिक टिप्पणी नहीं करूंगा। मगर मैं कहता हूं कि मुसलमानों के लिए जितना मक्का और मदीना महत्वपूर्ण है, उतना ही हिंदुओं के लिए श्रीराम का जन्मस्थान महत्वपूर्ण है। मथुरा-काशी है। इसलिए मुसलमानों को यहां मंदिर बनाने कि लिए खुद ही आगे आना चाहिए। ये हिंदुओं को सौंप दें और सभी विवादों को समाप्त करें। अब इसके बाद हिंदुओं को भी आगे नहीं बढ़ना चाहिए। अफगान आए थे, उन्होंने यह सब किया। इसमें वर्तमान मुसलमानों का कोई दोष नहीं। हिंदू-मुसलमान मिलकर देश को आगे बढ़ाने के लिए एक साथ काम करें। यही मेरी अपील है। यह नया दौर है। मुसलमानों को भी मिलकर रहना चाहिए। लड़ाई न करें। समझना होगा कि इससे अधिक नुकसान मुसलमानों का ही है। प्राण प्रतिष्ठा के दिन से ही नई उमंग, जोश के साथ आगे बढ़ें। देश के सभी लोगों को इस खुशी में शामिल होना चाहिए।

श्री अयोध्या जी में श्रीराम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर विशेष रूप से प्रकाशित हो रहे संस्कृति पर्व के चक्रस्थ अयोध्या इस अंक में पद्मश्री के के मोहम्मद जी के शोध पत्र को उन्ही के शब्दों में इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया।

- संपादक

संस्कृति स्वरूपा सीता धर्म विग्रह राम

डॉ. प्रमोद कुमार दुबे

यूरोपीय कल्चर की सौ वर्ष पुरानी आदर्शात्मक धारणाओं को उत्तराधुनिक विमर्श ने खारिज कर दिया है। यहाँ तक कि दो विश्व युद्धों के विध्वन्सों और जीव-जगत की भारी तबाही के आंकड़े दिखाकर आधुनिक ज्ञान- विज्ञान के गले में पहनाए गए विश्व उद्धारक के तमगे को भी उतार लिया गया। माना जाने लगा कि बीसवीं सदी के छठे दशक के बाद पश्चिमी कल्चर का शक्तिशाली विस्फोट हुआ और तब आर्थिक, राजनीतिक मूल्यों सहित मनुष्य का मनोविज्ञान तथा व्यवहार भी बिकाऊकल्चर के चपेट में आ गया।

लेखक प्रख्यात सनातन चिंतक और भारतविद् हैं। श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन से अबतक राष्ट्र जागरण के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं।

रामकुटी, सी-3115 ग्रीनफील्ड कालोनी, फरीदाबाद- 121010, फोन-8368930736, 9810780771

आधुनिक युग धर्माधिष्ठित त्रिवर्गीय संस्कृति से विमुख है, समोन्मुखी व्यापक प्रकृति से विमुख। आधुनिक मानसिकता काम और अर्थ में प्रवृत्त है। धर्म के विषय में आधुनिक मान्यता यह है कि धर्म उपदेशों का बन्धन है। विभिन्न धर्मों के उपदेश व्यक्ति को सामाजिक बन्धन से बाँध देते हैं, धर्मग्रंथों ने ही मनुष्य की मुक्ति को बाधित किया है। धर्म के विषय में यह विक्षुब्ध विचार यूरोप में तब आया, जब वहाँ के लोग प्रबुद्ध होने लगे, मतलब कि जब यूरोप में प्रबुद्ध काल आया, सुधारवादी विचारकों में आलोचना की बुद्धि सजग हुई।

वाल्मीकि ने लव-कुश को वेदत्रयी का विस्तार से ज्ञान देने के लिए सीता के महान चरित से परिपूर्ण रामायण का अध्ययन कराया- वेदोपबृंहणार्थाय तावग्राहयत प्रभुः (6.4. व. रा.)। काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायाश्चरितं महत् (7.4. वा.रा.)। रामायण का एक नाम सीताचरित भी है। वेद त्रयी को समझने- समझाने का माध्यम बना सीता का महान चरित। इससे ज्ञात होता है कि रामायण वैदिक संस्कृति का संवाहक साहित्य है, सीता द्वारा वेद त्रयी चरितार्थ हुई है और सीता वैदिक संस्कृति का मूर्तमान रूप हैं- क्षितिज पर उदित सप्तवर्णी इन्द्रधनुष के समान पृथ्वी से निकल पृथ्वी में स्थित हो जानेवाली लोक से लोकोत्तर तक व्याप्त सीता श्री विराट हैं- हमारी भू-संस्कृति। यही सांस्कृतिक बोध हमें मातृभूमि की ममता से जोड़ता है।

प्रथमा संस्कृति

शतपथ ब्राह्मण ने कहा है कि सामवेद और ऋग्वेद आदि में जिन- जिन तथ्यों का उल्लेख है, वे सभी वैदिक संस्कृति हैं- यानि सामानि यानि छंदसि एतयोरेव सा संस्कृतिः। अभिप्राय यह कि सृष्टि की दिक्कालिक संरचना में निहित त्रयी विद्या और उसमें अन्तर्भूत अव्यक्त ब्रह्म या कहें- त्रिगुणात्मक प्रकृति और उसमें निहित साम्यावस्था इन दोनों के युग्मन को संस्कृति कहा गया है। सृष्टि रूपी देव यज्ञ में दिक्कालिक त्रयी व्याप्त है इसीलिए संवत्सर (वर्ष) को प्रजापति का यज्ञ कहा गया- संवत्सरो यज्ञः प्रजापतिः (तै. ब्रा.) और प्रजापति को ही संस्कृति- संस्कृतिरेव प्रजापतिः (ऐ. ब्रा.)।

प्रजापति रूपी संवत्सर यज्ञ अर्थात वर्ष में दिक्काल की त्रयी और संस्कृति कहाँ है, इसका रामायण से क्या संबन्ध है ? चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि को वर्ष प्रतिपदा कहा जाता है। ज्यौतिष ग्रंथ बताते हैं कि ब्रह्मा जी ने चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को सूर्योदय काल में जगत की रचना की थी-

चैत्रे मासि जगत् ब्रह्माससर्ज प्रथमे अहनि।
शुक्लपक्षे समग्रं तत्तदा सूर्योदये सति।।

(कालमाधव, उपोद्घात)।

भगवान रामचन्द्र के प्राकट्य के विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है-

नौमी तिथि मधुमास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।।...
भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।

अर्थात चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को हमारे श्रीराम धराधाम पर अवतरित हुए। वर्ष प्रतिपदा के नौवें दिन राम नवमी मनाई जाती है। इन नौ दिनों में वसंत संपात की नवरात्रि संपन्न होती है। नौ की संख्या में तीन-तीन है। यही सृष्टि की दिक्कालिक त्रयी है। यह दिक्कालिक संरचना और अधिक सूक्ष्म है, और अधिक व्यापक है। इसी में यज्ञ रूप संवत्सर प्रजापति की संस्कृति सृजित और फलित होती है जिसे हम सीताराम के रूप में पूजते हैं। वाल्मीकि रामायण का शिल्प विधान त्रिपदा गायत्री पर आधारित है-

चतुर्विंशत्सहस्राणि श्लोकानामुक्तवानृषिः (2. 4. बा. वा.रा.)। रामायण में मूलतः चौबीस हजार श्लोक हैं ये श्लोक चौबीस अक्षरों वाले गायत्री मंत्र के एक- एक अक्षर पर सृजित हुए हैं- तपः स्वाध्याय निरतः से लेकर यामेव रात्रिं शत्रुघ्न पर्णशाला समाविशत्। ता मेव रात्रि सीतापि प्रसूता दारक द्वयम्।। तक। गायत्री को संवत्सर प्रतिमा कहा गया है, इसके तीन सवनों में चौबीस घंटे का अहोरात्रिक काल समाहित है।

स्पष्ट है कि यज्ञ रूप संवत्सर प्रजापति और उसकी प्रजा से संपूरित सतत विद्यमान रहनेवाली समोन्मुखी प्रकृति ही संस्कृति है। यही गायत्री छन्द में स्थित ब्रह्ममयी अविकृत सृष्टि है। यज्ञ पुरुष विष्णु विराट - यज्ञो वै विष्णु- (तै. ब्रा.) को ही प्रजापति कहा गया है और उनकी श्री विराट लक्ष्मी को संस्कृति। विष्णु और लक्ष्मी के लौकिक रूप है- सीताराम।

वैदिक दृष्टि में संस्कृति सर्वात्मका है- सियाराम मय सब जग जानी। यह संस्कृति बोध किसी कुनबे की रीति-रिवाज तक सीमित नहीं है। यह सार्वभौमिक है, इसका आधार प्रकृति है। इसी का एक परिचय है- आत्मानं संस्कुरुते। भारतीय धारणा की संस्कृति आत्मसंस्कृति है - सर्वात्मक संस्कृति, इसे सरलता से समझाने लिए कहा गया है कि भूख लगना प्रकृति है, छीन- झपट कर खाना विकृति है और मिल-बाँटकर खाना संस्कृति है। प्रकृति को विकृति से सुरक्षित करनेवाले मंगलमय प्रयत्न को ही संस्कृति कहा गया। ऋषि आत्मसंस्कृति के शिल्पन का संदेश देता है- आत्मसंस्कृतिर्वाव शिल्पानि (ऐ.ब्रा.)। आत्म संस्कृति के शिल्पन का उदाहरण है रामायण।

सीता के चरित में इसी समोन्मुखी सर्वात्मक त्रिगुणी मूल प्रकृति का निरूपण हुआ है अर्थात सीता त्रिगुणात्मक प्रकृति हैं, जो सृष्टि, स्थिति और संहार का कारण हैं-

उद्भवस्थितिसंहारकारणीं क्लेशहारिणिम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।

(रामचरित मानस)

गोस्वामी तुलसीदास ने सीता का परिचय देते हुए कहा है- जिनके भृकुटि विलास से जगत की उत्पत्ति हुई है, राम के वाम दिशा में वही सीता विराजमान हैं -

भृकुटि बिलास जासु जग होई। राम बाम दिसि सीता सोई।।
बाम भाग शोभति अनुकूला। आदिशक्ति सब विधि जगमूला।।

(रामचरित मानस)

श्रीमूर्ति माता सीता जगत का मूलाधार हैं। जैसे सूर्य से उसकी प्रभा अभिन्न है- प्रभामिव विवस्वतः, सीता राम से अभिन्न हैं, सूर्य की सविता और राम की सीता एक हैं, संस्कृति स्वरूपा सीता के वरेण्य हैं भर्ग स्वरूप धर्म विग्रह राम- रामो विग्रहवान धर्मः (अरण्य.वा.रा.)।

प्रथम धर्म

राम के स्वरूप में निरूपित धर्म अविरोधी धर्म है, विभिन्न प्रकार के धर्मों में तारतम्य स्थापित करनेवाला, परस्पर विरुद्ध प्रवृत्तियों में एकात्मभाव उत्पन्न करनेवाला धर्म-

अविरोधातु यो धर्मः स धर्मः सत्यविक्रमः।
विरोधिषु महीपालं निश्चित्य गुरुलाघवम्।।

(महा. वन.)।

राम की क्षत्रछाया में सबका स्वधर्म सुरक्षित है, विभीषण जैसे राक्षस, सुग्रीव सरीखे वानर, जामवंत सदृश्य रीक्ष, जटायु के समान पक्षी ही नहीं, प्राणिमात्र की समष्टि और समस्त महाभूत सुरक्षित हैं। यही अविरोधी धर्म पृथ्वी को धारण करता है, तपते सूर्य को धारण करता है, प्रवाहमान वायु को धारण करता है और यही सर्वत्र प्रतिष्ठा का आधार बनता है-

धर्मेण धार्यते पृथ्वीः धर्मेण तपते रविः।
धर्मेण वाति वायुश्च सर्वं धर्म प्रतिष्ठितम्।।

भारत में जिस धर्म बोध का विकास हुआ और जिसका निरूपण राम के स्वरूप में हुआ, उसकी पृष्ठभूमि में वैदिक धारणा है, यह कि सृष्टि देवों का यज्ञ है, देव यज्ञ को प्रथम धर्म कहा जाता है- यज्ञेन यजमयन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन (ऋ. 10.90.)। सृष्टि यज्ञ में प्रथम धर्म सतत विद्यमान है, इसे विष्णु कहा गया है। यज्ञोमय धर्म के अनुसरण में ही मानुषी धर्म संपन्न होता है- यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। इसी प्रथम धर्म के पोषक संस्कृति को विश्व की वरीयतम प्रथमा संस्कृति कहा गया- सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा (यजु.), जिसकी मूर्तमान स्वरूप हैं सीता और प्रथम धर्म के विग्रह हैं राम। प्रथम धर्म से सम्पृक्त मूल प्रकृति ही प्रथमा संस्कृति है।

ऐसे धर्म और संस्कृति की धारणा को प्रकृति की उपेक्षा करनेवाले आधुनिक विचारक क्या कहेगा- सेक्युलर या कम्युनल ? स्वयं विचार करे। हम तो तर्कातीत भाव से संस्कृति स्वरूपा राजराजेश्वरी सीता और धर्म विग्रह राजाराम को उपास्य मानते हैं, हमारी आस्था है कि सीती ही अपने संस्कृति स्वरूप में व्यक्त होकर पार्थिव जीवन का सृजन और पालन करती हैं, वही विशुद्ध त्रिगुणात्मिका मूलप्रकृति हैं, वही सविता रूप में वेद की त्रयीविद्या हैं- राष्ट्र जीवन की त्रिवर्गाधार हैं।

रामराज्य

संस्कृति स्वरूपा सीता और धर्म विग्रह राम से रामराज्य सृजित और फलित होता है, लोक रक्षित और सुखी होता है। उन्हीं से विछोह की दशा में क्रुद्ध होकर राम कहते हैं- हे पर्वत! इसके पहले कि मैं तेरी शिखरों के ध्वस्त कर दूँ, तुम मुझे कंचन सी काया और कांति वाली सीता को दिखा दो- तां हेमवर्णां हेमांगीं सीतां दर्शय पर्वत (अरण्य. वा.रा.)। जिस सीता रहित राम के प्रकोप से ग्रहों की गति रुक जाएगी, चन्द्रमा विलुप्त हो जाएगा, सूर्य और मरुद्गणों के तेज नष्ट हो जाएँगे, चारों ओर अंधकार फैल जाएगा, सारे जल स्रोत सूख जाएँगें, पेड़ पौधे लताएँ नष्ट हो जाएँगे, त्रिविध कालक्रम में गतिशील त्रिलोक समाप्त हो जाएगा (अरण्य. वा.रा.)। ऐसी सीता संपूर्ण सृष्टि ही तो हैं।

धर्माधिष्ठित त्रिवर्ग की संस्कृति का गायन करने के लिए ही आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण काव्य की रचना की, जिसमें जीव मात्र की रक्षा के लिए त्रयी संस्थापित की गई।

रिलिज़न और कल्चर

आधुनिक युग धर्माधिष्ठित त्रिवर्गीय संस्कृति से विमुख है, समोन्मुखी व्यापक प्रकृति से विमुख। आधुनिक मानसिकता काम और अर्थ में प्रवृत्त है। धर्म के विषय में आधुनिक मान्यता यह है कि धर्म उपदेशों का बन्धन है। विभिन्न धर्मों के उपदेश व्यक्ति को सामाजिक बन्धन से बाँध देते हैं, धर्मग्रंथों ने ही मनुष्य की मुक्ति को बाधित किया है। धर्म के विषय में यह विक्षुब्ध विचार यूरोप में तब आया, जब वहाँ के लोग प्रबुद्ध होने लगे, मतलब कि जब यूरोप में प्रबुद्ध काल आया, सुधारवादी विचारकों में आलोचना की बुद्धि सजग हुई। वास्तव में यह विचार रिलिज़न के विषय में दिया गया है। भारत में भी आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से अँग्रेजी शब्द रिलिज़न को धर्म का पर्याय समझा जाने लगा और संस्कृति शब्द को भी कल्चर के अर्थ में लिया जाने लगा। नतीजा यह हुआ है कि जब भी अपनी ज्ञान परंपरा में हमें कार्य करना होता है, अनुवाद से दग्ध शब्दों के मूलार्थ को स्पष्ट करना पड़ता है। संस्कृति शब्द के मूलार्थ को समझे बिना उसमें निहित त्रिवर्ग को जानना संभव नहीं है।

प्रश्न उठता है कि आधुनिक युग वास्तविक धर्म बोध से वंचित क्यों है ? इसका उत्तर खोजने के लिए आधुनिक प्रवृत्तियों को जन्म देने वाले इतिहास की ओर देखना होगा। आधुनिक युग के निर्माण में औद्योगिक क्रान्ति की सशक्त भूमिका है। जब हम इतिहास से पूछते हैं कि अठारह वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरु हुई औद्योगिक क्रान्ति के लिए अँग्रेज को अकूत संपत्ति कहाँ से मिली ? ज्ञात होता है कि वह संपत्ति अँग्रेज को भारत की लूट से मिली। लूट की संपत्ति यानि अनैतिक संपत्ति से विकसित आधुनिक सभ्यता नैतिक कैसे होगी और अनैतिक समाज सुखी कैसे रहेगा ? अधर्म से अकूत संपत्ति और शक्ति अर्जित करके पूरी दुनिया का शाहंशाह हो जाने के बाद भी समूल विनाश अवश्यंभावी है, यही संदेश आदिकवि वाल्मीकि ने विश्व को रामायण द्वारा दिया है-

अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति।।

पश्चिमी लोग धर्म की इस धारणा से सर्वथा अनभिज्ञ थे। उन्हें

जिस रिलिज़न का उत्तराधिकार मिला था, उसका कोई योगदान उन्हें ज्ञान- विज्ञान और अनुसंधान के विकास में नहीं दिख रहा था, उन्होंने माना कि औद्योगिक क्रान्ति और आर्थिक समृद्धि में ज्ञान- विज्ञान का योगदान तो है, लेकिन रिलिज़न का योगदान नहीं है, उलटे रिलिज़न से हर प्रगति में बाधा ही पहुँचती है। पश्चिम के बौद्धिक इतिहास में गैलेलियो, ब्रूनो आदि विज्ञानियों पर पादरियों के अत्याचारों की घटनाएँ दर्ज हैं। इसलिए पश्चिमी देशों में रिलिज़न के प्रति आलोचना की बुद्धि उत्पन्न हुई।

भारत में धर्म ने अर्थ और काम को संयमित ही नहीं किया, अपितु ज्ञान-विज्ञान का योगदान देकर आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया अर्थात जिस रेखा गणित की प्राचीनतम पुस्तक शुल्बसूत्र का उपयोग यज्ञ वेदी, यज्ञकुण्ड और यज्ञशाला निर्माण के लिए होता था, वही शिल्प, स्थापत्य, यंत्र, गंत्र, आयुध इत्यादि के निर्माण का आधार बना, जिस वैदिक ज्योतिष का उपयोग यज्ञ के काल निर्धारण के लिए होता था, उसीसे समुद्र में व्यापारिक नौकाओं के संचालन के लिए खगोलीय ज्योतिष विकसित हुआ, जिन वनस्पतियों का उपयोग यज्ञ में समिधा के लिए हो रहा था, उन्हीं वनस्पतियों का उपयोग औषधीय गुणों के कारण चिकित्सा के लिए हुआ। घोषित रूप से भारतीय ज्ञान-विज्ञान का आदि स्रोत वेद है और यही धर्मों का मूल है।

विज्ञान का धर्म स्रोत

तथाकथित ज्ञानीजन जिस वैदिक कर्मकाण्ड का उपहास करते नहीं थकते हैं, उन्हीं कर्मकाण्डीय ग्रंथों के अध्ययन में रेले, जिमऱ आदि अनेक पश्चिमी अध्येता ज्ञान- विज्ञान की खोज के लिए सिर खपा रहे थे। वैदिक धर्म मात्र उपदेश नहीं है, इसमें प्रकृति के अनुकूल भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करने वाला ज्ञान-विज्ञान है।

अनैतिक संपत्ति

आज विश्व के सम्मुख यूरोप की अनैतिक आर्थिक समृद्धि और उससे उत्पन्न आधुनिक सभ्यता के दुष्परिणाम प्रगट हो चुके हैं। आधुनिक विचारों के दोनों धड़े पूँजीवादी आधुनिक और पूँजी विरोधी आधुनिक अर्थ और काम पर केन्द्रित हैं, इन दोनों धड़ों में अर्थ ही प्रधान है। इनके विमर्श से अर्थ और काम का नियामक धर्म गायब है। वस्तुतः यूरोप में वास्तविक धर्म का बोध विकसित हुआ ही नहीं, उपदेशात्मक रिलिज़न का प्रसार अवश्य हुआ, नैतिकता पर चर्चा हुई, जिसे वैज्ञानिक अनुसंधान और आर्थिक उन्नति का संबन्ध नहीं था।

आधुनिक विचार धर्म की तरह ही संस्कृति से भी अनभिज्ञ है। यदि यूरोप को कल्चर के बदले संस्कृति का बोध होता तो आधुनिक विकास मनुष्य को विकृत उपभोक्ता नहीं बना पाता।

अर्थ प्रधान विचार

आधुनिक राजनीति के संदर्भ में यह सर्वज्ञात विषय है कि पूँजी विरोधी आधुनिक विचार पूँजीवादी शोषण की प्रतिक्रिया से उत्पन्न हुआ था और जब पूँजीवाद ने अपने क्रूर शोषण की गति पर ध्यान दिया, पूँजी विरोधी विचार का आधार नष्ट होने लगा। वस्तुतः आधुनिक राजनीति का उद्देश्य भौतिक समृद्धि और सुरक्षा तक सीमित है। इसलिए विश्व भर की राजनीतिक शक्तियाँ थल, जल, नभ और चारों दिशाओं से भौतिक समृद्धि एकत्र करने में लगी हुई हैं, भौतिक समृद्धि के लिए ही विश्व में अघोषित युद्ध चल रहा है। भारतीय बोध की संस्कृति के पैमाने पर यह है छीन-झपटकर खाने वाली विकृति। इस व्यवस्था में जनतंत्र केवल आवरण है, जिसमें छिपे हुए धनतंत्र के लिए हर वस्तु संसाधन है। इसका सबसे बड़ा सबूत है विकास और रोजगार देने के नाम पर अकूत संपत्ति अर्जित तो कर ली गई लेकिन भूखमरी नहीं मिटी।

यूरोपीय कल्चर की सौ वर्ष पुरानी आदर्शात्मक धारणाओं को उत्तराधुनिक विमर्श ने खारिज कर दिया है। यहाँ तक कि दो विश्व युद्धों के विध्वन्सों और जीव- जगत की भारी तबाही के आंकड़े दिखाकर आधुनिक ज्ञान- विज्ञान के गले में पहनाए गए विश्व उद्धारक के तमगे को भी उतार लिया गया। माना जाने लगा कि बीसवीं सदी के छठे दशक के बाद पश्चिमी कल्चर का शक्तिशाली विस्फोट हुआ और तब आर्थिक, राजनीतिक मूल्यों सहित मनुष्य का मनोविज्ञान तथा व्यवहार भी बिकाऊ कल्चर के चपेट में आ गया।

मार्क्सवादी वर्गभेदी दृष्टि से कल्चर की व्याख्या करने वाले समाजशास्त्री फेड्रिक जेमेसन की नजर में हाई कल्चर के दिन बीत गए, अब मास कल्चर का दौर है। मास कल्चर बिकती है, वह बाजार की वस्तु है, मार धाड़वाली एक्शन फिल्मों पर जोर देती है, अश्लिलता को बुरा नहीं मानती। मास कल्चर पारंपरिक आदर्शों से मुक्त है। इसमें आम आदमी की भागीदारी अधिक है, यह चलताऊ चीज है। इसे पॉप कल्चर या पोपुलर कल्चर भी कहते हैं। जेमसन ने पूँजीवाद के प्रभाव में पैदा हुए उपभोक्ता चरित्र को रेखांकित किया, जिसमें बाजार की प्रमुखता है, किसी आदर्श चरित्र की नहीं। इस प्रवृत्ति से सर्वत्र मूल्यहीनता फैल रही है। इसका गहरा प्रभाव सामाजिक जीवन पर पड़ रहा है। परंपरिक समाज के ताने- बाने टूट रहे हैं, मनुष्य का जीवन बिखर रहा है।

समाजशास्त्री एन्थोनी गिडेन्स ने बताया है कि भौतिक विकास के आधुनिक दौर में मनुष्य- जीवन के देश-काल की सीमा परिवर्तित हो रही है, पारंपरिक संस्थाओं के प्रति आज के मनुष्य का विश्वास टूटता जा रहा है, असुरक्षा और अनिश्चितता के वातावरण में व्यक्ति अपनी पहचान खो रहा है। वह कृत्रिमता की ओर बढ़ रहा है, अब प्लास्टिक सेक्सुएलिटी का युग है जिसमें काम संतान उत्पत्ति के लिए नहीं, बल्कि शरीर की सजावट के लिए होता है। स्पष्ट है कि उत्तराधुनिक दौर में अर्थ का आधिपत्य इतना प्रबल हो गया है कि उसके आगे काम विकृत दशा में पहुँच चुका है। जाँ बोड्रिलार्ड की

नजर में उत्तराधुनिक समाज वास्तविक नहीं, माया नगरी है। यह समाज आखिरी साँसें ले रहा है। इसकी निजी सोच- समझ नहीं है, यह सिर्फ एक उपभोक्ता समाज है, जिसके मानस को मीडिया सूचना और विज्ञापन से संचालित करती है।

भौतिक समृद्धि के पीछे भागने वाला यूरोप का समाज आधुनिक से उत्तराधुनिक तक पहुँचकर क्यों दम तोड़ने लगा, उसे स्थायित्व क्यों नहीं मिल पाया ? जब हम इन प्रश्नों पर विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि यह समाज ऐसे अर्थ पर केन्द्रित है, जिसपर धर्म का नियंत्रण नहीं है।

मुगल कालीन राज भोग

अँग्रेजी राज के पहले मुगल कालीन भारत में राजकीय सुविधा भोगी समाज अर्थ से अधिक काम पर केन्द्रित था। उस भोग संत्रस्त समाज के विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि सब लोग कुल- कर्म, ऐश्वर्य, यश, सुन्दररूप, गुण और यौवन के ज्वर में जल रहे हैं, किसी के भी पाँव भविष्य काल की ओर बढ़ते हुए दिख नहीं रहे-

कुल-करतुति, भूति, कीरति, सुरूप,
गुन-जौबन जरत जुर, पैर न कल कहीं।

(कवितावली)।

हुआ भी यही कि भोग लिप्त होकर मुगल सल्तनत विनष्ट हो गयी।

यह इतिहास सिद्ध तथ्य है कि जब अर्थ और काम धर्म का अनुसरण छोड़ देते हैं, तब न अर्थ पोषक रहता है और न काम सृजनकारी। हमारी पारंपरिक धारणा यही है कि अधर्म से धनार्जन नहीं करना चाहिए। विद्यापति ने कीर्तिलता में स्पष्ट लिखा है कि बुद्धिमान वणिक वह है जो धर्मपूर्वक हाट पसारता है- 'वणिज होइवि अष्खणा धम्म पसारइ हट्ट' (22.3.)। वाणिज्य में धर्म की आँख नहीं है तो हाट पसार कर अर्जित किए हुए धन से सुख की प्राप्ति नहीं होती।

तुलसी के काल में त्रिवर्ग के ज्ञाता वेदज्ञों की कोई पूछ नहीं थी, धर्म बोध बदल गया था। उन्होंने लिखा है कि भोग जनित रोग को बढ़ाने में राजकाज कुपथ्य की भाँति कार्य कर रहा है, भोग के लिए अनेक प्रकार की दूषित सामग्री उपलब्ध हैं। विद्या पाकर भी त्रिवर्ग के ज्ञाता उपेक्षित हैं-

राज काजु कुपथ कुसाज भोग रोग ही के,
बेद बुध बिद्या पाइ बिबस बलकहीं।।

वेद धर्म लुप्त हो गया है, भूमि चोर राजा बन गए हैं, पाप बढ़ गया है, साधुजन अत्यन्त दुखी हैं-

बेद धर्म दूरि गए, भूमि चोर भूप भए,
साधु सीद्यमान जानि रीति पाप पीन की।

तुलसी की रचनाओं में एक शब्द आता है- 'सीद्यमान'। सीद्यमान के स्थान पर दुखी के अर्थ में कोई दूसरा शब्द भी प्रयुक्त हो सकता था, लेकिन तुलसी ने अर्थशास्त्रीय शब्दावली सीद्यमान का प्रयोग किया, जिससे अर्थ की भारतीय धारणा मुखर होती है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रसीदति का विलोम सीदति शब्द विपन्न, अभावित और दुख-दारिद्रय के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, इसी सीदति शब्द से सीद्यमान बना है। कौटिलीय अर्थशास्त्र में कहा गया है कि धर्म, अर्थ, काम के त्रिवर्ग से ही लोक रक्षित होता है, सुखी रहता है और कभी दुखी नहीं होता-

त्रय्याहि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति (कौ. 1.2)।

तुलसी ने मुगलिया सल्तनत की आलोचना करते हुए धन के अभाव और धन के प्रभाव दोनों प्रकार के दोषों को चिह्नित किया है। वस्तुतः ये दोष भारतीय राज्यशास्त्र के अनुसार अराजकता के लक्षण हैं। तुलसी की दृष्टि में मुगल सल्तनत राज नहीं, अराज था।

मुगलिया सल्तनत के शोषण तंत्र को उजागर करते हुए तुलसी ने बताया है कि जनता को मार-पीट कर लगान वसूलने के लिए जालिम लोगों को राजकाज में नियुक्त किया जा रहा है और अत्याचार को छिपाने के लिए समाजहित में कार्य करनेवाले प्रतिष्ठित लोगों को जनता के सामने खड़ा किया जा रहा है-

बबुर बहेरे को लगाइ बागु लाइयत
रूँधिबे को सोई सुरतरु काटियत है।

तब न किसान के लिए खेती बची थी, न भिखारी के लिए भीख, न व्यवसायियों के लिए व्यवसाय शेष था, न नौकरी करने वाले के लिए नौकरी थी। आजीविका विहीन दुखी लोग एक दूसरे से पूछा करते थे- कहाँ जाएँ, क्या करें ?

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख- बलि,
बनिक को न बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों- कहाँ जाई, का करी ?

ऐसे शोषक शासन में उत्पन्न गरीबी, भूखमरी के कारण सामाजिक आदर्श टूट जाते हैं, लोग आत्मनिन्दा से ग्रस्त होकर सत्यवादी हरिश्चन्द्र और महादानी दधीचि के चरित्र को गाली दे रहे हैं-

गारी देत नीच हरिचंदहू दधीचिहू को,
आपने चना चबाइ हाथ चाटियतु है।।

धर्म की पावन नगरी काशी की दुर्दशा देख तुलसी की पीड़ा मुखर हुई, काल के प्रभाव से काशी इस समय दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के तापों से जल रही है, क्या लोगों के पाप से ऐसा दुर्दिन आया है या सिद्धों और देवताओं शाप से ? समाज के उच्च, निम्न और मध्यम वर्गों के धनी, निर्धन, राजा और संपन्न सभी लोग काशी

की दुर्दशा देखने के बदले हठपूर्वक मुँह फेरकर चले जा रहे हैं।

लोगनि के पाप कैंधौं, सिद्ध-सुर शाप कैंधौं,
कालकें प्रताप कासी तिहुताप तई है।
ऊँचे नीचे बीच के धनिक रंक राजा राय
हठनि बजइ करि डीठि पीठ दई है।।

त्रिवर्गीय व्यवस्था

तुलसी ने त्रिवर्ग की कल्याणकारी भूमिका को धर्मास्था के साथ इंगित किया, जिससे हमारी मंगलमयी अर्थसंस्कृति विस्मृत न हो सके। उन्होंने लोक रंजक भाव सहित गहरे तथ्यों को आख्यानक भाषा में उद्‌घाटित करते हुए कहा है कि काशी के चमत्कारी योगी महादेव के त्रिलोचन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थ बसते हैं-

अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष बसत बिलोकनि में,
कासी करामाति जोगी जागति मरद की।

चारों पुरुषार्थ महादेव की कृपा दृष्टि पर निर्भर हैं, फिर भी महादेव की काशी नगरी में भूख की भीषण आग जल रही थी। महादेव के त्रिलोचन हैं- सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी की त्रिधा अग्नियाँ, इन तीनों अग्नियों से मनुष्यादि प्राणियों के अस्तित्व का निर्माण हुआ है, यही आत्मा, मन और देह में व्याप्त हैं, मनुष्य की इच्छा, ज्ञान और क्रिया इन्हीं अग्नियों से संचालित होती हैं। महादेव के त्रिलोचन से चारों पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं। तुलसी के सम्मुख प्रश्न है कि इसके बाद भी महादेव की नगरी काशी दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से क्यों तप रही है ? उन्होंने लिखा है- पेट की आग वाडवाग्नि से भी बड़ी होती है, इस आग को बुझाने की क्षमता केवल उस राम में हैं वही जल से भरी हुई काली घटा के सदृश्य हैं, यह आग तो केवल राम ही बुझा सकते हैं-

तुलसी बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वाग्नि तें बड़ी है आगि पेट की।

तुलसी ने सांस्कृतिक- धार्मिक शब्दावली में अर्थशास्त्र के गूढ़ विषय की ओर संकेत किया है। चारों पुरुषार्थ के आधार स्तंभ शिव हैं और व्यवहारिक आदर्श श्रीराम, उनका रामराज्य जिसमें दैहिक, दैविक, भौतिक त्रिताप नहीं होते। महादेव और राम के माध्यम से तुलसी ने धर्म के दोनों पक्षों- शक्ति और भक्ति को एक साथ रखा है। अभी आधुनिक विश्व को नए सिरे से धर्म के मानदण्ड की पहचान करनी है।

बताया गया है कि शिव संगिनी शक्ति ही मंगलमयी होती है और शिव विमुख शक्ति विध्वंसक होती है। राम की संगिनी सीता लक्ष्मी हैं और राम जगत के प्रतिपालक विष्णु हैं। तुलसी के शिव रामकथा के प्रवर्तक हैं और उनकी रामकथा गंगा की तरह सबका हित करने वाली है। तुलसी की रामकथा की सीता रामराज्य की अधिष्ठात्री त्रिवर्गीया शक्ति हैं और राम सबका मंगल करनेवाले राजा हैं। तुलसी ने धर्म विग्रह राम और संस्कृति स्वरूपा सीता को ही लोक का आश्रय माना है। आजकल ही नहीं, पहले और बहुत पहले भी राजशक्ति के अनेक समीकरण बनते-बिगड़ते आ रहे हैं, भारतीय इतिहास की पृष्ठभूमि में लोक सापेक्ष राजधर्म का मानदण्ड सदैव बना रहा, राजा लोकमत के आगे झुकता था, लोक निंदा से डरता था- लोग क्या कहेंगे ? जैसे कि लोक में व्याप्त कोई अदृश्य शक्ति उसपर नजर रखती है। आज भी उत्तम राजनेता लोकापवाद से बचना चाहता है। याद कीजिए- यही लोकापवाद राजाराम को भी सावधान करता था। इसे पुराने राजशास्त्री धर्मदण्ड कहते थे, यह दण्ड प्रत्यक्ष नहीं था, लोक में व्याप्त परोक्ष था। माना गया कि यह दण्ड ईश्वर के तेज से निर्मित है, यह सदैव अकेले जगा रहता है, सभी प्राणियों के सो जाने पर भी यह नहीं सोता, यही सबकी रक्षा करता है। वास्तव में यही दण्ड ही राजा है, पुरुष है, यही नेता है- ब्रह्मतेजोमयं दण्डमसृजत् पूर्वमीश्वरः। दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्म विदुर्बुधाः। स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः। (मनु.)। यह दण्ड आज भी लोक में परोक्षतः व्याप्त है। जनतंत्र में भी यह दण्ड अपनी भूमिका परोक्ष रूप से निभाता है। जब निरंकुश नेता आपात काल लगाकर तानाशाही करता है, जनता उस निरंकुश नेता को पदच्युत कर देती है। जब नेता बहुमत प्राप्त कर पदासीन होता है और जनहित में कार्य नहीं करता, मतदाता उस नेता की उपेक्षा करते हैं, विकल्प रूप में विपक्ष को चुन लेते है, यदि शक्तिशाली सत्तारूढ़ दल विपक्ष को क्षीण बनाकर राजसत्ता पर हमेशा काबिज रहने का प्रयास करता है, मतदाता मतदान से विमुख होने लगता है, मतदान के प्रतिशत में गिरावट आने लगती है। लोग निरंकुश तानाशाहों के पतन का इतिहास जानते हैं। भारतीय जनमानस आदिकाल से राजधर्म से परिचित रहा है। यहाँ के जनमानस में धर्म बोध ने ही लोकतांत्रिक चेतना जाग्रत रखने का कार्य किया है। लोग जानते है कि किसी पदासीन व्यक्ति का कर्तव्य क्या है, उसे क्यों अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक रहना चाहिए ? पराधीन भारत में जनजीवन के रक्षार्थ संतों ने भारी तपस्या की। उनकी परम कल्याणकारी वाणी से आलोकित धर्म पथ पर जनजीवन अग्रसर हुआ। लोकास्था में व्याप्त राम आचरण हैं उन्हें छला नहीं जा सकता। जनमानस जानता है कि राम धर्म के मानदण्ड हैं, उनसे विमुख व्यक्ति को नरक में भी ठौर नहीं मिलती- लोकहुँ बेद बिदित कबि कहहीं। राम बिमुख थलु नरक न लहहीं।। उसे पता है कि राजा अथवा कोई भी मुखिया को मुख के समान होना चाहिए, जिसके द्वारा ग्रहण की हुई भोज्य सामग्री का रस प्रत्येक अंगों के पालन- पोषण में विवेक पूर्वक वितरित होता है-

मुखिया मुखु सो चाहिए खान पान में एक।
पालइ पोसइ सकल अंग तुलसी सहित बिबेक।।

(रामचरित.)

त्रिवर्गहीन व्यवस्था

सर्वसमृद्ध भारत के इतिहास में पराधीनता के दुर्दिन में लोकास्था की धर्म धारणा के विपरीत अप्रत्याशित रीति- नीति, आचार- विचार भारतीय जन जीवन में संक्रमित हुए, जिन्हें धर्म कहना संभव नहीं है, फिर भी शब्दों के अनुवाद के बहाने पॉवर के जोर से विधि- विधान बनकर चल रहे हैं। आज इन्हीं के कारण संवाद और संप्रषण की दुरूहता उत्पन्न होती है धर्म को मजहब या रिलिज़न समझ लिया जाता है, भारत के बौद्धिक इतिहास को बिना जाने पश्चिमी इतिहास के अनुसार भारत को भी हाँका जाता है। इसतरह अनेक विडंवनाएँ हैं जिनके कारण अर्थ का अनर्थ उत्पन्न होता है, रामराज्य की वैचारिक अवधारणा तक उलझकर रह जाती है। मुगलकाल और आज के इस्लामिक मुल्कों में मजहबी राज के उदाहरण प्रकट हैं, पाकिस्तान भी इसी का नमूना है, ईसाई स्टेटों ने पहले ही रिलिज़न से पल्ला झाड़कर आधुनिक विधि-विधान को अपना लिया है, जिसकी नकल आधुनिक विचार के नाम पर भारत की जनतांत्रिक व्यवस्था में लागू किया गया। यदि यह आधुनिक धारणा भारत के अनुकूल होती तो भारतीय राजनीति को सांस्कृतिक आधार में शक्ति दिखाई नहीं देती और वह अघोषित रूप सांस्कृतिक आधार की ओर अग्रसर नहीं होती, उसे अपने पुनर्सृजन की चिन्ता नहीं होती।

राम और राष्ट्र

आदिकवि वाल्मीकि यह वचन सत्य नहीं प्रतीत होता कि जहाँ धर्म विग्रह राजाराम नहीं होते, वहाँ राष्ट्र नहीं होता, जहाँ राम रहते हैं वहीं राष्ट्र रहता है, जब राम वन में रहते हैं, राष्ट्र वन रहता है, जब राम अयोध्या में रहते हैं, राष्ट्र अयोध्या में रहता है-

न हि तद् भविता राष्ट्रं यत्र रामो न भूपतिः।
तद् वनं भविता राष्ट्रं यत्र रामो निवत्स्यति।।

सुस्थिर राष्ट्र के लिए राजाराम के आदर्श को अनिवार्य माना गया, भारतीय राजाओं ने सुस्थिर राष्ट्र के लिए राजा राम का आदर्श अपनाया। चिरकाल तक सुस्थिर राज्य के लिए राजा को विजितेन्द्रय, निरभिमान, तत्पर, जागरुक, सावधान, कृतज्ञ, और धर्म परायण होना आवश्यक है-

अप्रमत्तश्च यो राजा सर्वज्ञो विजितेन्द्रयः।
कृतज्ञो धर्मशीलश्च स राजा तिष्ठते चिरं।।

जिसे राज भोग कर पिट पिटा जाना है, उसके लिए राजा राम का आदर्श आवश्यक नहीं है। राजसत्ता के विनाश के लिए एक कारण है आर्थिक विषमता। इसमें एक ओर धन का अभाव विनाशक हो जाता है और दूसरी ओर धन का प्रभाव शत्रु बन जाता है।

रामायणी संस्कृति

धन के अभाव और धन के प्रभाव की विकृतियों से मुक्त होने का मार्ग रामायण की संस्कृति में है। यह केवल भावुक ईश्वरीय आस्था नहीं है जिसका उद्देश्य पूजा- पद्धति और भक्ति भाव तक सीमित हो। संस्कृति और धर्म की यह धारणा विश्व जीवन को सुव्यवस्था और सर्वसमृद्धि प्रदान करने के लिए स्थापित की गई है।

आधुनिक और उत्तराधुनिक कल्चर और रिलिज़न के डिस्कोर्स के तूफान में हमें परंपरा से प्राप्त संस्कृति- धर्म का बोध विस्मृत न हो, उसके अमृत प्रवाह से हम वंचित न हों, इसके लिए आवश्यक है कि पश्चिमी विचारों के समानान्तर अपनी बौद्धिक संपदा को नए- नए संदर्भों में बार- बार परखें और जानें।

रामायण की भूमि और भूमिका का परिचय हो तो हम भू-संस्कृति और रामराज्य की व्यवस्था समझ सकते हैं। रामायणी संस्कृति भारत के उत्तर से दक्षिण तक और पृथ्वी के अन्य भूभागों में भी फैली हुई है। शिवभूमि हिमालय के समतल अंचल में मिथिला और अवध की जो भू-संस्कृतियाँ विकसित हुईं, यही रामायण की संस्कृति का उद्‌गम स्थल है। इसकी पृष्ठभूमि में तने हुए धनुष के समान गगन भेदी हिमालय है- पिनाकी महादेव का वास स्थल। इस धनुष के दोनों छोर हैं जनकपुर एवं अयोध्या। इन दोनों छोरों को जोड़नेवाली डोर है रामायण की संस्कृति। यह धनुष है शिवसंकल्प का संवाहक। इसकी प्रत्यंचा को भारत के दक्षिणी भू-भाग तक खीचकर श्रीराम ने धर्म का मंगलायतन बनाया, जिस मंगलायतन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष- चारों पुरुषार्थ फलीभूत होते हैं, यही है भारत राष्ट्र का- मंगलायतनोहरिः। इस धनुषाकार भू-संस्कृति की टंकार ही लोक व्याप्त ओंकार है- प्रणवोधनुः। इसकी ज्या की आवाज (ज्यावाजम्) से कालजन्य क्लेशों का अन्त हो जाता है। व्यष्टि परक अन्तःकरण हो या समष्टि परक राष्ट्र जीवन राम के धनुष खीचने मात्र से इन दोनों के भीतर- बाहर की जड़ताएँ टूट- बिखर जाती हैं, राक्षसी मकड़जाले नष्ट हो जाते हैं, मनुष्य की चेतना जाग्रत हो जाती है, राष्ट्र चैतन्य हो जाता है और हम परम वैभव की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

तुलसी ने कहा है कि दशरथ और जनक के समान अन्य किसी ने शिव की आराधना नहीं की और न इन दोनों की तरह शिवोपासना का किसी को लाभ मिला। जनक का सुकृत्य वैदेही सीता के रूप में मूर्तमान हुआ और दशरथ का सुकृत्य राम के रूप में सदेह हुआ-

जनक सुकृत मूरति बैदेही। दसरथ सुकृत राम धरें देही।।
इन्ह सम काहु न सिव अवराधे। काहु न इन्ह समान फल लाधे।।

सीता की जन्मभूमि मिथिला और राम की जन्मस्थल अवध सब प्रकार से एक समान राज्य थे, इन दोनों राज्यों के समाज, समृद्धि और आस्था में समानता थी-

सकल भाँति सम साजु समाजु। सम समधी देखे हम आजु।।

भू-संस्कृति

हिमालय की शिव विभूति से सम्पन्न मिथिला और अवध की

भूमियों पर यज्ञसंस्था द्वारा रामायण की संस्कृति साकार हुई। विश्व विख्यात रामायण के कथा-वृत्तांत का विज्ञान पक्ष वैदिक पृष्ठभूमि में निहित है। पुराण यह मानते हैं कि शिवस्य हृदयं विष्णुः विष्णोश्च हृदयं शिवः। इसका अभिप्राय यह है कि विष्णु शिव के आराध्य हैं और शिव विष्णु के आराध्य। शिव अजन्मा अनादि हैं और विष्णु के दश अवतार होते हैं। दशसंख्यक विष्णु यज्ञपुरुष हैं और महादेव यज्ञवृत्त की केन्द्र बिन्दु। इसी यज्ञ धारणा से सिद्ध होता है कि जगत ईश्वरमय है और यह ऐश्वर्य युक्त है।

राजा जनक ने यह देखा कि छोटी उम्र में ही सीता ने शिव का धनुष उठा लिया, तब निर्धारित हो गया कि जो शिव के धनुष को भंजन करने में सक्षम होगा, वही सीता के लिए योग्य वर हो सकता है। अभिप्राय स्पष्ट है कि सीता लोक पीड़ा के अंत के लिए धरती से उत्पन्न श्री-संपदा हैं, उनके जन्म का हेतु है लोक संत्रास का शमन। उन्हों ने शिव के विशाल धनुष को उठाकर उसके आधार स्थल को बुहारा, लीपा और फूलों से सजाकर पुनर्स्थापित कर दिया। इसके उपरांत निर्धारित हो गया कि लोक रक्षार्थ धनुष धारण करने वाला कोई परम शिवसंकल्पी ही शिव के धनुष का उत्तराधिकारी बन सकता है। पृथ्वी- पुत्री सीता के वरेण्य बने यज्ञसंभूत राम अर्थात विष्णु प्रिया पृथ्वी की पुत्री के जीवन संगी हुए सूर्य सदृश्य विष्णु के स्वरूप राम। राम ने लोकोत्पीड़क रावण का अंत करके रामराज्य की स्थापना की। लोकाकांक्षा रूपी सीता के लिए कार्य करने के कारण राम के नेतृत्व को लोक भाव का समर्पण मिला।

उपरोक्त आख्यानिक भाषा को व्यवहारिक भाषा में रूपान्तरित कर दिया जाए तो ज्ञात होगा कि भारत के अर्थशास्त्रीय परंपरा में 'पृथिव्या लाभे पालने' की यही संकल्पना साकार हुई है, अर्थशास्त्र के सभी आचार्यों ने धर्माधिष्ठित अर्थतंत्र की स्थापना के लिए रामराज्य का अनुसरण किया, जिसका आधार पृथ्वी की प्राप्ति, उसका पालन और संवर्धन है। इसी लिए राजा पार्थिव कहा गया है। पृथ्वी रूपी सवत्स गौ उसकी आराध्या होती है। लेकिन जो आक्रांता हो, जिसकी अपनी मातृभूमि नहीं हो, उसे पृथ्वी के पालन और संवर्धन से क्या सरोकार। रामायण अर्थशास्त्रीय तथ्यों को काव्यमय सांस्कृतिक भाषा में बोलती है, जिससे जन जीवन में हृदय को भाव से और मानस को विवेक से परिपूरित करने वाली अर्थ संस्कृति का प्रसार होता है। इसमें केवल लौकिक स्थूल अर्थ नहीं है, अपितु लोक से लोकोत्तर तक तनी हुई सूक्ष्मतम अर्थ तन्तुओं का दिव्य वितान भी है, जिससे सभी प्रकार की मनोवांक्षाएँ पूरी होती है। रामायणी संस्कृति केवल उद्यम की प्रेरणा नहीं, स्वयं में आनंद की प्राप्ति भी है। इसीलिए यह शक्ति और भक्ति का आधार है। अपेक्षानुसार हम इस कल्पवृक्ष से फल की प्राप्ति करते है। आइए, कुछ पलों के लिए हम रामायणी संस्कृति के रसानंद की ओर चलें।

सूर्योदय काल की लालिमा पुष्पवाटिका में छाई हुई है। सीता सखियों साथ फूल चुनकर पार्वती की पूजा के लिए पुष्प वाटिका में गई हुई हैं। गुरु की आज्ञा पाकर राम और लक्ष्मण भी राजा जनक की पुष्प वाटिका में पूजा के फूल लेने गए हुए हैं। वहाँ सीता और राम ने एक दूसरे को देखा, प्रकृति और पुरुष ने एक दूसरे को देखा, सूर्य और पृथ्वी ने एक दूसरे को देखा, अर्थ और शब्द ने एक दूसरे को देखा। यह प्रभात काल उपासना की वेला है। अनुरक्ति का यही पल लोक जीवन का शब्दातीत आत्मराग है, रामायणी संस्कृति की इस दुर्लभ आरंभ बिन्दु का वर्णन कभी पूरा नहीं होता। सीता को देखकर राम ने लक्ष्मण से कहा-

तात जनक तनया यह सोई। धनुष जग्य जेहि कारन होई।।

राम ने सीता को पहचान लिया, जबकि उस समय सीता अपनी सखियों के पीछे थीं और राम को देख रही हैं, दोनों की प्रीत कितनी पुरातन है, कोई नहीं जानता। ब्रह्म और ब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति की लीला कौन जानेगा भला। यह अगम्य सृष्टि उन्हीं की लीला है। सीता ने माता पार्वती से प्रार्थना की और वर रूप में राम को पाने की वरदान पायी। इस प्रसंग से ज्ञात होता है कि हिमालय के समतल अंचलों में रामायण की संस्कृति का स्रोत शिव-पार्वती हैं।

रामकथा का साक्ष्य

सोलह वीं शताब्दी आते-आते रामायण का वास्तविक स्वरूप निर्णीत करना कठिन हो गया था, इस कथा में अनेक प्रक्षिप्त अंश मिलाए जा चुके थे। तब प्रमुखतः अवधी भाषा में तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना की। रामचरित मानस के कथा-प्रसंगों की सप्रमाण स्थापना के लिए तुलसी ने वैदिक प्रज्ञान का आधार लिया, 'चत्वारि वाक् परिमितापदानि' की आधारशिला पर अपनी वाङमयी कृति राम चरित मानस का स्थापत्य निर्मित किया। क्योंकि सृष्टि वाक् ब्रह्म से आरंभ हुई है, वाणी ही अर्थ का आश्रय है, सृष्टि अर्थमयी है। तुलसी ने रामचरित मानस की वाक् सत्ता पर चार वक्ता-श्रोता के संवाद प्रायोजित किया, परा वाणी में शिव और पार्वती का संवाद, पश्यन्ती वाणी में काक भुसुंडी और गरुड़ का संवाद, मध्यमा वाणी में याज्ञवाल्क्य और भरद्वाज का संवाद एवं चौथी बाह्य वाणी वैखरी में स्वयं तुलसी और जन का संवाद।

रामचरित के प्रथम वक्ता महेश हैं और श्रोता पार्वती। महेश ही तुलसी की रामकथा के साक्ष्य हैं। महेश ने अपने मानस में जिस रामकथा की रचना कर रखी है और जिसे उचित अवसर पर पार्वती को सुनाई, उसे ही तुलसी ने अपनी कृति रामचरित मानस में पुनर्सृजन किया-

रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाखा।।

कैलास की शिखर पर स्थित अक्षयवट के नीचे जो रामकथा निरंतर हो रही है- वह सुरसरि गंगा के समान हैं, जैसे शिव की जटा से गंगा निकलती हैं, वैसे ही उनके मुखारविन्द से राम कथा प्रस्फुटित हो

रही है। जैसे हिमालयी नदियों से हमारी धरती सिंचित हो रही है, वैसे ही रामकथा से जनमन संसृजित हो रहा है, वह हमारे संस्कार, आचार और आदर्श को प्ररित कर रही है। रामकथा केवल मनोमयी कथा की वाचिक सत्ता नहीं है- सिर्फ वैचारिक और भावमय सत्ता, इसकी अपनी भूमि और भू-संस्कृति है, यह ठोस जीवन का सत्य-तथ्य है।

अवध एक राज्य है, सरयु के तट पर स्थित अयोध्या इसकी राजधानी है, यहाँ के राजा दशरथ हैं, इसी प्रकार मिथिला एक राज्य है, जनकपुर इसकी राजधानी है, यहाँ के राजा जनक हैं। इन दोनों की सीमा पर सदानीरा गंडक प्रवाहित हो रही है। प्राचीन समय के अवध और विदेह राज्यों की सीमा रेखा गंडक नदी थी। संभवतः इसीलिए तुलसी ने लिखा है कि अयोध्या से जब जनकपुर के लिए बारात निकली, राजा जनक ने मार्ग की नदी पर पुल बनवा दिया। यह पुल मिथिला और अवध की संस्कृतियों के मिलन का प्रतीक है-

आवत जानि भानु कुल केतु। सरितन्हि जनक बँधाए सेतु।।

ऐसे भौतिक साक्ष्यों के कारण ही रामायण को इतिहास कहा गया है-

अहो विप्र इदं प्रोक्तमितिहासं च नारद

(1.3. मा. वा.रा.)।

यह नहीं भूलना चाहिए कि भारी दुर्दिन में अयोध्या और जनकपुर के मध्य आकाश में सीताराम की धुन का चँदोवा तना रहा, भक्ति भाव के इसी चँदोवे के नीचे हमारी सांस्कृतिक अस्मिता रक्षित हुई। इसी चँदोवे के नीचे स्वाधीनता संग्राम की एकात्म शक्ति जागृत हुई और रामराज्य के लिए वीर सपूतों ने आत्माहुति दी। आज भी जनमन में औनिवेशिक धूँध से पूरी तरह बाहर निकलने की छटपटाहट है, अधूरी स्वाधीनता के कारण विषमता का क्लेश है, आर्थिक और वैचारिक मुक्ति की व्याकुलता है। नए युग संदर्भ में उसी रामराज्य की इच्छा है, जिसकी राजरानी माता सीता हैं।

त्रिवर्ग विरोध

यह आश्चर्य का विषय है कि जिस सीताया श्चरित महत् काव्य रामायण की अपनी ऊर्वर धरती और सजीव संस्कृति है, उसमें प्रक्षिप्त प्रसंगों के हस्तक्षेप से रामायण की मूल स्थापनाएँ खण्डित हुई और विवाद उत्पन्न हुए। सीता का निर्वासन और अन्य विवादित प्रसंगों के कारण वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकाण्ड को विद्वानगण प्रक्षिप्त मानते हैं, क्योंकि तुलसी कृत रामचरित मानस में ही नहीं, महाभारत के रामोपख्यान पर्व और विष्णु, स्कंध, वायु, कूर्म, लिंग, गरुड़, वाराह इत्यादि अनेक पुराणों में जहाँ कहीं रामकथा प्राप्त होती है, उनमें सीता के निर्वासन का प्रसंग नहीं मिलता है। प्रक्षिप्त प्रसंगों के लिए वेद विरोधी नास्तिक संप्रदायों द्वारा लिखी गई रामायणों को उत्तरदायी माना जाता है।

यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि रामायण वेद विहित त्रयी विद्या को त्रिवर्ग के रूप में संस्थापित करती है, इसी त्रिवर्ग पर राज्यशास्त्र आधारित है और पारिवारिक जीवन भी। महाभारत के शकुंतलोपाख्यान में कहा गया है कि भार्या मूलं त्रिवर्गस्य – भार्या त्रिवर्ग का मूल है अर्थात भौतिक सत्ता के लिए भार्या का सहकार अनिवार्य है। भार्या के बिना त्रिवर्ग की और त्रिवर्ग के बिना राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती। राज्य के बिना राष्ट्र व्यक्त नहीं होता, प्रजा की रक्षा नहीं होती। अतः यह कथन-

स्वराष्ट्रञ्जनं चैव वैदेह्यश्च विसर्जनम्- राष्ट्र रंजन के लिए वैदेही का विसर्जन हुआ, घोषित रूप से राष्ट्र ध्वंसक प्रक्षिप्त प्रसंग है। सीता और राम लक्ष्मी- नारायण के समान अभिन्न हैं, ये दोनों विलग नहीं हो सकते।

वाल्मीकीय रामायण के अरण्य काण्ड, 31वें सर्ग में प्रसंग आया है कि खर दूषण- वध के बाद अकंपन नामक दूत दण्डकारण्य से राक्षसों के दमन का समाचार लेकर रावण के पास आया। उसने रावण से राम के अजेय पराक्रम का वर्णन करते हुए बताया कि राम से युद्ध करके जीतना संभव नहीं। राम को परास्त करने का एक ही उपाय है कि राम की प्राणप्रिया सीता का अपहरण कर लिया जाए। सीता के बिछोह में राम जीवित नहीं रह पाएँगे-

तस्या भार्यां त्वं तं प्रमथ्य महावने। सीतया रहितो रामो न चैव हि भविष्यति।। निश्चिय ही अकंपन जानता है कि राम से सीता अभिन्न हैं। सीता का विछोह राम के प्राणांत का कारण बन सकता है। ऐसे अर्धांग को राम कैसे त्याग सकते हैं जिसके बिना जीवित नहीं रह सकते। ठीक इसी तरह त्रिवर्ग के बिना कोई राजसत्ता नहीं रह सकती।

आधुनिक युग प्रकृति की त्रिगुणात्मक शक्ति संरचना और उसकी साम्यावस्था से अनभिज्ञ है और वह प्रकृति पर विजय पाने का रावणी घमंड पालने लगा। वह प्रकृति के त्रिगुणात्मक शक्ति संरचना के बदले द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और केवल मनुष्य केन्द्रित राज्य सत्ता पर विश्वास करता है, जिसके कारण मनुष्य में असीमित भूख पैदा होती चली गई, वह प्रकृति और प्राणिजगत का भक्षक बन गया। इस आधुनिक धारणा के चलते विश्व जीवन प्राकृतिक आपदाओं से संत्रस्त हो गया है।

राम का राज्यादर्श

आधुनिक युग के पूर्व विश्व सभ्यता के प्राचीन इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा कि जहाँ जहाँ सूर्य की उपासना प्रचलित थी, वहाँ वहाँ सूर्यवंशी राजाराम के राज्य का आदर्श स्थापित हुआ था, वहाँ वहाँ रामायण की कथा गई थी और समष्टि केन्द्रित राजनीति प्रचलित हुई थी, जिसमें केवल मनुष्य को ही नहीं, प्रत्येक प्राणी और पर्या वरण को भी सजीव मानकर सुरक्षा प्रदान की गई थी।

दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में राम ही राज्य के आदर्श थे। थाइलैंड की प्राचीन राजधानी का नाम मिथिला था। 14 वीं शताब्दी

में थाइलैंड के पश्चिमी भाग में रामाधिपति नामक राजा ने अपनी अयोध्या नाम से राजधानी बनाई। 19 वीं शताब्दी में थाइलैंड के राजा ने राम प्रथम की उपाधि धारण की थी। आज भी इस देश का राष्ट्रीय ग्रंथ रामायण है।

लवकुश के नाम पर बसा हुआ देश लवदेश- लावोस है, चंपा- वियतनाम, कम्बोज- कम्बोडिया, मलय- मलेशिया, जावा-सुमात्रा इण्डोनेशिया इत्यादि देशों में रामायण की संस्कृति मिलती है। इन देशों में सीता माता को खोजने के लिए वानर सेना गई थी। वाल्मीकीय रामायण के किष्किन्धा काण्ड के सर्ग-40. 30- 31 में इन देशों का उल्लेख इनके पुराने नामों से हुआ है। इसी प्रकार रूस की दक्षिणी सीमा पर स्थित साइबेरिया निवासियों में रामायण की कथा प्रचलित है। सुदूर अमेरिका के देश पेरु की इंका सभ्यता के लोग आज भी सीताराम उत्सव मनाते हैं। निश्चय ही इन समाजों पर रामायणी संस्कृति कुछ न कुछ प्रभाव शेष होगा। पुरानी सभ्यताओं के राज संबन्धी अनुष्टानों को जानकर ऐसा लगता है कि पर्वत शिखरों पर अग्नि प्रज्वलित करने अथवा मौन रहकर पितरों का ध्यान करने के पीछे आधिदैविक थी, राज्य व्यवस्था केवल मनुष्य केन्द्रित नहीं थी इस व्यवस्था में प्रकृति और प्राणी समाहित माने जाते थे। आधुनिक धारणा प्रकृति को संसाधन मानती है, सजीव सत्ता नहीं।

रामराज्य का वैश्विक परिप्रेक्ष्य

आज यह प्रश्न उठ रहा है कि क्या आधुनिक सभ्यता के दौर में विश्व जीवन सुखी है ? उत्तर है- नहीं। इसीलिए पूर्वकाल के पराधीन देशों में औपनिवेशिक सभ्यता से मुक्त होकर अपनी वास्तविक भू-संस्कृति में जीने की इच्छा बलवती होती जा रही है। आज राजनीतिक इतिहास के निष्प्रयोजन पक्षों को बोझ माना जा रहा है और दूसरी ओर संस्कृति को सर्वोपरि। संस्कृति के अनुसरण में राजनीति की भूमिका को रखने के प्रयास हो रहे हैं। आरंभ से ही भारत में राज्य को सर्वोपरि सत्ता नहीं माना गया, यहाँ राष्ट्र की सांस्कृतिक सत्ता को ही सर्वोपरि स्थान मिला, जिससे राजचरित्र पर जनता की आलोचक दृष्टि बनी रही। इस कार्य में रामायण नेतृत्व देती रही है।

आशा की जा सकती है कि विश्वव्यवस्था पुनः प्रकृति के अनुकूल बनेगी और तब व्यवस्था का आधार द्वन्द्वात्मक दृष्टि नहीं, त्रिगुणात्मक दृष्टि ही होगी। विश्व जीवन केवल भौतिक और अनात्मिक नहीं होगा, वह चैतन्य और आत्मिक होगा। हिमालय की शिखर से अवतरित रामायणी संस्कृति की धारा आधुनिक युग के संत्रासों से टूटते- बिखरते विश्व जीवन को सुव्यवस्थित करेगी, यह सांस्कृतिक धारा एक बार फिर विश्व जीवन की आर्त पुकार सुनकर श्रीराम के अविरोधी धर्म का ध्वज वाहक बनेगी।

आलेख

ऐतिहासिक स्रोतों में अयोध्या

प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी

“पश्चिमी मानकों तथा स्वातन्त्र्य उपरान्त उनके देशी अनुयायियों के द्वारा भारतीय संदर्भ में विश्वास मौलिक रूप से ‘परम्पराओं’ से ही जुड़ा हुआ है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता है और यह कह पाना की कोई ‘परम्परा’ इस निश्चित दिन से प्रारम्भ हुई या जन्मी शायद हास्यापद ही होगा। इसीलिए जब हम भारत और उसकी आदि काल से चली आ रही परम्पराओं की निरन्तरता को केन्द्र में रख कर देखते है तो यह समस्त प्रश्न ही अपने आप में रोचक हो जाता है कि भारतीय इतिहास को उसकी परम्पराओं में कितना खोजा जाना चाहिए और साक्ष्यों को उसमें कैसे समाविष्ट किया जाना चाहिए।”

पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, दी.द.उ.गो. वि.वि., गोरखपुर सदस्य, आई.सी.एच.आर., नई दिल्ली

पश्चिमी विधि के इतिहास लेखन ने समस्या यह खड़ी कर दी कि उसे किसी भी प्रमाणिकता हेतु साक्ष्यों की आवश्यकता को ही सर्वमान्य माना। परन्तु प्रश्न यह भी हैं कि ब्रिटिश यह है संविधान तो परंपराओं पर आधारित महान कृति है, पर यही ‘परम्परायें’ भारतीय संदर्भ में ऐतिहासिक प्रश्नावलियों को संदेह के घेरे में लाकर खड़ी कर दी जाती है। पश्चिमी मानकों तथा स्वातन्त्र्य उपरान्त उनके देशी अनुयायियों के द्वारा भारतीय संदर्भ में विश्वास मौलिक रूप से ‘परम्पराओं’ से ही जुड़ा हुआ है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता है और यह कह पाना की कोई ‘परम्परा’ इस निश्चित दिन से प्रारम्भ हुई या जन्मी शायद हास्यापद ही होगा।

जब हम भारत और उसकी आदि काल से चली आ रही परम्पराओं की निरन्तरता को केन्द्र में रख कर देखते है तो यह समस्त प्रश्न ही अपने आप में रोचक हो जाता है कि भारतीय इतिहास को उसकी परम्पराओं में कितना खोजा जाना चाहिए और साक्ष्यों को उसमें कैसे समाविष्ट किया जाना चाहिए। उार निकलता है पौराणिक मान्यताओं, प्राच्य काल के संस्कृत, पाली और प्राकृत भाषा के अभिलेखों में, शिलापट्ट और पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही मान्यताओं में।

इन्हीं परम्पराओं में, जैसा मेरा मत हे कि विश्वास निहित है, जिसका खण्डकाल भारतीय संदर्भ में सुनिश्चित किया जाना लगभग असम्भव है, पर यह अवश्य ही सत्य है कि वे अपने मूल में अनगिनत चुनौतियों के साथ जीवित है। इसी जीवन्तता से जुड़ी है ‘‘अयोध्या’’ जो भारतीय परम्परा एवं विश्वास के सात प्रमुख केन्द्रों में एक विशेष महत्व रखती है और इसी से जुड़ी है विश्वास की वह डोर जिसके

केन्द्र 'राम' हैं, अनगिनत भारतीयों के ही नहीं अपितु अन्य धर्मावलम्बियों के भी।

प्रश्न उठता है कि कोई आक्रान्ता किसी विश्वास की स्थली को चोट क्यों और किसलिए पहुचातॉं है। उार प्रश्न में ही निहित है कि भारत जो अपने समस्त इतिहास में कभी भी धर्मशासित (Theocratic) राज्य नहीं रहा, अर्थात न ही इस देश के राजाओं ने कभी तलवार के आधार पर धर्म परिवर्तन किये और न ही कभी किसी के विश्वासों के प्रतीक को बाह्य आक्रमण कर तोड़ने का कार्य किया। उस भारत का सामना एक ऐसी साा से हो रहा था जो धार्मिक उन्माद के लिए विश्व विख्यात थी और तलवार के जोर से अन्य के विश्वासों को तोड़ने के सिद्धान्त पर आधारित थी। अयोध्या इसी विश्वास का मूल केन्द्र था, अतः उसे दंश झेलना पड़ा।

रहा प्रश्न अयोध्या के इतिहास का और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, खासकर उन विद्वानों के लिए जो मात्र साक्ष्य को ही स्वीकारते हैं, और अपनी दृष्टि से ही उसका विवरण भी प्रस्तुत कर देते है ऐसे इतिहासकारों का प्रत्युार लाला सीताराम 'भूप' के एक महान ग्रन्थ से दिया जा सकता है। अयोध्या पर प्रथम लेख 'हिस्ट्री आफ अयोध्या' लाला सीताराम भूप के द्वारा लिखा गया जो, 1928 में Allahabad University Studies' के Vol. IV में प्रकाशित हुआ। यह लेख श्रीमान महामहोपाध्याय डा0 गंगा नाथ झा की अनुमति उपरान्त प्रकाशित हो पाया था। तदउपरान्त 1932 में ''हिन्दुस्तान एकेडमी'' ने इसका विस्तार रूप 250 पृष्ठों में प्रकाशित किया। इतिहास लेखन की आधुनिक तथा वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार वे हमें अपने स्रोतों के विषय में भी बताते हैं, जहाँ से उन्होंने सामग्री एकत्रित की थी। इस पुस्तक के पहले अध्याय 'अयोध्या की महिमा' के अन्तर्गत अयोध्या के नामकरण, यथा अवध, साकेत के साथ ही उार कोशल (कोसल) और इसके इक्ष्वाकु वंशियों की राजनीतिक एवं धार्मिक विरासत के साथ ही सूर्यवंश तथा गुप्तवंशीय शासकों की विरासत का उल्लेख किया गया है। इन तथ्यों पर प्रकाश डालने हेतु लाला सीताराम भूप द्वारा अवध गज़ेटियर, सी0आई0 वैध की प्राथमिक स्रोतों पर आधारित 'हिन्दू भारत का अंत' और उर्दू ग्रन्थ मदीनतुल-औलिया को उल्लेखित किया गया है

दूसरा अध्याय 'उत्तर कोशल और अयोध्या की स्थिति' में पुनः वैज्ञानिक इतिहास की दृष्टि से, इस अध्याय में भी प्राथमिक स्रोतों का हो प्रयोग किया गया, जैसे- डा0 रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर की 'हिस्ट्री आफ डेक्कन' से लेकर कालीदास के 'मेघदूत', रघुवंश और फिर रत्नावली से ह्वेनचांग, भगवत्पुराण, कनिंघम, वाल्मीकि रामायण से लेकर बौद्ध ग्रन्थ, दीघनिकाय और सुमंगलविलासिनी एवं आधुनिक इतिहास शोध पत्रिका 'जर्नल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी' से भी उल्लेख है। वे वृहद संहिता जैसे ग्रन्थों के अध्ययन से भी विषय से सम्बन्ध संदर्भ जुटाने में भी सफल रहे हैं।

तृतीय अध्याय में लाला जी ने 'प्राच्य अयोध्या' के विषय में पूरी जानकारी दी है, जिसमें अयोध्या को खण्ड कालों में विभाजित कर ऐतिहासिक जानकारी दी गयी है। इस खण्ड में वे अयोध्या पर व्यूहलर तथा वेबर के मतों का प्रमाणिकता से खण्डन

> "पश्चिमी मानकों तथा स्वातन्त्र्य उपरान्त उनके देशी अनुयायियों के द्वारा भारतीय संदर्भ में विश्वास मौलिक रूप से 'परम्पराओं' से ही जुड़ा हुआ है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता है और यह कह पाना की कोई 'परम्परा' इस निश्चित दिन से प्रारम्भ हुई या जन्मी शायद हास्यापद ही होगा। इसीलिए जब हम भारत और उसकी आदि काल से चली आ रही परम्पराओं की निरन्तरता को केन्द्र में रख कर देखते है तो यह समस्त प्रश्न ही अपने आप में रोचक हो जाता है कि भारतीय इतिहास को उसकी परम्पराओं में कितना खोजा जाना चाहिए और साक्ष्यों को उसमें कैसे समाविष्ट किया जाना चाहिए।"

करते हैं। यह अध्याय अयोध्या को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

चतुर्थ अध्याय जिसका शीर्षक 'आज कल की अयोध्या' है में वे आधुनिक काल और समकालीन अयोध्या का वर्णन करते हैं, और पॉचवां अध्याय 'अयोध्या के आदिम निवासी' बहुत ही सार-गर्भित है। इसमें लाला जी के द्वारा वाल्मीकि रामायण, पुराणों के साथ-साथ अवध गजेटियर, विन्सेंट स्मिथ कृत 'अर्ली हिस्ट्री आफ इण्डिया', नेस्फील्ड कृत 'ब्रीफ रिव्यू आफ द कस्टम सिस्टम आफ द नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेस एण्ड अवध' तथा शेरिंग कृत 'हिन्दू कास्ट्स' का प्रयोग लाला जी द्वारा किया गया है। छठवें किन्तु संक्षिप्त अध्याय में पुनः एक बार 'वेदों में अयोध्या' का उल्लेख का सविस्तार वर्णन है। सातवें अध्याय में सबसे महत्वपूर्ण विवरण है जल प्रलय का। यहाँ वे भारतीय धार्मिक वांग्मय के साथ ही इस्लाम और ईसाई धर्मों में बिल्कुल ऐसी ही कथा के अंश को प्रस्तुत करते हैं। आठवॉ अध्याय 'अयोध्या और जैन धर्म' से सम्बन्धित है। लाला जी निश्चित ही इस कार्य को तार्किक परिपाटी तक पहुँचाते दिखते हैं। इस अध्यायों से पौराणिक कालों के बाद का इति-क्रम भी सफलतापूर्वक स्थापित हो जाता है और वृहद भारतीय पृष्ठभूमि में वे अयोध्या के इतिहास को सही व क्रमिक तरीके से स्थित कर लेते हैं।

इसी प्रकार वे अयोध्या में जन्म स्थान के संदर्भ में भी वैज्ञानिक पद्धति अपनाते हुए हमें महत्वपूर्ण और दिलचस्प जानकारी देते हैं। सर्वप्रथम वे जानकारी देते हैं कि जिस टीले पर जन्म स्थान की मस्जिद बनी है उसे यज्ञ वेदी कहते है, इस टीले में से जले-जले काले चावल खोदकर निकाले जाते थे और कहा जाता था कि ये चावल राजा दशरथ पुत्रेष्टि यज्ञ के है। इसी पुस्तक के 12वॉ अध्याय 'भारत में मुस्लिम राज्य स्थापना से पहले अयोध्या पर मुस्लिमों के आक्रमण' हैं। उन्होंने इस संक्रमण काल के महत्व को रेखांकित करते हुए ही इसे अलग अध्याय में विश्लेषित किया है। इसमें लाला जी ने कई महत्वपूर्ण बातें उठायी और तथ्य स्पष्ट किये हैं, जिन पर प्रायः प्रकाश नहीं पड़ता है। जैसे मुस्लिम ग्रन्थों में प्रायः यह लिखा गया है कि यहाँ शुरू से ही मुस्लिम आबादी थी। वे अबुल फजल के आधार पर इस कथन को काटते हैं। इसके अतिरिक्त प्रामाणिक स्रोतों पर वे स्पष्ट करते है कि सय्यद-सालार मसऊद गाज़ी कभी अयोध्या नहीं आया था।

इसी ग्रन्थ में लाला जी 1528 की घटना का विवरण करते है कि कैसे बाबर के आदेश पर मीरबकी ताशकंदी ने राम मन्दिर ध्वस्त करके मस्जिद का निर्माण किया, कैसे इसके खम्भें मस्जिद में मौजूद आज भी पुराने ढ़ांचे की गवाही देते हैं। इस महत्वपूर्ण विश्लेषण में उन्होंने पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ-साथ 'तारीख़ पारीना मदीनतुल औलिया' और बालकराम विनायक कृत 'कनकभवन रहस्य' का भी उपयोग किया है। इसके उपरान्त वे ऐतिहासिक साक्ष्यों पर जन्मस्थान और मस्जिद में सबसे पहले विवाद का वर्णन करते हैं- 'गुलाम हुसैन नाम का एक सुन्नी फकीर ने सुन्नियों को यह कहकर भड़काया कि औरंगजेब ने गढ़ी में एक मस्जिद बनवा दी थी उसे बैरागियों ने गिरा दिया है। तदोपरान्त यहाँ पहला झगड़ा हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य दर्ज हुआ। इसी प्रकरण के कारण यह ग्रन्थ प्रसिद्ध हुआ क्योंकि इसी के जानकारी के आधार पर माननीय उच्च न्यायालय, उार प्रदेश ने इस प्रकरण पर अपना निर्णय दिया था। अन्त में लाला जी 'अंग्रेजी राज्य में अयोध्या' पर भी प्रकाश डालते हैं जो पूर्णतया स्रोतों पर ही आधारित है।

उपरोक्त से यह समझा जा सकता है कि इतिहास के वे जानकार जो भारतीय इतिहास की परम्परा की धारा को नहीं स्वीकारते उन्हें अयोध्या की वास्तविकता से परिचित कराने हेतु लाला सीताराम भूप द्वारा रचित अयोध्या का इतिहास देखने की आवश्यकता है। अन्त में लाला भूपत राय के एक कथन से समस्त प्रकरण को समझना बेहतर होगा, उन्होंने एक वस्तुपरख इतिहासकार में रूप में 1928 में कहा था ''अयोध्या में इतिहास की सामग्री दबी पड़ी है जो पुरातत्व विभाग की खोज से निकलेगी, परन्तु जो कुछ इस ग्रन्थ में लिखा गया है उससे यदि इतिहास के मर्मज्ञों का ध्यान इस पुरानी उजड़ी नगरी की ओर आकर्षित हो तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।'' इसी मूल वाक्य से आगे का मार्ग प्रशस्त हुआ और ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधारों पर ही अयोध्या की आत्मा और भारतीयों का विश्वास, जिस पर 1528 में चोट पहुंचायी गई थी पुनः स्थापित हो सका।

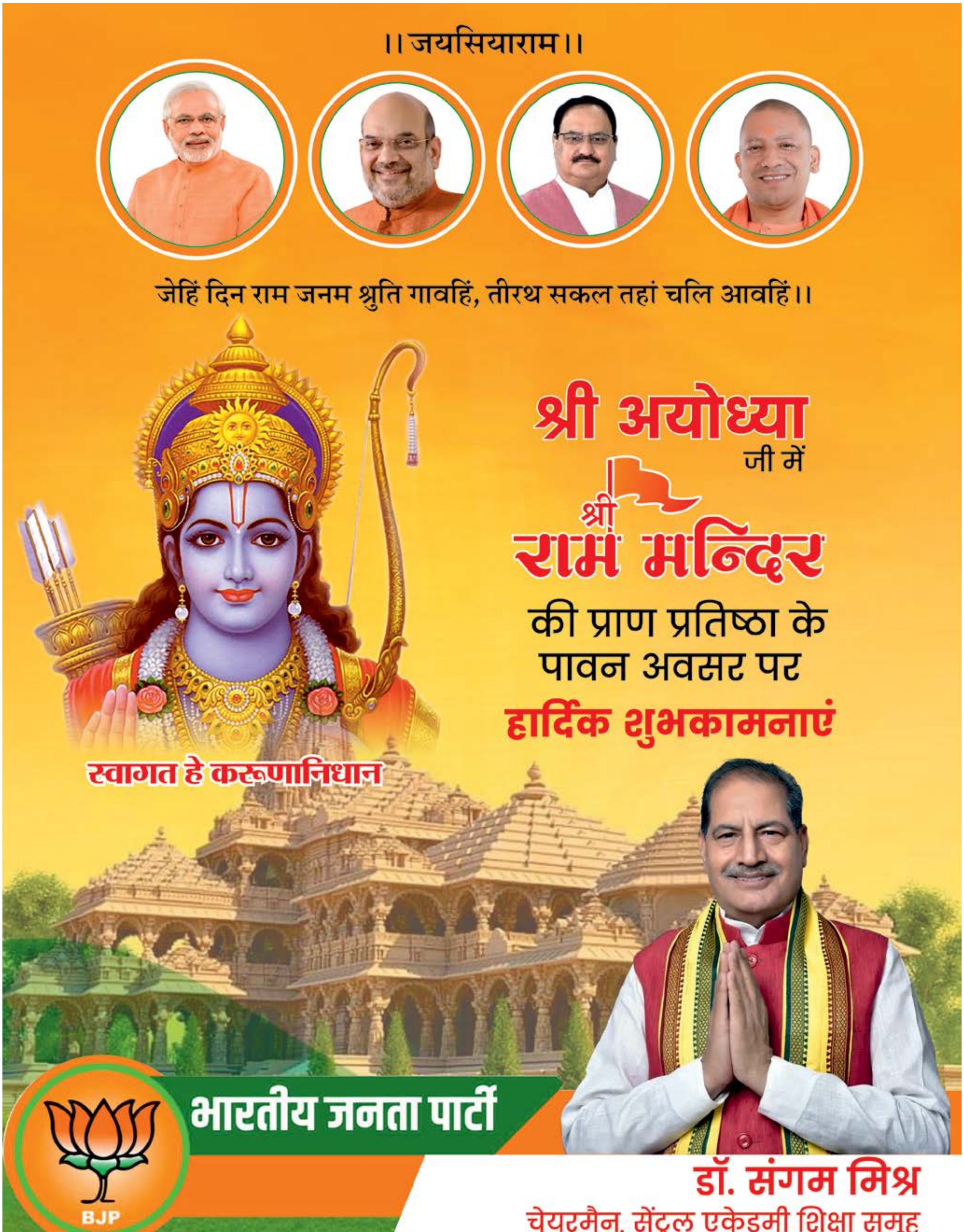

।। जयसियाराम ।।
जेहिं दिन राम जनम श्रुति गावहिं, तीरथ सकल तहां चलि आवहिं ।।
श्री अयोध्या जी में
श्री राम मन्दिर
की प्राण प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं
स्वागत हे करूणानिधान
भारतीय जनता पार्टी
BJP
डॉ. संगम मिश्र
चेयरमैन, सेंट्रल एकेडमी शिक्षा समूह
वरिष्ठ भाजपा नेता, प्रयागराज

आलेख

पुराण और साहित्यिक स्त्रोतों के आईने में अयोध्या

प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी

पार्जिटर ने पुराणों के आधार पर वंशीय इतिहास पर प्रकाश डाला है उसके अनुसार अयोध्या सूर्यवंशियों की राजधानी थी इस शाखा के कुल 123 राजाओं की सूची हमें प्राप्य है. इनमें से 93 शासक महाभारत से पूर्व और शेष 30 महाभारत युद्ध के बाद हुए थे. पार्जिटर के अनुसार पूरब में होने के कारण कोशलराज विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा उत्पन्न उन विपत्तियों से बचा रहा जो पंजाब तथा अन्य पश्चिम प्रदेश के राज्यों को भुगतना पड़ा था. साथ ही चूंकि यहाँ की सामरिक तथा सुरक्षा व्यवस्था अति सुदृढ़ थी इसीलिए यह अयोध्या अर्थात 'अजेय'ही बनी रही.

"कवि कुमारदास के संस्कृत महाकाव्य 'जानकीहरण'. इस काव्य के शुरू में ही अयोध्या का वर्णन है. इसमें किये गए वर्णन के अनुसार 'अयोध्यापुरी क्षत्रियों के तेज की शमी धनधान्य से पूरित, एक दिव्य नगरी ऐसी जान पड़ती थी मानो ये भोग के भार से स्वर्ग से पृथ्वी पर आई हो'."

अयोध्या का महत्त्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि सात प्रमुख तीर्थों के उल्लेख में सर्वप्रथम उल्लिखित अयोध्या ही है:-

'अयोध्या मथुरा माया काशी कांची हव्वंतिका।
पुरी द्वारावतिचैव सप्तैता मोक्षदायिका:।।'

महर्षि वाल्मीकि की रामायण के आधार पर अयोध्या के प्रसिद्ध इतिहासकार लाला सीताराम 'भूप' अयोध्या को मृत्यलोक की अमरावती कहते हैं. वे इसे सबसे प्राचीन और लोकप्रसिद्ध राजधानी मानते हैं जिसकी स्थापना स्वयं मनु ने बसाई थी. रामायण के बालकाण्ड में लिखा ही है:

'अयोध्या नाम तत्रास्ति नगरी लोक्विस्श्रुत।
मनुना मान्वेंद्रण पुरैव निर्मिता स्वयम।।'

इसकी रचना ऐसे की गई थी कि इसके चारों ओर प्राकार (कोट) था. प्रकार के ऊपर नाना प्रकार के 'शत्घनी' आदि सैंकड़ों यंत्र (कल) रखने के भी संकेत मिलते हैं. संभवत: यह उस काल में अग्नि या पत्थर फेंकने के कोई बड़े यंत्र आदि होंगे जिनसे शत्रुओं के आक्रमणों

पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग एवं कला संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

को निष्फल किया जाता रहता था. इसी कोट के नीचे पानी से भरी हुई परिखा (खाई) का भी उल्लेख मिलता है जिसे वाल्मीकि जी ने 'दुर्गगम्भीर – परिखा' लिखा है. संभवतः तीन और नदी होने के कारण पश्चिम स्तिथ द्वार प्रमुख रहा होगा जिसे 'वैजयन्तद्वार' लिखा गया है. पूर्व में भी द्वार की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि जब विश्वामित्र जी के साथ राम-लक्ष्मण के सिद्धाश्रम एवं मिथिला नगरी की ओर जाने का जिक्र है तब इसी पूर्वी द्वार से जाना लिखा है; और, जब राम-लक्ष्मण और सीता वनवास को जा रहे थे तब दक्षिण द्वार का भी उल्लेख मिलता है. इस द्वार का उल्लेख लक्ष्मण द्वारा सीता को वन में छोड़कर जाने के समय भी किया गया है. ये तो सच ही है कि वेदत्रयी में स्पष्ट रूप से न तो अयोध्या का और न ही उसके प्राचीन नाम कोशल का उल्लेख मिलता है. अथर्ववेद के द्वितीय खंड में पहली बार उल्लेख मिलता हैः

'अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूः अयोध्या।
तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।

वैसे अप्रत्यक्ष उल्लेख सरयू नदी के उल्लेख से तो हमें मिलता ही है जैसे ऋग्वेद मंडल 9, 10, 64 में सरयू का आह्वान सरस्वती और सिन्धु के साथ किया गया है. इसी तरह शतपथ ब्राह्मण में कोशल का नाम आया है और ऋग्वेद में कोशल के सूर्यवंशी राजाओं के नाम कहीं-कहीं उल्लिखित हैं जैसे ऋग्वेद के मंडल 4, 10, 60 में इछ्वाकु का; मंडल 8, 9, 39 में मानधात्र्य का; इसी प्रकार एक अन्य राजा अंगिरस का उल्लेख मंडल 8,12, 40 में है और 10 तथा 134 में मान्धाता का उल्लेख मिलता है. इस प्रकार अप्रत्यक्ष उल्लेखों से कोशल या अयोध्या के इतिहास को देखा-समझा जा सकता है.

जैन मत का सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ 'आदिपुराण' है, जिसकी रचना आठवीं शताब्दी विक्रम संवत में जिनसेनाचार्य ने संस्कृत में की थी. इसके 12वें अध्याय में अयोध्या का वर्णन दिया गया है. इसी में इसके नाम के अर्थ का उल्लेख भी किया गया है – जिसे कोई जीत न सके वह है अयोध्याः

'संचस्कुरुश्च तां वप्रप्राकारापरिखादिभीः।
अयोध्या न परं नाम्ना गुगुणेनाप्यरिभीः सुराः।।(76.)

अर्थात 'फिर देवों ने कोट और खाई से इसे सुसज्जित और सुरक्षित या अलंकृत किया और अयोध्या केवल नाम ही से नहीं बैरियों के लिए भी अभेद्य सी 'अयोध्या' हो गयी.

'साकेतरूढ़िरप्यस्या श्लाघ्यैव सुनिकेतनैः।
स्वनिकेत इवाह्वांतुं इवाह्वान्तुं साकूतेः केतवाहुभिः।।(77.)

अर्थात इसको साकेत इसलिए कहा गया है क्योंकि इसमें अच्छे-अच्छे भवन/मकान आदि थे जिनपर ध्वजा ऐसे लहराती रहती थी जैसे वे देवताओं को नीचे आने का आह्वान या उन्हें निमंत्रित कर रहे हों. इसी प्रकार अगले श्लोक (78) में इसके कोशल या सुकोशल नाम की व्याख्या मिलती और उसी के साथ निहायत विनीत जनों के इसमें बसे होने के कारण इसे विनीता भी कहा गया है.

जहां तक कालिदास का प्रश्न है वे जब अपने प्रश्रयदाता राजा चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के साथ अयोध्या आये थे तब त्रेता की समृद्ध अयोध्या द्वापर के बाद कलियुग के इस काल में कुछ उजड़ सी रही थी. इसका वर्णन कवि ने 'रघुवंश' के सर्ग 16वें में किया भी है. इसी प्रकार कवि कुमारदास के संस्कृत महाकाव्य 'जानकीहरण'. इस काव्य के शुरू में ही अयोध्या का वर्णन है. इसमें किये गए वर्णन के अनुसार 'अयोध्यापुरी क्षत्रियों के तेज की शमी धनधान्य से पूरित, एक दिव्य नगरी ऐसी जान पड़ती थी मानो ये भोग के भार से स्वर्ग से पृथ्वी पर आई हो'.

जैसा कि हम ऊपर लिख ही आये हैं जैन मत का सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ 'आदिपुराण' है, जिसकी रचना आठवीं शताब्दी विक्रम संवत में जिनसेनाचार्य ने संस्कृत में की थी और इसके उद्धरण भी हम पहले दे आये हैं. चूंकि अयोध्या का सम्बन्ध जैन मत और जैनियों से है तो अन्य ग्रंथों की और भी हमारा ध्यान जाना ही चाहिए. इस सिलसिले में प्रसिद्ध जैन ग्रन्थ, 'तिलकमंजरी' की ओर ध्यान बरबस जाता ही है. इसकी रचना धनपाल ने की थी. वे कहते हैं, 'अयोध्या की रमणीयता से सारा सुरलोक निरस्त हो गया है.... यह भारतवर्ष के मध्यभाग का सुन्दर अलंकार है! इसके चारों ओर ऊंचा कोट है और उसके आगे जल से भरी हुई गहरी खाई है जिसे लांघना असंभव ही था. इसके जल में कोट की परछाई ऐसे पड़ती थी जैसे मानो मैनाक की खोज में समुद्र में उतर आया हो.'

इसी प्रकार दूसरा महत्वपूर्ण जैन ग्रन्थ हेमचंद्राचार्य का 'त्रिशष्ठिशलाका पुरुष चरित' है. हेमचन्द्र अन्हाल्वाडे के कुमारपाल सोलंकी के गुरु थे. इसी ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि 'इन्द्रदेव की आज्ञा से कुबेर ने 12 योजन चौड़ी और 9 योजन लम्बी विनीतापुरी बनायीं जिसका दूसरा नाम अयोध्या भी था और उसे अक्षय धनधान्य और वस्त्र से भर दिया......उसके घरों के आंगनों में मोती चुनकर स्वस्तिका बनती थी – वहाँ जलकेलि में स्त्रियों के हार टूटने से घर की बावलियां ताम्रवर्णी सी लगती थीं जहां चंद्रमणि की भित्तियों से रात को इतना जल गिरता था कि सड़कों की धूर बैठ जाती थी..... विनीता नाम की पुरी जम्बुद्वीप के भारतखंड में पृथ्वी की शिरोमणि थी.

पार्जिटर ने पुराणों के आधार पर वंशीय इतिहास पर प्रकाश डाला है उसके अनुसार अयोध्या सूर्यवंशियों की राजधानी थी इस शाखा के कुल 123 राजाओं की सूची हमें प्राप्य है. इनमें से 93 शासक महाभारत से पूर्व और शेष 30 महाभारत युद्ध के बाद हुए थे. पार्जिटर के अनुसार पूरब में होने के कारण कोशालराज विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा उत्पन्न उन विपत्तियों से बचा रहा जो पंजाब तथा अन्य पश्चिम प्रदेश के राज्यों को भुगतना पड़ा था. साथ ही चूंकि यहाँ की सामरिक तथा सुरक्षा व्यवस्था अति सुदृढ़ थी इसीलिए यह अयोध्या अर्थात 'अजेय'ही बनी रही.

राम मंदिर आंदोलन भारत का संक्रान्ति काल

आचार्य वीनू पंत

जो व्यक्ति इस आन्दोलन काल के साक्षी हैं और जिन्होने इस पूरे संघर्ष को देखा है अगर उनकी दृष्टि से इस आन्दोलन को समझने का प्रयास किया जाए तो इससे जनित एक अन्य आंदोलन भी दृष्टिगत होता है जो राजनीतिक या धार्मिक उन्माद से परिभाषित नहीं होता यह है भारतीय समाज विशेष तौर पर हिन्दू समाज - में आया एक मूलभूत परिवर्तन जो उसकी सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक सभी प्रवृतियों में एक परिवर्तन के रूप में आने वाले दशकों में परिलक्षित होता है एक संक्रान्ति काल जो हिन्दू समाज में पुर्नजागरण का काल भी चिन्हित किया जा सकता है।

लेखिका सिक्किम विश्वविद्यालय में इतिहास एवं प्राच्य विद्या की आचार्य हैं।

अस्सी के दशक से गतिमान हो सारे विश्व के संज्ञान में आने वाले 'राम मंदिर। जन्मभूमि आन्दोलन को केवलमात्र राजनीतिक तौर पर देखना और उसकी समीक्षा करना उस आन्दोलन को एक विशेष मत या विचारधारा से समझने की कोशिश करने जैसा है जो कि सर्वथा अधूरा प्रयास है और उस पूरे जनान्दोलन की अधूरी छवि ही सामने लाता है। जो व्यक्ति इस आन्दोलन काल के साक्षी हैं और जिन्होने इस पूरे संघर्ष को देखा है अगर उनकी दृष्टि से इस आन्दोलन को समझने का प्रयास किया जाए तो इससे जनित एक अन्य आंदोलन भी दृष्टिगत होता है जो राजनीतिक या धार्मिक उन्माद से परिभाषित नहीं होता यह है भारतीय समाज विशेष तौर पर हिन्दू समाज - में आया एक मूलभूत परिवर्तन जो उसकी सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक सभी प्रवृत्तियों में एक परिवर्तन के रूप में आने वाले दशकों में परिलक्षित होता है एक संक्रान्ति काल जो हिन्दू समाज में पुर्नजागरण का काल भी चिन्हित किया जा सकता है।

उपनिवेशिक काल की समाप्ति पश्चात विभाजन की त्रासदी से उभरते भारतीय समाज में हिन्दू चेतना धीरे-धीरे लुप्त सी हो रही थी, वैश्विक परिदृश्य और भारतीय राजनीति दोनों में ही उस काल में हिन्दू चेतना का अभाव सा दृष्टिगत होता है। इस काल में यदि हम विशेषतौर पर युवा पीढ़ी को समझने का प्रयास करें तो धर्म से विमुख बड़ा समूह दिखता है जो अपनी धार्मिक पहचानों से भी परहेज कर रहा है। हाथ में रक्षासूत्र बांधना, मन्दिर जाना, तिलक लगाना - यह सब पिछड़ेपन के मानक मान लिए गये और युवा वर्ग इनसे दूर होने लगा विशेषतौर पर पुरुष वर्ग। हिन्दू समाज आधुनिकता की जिस छवि को आत्मसात करने का प्रयास कर रहा था वो आधुनिकता ही उसे अपनी संस्कृति, अपने संस्कारों और मूल्यों से दूर करती जा रही थी और इस दूरी का प्रभाव उसके धर्म संबंधी आचरण तथा धार्मिक संस्कारों के पालन पर भी दृष्टिगोचर होने लगा था। अस्सी के दशक तक आते-आते विदेशी भाषा- संस्कृति - विदेशी त्यौहार और चाल चलन भारतीय समाज को विशेष तौर पर शहरी समाज को अपने गहरे प्रभाव में ले चुका था और ग्रामीण अंचलों से शहर में आये युवा वर्ग को हीन दृष्टि से देखना- क्योंकि वो अभी भी भारतीय सस्कृति से जुड़ा था एक प्रचलन सा हो गया, जिसके रहते उस पर भी तथाकथित आधुनिक होने का सामाजिक और मानसिक भार पड़ने लगा।

इस काल खण्ड में जब पूरी संस्कृति ही अवहेलना झेल रही थी- राम जन्मभूमि आंदोलन अपने साथ भारतीय समाज का पुर्नजागरण लेकर आया। इस आन्दोलन से एक नये समाज का सृजन प्रारंभ हुआ यह आलेख इस पुर्नजागरण को समझने का एक प्रयास मात्र है।

जन्मभूमि का संघर्ष तो लम्बे समय से चल रहा था, इतिहास की दृष्टि से देखा जाए तो जबसे जन्मभूमि पर आक्रमण कर उसे नष्ट किया गया तभी से उसे पुनः प्राप्त कर रामलला को विराजमान करने का एक लम्बा संघर्ष सामने आता है जिसमें सिख गुरुओं की भी भूमिका रही है। किन्तु औपनिवेशिक काल में यह संघर्ष केवलमात्र उस भूमि पर कानूनी कब्जे का संघर्ष बनकर रह गया और जनमानस से दूर होता गया इस अगर हम इस आन्दोलन के परिवर्तित स्वरूप को भारत में हिन्दुओं की परिवर्तित मानसिकता से देखने का प्रयास करें तो

कहीं न कहीं अपने धर्म और धार्मिक चिन्हों तथा धार्मिक स्थानों के प्रति उभरती उदासीनता तथा अपनी संस्कृति और संस्कारों के पति पैठ करती हीन भावना दृष्टिगत होती है जो कि अग्रेजों की शिक्षा पद्धति का सीधा प्रभाव है।

यहां यह समझने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है कि मान्यता न होते हुए भी मौलवी द्वारा दी गई धार्मिक शिक्षा और मदरसों में न तो परिवर्तन आया न कमी- वही प्रत्येक रविवार इसाई गिरिजाघरों में धार्मिक शिक्षा जारी रही, परन्तु इन दोनों के विपरीत हिन्दू समाज अपनी सर्वग्राहिता के साथ अपने धर्म से विमुख होता प्रतीत हो रहा है और उसकी धार्मिक शिक्षा औपनिवेशिक काल में ही केवलमात्र कुछ केन्द्रों तक सीमित सी हो जाती है।

मानसिक दासता का यह काल औपनिवेशिक सता को भारत से हटाने के पश्चात भी समाप्त नहीं होता क्योंकि हमारी शिक्षा प्रणाली 1947 के पश्चात भी औपनिवेशिक नीतियों पर ही आधारित रहती है। 1947 से 1984 तक का जो काल है वहां एक तरफ हिन्दू समाज आधुनिक्ला की दौड़ में अपने अस्तित्व को नकार रहा है और दूसरी तरफ राष्ट्र को धर्म निरपेक्ष घोषित कर अल्प संख्यक अधिकारों के नाम पर अभारतीय मूल के धार्मिक संस्थानों को राज्य की तरफ से सुविधाएं मिल रही है। यह एक दोधारी तलवार बनकर हिन्दू युवा को अपनी पहचान से विमुख करता जाता है। इस कालखण्ड में राम जन्म भूमि आंदोलन सुप्त समाज को झकझोरने का कार्य करता है और उसे उसकी तंद्रा से उठा अपनी सांस्कृतिक पहचान से अवगत कराने का कार्य करता है। यह भारत के लिए महत्वपूर्ण संक्रान्ति काल है जो उसकी युवा पीढी को उसकी संस्कृति से पहचान कराता है और राष्ट्रभर में एक ऐसे पुर्नजागरण को जन्म देता है जो प्छक्प्। के पुनः भारत बनाने का कार्य प्रारम्भ करता है।

इस संक्रान्ति काल को समझना और इसका विश्लेषण करना अत्यन्त आवश्यक है। यदि हम इस आन्दोलन की मात्र राजनीतिक दृष्टि से (जैसा की प्रचलित भाषा में आज भी कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है मण्डल-कमण्डल) न देख इसे एक जागृति आन्दोलन के स्वरूप में देखते हैं। भारतीय युवा इस राजनीतिक आन्दोलन से आकर्षित हो रहा था किन्तु उच्च शिक्षा संस्थानों में भारतीय नीति निर्धारण में लगे युवा अभी भी अछूते थे- न केवल अछूते वरन् विरोधी मानसिकता से भी ग्रस्त थे। अतिशयोक्ति न होगी अगर लिखा जाए कि यह युवा पीठी अपनी संस्कृति के प्रति हीन भावना रखते बाली हो गयी थी। इन युवाओं ने इस आन्दोलन का विरोध किया इसे और इससे संबंधित लोगों को पुरातनवादी और आधुनिकता विरोधी कहा, तथा स्वयं इन सबसे दूर रहने का भरपूर प्रयास किया। किन्तु सामाजिक संक्रान्ति किसी वर्ग विशेष को ही प्रभावित नहीं करती अपितु सम्पूर्ण समाज को क्षणः क्षणः अपने प्रभाव में ले एक आमूल चूल परिवर्तन को जन्म देती है। यह संक्रान्ति काल का प्रारम्भ था और यह आज भी धीरे धीरे अपना प्रभाव दृष्टिगत करा रही है. सम्पूर्ण हिन्दु समाज आज भी अपनी सास्कृतिक विरासत पर गर्व करें यह वर्तमान में तो सत्य नहीं है किन्तु भविष्य के गर्भ में भारत का उत्थान उसकी सांस्कृतिक पहचान से जुड़ा है यह अब सत्य प्रतीत होता है।

जन्मभूमि आन्दोलन की सफलता केवलमात्र रामलला के मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा से आकी नहीं जा सकती। यह सफलता हिन्दू समाज की मानसिकता के परिवर्तन की यात्रा है, यह सफलता हिन्दू समाज के युवाओं के ह्रदय परिवर्तन की यात्रा, यह सफलता मानसिक दासता, और दासता जनित चिन्हों से मुक्ति पाने संघर्ष के प्रारम्भ की यात्रा है।

वह युवा समाज जो ''जय श्री राम'' के घोष को रूढ़िवादिता कहता अपनी सांस्कृतिक चेतना राजनीतिक दृष्टि से देखता था वो आज भरी सडक भरी भीड़ में उत्सवों और धार्मिक स्थानों में उन्मुक्त ह्रदय से जब ''जय श्री राम'' जयघोष करता और अपनी सांस्कृतिक पहचान को स्वीकारता दिखता तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि यह उसी काल का परिणाम है जो जन्मभूमि आन्दोलन के प्रभाव से प्रारम्भ होता है।

अस्सी के दशक से 21वीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में हिन्दू समाज में जिस सास्कृतिक जागृति को हम देख पा हैं समझ पा रहे वह इसी संक्रान्ति काल का परिणाम है।

राजनीतिक दृष्टि से जिस आन्दोलन को भारत का तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग रूढ़िवादिता और पुरातनवादिता जोड राष्ट्र विरोधी परिभाषित कर रहा था, आन्दोलन एक ऐसे परिवर्तन का कारण बना जहां भारतीय युवा अपनी सांस्कृतिक पहचान को आत्मसात कर अपनी संस्कृति पर गर्व करना प्रारम्भ करता देखा गया। यह संक्रान्ति एक ऐसी राष्ट्रीय चेतना का आधार बनी जहाँ भारतीय होना हीन नही अपितु गौरव का पर्याय माना जाने लगा। यह संक्रान्ति प्रारम्भ निश्चित तौर राजनीतिक घटनाक्रमों से ही हुई परन्तु धीरे धीरे यह राजनीतिक आन्दोलन अपनी जनमानस के जागरण की पुकार के कारण एक सामाजिक आन्दोलन में परिवर्तित हो गया।'' मण्डल कमण्डल कहने वाले लोगों का सामाजिक बहिष्कार और युवाओं का मन्दिरों की दहलीज पार कर धार्मिक उत्सवों में शामिल होना तथा अपने धर्म और संस्कृति पर लगे प्रश्न चिन्हों का उत्तर देने को आतुर होना इस काल की सबसे प्रमुख उपलब्धि है। यह परिवर्तन राजनीतिक नहीं मानसिक है सामाजिक है और आज जब हम जन्मभूमि पर सैकड़ों वर्षों के संघर्ष के पश्चात ''रामलला'' को पुन स्थापित कर पा रहे है तो यह समझना अति आवश्यक है कि भारत का युवा वर्ग इस संक्रान्ति काल से प्रभावित हो आज अपने भारतीय होने पर गर्व कर रहा और अपनी धार्मिक व सामाजिक विरासत को संरक्षित करने का प्रयास कर रहा है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि भारतीय नीति निर्धारण में यह जागृत युवा अपनी सकारात्मक भूमिका निभाने को प्रयासरत है, यही इस आन्दोलन की सबसे बड़ी सफलता है।

आलेख

रामकाज में समर्पित योद्धा अशोक सिंहल

डॉ. राकेश कुमार उपाध्याय

"भारतीय लोक जीवन में असहिष्णु विचार को जड़मूल से उखाड़कर फेंक देने की परंपरा को ही अशोक सिंहल ने अपने जीवन से नई ऊर्जा दी। जन-जन को जगाने खुद ही निकल पड़े, अयोध्या आंदोलन के जरिए एक बात बिल्कुल साफ कर दी कि अगर तोड़ोगे तो तोड़े जाओगे। इस लिहाज से उन्होंने जन-जन में निर्भीक भाव भरने का काम किया और बताया कि अहिंसा निजी आध्यात्मिक जीवन को उंचा उठाती है लेकिन समाज तो शक्ति साधना से ही अपने भविष्य और मान्यताओं को सुरक्षित रख सकता है। शक्ति उपासना के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं।"

लेखक भारत अध्ययन केंद्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चेयर प्रोफेसर रह चुके हैं।

अशोक सिंहल समकालीन सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक नेताओं की पीढ़ी से बिल्कुल अलग थे। राजनीति की टेढ़ी चालों से उनका वास्ता नहीं था। वह जो सोचते थे, वही बोलते थे और जो बोलते थे, वही करते थे। मनसा-वाचा-कर्मणा बिल्कुल एक। मन, वचन और कर्म की एक रसधारा बहती थी उनके जीवन के भीतर, इसलिए उनमें बहुत पेच नहीं था। अयोध्या का विवाद भले ही देश में राजनीतिक मुद्दा बन गया जिसकी वजह से अशोक सिंहल को देश में अनेक राजनीतिक नेताओं के कड़वे बोल का भी मुकाबला करना पड़ा लेकिन सच्चाई तो यही है कि अशोक सिंहल के दिल में अयोध्या के लिए लगन किसी राजनीतिक कारण से नहीं जगी थी।

अशोक सिंहल का संपूर्ण जीवन राममय था। उनके प्राणों में नादरूप राम प्रकट थे, विकट अंधेरों में राम ही उनके मार्गदर्शक थे। राम का सूर्यवंशी नर रूप उनकी आंखों के सम्मुख सर्वप्रिय था। उसी सूर्य वंश की ज्योति को हर क्षण अपनी आंखों के सम्मुख रखकर आजीवन अविराम अशोक सिंहल राम साधना में जुटे रहे।

संसार के अग्निपथ पर अशोक सिंहल का संपूर्ण जीवन राम से परिपूर्ण अग्निमय संघर्ष का साक्षी है। उनकी भौतिक देह कुछ वर्ष पूर्व अग्नि की लपटों में भस्मीभूत होकर पंचतत्व में विसर्जित हो चुकी है। किन्तु उनके जीवन की नश्वर भौतिक यात्रा अविनाशी परम ज्योतित प्रचंड विराट सनातन जीवन का प्रेरक आलोक पथ है।

अशोक सिंहल के प्रेरक जीवन प्रकाश में जब जब वर्तमान समेत आगामी पीढ़ियों के युवक सनातन सत्य की खोज करने निकलेंगे तो पाएंगे कि उनका जीवन ध्येय और अधिक प्रशस्त

प्रखर होता है। एक ऐसा जीवन जिसका शोधपूर्ण अवलोकन स्पष्ट संदेश देता है कि सनातन हिदू स्वत्व का अस्तित्व यावत् सूर्य-चंद्र-तारकम् इस धरती पर अखंड और अक्षुण्ण रहेगा।

काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान पंडित कामेश्वर उपाध्याय जी ने अशोकजी के संघर्षमय जीवन पर कुछ पंक्तियां लिखी थीं, अकस्मात याद आती हैं।

सिंहल है निःशंक पथिक, प्रज्जवलित सूर्य सा जलता है।
ये तमस घटाएं फटती हैं, जब रण में सिंहल चलता है।।
कल्पांतकाल धकधक धिक-धिक ज्वार भरा है सिंहल में...।।
सौ-सौ शेरों का भैरव सा हुंकार भरा है सिंहल में।।

आखिर कौन थे अशोक सिंहल और क्यों वो बीती शताब्दी के सबसे चर्चित चेहरों में गिने गए जिन्हें दरकिनार कर राजनीति का रास्ता न राष्ट्रभाव में पल्लवित दलों के लिए बन सकता था और ना ही वामपंथी और कथित सेक्युलर मध्यमार्गी ही उनकी अवहेलना कर सकते थे। 1992 में जब अयोध्या में बाबरी विध्वंस हुआ तो किसी को अशोक सिंहल में घोर कट्टरवादी सांप्रदायिक नेता की छवि दिखी तो ज्यादातर हिंदुओं ने उनमें एक ऐसे क्रुद्ध हिंदू का तेजोमय प्रकटीकरण देखा जिसकी वाणी से बार-बार गुलाम भारत की वो पीड़ा छलक-छलक पड़ती थी जिसमें गोरी-गजनवी से लेकर खिलजी और बाबर-औरंगजेब तक हिंदू धर्म और हिंदुओं के श्रद्धास्थानों पर इस्लामी राजसत्ता के बर्बर असहिष्णु प्रहार के विरुद्ध घर्घर प्रतिवादी नाद और पलटवार सुनाई पड़ता था। अशोक सिंहल पर लिखी कविता की ये लाइनें महत्वपूर्ण हैं जिसका जिक्र ऊपर भी मैंने किया है कि-

मुगलों की करनी का गहरा घाव भरा है सिंहल में।।
रणचंडी के करवालों का झंकार भरा है सिंहल में।
सौ-सौ शेरों का भैरव सा हुंकार भरा है सिंहल में।।

अशोक सिंहल समकालीन सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक नेताओं की पीढ़ी से बिल्कुल अलग थे। राजनीति की टेढ़ी चालों से उनका वास्ता नहीं था। वह जो सोचते थे, वही बोलते थे और जो बोलते थे, वही करते थे। मनसा-वाचा-कर्मणा बिल्कुल एक। मन, वचन और कर्म की एक रसधारा बहती थी उनके जीवन के भीतर, इसलिए उनमें बहुत पेच नहीं था। अयोध्या का विवाद भले ही देश में राजनीतिक मुद्दा बन गया जिसकी वजह से अशोक सिंहल को देश में अनेक राजनीतिक नेताओं के कड़वे बोल का भी मुकाबला करना पड़ा लेकिन सच्चाई तो यही है कि अशोक सिंहल के दिल में अयोध्या के लिए लगन किसी राजनीतिक कारण से नहीं जगी थी। न तो वह कभी किसी चुनावी अखाड़े का हिस्सा बने और ना ही संसदीय राजनीति की किसी कुर्सी पर उनकी नजर थी।

उनका कोई निजी परिवार भी नहीं था। न विवाह किया और ना ही घर बसाया। वह आरएसएस प्रचारक रहे पूरी उम्र। एक साधू-संत की तरह सारा देश उनका घर और सारा समाज ही उनका परिवार। इलाहाबाद में आनंद भवन के ठीक पीछे उनकी पैतृक हवेली थी जिसे उन्होंने बाद में वेद विद्यालय और आश्रम में परिवर्तित कर दिया लेकिन दिल्ली में उनकी सारी दैनिक जीवनचर्या आरकेपुरम, दिल्ली के एक छोटे से कमरे में ही सिमटी थी जहां सोते-जागते उनके सामने राम ही मूर्तिमान रहते थे।

उनका जीवन बिल्कुल बेदाग और निष्कलुष बीता तो इसके पीछे कारण यही था कि उन्होंने कभी क्षणभर के लिए भी स्वयं को अपने राम से अलग नहीं रखा। 60 हजार गांवों में एकल स्कूल खोले, हजारों मंदिरों की व्यवस्थाएं ठीक करवाईं, अनुसूचित वर्ग के हजारों युवकों को भी शिक्षित-प्रशिक्षित कर उन्हें कथा-प्रवचन, पूजा-पाठ-कर्मकांड आदि में विधिवत शामिल करवाया, केरल-तमिलनाडु के सैकड़ों मंदिरों में अछूत कही जाने वाली जातियों के पुजारी सामाजिक मान्यता के साथ नियुक्त करवाए, वाराणसी में सबसे बड़े अछूत कहे जाने वाले डोमराजा के घर शंकराचार्य और संतों समेत खुद भोजन करने का बंदोबस्त किया, सैकड़ों वेद विद्यालय और गुरुकुल खोले, दुनिया की सबसे बड़ी मानवीय रैली का इसी दिल्ली के वोट क्लब पर रिकॉर्ड कायम करवाया तो कहीं ना कहीं राम की रोशनी उनके जीवन में भरपूर बरसती रही कि वो अंतिम सांस तक लड़ते चले गए भारत के स्व पर छायी सभी प्रकार की बुराइयों के विरुद्ध।

वर्ष 2015 में जब वह अस्वस्थ हुए थे, मैं उनसे मिलने गया था। ढेरों बातें हुईं। अयोध्या के मामले पर भी सवाल पूछा था मैंने तो उन्होंने मेरी ओर गहरी आंखों से देखा और प्रतिप्रश्न किया, 'उस ढांचे से बड़ा कलंक और क्या हो सकता था? हमने किसी की उपासना से जुड़ी मस्जिद नहीं तोड़ी, हमने तो अपने आराध्य राम की जन्मभूमि पर सैकड़ों साल पहले दासता के समय में हुए पाप का प्रक्षालन किया था। राम ने ही ये कार्य करवाया, हम नर तो वानर की तरह उनका काम करते चले गए। जैसे हनुमानजी को राम ने सिर्फ सीताजी का पता लगाने का काम दिया था, लंका जलाने का नहीं फिर भी लंका जली तो राम ने बुरा नहीं माना। परिस्थिति में उस ढांचे को गिरना ही था, 6 दिसंबर को गिर गया, इसमें क्या गलत हुआ।' पत्रकार के रूप में मैंने पूछा कि बातचीत के रास्ते से भी ढांचा कहीं दूर स्थानांतरित हो सकता था? उन्होंने जवाब दिया कि 'कोशिश कम नहीं की गई शांति से मामला सुलझाने की। लेकिन बाबरी के पक्षकार कभी तैयार ही नहीं हुए, बस सदैव अटकाने, भटकाने और उग्रवाद फैलाकर लड़ने को आमादा। 91 में जब बातचीत हुई तो यही कहा गया कि साबित कर दीजिए कि राम जन्मभूमि है तो अभी छोड़कर हट जाएंगे, हिंदुओं के हवाले कर देंगे अयोध्या की भूमि। हमने उसी समय उन्हें सारे तथ्य, दस्तावेज और प्रमाण दे दिए लेकिन मानने को ही तैयार नहीं हुए। केवल जिद ठान ली थी कि शांति से कोई बात नहीं मानेंगे। तो कहां गए वो सारे लोग, इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले के बाद क्यों बोलती बंद हो गई सबकी?'

अशोक सिंहल के पास विधि सम्मत, पुराण सम्मत और जनमन को स्वीकार अकाट्य तर्क थे। उन्होंने भारत की राजनीति में बदलाव का युग शुरु किया इसमें भी कोई दोराय नहीं। 80 और 90 के दशक के राजनीतिक माहौल की याद जिन्हें है वो ज्यादा बेहतर समझ सकते हैं। अशोक सिंहल ने अपनी शर्तों पर राजनीति को मजबूर किया। विपक्ष से भी दो-दो हाथ किए और अपने साथ खड़े कुछ नेताओं से भी। वह खुद राजनीति से प्रत्यक्ष नहीं जुड़े थे लेकिन देश में चल रही राजनीति की हर चाल पर उनकी सतर्क निगाहें गड़ी रहीं। विनय कटियार ने एक साक्षात्कार में बताया था कि 'वह हिंदुओं के सर्वमान्य नेता थे। खुद राजनीति में अगर उनकी कोई रुचि थी तो बस यही कि हिंदुओं की आस्था और सनातन परंपराओं के खिलाफ राजनीतिक पार्टियां दोयम दर्जे का बर्ताव बंद करें। राम के सवाल पर सिंहल ने अयोध्या को लेकर बड़ी लड़ाई छेड़ी क्योंकि करोड़ों हिंदुओं की तरह उनकी मान्यता थी कि भगवान राम का जन्म अयोध्या में उसी जगह हुआ था, जहां 1526 में मंदिर तोड़कर बाबरी मस्जिद बनाई गई थी।'

यही कारण है कि अयोध्या में राम मंदिर का मुक्ति आंदोलन उनके जीवन का वह रास्ता बन गया, जिस पर चलते चलते उन्होंने शरीर का कण-कण रामकाज में विसर्जित कर दिया। बचपन में ही वो अयोध्या के पथ के पथिक बन गए थे। वो अक्सर कहते थे कि राम के मंदिर के ध्वंसावशेषों पर बने उन गुंबदों की वजह से सैकड़ों साल से उदास अयोध्या को बचपन में उन्होंने भी देखा था बाकी दूसरे हिंदुओं की तरह। लेकिन बाकी लोगों की तरह चुप बैठना उन्होंने गंवारा नहीं किया तो क्या उन्होंने कोई गलती की थी? और सचमुच सर्वोच्च न्यायालय के अयोध्या फैसले ने सिद्ध कर दिया कि अशोक सिंहल ने जो किया सत्य की बुनियाद पर खड़े होकर किया। अपने सहयोगियों की उस छोटी टोली को साथ लेकर किया जिनमें स्व. आचार्य गिरिराज किशोर, ओंकार भावे, चंपत राय, कामेश्वर चौपाल, रामफल सिंह समेत अनेक धुरंधर समर्पित कार्यकर्ता सम्मिलित हुए तो दूसरी ओर उन्हें अयोध्या आंदोलन के प्रश्न पर रा.स्व.संघ के वरिष्ठ नेता स्व. भाऊराव देवरस, सरसंघचालक प्रो. राजेंद्र सिंह रज्जू भैय्या आदि का भी मानस तैयार किया। इस प्रकार उन्होंने देश की संगठन शक्ति, संत शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति, राजनीतिक शक्ति और जनशक्ति सभी को एकजुटकर राममंदिर आंदोलन की सफलता का मार्ग प्रशस्त किया। संतों की चौखट दर चौखट गए। पूज्य देवराहा बाबा का मंदिर निर्माण के लिए आशीर्वाद मांगा तो बाबा ने उनसे कहा था कि 'बच्चा अशोक, आंधी चलावत रहो। विश्राम मत लो। अस आंधी उठेगी कि बाबरी का पत्ता पत्ता उड़ जाएगा और मंदिर तो वहां है ही, उनका भव्य भवन भी शीघ्र बन जाएगा।' अशोक जी अपने भाषणों में देवराहा बाबा के इस आशीर्वाद का सदैव उल्लेख करते थे।

अपने घर में ही राम के बगैर उदास और अनाथ अयोध्या को देखकर वो बार बार बिलखते थे। सरयू का पानी उनके भीतर सवाल बनकर बार बार हिलोर मारता था कि आखिर राम अपनी जन्मभूमि से ही क्यों बेदखल किए गए? वस्तुतः इन्हीं सवालों ने उनके जीवन का रास्ता बदल दिया। वह मौजूदा आईआईटी-बीएचयू के इंजीनियरिंग के छात्र थे लेकिन उन्होंने हृदय में उठी चिंगारी को, राम की तस्वीर को अपने जीवन का सत्य बना दिया। वह संघ के प्रचारक बने तो नियति ने उन्हें रामकाज के लिए वस्तुतः चुन लिया था। वह वेदाध्ययन के लिए एक बार प्रचारक जीवन से वापस चले गए लेकिन पू. गुरुजी के निर्देश पर और रज्जू भैय्या के सुझाव ने उन्हें पुनः संघकार्य के प्रवाह में आगे बढ़ा दिया। आपातकाल के समय उन्होंने लोकतंत्र की रक्षा में अपना सर्वस्व खपाया तो उसके बाद विश्व हिंदू परिषद के संगठन को शक्ति प्रदान की। जन्मभूमि आंदोलन का सारा व्याकरण उनके कुशल संगठन का परिणाम था।

उन्होंने नारा दिया कि 'जिस हिंदू का खून न खौला, खून नहीं वो पानी है, जन्मभूमि के काम न आई वो बेकार जवानी है।...और बच्चा बच्चा राम का जन्मभूमि के काम का।' करोड़ों लोगों ने सिंहल के इन नारों को अपने गले का कंठहार बना लिया। अयोध्या के महंत नृत्यगोपाल दास कहते हैं कि, 'जैसे रामकाल में राम को हनुमान मिले, जैसे राम को महर्षि वाल्मिकि मिले, जैसे राम को निषादराज मिले, जैसे मध्यकाल में राम को तुलसी मिले और राममंदिर तोड़े जाने के बावजूद उस विकट काल में तुलसी ने रामचरित मानस के जरिए राजा राम के विग्रह को ही जन-जन की उम्मीदों का सम्राट बना दिया, वैसे ही भारत की आजादी के बाद राम को अशोक सिंहल मिले, जिन्होंने अपनी जवानी और जिंदगी गलाकर भारत को बताया कि राम की चिंगारी के बगैर जन्म अधूरे हैं, जीवन अधूरा है, भारत का अतीत, भारत का वर्तमान और भविष्य सब कुछ राम के लिए ही बना है, वही राम जो घट-घट व्यापी हैं, हर मनुष्य के भीतर समाए हैं, वहीं रामतत्व जिन्होंने युगों पहले दशरथजी के पुत्र श्रीराम के शरीर में मूर्त रूप लिया था, जब धर्म ने साक्षात सगुण शरीर धारण किया, वही धर्म की धुरी राम भारत की यात्रा पर आते रहे है और आते रहेंगे।' अशोक सिंहल ने महर्षि वाल्मिकि और गोस्वामी तुलसी के राम की भक्ति अपने तरीके से शुरु की क्योंकि राम अपने जन्मभूमि की दुर्दशा के कारणों के सन्दर्भ में उनके मन में नित्य सवाल बनकर दस्तक दे रहे थे।

आखिर संसार में किस हिदू के मन में यह सवाल नहीं उठा होगा। सदियों से जो देश यही पढ़ते हुए पलता आया है कि राम हमारे भगवान हैं और राम का जन्म अयोध्या में हुआ था। तो अयोध्या में राम का जन्म कहां हुआ और उनके जन्मस्थान की क्या दुर्दशा हुई, किसने की और क्यों की? पत्रकारिता के फाइव डब्ल्यू और वन एच के फार्मूलों से जुड़े सवाल खुद में ही उस असल क्रांति का बीज काफी पहले बन चुके थे जिसका विस्फोटक रूप दुनिया ने 6 दिसंबर 1990 के दिन देखा था। किसी और ने इस सवाल का जवाब नहीं खोजा, अशोक सिंहल ने खोजने में पूरी उम्र गुजार थी, उन्हें जवाब भी मिला और नतीजा भी। वो कहते थे कि 'आजादी के पहले राम के जिस

प्रश्न को राजनीति ने हमेशा किनारे रखा, कभी किसी ने आगे बढ़कर यह प्रस्ताव नहीं दिया कि चलो अयोध्या हिंदुओं की भावना से जुड़ी जगह है, जिस जगह को लेकर हिंदू कोई बात उठा रहे हैं तो उसे खुद ही हिंदुओं के हवाले कर दिया जाय।' लेकिन कभी ये प्रस्ताव नहीं आया, किसी ओर से नहीं आया। उल्टे कहा गया और समझाया गया कि राम तो अयोध्या में हुए ही नहीं। तो नियति ने भी जवाब देना तय कर लिया। नियति ने अयोध्या के सवाल को अशोक सिंहल की तपस्या के जरिए आजादी के बाद का सबसे गंभीर सांस्कृतिक और राष्ट्रीय अस्मिता का ज्वलंत मुद्दा बना दिया।

सिंहल ने जिस अयोध्या और राम को मुद्दा बनाया, सच्चाई तो ये भी है कि आजादी की पूरी लड़ाई भी राम के पवित्र जीवन का बार-बार स्मरण कर लड़ी गई। अशोकजी पूछते थे कि 'जीवन भर राम का नामकीर्तन करने वाले महात्मा गांधी ने तो राम का नाम लेकर शरीर भी छोड़ दिया, उनसे भी तो अयोध्या ने पूछा होगा, लंदन से पढ़कर आए पंडित नेहरु को भी उनके पांडित्य ने आवाज दी होगी लेकिन राजनीति की मजबूरियों ने उन्हें वो सच कहने और बताने से शायद रोक दिया जिसे सुनने के लिए भारत 1526 के बाद से ही लगातार व्याकुल था। किसी ने जवाब देने की हिम्मत नहीं की, सवाल तक उठाना किसी ने मुनासिब नहीं समझा कभी कि राम अपनी जन्मभूमि पर ही बेगाने क्यों हुए। वह राजनीतिक कायरता भारत में कब से आई, क्यों आई जिसने न सिर्फ भारत के तमाम गणराज्यों को कमजोर किया, जिसने समाज को ऊंच-नीच की खाई में बांटा, जिसने चंद्रगुप्त मौर्य और चाणक्य की सारी मेहनत को मटियामेट किया, जिसने सरहदों की सुरक्षा पर ध्यान नहीं दिया, जिसने यह तक नहीं सोचा कि भारत की सरहदों के पार असहिष्णु मान्यताएं और विचार राजनीतिक सत्ता को कब्जे में लेकर बर्बर, रक्तपिपासू लश्करों की ताकत के बूते बेलगाम हो चले हैं जिनकी जुबान पर सिर्फ 'मैं ही सही' का भाव पलता है और जिनका इस बात पर कोई यकीन तक नहीं है कि संसार के कण-कण में भी कहीं भगवान को देखने वाला इंसान भी बसता है। आखिर क्यों और कैसे पूरे विश्व की मंगल-कामना करने वाला भारत बर्बर हमलों की चक्की में पिसने लगा और देखते ही देखते भारत की पूरी राजनीति गुलामों तक की गुलाम हो गई। उपासना-पूजा-पाठ के सारे तरीके व्यर्थ हो गए, न राम जन्मस्थान का सम्मान बचा और ना ही कृष्ण का धाम बचा। सत्य, शिव और शांति के सारे रास्ते देखते ही देखते इसी भारत में क्यों धूलधुसरित हो गए और क्यों दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश, धन-धान्य से समृद्ध देश शक्तिहीन होकर विदेशी हमलावरों के जुल्मोसितम का शिकार बन गया, तलवारों के जोर पर लाखों लोगों के धर्म और ईमान बदले गए, आखिर क्यों? क्यों देश की सारी इज्जत और प्रतिष्ठा धूल में मिल गई? सहिष्णुता के सबसे बड़े धर्म की ऊंची पताका चिंदी-चिंदी होकर क्यों बिखर गई? सारा देश और सारा समाज ही पददलित हो गया।'

इस प्रकार अशोक सिंहल के जीवन को बचपन से ये सारे सवाल कचोटते थे। उन्होंने इन सवालों को दिमाग में बसाया, जीवन का मिशन बनाया, इस पर चिंतन किया, शुतुर्मुर्गी रवैया अपनाकर भविष्य के खतरों से आंख बंद रखने की आदत उन्होंने नहीं पाली और एक बड़े तबके के भीतर सदियों से पली-बढ़ीं असहिष्णुता की बुराई पर झूठी सहिष्णुता का मरहम लगाने से भी उन्होंने इंकार कर दिया। स्वामी परमात्मानंद ने उनके बारे में कहा है कि 'असहिष्णुता को उखाड़ने के लिए अशोक सिंहल ने वैसा ही जनांदोलन-चक्र उठाया जिसे कभी राम ने असुरों के विनाश का उपाय बताया था, वन-वन घूमकर जन-जन को जगाया था तो कभी कृष्ण ने जिसे सुदर्शन चक्र के जरिए धर्मराज्य की स्थापना का मार्ग समझाया था।'

भारतीय लोक जीवन में असहिष्णु विचार को जड़मूल से उखाड़कर फेंक देने की परंपरा को ही अशोक सिंहल ने अपने जीवन से नई ऊर्जा दी। जन-जन को जगाने खुद ही निकल पड़े, अयोध्या आंदोलन के जरिए एक बात बिल्कुल साफ कर दी कि अगर तोड़ोगे तो तोड़े जाओगे। इस लिहाज से उन्होंने जन-जन में निर्भीक भाव भरने का काम किया और बताया कि अहिंसा निजी आध्यात्मिक जीवन को ऊंचा उठाती है लेकिन समाज तो शक्ति साधना से ही अपने भविष्य और मान्यताओं को सुरक्षित रख सकता है। शक्ति उपासना के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं। यही कारण है कि जब एनडीए सरकार के समय गंगा को बांधने का सवाल आया और यूपीए सरकार के समय रामसेतु तोड़ने का सवाल आया तो अशोक सिंहल ने नेतृत्व और पार्टीबंदी की परवाह न करते हुए देश में तूफान उठा दिया। देखते ही देखते सियासत गरमा गई। गंगा की अविरल धारा को बनाए रखने के लिए मनमोहन सरकार ने गंगा बेसिन अथॉरिटी का गठन किया और बाद में मोदी सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में मालवीय जी और ब्रिटिस सरकार के समझौते को मान्यता देते हुए भविष्य में गंगा को पूरी तरह बांधने की बाबत रोक लगाई, गंगा और समस्त नदियों की साफ-सफाई का महाभियान देश में शुरु हुआ तो सड़क से सर्वोच्च न्यायालय तक लड़ी गई लड़ाई के कारण आखिरकार सेतुसमुद्रम प्रोजेक्ट रद्द हुआ। दिग-दिगंत में रामेश्वरम के धनुष्कोटि से श्रीलंका तक फैली रामसेतु की रेखा नासा के सेटेलाइट तस्वीरों के माध्यम से हर मन के भीतर बिजली बनकर कौंध गई।

गाय, गंगा, गीता, गांव समेत धर्म-संस्कृति से जुड़े हर आयाम के लिए अशोक सिंहल ने अहर्निश काम किया। संतो को एकजुट किया, जाति-पांति-छुआछूत को खत्म करने में जुटे, अपने निजी घर को वैदिक गुरुकुल और गौशाला में बदल दिया। तो उनके अकेले जीवन में जितना डुबिए, उतने ही ज्यादा प्रेरक मोती आपको मिलेंगे जो भारत की, हमारे चिरंतन अमृतमय जीवन की अनमोल विरासत हैं जिनकी कहानियां युग युग तक यह देश सुनता रहेगा। अयोध्या में भगवान राम के जन्मभूमि मंदिर का भव्य उद्घाटन वस्तुतः अशोक सिंहल जी के समग्र जीवनोद्देश्य का परम सार्थक रूप है। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि है।

भारत के भाल पर 'राम तिलक'

के के उपाध्याय

> बरसों की तपस्या पूरी हो रही है। यह सौभाग्य हमें मिल रहा है। हमारा जीवन धन्य हो गया। राम आने से पहले अवध तैयार है अपने राम लला के लिए। अवध का कण कण राम बोल रहा है। हर किसी के कांधे पर रामनामी अगोछे टंगे हैं। यह बदलती अयोध्या है। राम का चिंतन। राम की बात। मनु से बाल्मिकी,व्यैस और तुलसी की यह यात्रा है।

वंदनवार सज गए हैं। मृदंग की गूंज हवाओं में सुनाई दे रही है। अयोध्या अब आतुर है। अपने राम के लिए। राम आने वाले हैं। बरसों का इंतजार समाप्त होने को है। चारों और केसरिया ध्वज पताकाएं लहरा रही हैं। आकाश जयश्री राम से गूंज रहा है। देश के कोने कोने से लोग पहुंच रहे हैं। राम को निहारने। राम की अगवानी को। बहुत इंतजार कर लिया। कब तक राह निहारेंगे। अब तो राम पधारेंगे। मानों जड़वत अहिल्या का एक बार फिर उद्धार होगा। अवध का कायाकल्प होगा। सरयू के घाट पर उगते सूरज की परछाईं अब सुहाने लगी है। राम की गंध हवाओं में आने लगी है। यह चौदह बरसों का वनवास नहीं। यह युगों का अंतराल है। राम कहां थे तुम....।

अयोध्या में गूंजते अनहद नाद के स्वर में रामधुन बज रही है। यहां बरसों राम लला टैंट में रहे। महलों के राम टैंट में थे। 15 वीं शताब्दी में मुगल आक्रांता बाबर ने मंदिर ध्वस्त कर दिया था। हांलांकि यह देश का दुर्भाग्य था कि इतिहासकारों ने इस घटना को झुठलाने का प्रयास किया। यह वामपंथी इतिहासकार थे। इन लोगों ने कहा कि यहां कोई मंदिर था ही नहीं। न मंदिर तोड़ा गया। न मस्जिद बनाई गई। यह समझाने

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

की विफल कोशिश हुई कि यदि ऐसा होता तो तुलसी ने जिक्र क्यों नहीं किय ? जबकि तुलसी बाबर और मीरबांकी के समकालीन थे। सच तो यह कि तुलसीदास जी ने तुलसी दोहा शतक में पूरा वर्णन किया है-

राम जनम महि मंदरहिं, तोरि मसीत बनाय।
जवहिं बहुत हिन्दू हते, तुलसी किन्ही हाय॥
दल्यो मीरबाकी अवध मन्दिर रामसमाज।
तुलसी रोवत ह्रदय हति हति त्राहि त्राहि रघुराज॥
राम जनम मन्दिर जहाँ तसत अवध के बीच।
तुलसी रची मसीत तहँ मीरबाकी खल नीच॥
रामायन घरि घट जँह, श्रुति पुरान उपखान।
तुलसी जवन अजान तँह, कइयों कुरान अज़ान॥
मन्त्र उपनिषद ब्राह्मनहुँ बहु पुरान इतिहास।
जवन जराये रोष भरि करि तुलसी परिहास॥
सिखा सूत्र से हीन करि बल ते हिन्दू लोग।
भमरि भगाये देश ते तुलसी कठिन कुजोग॥
बाबर बर्बर आइके कर लीन्हे करवाल।
हने पचारि पचारि जन जन तुलसी काल कराल॥
सम्बत सर वसु बान नभ ग्रीष्म ऋतु अनुमानि।
तुलसी अवधहिं जड़ जवन अनरथ किये अनखानि॥

यह वर्णन यहां जरूरी था। यह इतिहास को बदलने की कोशिश थी। झुठलाने के प्रयास थे। अयोध्या ने न जाने कितने दौर देखे हैं। सरयू साक्षी है। सरयू ने देखा है राम को। अवध को। राम के वनगमन को। निषादराज के संवाद को। सरयू ही तो है जिसने युगों को देखा। सरयू ही तो है जिसमें राम समा गए थे। राम ने समाधि ली थी। आज भी समाधि का वह स्थान गुप्तार घाट के नाम से जाना जाता है।

अयोध्या में अब इतिहास नहीं बदल रहा। युग बदल रहा है। अवध त्रेतायुग की ओर जाती प्रतीत हो रही है। यही तो राम राज है। राम का राज हो। राम का अवध में निवास हो। राम की प्रतीक्षा का आतुर अवध।

बदलती अयोध्या

अयोध्या बदल रही है। यहां के रेलवे स्टेशन का नाम अयोध्याधाम हो गया है। नए अंतरराष्ट्रीय एअरपोर्ट पर फ्लाइटें उतरने लगी है। इस एअरपोर्ट का नम है -महर्षि वाल्मिकी एअर पोर्ट। अयोध्या की दीवोरं पर राम कथाओं के चित्र उकेरे गए हैं। प्रवेश द्वार पर सूर्यस्तंभ बनाए गए हैं। सूर्य राम राज का प्रतीक है। सरयू के घाट बदल गए हैं। घाटों पर आरती शुरू हो गई है। नावों में लोग सरयू की लहरों से खेल रहे हैं। अठखेलियां कर रहे हैं। राम मंदिर का गर्भगृह बनकर तैयार है। फाइनल तैयारियां चल रही हैं। मंदिर प्रांगण में गूंज रही हैं छैनी हथौड़े की आवाजें। उकेरी जा रही हैं शिलाओं पर प्रतिमाएं। फंतासियां। चित्रकारी। यह मजदूर नहीं है। कलाकार हैं। जो पत्थरों में जान डालने का काम कर रहे हैं। संत अलग आरती उतार रहे हैं। संतों के अखाड़े सज गए हैं। संवर गए हैं। यहां एक अलग तैयारी है। चंदन घिसे जा रहे हैं। तिलक तैयार हो रहा है। राम भक्तों के भाल पर चंदन सजेगा। रोली लगेगी। अक्षत से भाल संवरेगा। राम के नाम पर। राम के काम पर हर अवधवासी है। देश में उल्लास है। उमंग है। राम मंदिर के दरवाजे तेलंगाना से बनकर आए हैं। पोशाक सिलने वाला गद्गद है। उसका तो जीवन ही संवर गया।

राम मंदिर के प्रमुख पुजारी महंत सतेन्द्रदास कहते हैं- बरसों की तपस्या पूरी हो रही है। यह सौभाग्य हमें मिल रहा है। हमारा जीवन धन्य हो गया। राम आने से पहले अवध तैयार है अपने राम लला के लिए। अवध का कण कण राम बोल रहा है। हर किसी के कांधे पर रामनामी अगोछे टंगे हैं। यह बदलती अयोध्या है। राम का चिंतन। राम की बात। मनु से बाल्मिकी,व्यैस और तुलसी की यह यात्रा है।

राजा सत पर चलने वाला हो। धर्म ध्वजा लेकर चलता हो। प्रजा के कल्याण चित में और चिंतन में रहता हो। वही राजा चक्रवर्ती होते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसी परंपरा पर लोकशाही के साथ चल रहे हैं। मोदी कोई थोपे हुए नायक नहीं है। न ही परिवार की वंशावली में उन्हें सत्ता मिली है। वे जननायक बने हैं जनता के आशीर्वाद से। जनता के प्यार से। अयोध्या में निषाद परिवार के घर जाते हैं। चाय की चुस्कियों के साथ मीठी चाय होने की बात कहते हैं तो लगता है परिवार का कोई बुजुर्ग बात कर रहा हो। निषाद परिवार का संवाद वायरल है। निषाद परिवार निहाल है। यह नरेन्द्र मोदी की सहजता ही है जिसने पिछले दस बरसों में उन्हें महा जननायक बना दिया है। भारत के भीतर वे जननायक हैं। विश्व पटल पर उनकी छवि एक युग पुरूष की है। वैसे ही जैसे विश्व गुरू की होती है। अयोध्या में राम के आने पर देश में दीवाली मनेगी। दुनिया में भी दीप जलेंगे। चारो ओर गूंजेगा -जय रघुराई....। देश के भाल पर अवध का रामतिलक जो होने जा रहा है....।

2024 में राम ही राम

योगेश मिश्र

“करोड़ों हिंदुओं की अर्पित आस्था,सभी पवित्र नदियों का जल व हजारों कलशों में मिट्टी, सात हज़ार मजदूर से अनगिनत महाजन तक, मठों के संत से मंदिरों के महंत तक, लोक से तंत्र तक, सब राम काज में लीन हैं। कर्नाटक के गणेश भट्ट, राजस्थान के सत्यनारायण पांडेय व अरुण योगीराज बाल सुलभ कोमलता वाली मूर्तियों के निर्माण में यह जान कर भी राममय हैं कि जो सबसे आकर्षक होगी, उसी का चयन होगा।”

‘सिय राम मय सब जग जानी।’ इन दिनों जग के जिस भी कोने में हिंदू रह रहे हैं, वहाँ इसका अहसास किया जा सकता है। चहुँओर सब पूरी तरह राम मय है। हर तरफ़ राम राम है। ये सब है भगवान् श्री राम के साथ। भगवान श्री राम वैसे तो हमेशा कण कण में, जन जन में रहे हैं। अनंत काल तक रहेंगे, लेकिन 2024 सिर्फ और सिर्फ श्री राम के नाम है। यह साल बहुत ख़ास होने वाला है।

नए साल की शुरुआत में ही 22 जनवरी को अयोध्या में श्री राम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह है। तैयारी पूरी है। अभी से जगह जगह राम यात्राएं शुरू हो गईं हैं। माहौल राममय बन चुका है। सिर्फ हमारे आपके शहर, गली, मोहल्ले में नहीं बल्कि सोशल मीडिया पर भी। यूट्यूब पर नज़र दौड़ाइये, राम के गुणगान में भजन, गीत छाए हुए हैं। एक गायक हैं हंसराज रघुवंशी जिनका राम को समर्पित गीत मात्र 8 दिन में 62 लाख लोगों ने देखा सुना है। ऐसे ही गायक अर्जुन कहार का गीत महीने भर में 58 लाख बार देखा गया है। संजय म्यूजिक का जय श्री राम महीने भर में डेढ़ करोड़ बार देखा गया। स्वाति मिश्र का

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

राम आएंगे महीने भर में साढ़े तीन करोड़ बार देखा गया। राम पर रील्स और शार्ट विडियो की भी धूम है। यूपी सरकार तो बाकायदा सोशल मीडिया इन्फ़्लुएन्सर्स से राममय कंटेंट बनवा रही है। ये चंद मिसालें है। जो बता रही हैं कि कण कण में राम हैं।

इसकी बहुत बड़ी वजह भी है। सदियों के संघर्ष और कम से कम सत्तर साल की क़ानूनी लड़ाइयों के बाद अयोध्या में श्री राम जन्मस्थान को उसका अधिकार मिला है, हिन्दुओं के अथक परिश्रम और धैर्य का सिला अब सामने आया है, भगवन श्री राम का मंदिर साकार हो गया है। यह कोई छोटी या मामूली बात नहीं है, यह जन-जन से जुड़ी संवेदना और विजय की बात है।

रामकाज करिबे को आतुर विद्यावान गुनी अति चातुर।

हनुमान चालीसा की यह चौपाई अयोध्या में चहुंओर दिख रही है। हर तरफ़ लोग तन,मन,धन से अयोध्या को सजाने व मंदिर को दिव्य तथा भव्य बनाने में जुटे दिख रहे हैं। क्योंकि यह राम काज है। करोड़ों हिंदुओं की अर्पित आस्था,सभी पवित्र नदियों का जल व हजारों कलशों में मिट्टी, सात हज़ार मजदूर से अनगिनत महाजन तक, मठों के संत से मंदिरों के महंत तक, लोक से तंत्र तक, सब राम काज में लीन हैं। कर्नाटक के गणेश भट्ट, राजस्थान के सत्यनारायण पांडेय व अरुण योगीराज बाल सुलभ कोमलता वाली मूर्तियों के निर्माण में यह जान कर भी राममय हैं कि जो सबसे आकर्षक होगी, उसी का चयन होगा।

आईआईटी दिल्ली के निदेशक प्रो वीएस राजू, आईआईटी सूरत व गुवाहाटी के निदेशकों के साथ सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रुड़की के विशेषज्ञों समेत एलएंडटी और टाटा कंसल्टिंग के इंजीनियर, सीबीआरआई हैदराबाद व आईआईटी मुंबई की टीम व इसरो राम के मस्तक पर सूर्य की पहली किरण से तिलक कराने में जुटी दिख रही है। इन सब लोगों के लगन, परिश्रम, कर्म का धर्म अयोध्या को उस वैभव की ओर ले जा रही है जो राम लला के विराजमान से परम वैभव को प्राप्त होगा। त्रेता कलयुग पर गर्व करेगा। कलयुग त्रेता सा गर्वान्वित होगा। क्योंकि कलयुग को त्रेता का वैभव मिल रहा है।राम को जन्म स्थान पर विराजने का सुयोग। मैथली शरण गुप्त की लाइनें- देख लो साकेत नगरी है, यही..। साकार हो रहा है।

यही आकर्षक है कि पूरे देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया से रामभक्त अयोध्या पहुँचने और राम लला के दर्शन के लिए आतुर हैं। कितनी ही स्पेशल ट्रेनें चलाई जा रहीं हैं, श्रद्धालुओं के ठहराने के लिए कितने ही इंतजाम किये जा रहे हैं। अयोध्या का हवाई अड्डा तैयार है। चंद बरस पहले किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि 2024 में ऐसा कुछ होगा। लेकिन अब सब कुछ सामने है। यह श्री राम का वर्ष है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अयोध्या की यात्रा करने का रिकॉर्ड बनाने वाले हैं। 1992 से 2024 तक पांच यात्रायें, ऐसा किसी भी राष्ट्रीय नेता ने नहीं किया था। यही नहीं, मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने राम लला के दर्शन किये। सनातन भारत में ऐसा पहले हुआ ही नहीं था, जानकर हैरानी जरूर होती है।

राम मंदिर की खुशियाँ सिर्फ अयोध्या और भारत में ही नहीं, सात समंदर पार अमेरिका में भी मनाई जायेंगी। अमेरिका भर के मंदिर एक सप्ताह भर चलने वाले उत्सव की तैयारी कर रहे हैं। दर्जनों मंदिरों ने 15 जनवरी के कार्यक्रम के लिए पहले ही नामांकन करा लिया है, जिसमें पूरे उत्तरी अमेरिका में पुजारियों द्वारा श्री राम नाम संकीर्तन का जाप किया जाएगा। 21 जनवरी को, मंदिरों ने आसपास को रोशन करने, उद्घाटन का सीधा प्रसारण करने, शंख बजाने और प्रसाद वितरित करने की योजना बनाई है। अमेरिका ही नहीं, दुनिया में जहाँ जहाँ हिदू हैं, उन सभी जगहों पर उत्सव मनेगा।

भारत भर में 2024 के पहले दिन से घर-घर अक्षत बांटा जाएगा। यह कार्यक्रम 15 जनवरी तक पूरे देश में चलेगा। 22 जनवरी को राम मंदिर के उद्घाटन के अवसर पर लोगों को अपने स्थानीय मंदिरों में सभा आयोजित करने के लिए एक प्रतीकात्मक निमंत्रण दिया जा चुका है।

तैयारी पूरी है। राम मंदिर समारोह सिर्फ एक दिन का नहीं होने वाला, यह महीनों तक चलेगा। तारतम्य टूटने वाला नहीं। 22 जनवरी तो एक तारीख़ है, उसी दिन से लाखों श्रद्धालुओं का सिलसिला शुरू हो जाएगा तो बढ़ता ही जाना है।

लेकिन एक सवाल भी है। क्या सिर्फ मंदिर में प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति के दर्शन करना ही पर्याप्त है? राम सिर्फ इतने तक ही सीमित हैं? कतई नहीं। मंदिर में सिर्फ दर्शन कर लेना ही काफी नहीं होगा, श्री राम के आदर्शों, उनके कार्यों, उनके आचरण को भी अपने में उतरना होगा। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आचरण और आदर्शों का लेश मात्र भी हम अपने जीवन में उतार लें तो काफी होगा। अयोध्या और राम मंदिर के दर्शन के साथ यह भावना सर्वोपरि होनी चाहिए। अगर इसे चूक गए तो बहुत कुछ गँवा देंगे, यह अवश्य जान लीजिये। यह उन अयोध्यावासियों को भी समझना होगा जो श्रद्धालुओं के आगमन को लेकर उत्सुक और उत्साहित हैं। क्योंकि यह एक बहुत बड़ा व्यवसाय भी बनने वाला है। धार्मिक टूरिज्म यानी विशाल बिजनेस अवसर। लाभ कमाने की उम्मीद लगाये लोग भी अगर मर्यादाओं का पालन और सेवा भाव को रंच मात्र भी अपने में उतार लें तो कितना ही अच्छा होगा। भगवन राम के प्रति हम सबकी यह सच्ची पूजा होगी। हमें, हमारे समाज, हमारे देश को इसी भावना की बेहद सख्त जरूरत है। उम्मीद है हम सभी इसे अपने भीतर समाहित करेंगे और श्री राम उत्सव को हमेशा बनाये रखेंगे।

सदियों से लड़ी गयी राम मंदिर की लड़ाई

अदालतों में 70 साल

नीलमणि लाल

अयोध्या-एक ऐतिहासिक नगरी, भगवान की नगरी। लेकिन यह निराशा और खूनी टकराव का भी नगर रहा है। मंदिर के लिए एक उग्र लड़ाई बहुत लम्बे अरसे से चलती आई। अयोध्या कोई सामान्य जगह नहीं है। ये जगह हिन्दुओं के लिए बेहद महत्व रखती है। यह भगवान विष्णु के अवतार भगवान राम का जन्मस्थान हैं। इसी राम जन्म भूमि पर एक मस्जिद का निर्माण कटुता और दुराव का कारण रहा है। श्री राम मंदिर के लिए सदियों पुराना टकराव भारत की विभिन्न अदालतों में चलता रहा। निचली अदालतों से चलता आया विवाद अंत में मामला सर्वोच्च न्यायालय में पहुंचा, जिसने एक ऐसे विवाद को अंततः सुलझाया जिसकी उत्पत्ति उतनी ही पुरानी थी जितनी कि भारत का विचार।

> 885 एक महत्वपूर्ण वर्ष था जब हिन्दुओं की तरफ से पहला कानूनी प्रतिनिधित्व किया गया। महंत रघुबर दास ने जन्मभूमि पर कानूनी अधिकार हासिल करने और पूर्वी प्रांगण में स्थित चबूतरे पर एक मंदिर बनाने की अनुमति के लिए मुकदमा दायर किया। उन्होंने खुद को भगवान राम के जन्मस्थान का महंत होने का दावा किया और कहा कि चबूतरा भगवान का जन्मस्थान है।

रामजन्म भूमि का स्थल 70 वर्षों से लगातार संघर्ष का केंद्र रहा है। कानूनी लड़ाई की शुरुआत 1856-1857 में हुई जब ब्रिटिश राज के खिलाफ भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम भी शुरू हुआ था। यह विवाद के लखनऊ से लगभग 130 किमी दूर मंदिरों के शहर अयोध्या में शुरू हुआ। अयोध्या की बाबरी मस्जिद के मुअज्जिन मौलवी मुहम्मद असगर द्वारा फैजाबाद के मजिस्ट्रेट के समक्ष एक याचिका दायर की गई थी, जिसमें आरोप लगाया गया था कि मस्जिद के प्रांगण के पूर्वी हिस्से पर हनुमान गढ़ी के महंत ने जबरन कब्जा कर लिया है। हनुमान गढ़ी अयोध्या में धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, खासकर वैष्णव बैरागियों के लिए। मुअज़्ज़िन की शिकायत ने जगह

पर कानूनी विवाद की शुरुआत को चिह्नित किया। हालाँकि, जिस ज़मीन पर मस्जिद थी, उसे उस समय तक आधिकारिक तौर पर 'विवादित भूमि' घोषित नहीं किया गया था।

उस समय की ब्रिटिश सरकार ने कानून और व्यवस्था बनाए रखने के प्रयास में, परिसर को दो भागों में विभाजित करते हुए एक ग्रिल और ईंट की दीवार खड़ी कर दी और हुक्म दे दिया कि आंतरिक भाग का उपयोग मुस्लिम समुदाय द्वारा किया जाएगा और बाहरी भाग या आंगन, का उपयोग हिन्दू समुदाय द्वारा किया जाएगा। बाहरी प्रांगण में धार्मिक महत्व की कई संरचनाएँ हैं, जैसे सीता रसोई और रामचबूतरा। हिंदुओं को पूर्वी द्वार से प्रांगण में प्रवेश मिलता था, जबकि मुसलमानों को उत्तरी तरफ से मस्जिद तक पहुंच मिलती थी। 1860-1884 की अवधि के दौरान मुस्लिम पक्ष ने 1857 की तरह ही अर्जियां दाखिल कीं और कुछ स्थानीय संतों और साधुओं के बढ़ते हस्तक्षेप और अवैध कब्जे के बारे में शिकायत की। लेकिन ये सभी याचिकाएँ खारिज कर दी गईं। 1877 में ब्रिटिश सरकार द्वारा बाहरी प्रांगण के उत्तरी तरफ एक और दरवाजा खोला गया, जिसका नियंत्रण और प्रबंधन हिंदुओं को दे दिया गया। कुछ साल और बीते, और 1886 में महंत रघुवर दास द्वारा दायर मुकदमा खारिज कर दिया गया।

1885 एक महत्वपूर्ण वर्ष था जब हिन्दुओं की तरफ से पहला कानूनी प्रतिनिधित्व किया गया। महंत रघुबर दास ने जन्मभूमि पर कानूनी अधिकार हासिल करने और पूर्वी प्रांगण में स्थित चबूतरे पर एक मंदिर बनाने की अनुमति के लिए मुकदमा दायर किया। उन्होंने खुद को भगवान राम के जन्मस्थान का महंत होने का दावा किया और कहा कि चबूतरा भगवान का जन्मस्थान है।

जनवरी 1885 में, महंत रघुबर दास ने, राम जन्मस्थान के महंत होने का दावा करते हुए, उप-न्यायाधीश, फैजाबाद के समक्ष एक मुकदमा दायर किया। महंत ने बाहरी प्रांगण में स्थित रामचबूतरा पर मंदिर बनाने की अनुमति के लिए प्रार्थना की। 24 दिसंबर 1885 को, ट्रायल जज ने मुकदमा खारिज कर दिया, और तर्क दिया कि मंदिर के प्रस्तावित निर्माण के कारण दोनों समुदायों के बीच दंगे भड़कने की संभावना थी। हालाँकि, ट्रायल जज ने कहा कि चबूतरे पर हिंदुओं के कब्जे और स्वामित्व के बारे में कोई सवाल या संदेह नहीं हो सकता है। उप-न्यायाधीश, फैजाबाद ने मुकदमा खारिज कर दिया। अपील पर जिला जज ने इसे भी खारिज कर दिया। 18 मार्च 1886 को, जिला न्यायाधीश ने ट्रायल कोर्ट के फैसले के खिलाफ अपील खारिज कर दी, लेकिन चबूतरा के हिंदुओं के स्वामित्व से संबंधित टिप्पणियों को खारिज कर दिया। 1 नवंबर 1886 को, अवध के न्यायिक आयुक्त ने दूसरी अपील को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि महंत चबूतरे के स्वामित्व को स्थापित करने के लिए स्वामित्व का सबूत पेश करने में विफल रहे थे।

यह मसला 22 और 23 दिसंबर 1949 की मध्यरात्रि को एक नए चरण में प्रवेश कर गया, जब लोगों के एक समूह ने मस्जिद के ताले तोड़ दिए और केंद्रीय गुंबद के नीचे भगवान राम की मूर्तियां रख दीं। 29 दिसंबर 1949 को, अतिरिक्त सिटी मजिस्ट्रेट ने कुर्की का आदेश दिया और फ़ैज़ाबाद के नगरपालिका बोर्ड के अध्यक्ष प्रिया दत्त राम को आंतरिक प्रांगण का रिसीवर नियुक्त किया गया। 5 जनवरी 1950 को, रिसीवर ने आंतरिक प्रांगण का कार्यभार संभाला और संलग्न संपत्तियों की एक सूची तैयार की। मजिस्ट्रेट ने कहा कि दोनों समुदायों के बीच विवाद से शांति भंग होने की आशंका है. मजिस्ट्रेट के आदेश के तहत, केवल दो या तीन पुजारियों को धार्मिक अनुष्ठान करने के लिए उस स्थान के अंदर जाने की अनुमति थी जहां मूर्तियां रखी गई थीं। आम जनता के सदस्यों को प्रवेश करने से प्रतिबंधित कर दिया गया था और केवल ग्रिल-ईंट की दीवार के पार से दर्शन की अनुमति थी।

सन 50 का मुकदमा

पहला मुकदमा जनवरी 1950 में फैजाबाद के सिविल जज के समक्ष हिन्दू महासभा के सदस्य गोपाल सिंह विशारद द्वारा दायर किया गया जिसमें यह घोषणा करने की मांग की गई थी कि वह मूर्तियों के पास मुख्य जन्मभूमि मंदिर में पूजा करने के हकदार हैं। 1959 में निर्मोही अखाड़ा या रामानंदी बैरागियों ने दावा किया कि वे हमेशा से जन्म भूमि स्थल पर संरचना के प्रभारी और प्रबंधन के प्रभारी थे। इनका दावा था कि अनुसार 29 दिसंबर 1949 तक यह एक मंदिर था। यह वही तारीख थी जब आपराधिक प्रक्रिया संहिता की धारा 145 के तहत कुर्की का आदेश दिया गया था। इस मुकदमे में फैसला हुआ की यह यह व्यक्तिगत हैसियत से दायर किया गया है और कोई प्रबंधन या कब्जा उन्हें नहीं सौंपा जा सकता। फैसले में कहा गया कि वाद एक में वादी के विवादित संपत्ति पर पूजा करने के अधिकार की पुष्टि शांति और व्यवस्था के रखरखाव और व्यवस्थित पूजा के प्रदर्शन के संबंध में संबंधित अधिकारियों द्वारा लगाए गए किसी भी प्रतिबंध के अधीन की जाती है।

मुस्लिम पक्ष का मुक़दमा

सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड और अयोध्या के अन्य मुस्लिम निवासियों ने अपने स्वामित्व की घोषणा के लिए 18 दिसंबर 1961 में एक मुकदमा दायर किया। उनके अनुसार, पुरानी इमारत एक मस्जिद थी जिसे सोलहवीं शताब्दी के तीसरे दशक में मुगल सम्राट द्वारा उपमहाद्वीप की विजय के बाद सम्राट बाबर के निर्देश पर उसके जनरल मीर बकी द्वारा बनाई गई थी। मुसलमान इस बात से इनकार करते हैं कि मस्जिद का निर्माण एक नष्ट किए गए मंदिर की जगह पर किया गया था। उनके अनुसार, 23 दिसंबर 1949 तक मस्जिद

में निर्बाध रूप से प्रार्थना की जाती थी। सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड ने स्वामित्व की घोषणा का दावा किया और, अपने कब्जे के लिए एक डिक्री का भी दावा किया। इसी बीच फरवरी, 1986ः फैजाबाद के जिला न्यायाधीश के आदेश पर बाबरी मस्जिद के ताले खोले गए।

भगवान की तरफ से मुक़दमा

1987: फैजाबाद से मुकदमे वापस ले लिए गए और इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ को स्थानांतरित कर दिए गए। विशारद द्वारा दायर किया गया मुकदमा नंबर एक मुकदमा बन गया। दूसरा मुकदमा (संख्या दो) परमहंस रामचन्द्र दास द्वारा दायर किया गया (बाद में वापस ले लिया गया)। तीसरा मुकदमा निर्मोही अखाड़ा द्वारा दायर किया गया था और चौथा वक्फ बोर्ड द्वारा दायर किया गया था।

1989 में देवता (भगवान श्री राम विराजमान) और भगवान राम के जन्मस्थान (अस्थान श्री राम जन्मभूमि) की ओर से एक 'मित्र' देवकी नंदन अग्रवाल द्वारा एक मुकदमा दायर किया गया। मुकदमा इस दावे पर आधारित था कि कानून मूर्ति और जन्मस्थान दोनों को न्यायिक इकाई के रूप में मान्यता देता है। दावा था कि जन्म स्थान को पूजा की वस्तु के रूप में पवित्र किया गया है, जो भगवान राम की दिव्य भावना का प्रतीक है। इसलिए, मूर्ति की तरह (जिसे कानून एक न्यायिक इकाई के रूप में मान्यता देता है), देवता के जन्म स्थान को एक कानूनी व्यक्ति होने का दावा किया जाता है, या जैसा कि कानूनी भाषा में वर्णित है, एक न्यायिक स्थिति रखने का दावा किया जाता है। निषेधाज्ञा राहत के साथ विवादित स्थल पर स्वामित्व की घोषणा की मांग की गई।

1993-2002

इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में मालिकाना हक मामले में सुनवाई में तेजी आई। जैसे ही संबंधित पक्षों ने अपनी दलीलें पेश करनी शुरू कीं, एक लंबी लड़ाई शुरू हो गई। 1 अगस्त, 2002 को उच्च न्यायालय ने विवादित स्थल पर खुदाई शुरू करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को आदेश दिया तो ध्यान वापस मालिकाना मुकदमे पर केंद्रित हो गया।

एएसआई ने 30 दिसंबर 2002 को उस स्थल पर खुदाई शुरू की। इसने प्रारंभिक सर्वेक्षण किया और अपनी रिपोर्ट एएसआई महानिदेशक को सौंपी। इसमें 0.5 मीटर से लेकर 5 मीटर तक की गहराई वाली विभिन्न प्रकार की विसंगतियों का सुझाव दिया गया है जो कुछ प्राचीन और समकालीन संरचनाओं से जुड़ी हो सकती हैं। प्रारंभिक निष्कर्षों के आधार पर विस्तृत खुदाई और जांच शुरू की गई। एएसआई ने अगस्त 2003 में अदालत के समक्ष दो खंडों में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

फैसला जिसे किसी भी पक्ष ने स्वीकार नहीं किया

26 जुलाई, 2010ः इलाहाबाद उच्च न्यायालय की तीन न्यायाधीशों वाली पीठ, जिसमें न्यायमूर्ति एसयू खान, न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और डीवी शर्मा शामिल थे, ने अयोध्या भूमि स्वामित्व मुकदमे पर अपना आदेश सुरक्षित रख लिया। 30 सितंबर, 2010 को तीन जजों की बेंच ने बहुप्रतीक्षित फैसला सुनाया। अदालत ने विवादित भूमि को संबंधित तीन प्रमुख पक्षों, यानी सुन्नी वक्फ बोर्ड, निर्मोही अखाड़ा और राम लला विराजमान के बीच समान रूप से विभाजित कर दिया। हालाँकि, कोई भी पक्ष फैसले से संतुष्ट नहीं था।

उच्च न्यायालय ने माना कि सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड और निर्मोही अखाड़ा द्वारा दायर मुकदमे सीमा से वर्जित थे. यह मानने के बावजूद कि उन दो मुकदमों पर समय की रोक थी, उच्च न्यायालय ने 2:1 के खंडित फैसले में कहा कि हिंदू और मुस्लिम पक्ष विवादित परिसर के संयुक्त धारक थे। उनमें से प्रत्येक को विवादित संपत्ति के एक तिहाई हिस्से का हकदार माना गया। निर्मोही अखाड़े को शेष एक तिहाई हिस्सा दे दिया गया। इस आशय की एक प्रारंभिक डिक्री अगले मित्र के माध्यम से भगवान राम की मूर्ति और जन्मस्थान द्वारा लाए गए मुकदमे में पारित की गई थी। बाद में हाई कोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई।

सुप्रीम फैसला

9 नवंबर, 2019 : मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पांच न्यायाधीशों की पीठ, जिसमें न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़, एसए बोबडे, एस अब्दुल नजीर और अशोक भूषण शामिल थे, ने मामले में बहुप्रतीक्षित फैसला सुनाया। यह सर्वसम्मत निर्णय था. पीठ ने पूरी विवादित 2.77 एकड़ जमीन मंदिर निर्माण के लिए आवंटित करने का आदेश दिया. केंद्र सरकार को इसकी देखरेख के लिए एक ट्रस्ट का गठन करना था।

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों ने अपने निर्णय में कहा कि कोर्ट के सामने राखी गयी घटनाओं और साक्ष्यों का क्रम स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि हिंदुओं की आस्था और विश्वास यह था कि भगवान राम का जन्म स्थान तीन गुंबद वाली मस्जिद में था, जिसका निर्माण जन्मस्थान पर किया गया था। ब्रिटिश काल के दौरान ही मस्जिद के चारदीवारी परिसर को आंतरिक प्रांगण और बाहरी प्रांगण में विभाजित करते हुए ग्रिल्ड दीवार का निर्माण किया गया था। बाहरी प्रांगण में ग्रिल्ड लोहे की दीवार का निर्माण हिंदुओं को ग्रिल्ड लोहे की दीवार से बाहर रखने के लिए किया गया था। लोहे की दीवार के निर्माण को देखते हुए बाहरी प्रांगण में राम चबूतरे पर पूजा-अर्चना शुरू हो गई। 1885 का मुकदमा उक्त चबूतरे पर मंदिर बनाने की

अनुमति के लिए दायर किया गया था, जहां ब्रिटिश प्राधिकरण द्वारा पूजा की अनुमति थी।

रिकॉर्ड पर मौजूद साक्ष्यों से दर्शाई गई हिंदुओं की आस्था और विश्वास स्पष्ट रूप से स्थापित करते हैं कि हिंदुओं का विश्वास है कि भगवान राम के जन्म स्थान पर, मस्जिद का निर्माण किया गया था और तीन गुंबद वाली संरचना ही भगवान राम का जन्म स्थान है। यह तथ्य कि हिंदुओं ने लोहे की दीवार बनाकर, मस्जिद परिसर को विभाजित करके, तीन गुंबद वाली संरचना के बाहर रखा था, यह नहीं कहा जा सकता कि इससे भगवान राम के जन्मस्थान के संबंध में उनकी आस्था और विश्वास में कोई बदलाव आएगा। बाहरी प्रांगण में राम चबूतरे पर पूजा भगवान राम की प्रतीकात्मक पूजा थी, जिनके बारे में माना जाता है कि उनका जन्म इसी परिसर में हुआ था।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि मस्जिद के निर्माण से पहले और उसके बाद तक हिंदुओं की आस्था और विश्वास हमेशा यही रहा है कि भगवान राम का जन्मस्थान ही वह स्थान है जहां बाबरी मस्जिद का निर्माण किया गया है, जो कि दस्तावेजी और मौखिक साक्ष्यों से प्रमाणित है।

अदालत ने अपने फैसले में कहा कि एएसआई के पुरातात्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि बाबरी मस्जिद का निर्माण एक ऐसे ढांचे पर किया गया था जिसकी वास्तुकला स्वदेशी और गैर-इस्लामिक थी। अदालत ने यह भी कहा कि सुन्नी वक्फ बोर्ड सहित मुस्लिम पक्ष विवादित भूमि पर विशेष कब्ज़ा स्थापित करने में विफल रहे हैं।

आस्था और परंपराएँ

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि व्यक्ति की धार्मिक आस्था परंपराओं, धार्मिक ग्रंथों और प्रथाओं पर बनती है। धार्मिक ग्रंथ, जो हिंदू धर्म के मुख्य स्रोत हैं, वह आधार हैं जिस पर हिंदुओं की आस्था कायम है। महाकाव्य वाल्मिकी रामायण भगवान राम और उनके कार्यों के ज्ञान का मुख्य स्रोत है। वाल्मिकी रामायण की रचना ईसा पूर्व काल की है। वाल्मिकी रामायण महाभारत और श्रीमद्भगवद्गीता से भी पहले का काल है। जिस काल में वाल्मिकी रामायण की रचना हुई वह ईसवी सन् के आरंभ से बहुत पहले का है। इस मामले के प्रयोजनों के लिए, सूट नंबर 4 के वादी द्वारा इतिहासकार के रूप में प्रस्तुत गवाह सुवीरा जयसवाल के बयान पर ध्यान देना पर्याप्त है। उन्होंने अपने बयान में कहा, वाल्मीकि रामायण का काल 300 ईसा पूर्व - 200 ईसा पूर्व दर्ज किया गया है। विभिन्न विद्वान और अन्य लोग वाल्मिकी रामायण को बहुत पुराने काल का बताते हैं, लेकिन उक्त प्रश्न पर ध्यान देना आवश्यक नहीं है क्योंकि हमारे उद्देश्य के लिए, यह पर्याप्त है कि वाल्मिकी रामायण की रचना ईसा से पहले के युग में हुई थी।

तर्क और साक्ष्य

अदालत के समक्ष जो तर्क और साक्ष्य प्रस्तुत किये गए उनमें यात्रावृतांत, इतिहासकारों के वर्णन और धर्म ग्रन्थ के उद्धरण शामिल थे। मिसाल के तौर पर बताया गया कि - वाल्मिकी रामायण, बालकांड, में ग्रहों की स्थिति के साथ भगवान राम के जन्म का उल्लेख है। उपरोक्त श्लोक दर्शाते हैं कि ब्रह्मांड के भगवान, विष्णु का जन्म कौशल्या के पुत्र के रूप में हुआ था। वाल्मिकी रामायण में विष्णु के अवतार भगवान राम के अयोध्या में दशरथ और कौशल्या के पुत्र के रूप में जन्म का प्रचुर वर्णन है। श्लोक 10 में कौशल्या के पुत्र के रूप में भगवान राम के जन्म के बारे में बताया गया है, जो इस प्रकार हैः -

प्रोमने जगन्नाथं सवलोकनमृ तम्।
कौसाजनयद् रामन्दिदलनसंयुतम्॥

(बालकाण्ड 18.10)

कौशल्या ने एक पुत्र को जन्म दिया जो संपूर्ण जगत का स्वामी था। वह सभी लोगों द्वारा पूजनीय व्यक्ति थे। उनमें दैवी लक्षण विद्यमान थे। यह किसी साधारण मनुष्य का जन्म नहीं था। संपूर्ण जगत के स्वामी भगवान के आगमन से अयोध्या धन्य हो गई।

इस प्रकार, महाकाव्य भगवान राम के जन्म को अयोध्या से जोड़ता है। हालाँकि, यह सच है कि वाल्मिकी रामायण में जन्म स्थान का कोई विवरण नहीं मिलता है, सिवाय इसके कि भगवान राम का जन्म राजा दशरथ के महल में अयोध्या में कौशल्या से हुआ था। अगला धार्मिक पाठ, जिसका उल्लेख और भरोसा सूट नंबर 5 के वादी और अन्य हिंदू पक्षों द्वारा किया जाता है, वह स्कंद पुराण है। स्कंद पुराण में वैष्णवखंड के अयोध्या महात्म्य पर भरोसा जताया गया है। स्कंद पुराण के वैष्णवखंड के उपरोक्त अयोध्या महात्म्य को विस्तार के रूप में दर्ज किया गया है।

स्कंद पुराण का द्वितीय ग्रंथ वैष्णवखंड है। वैष्णवखंड के विभिन्न खंड विभिन्न विषयों के महात्म्य से संबंधित हैं। अयोध्या-महात्म्य के अध्याय दस में 87 श्लोक हैं। श्लोक 18 से 25, जो प्रासंगिक हैं, इस प्रकार हैः-

तस्मात् स्थानात अलैहने रामजन्म प्रवर्तत्।
जन्मस्थानमदं प्रोक्तं मोदफलसाधनम्।।18।।
वघ्नेश्वरात् पभागे वस्थादरे तथा।
लौमशात् पिशाचे भगे जन्मस्थानं ततः स्मतम॥19॥

उस स्थान के उत्तर-पूर्व में राम का जन्म स्थान है। इस पवित्र जन्म स्थान को मोक्ष आदि की प्राप्ति का साधन कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जन्म स्थान विघ्नेश्वर के पूर्व, वशिष्ठ के उत्तर और लौमासा के पश्चिम में स्थित है।

अयोध्या विवाद
पैरवी, परिणाम और परमहंस

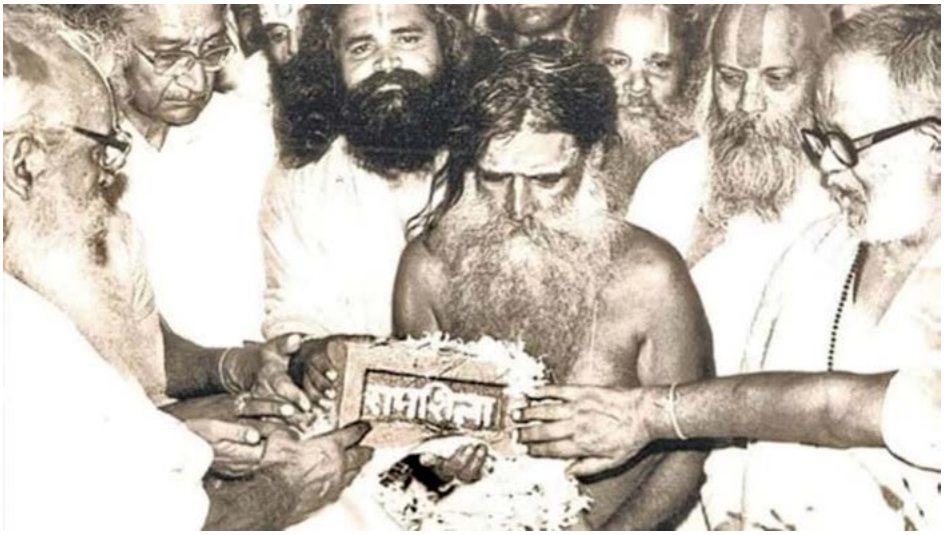

संजय तिवारी

> 1 फरवरी 1986 को मुकदमे की सुनवाई पूरी होने के बाद जज ने कहा कि वह मुकदमे का फैसला उसी दिन शाम 4.15 बजे करेंगे। शाम 4.15 बजे उन्होंने ताला खोलने का आदेश दिया। न्यायाधीश ने इस बात की भी अनुमति दी कि जनता दर्शन व पूजा के लिए रामजन्मभूमि जाए। अपने आदेश में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि राज्य सरकार अपील दायर करने वाले तथा हिंदुओं पर रामजन्मभूमि में पूजा या दर्शन में कोई बाधा और प्रतिबंध न लगाए।

श्री राम जन्मभूमि विवाद ने देश की राजनीति तो बदला ही, देश की सोच भी बदली है। इस बदलाव की हवा के तेज गति पकड़ने में कई पड़ाव आते हैं लेकिन यह महज इत्तफाक भी हो सकता है कि अयोध्या विवाद का गोखपुर से बहुत गहरा सम्बन्ध रहा है। यदि कुछ क्रम में देखें तो बहुत कुछ साफ़ दिखता है। जैसे, जब श्रीराम जन्मभूमि का वर्ष 1949 से बंद ताला खुला तब प्रदेश में मुख्य मंत्री वीरबहादुर सिंह थे। वह गोरखपुर के ही थे। वह ताला खोलने का आदेश जिस जज ने दिया वह कृष्ण मोहन पांडेय भी गोरखपुर के थे। श्री राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति बनी तो गोरखनाथ मंदिर के महंत अवेद्यनाथ जी को ही इसका अध्यक्ष बनाया गया।

इन वर्षों में देश और दुनिया में बहुत कुछ बदल चुका है। इसी श्री राम के नाम की राजनीति करती आ रही भाजपा को इस देश ने बागडोर सौप रखी है। प्रदेश की बागडोर उसी अवेद्यनाथ जी के उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ जी के पास है। यानी फिर गोरखपुर की एक बड़ी भूमिका बन चुकी है।

युगांतकारी फैसला

अयोध्या के विवादित ढांचे को लेकर हिंदू-मुस्लिम समुदाय अपने-अपने दावे तो अरसे से कर रहे थे लेकिन इस चिंगारी को हवा दी तत्कालीन फैजाबाद के जिला एवं सत्र न्यायाधीश के एक आदेश ने। एक फरवरी 1986 को दिये गये इसी आदेश से इस ढांचे पर 37 वर्षों से लगे ताले को खोलने का रास्ता साफ हुआ। इस आदेश में न्यायाधीश ने यह अनुमति भी दे दी थी कि दर्शन व पूजा के लिए लोग रामजन्मभूमि जा सकते हैं। 25 जनवरी 1986 को अयोध्या के वकील उमेश चंद्र पांडेय ने फैजाबाद के मुंसिफ (सदर) हरिशंकर द्विवेदी की अदालत में विवादास्पद ढांचे को रामजन्मभूमि मंदिर बताते हुए उसके दरवाजे पर लगे ताले को खोलने के लिए याचिका दाखिल की। यह कहते हुए कि रामजन्मभूमि पर पूजा-अर्चना करना उनका बुनियादी अधिकार है। मुंसिफ ने इस मामले में कोई आदेश पारित नहीं किया क्योंकि

इस संदर्भ में मुख्य वाद हाईकोर्ट में विचाराधीन था। लिहाजा उन्होंने एप्लीकेशन को निस्तारित करने में असमर्थता जतायी। उन्होंने कहा कि मुख्य वाद के रिकार्ड के बिना वह आदेश पारित नहीं कर सकते। उमेश चंद्र पांडेय ने इसके खिलाफ 31 जनवरी 1986 को जिला एवं सत्र न्यायाधीश फैजाबाद की अदालत में अपील दायर की। उनकी दलील थी कि मंदिर में ताला लगाने का आदेश पूर्व में जिला प्रशासन ने दिया था, किसी अदालत ने नहीं। एक फरवरी 1986 को जिला एवं सत्र न्यायाधीश कृष्ण मोहन पांडेय ने उनकी अपील स्वीकार की। इस मामले में जज ने फैजाबाद के तत्कालीन जिलाधिकारी इंदु कुमार पांडेय और एसएसपी कर्मवीर सिंह को कोर्ट में तलब किया था। दोनों ने अदालत को बताया कि ताला खोलने से कानून व्यवस्था के बिगडने की आशंका नहीं है। जज ने इस मामले में बाबरी मस्जिद के मुख्य मुद्दई मोहम्मद हाशिम व एक अन्य पक्षकार के तर्कों को भी सुना। राज्य सरकार ने जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत में वकील उमेश चंद्र पांडेय की याचिका का विरोध किया। यह कहते हुए कि रामजन्मभूमि के गेट पर लगे ताले को खोलने से कानून व्यवस्था भंग होने की आशंका है। न्यायाधीश ने सरकार की यह दलील ठुकराते हुए कहा कि रामजन्मभूमि पर ताला लगाने का कोई भी आदेश किसी भी अदालत में पूर्व में नही दिया है।

1 फरवरी 1986 को मुकदमे की सुनवाई पूरी होने के बाद जज ने कहा कि वह मुकदमे का फैसला उसी दिन शाम 4.15 बजे करेंगे। शाम 4.15 बजे उन्होंने ताला खोलने का आदेश दिया। न्यायाधीश ने इस बात की भी अनुमति दी कि जनता दर्शन व पूजा के लिए रामजन्मभूमि जाए। अपने आदेश में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि राज्य सरकार अपील दायर करने वाले तथा हिंदुओं पर रामजन्मभूमि में पूजा या दर्शन में कोई बाधा और प्रतिबंध न लगाए। न्यायाधीश के आदेश देने के बमुश्किल 40 मिनट बाद ही सिटी मजिस्ट्रेट फैजाबाद रामजन्मभूमि मंदिर पहुंचे और उन्होंने गेट पर लगे ताले खोल दिये। इसके बाद से ही इस प्रकरण पर सभी पक्षकार अधिक सक्रिय हुए।

गजब की दोस्ती, अजब पैरवी

राम मंदरि के पैरोकार रहे परमहंस रामचंद्र दास और बाबरी मस्जदि के पैरोकार हाशमि अंसारी दोनों इस दुनयिा में नहीं हैं। दोनों के बीच वैचारकि लड़ाई जरूर थी, लेकनि उनकी दोस्ती अटूट थी। अब शायद ही ऐसा दखिने को मलि। दोनों एक ही साथ एक ही रिक्शे पर बैठ कर कचहरी जाते थे। दिनभर की जिरह के बाद हसंते-बोलते एक ही रिक्शे से घर वापस आते थे। करीब 6 दशक तक यूं ही उन्होंने दोस्ती नभाई। अयोध्या के महंत नारायणाचारी जी के अनुसार उन दिनों में हम यह इंतजार किया करते थे क कि दोनों लोग खाली समय में दन्तधावन कुंड के पास आएंगे। अक्सर शाम होते वह एक साथ आते थे और ताश के पत्ते खेलते थे। यह खेल देर रात तक चलता था। चाय पी जाती थी, नाश्ता किया जाता था, लेकिन एक भी शब्द मंदिर-मस्जिद

को लेकर नहीं बोला जाता था।

साकेत विद्यालय (अयोध्या) के पूर्व प्राचार्य बीएन अरोड़ा कहते थे क उनकी वैचारिक लड़ाई थी। वह अपने-अपने हक और आराध्या के लिए कचहरी में पैरवी करते थे। उनकी कोई भी व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं थी। संस्कृत विद्यालय के आचार्य रहे पंडित धनंजय मिश्र की मानें तो हाशिम अंसारी गजब जीवट के आदमी थे। उनके चेहरे पर झुर्रियों के साथ-साथ मायूसी इतने सालों में कभी नहीं देखी। हाशमि अयोध्या के उन कुछ चुनिंदा बचे हुए लोगों में से थे, जो दशकों तक अपने मजहब और बाबरी मस्जिद के लिए संविधान और कानून के दायरे में रहते हुए अदालती लड़ाई लड़ते रहे। अयोध्या संस्थान के सहायक प्रबंधक रहे राम तीरथ बताते थे कि मुझे यहां नौकरी करते हुए 30 साल का समय हो गया था। हाशमि अंसारी के स्थानीय हिंदू साधु-संतों से उनके रिश्ते कभी खराब नहीं हुए। मैं जब भी उनके घर गया, हमेशा आस-पड़ोस के हिंदू युवक चचा-चचा कहते हुए उनसे बतियाते हुए मिले। जब महंत रामचंद्र परमहंस का देहांत की सूचना हाशिम अंसारी को मिली तो वह पूरी रात उनके पास रहे। दूसरे दिन अंतिम संस्कार के बाद ही वह अपने घर गए।

1949 से मुकदमें की पैरवी

हाशिम के बेटे इकबाल अंसारी बताते हैं कि अब्बू (हाशिम) 1949 से मुकदमें की पैरवी शुरू की थी, लेकिन आज तक किसी हिंदू ने उनको एक लफ्ज गलत नहीं कहा। हमारा उनसे भाईचारा है,

वो हमको दावत देते हैं। मैं उनके यहां सपरिवार दावत खाने जाता हूं। मौजूदा समय में मामले के पैरोकार रह चुके हाजी महबूब कहते थे कि दूसरे प्रमुख दावेदारों में दिगंबर अखाड़ा के रामचंद्र परमहंस से हाशिम की अंत तक गहरी दोस्ती रही। परमहंस और हाशिम ये दोनों दोस्त अब जीवित नहीं रहे, लेकिन उनकी दोस्ती अयोध्या-अवध की मिलीजुली गंगा-जमुनी तहजीब का केंद्र रहा है। हाशिम इसी संस्कृति में पले बढ़े थे, जहां मुहर्रम के जुलूस पर हिंदू फूल बरसाते हैं और नवरात्रि के जुलूस पर मुसलमान फूलों की बारिश करते हैं। हाशिम का परिवार कई पीढ़ियों से अयोध्या में रह रहा है। वह 1921 में पैदा हुए थे। 20 जुलाई 2016 को उनका देहांत हो गया। वहीं, 11 साल की उम्र में 1932 में हाशमि के पिता का देहांत हो गया था। दर्जा (कक्षा) दो तक पढ़ाई की थी। फिर सिलाई यानी दर्जी का कम करने लगे। फैजाबाद में उनकी शादी हुई। उनके दो बच्चे एक बेटा और एक बेटी हैं। उनके परिवार की आमदनी का कोई खास जरिया नहीं है। 6 दिसंबर 1992 के बलवे में उनका घर जल गया था, लेकनि अयोध्या के हिंदुओं ने उन्हें और उनके परिवार को बचा लयिा।

परमहंस रामचंद्र दास

साल 1913 में जन्मे 92 वर्षीय रामचंद्र परमहंस का 31 जुलाई 2003 को अयोध्या में निधन हो गया था। वे 1934 से ही अयोध्या में राम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़े थे। दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या में परमहंस रामचन्द्र दास अध्यक्ष रहे, जिसमें श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन हुआ। महंत परमहंस रामचंद्र दास (1912 - 31 जुलाई 2003) राम मन्दिर आंदोलन के प्रमुख संत व श्रीराम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष थे। वे सन् 49 से रामजन्म-भूमि आंदोलन में सक्रिय हुए तथा 1975 से उन्होने दिगम्बर अखाड़े के महंत का पद संभाला।

उन्होने कहा था कि 'मेरे जीवन की तीन ही अन्तिम अभिलाषाएं हैं। पहली- राम मन्दिर, कृष्ण मन्दिर, काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण। दूसरी- इस देश में आमूल-चूल गोहत्या बन्द हो। तीसरी- भारत मां को अखण्ड भारत के रूप में देखना। इसके लिए मैं जीवन भर संघर्ष करता रहा हूं और आगे जीवित रहा तो भी संघर्ष करता रहूंगा। मरने पर मैं मोक्ष नहीं चाहूंगा। मेरी अब एक ही कामना है जो मैं कह चुका हूं।' परमहंस जी महाराज का पूर्व नाम चन्द्रेश्वर तिवारी था। 17 वर्ष की आयु में साधु जीवन अंगीकार करने के बाद उनका नाम रामचन्द्र दास हो गया। बिहार के छपरा जिला के सिंहनीपुर ग्राम में 1912 में माता स्वर्गीय श्रीमती सोना देवी और पिता श्री पण्डित भगेरन तिवारी (सम्भवतः भाग्यरन तिवारी) के पुत्र के रूप में उनका जन्म हुआ था। महाराजश्री के पिताजी सरयूपारीय, शाण्डिल्य गोत्रीय धतूरा तिवारी ब्राह्मण थे। चंद्रेश्वर बालक ही थे कि माता स्वर्ग सिधार गयीं। कुछ दिनों बाद पिता भी नहीं रहे। परिणामस्वरूप इनके शिक्षण एवं लालन-पालन का दायित्व घर में सबसे बड़े भाई यज्ञानन्द तिवारी के कंधों पर आ गया। परिवार में कुल चार भाई, चार बहनों का जन्म हुआ। परमहंस जी चारों भाइयों में सबसे छोटे थे। मंझले दोनों भाई अपनी अल्पायु में ही चल बसे, आज कोई बहन भी जीवित नहीं है। इस प्रकार परिवार में केवल दो भाई शेष रहे। सबसे बड़े यज्ञानन्द तिवारी और सबसे छोटे चन्द्रेश्वर तिवारी। बड़े भाई उनसे लगभग 17 वर्ष बड़े थे।

श्री चंद्रेश्वर तिवारी जब कक्षा 10 में पढ़ते थे, तभी पास के किसी ग्राम में यज्ञ देखने गए और सन्तों के सम्पर्क में आ गए। ग्राम में रहकर 12वीं कक्षा पास की। उसके पश्चात् साधु जीवन स्वीकार कर लिया। उस समय लगभग 15 वर्ष की आयु में हृदय में वैराग्य भाव जागृत हो गया था। पटना आयुर्वेद कालेज से आयुर्वेदाचार्य, बिहार संस्कृत संघ से व्याकरणाचार्य तथा बंगाल से साहित्यतीर्थ की परीक्षाएं पास कीं। परमहंस जी महाराज 1930 ई. के लगभग अयोध्या आ गए थे। अयोध्या में वे रामघाट स्थित परमहंस रामकिंकर दास जी की छावनी में रहे। (आज इसी स्थान पर श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के लिए पत्थरों की नक्काशी का कार्य होता है।) महाराज जी के आध्यात्मिक गुरु ब्रह्मचारी रामकिशोर दास जी महाराज (मार्फा गुफा जानकी कुण्ड, चित्रकूट) थे। 1975 में श्री पंच रामानन्दीय दिगम्बर अखाड़ा की अयोध्या बैठक के महन्त पद पर प्रतिष्ठित किए गए। इनके पूर्व गुरु का नाम श्री महन्त सुखराम दास जी महाराज (दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या) था। हरिद्वार में कुम्भ आयोजन के पूर्व देशभर से रामानन्द सम्प्रदाय के संतों के वृन्दावन में एकत्र होने की परम्परा है। इसी परम्परा के अनुसार 1998 में वृन्दावन में वे अखिल भारतीय श्री पंच रामानन्दीय दिगम्बर अनी अखाड़ा के सर्वसम्मति से श्री महन्त चुने गए। श्रीराम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पूज्य स्वामी शिवरामाचार्य जी महाराज का साकेतवास हो जाने के पश्चात् अप्रैल, 1989 में परमहंस जी महाराज को श्रीराम जन्मभूमि न्यास का कार्याध्यक्ष घोषित किया गया। बाद में वे श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण समिति के अध्यक्ष भी चुने गए।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पूज्य स्वामी भगवदाचार्य जी महाराज ने आपको 'प्रतिवाद भयंकर' की उपाधि से सुशोभित किया था। महंत श्री ने विशिष्टाद्वैत की शिक्षा श्री अयोध्या प्रसादाचार्य जी से ग्रहण की थी। धर्मसम्राट पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज ने परमहंस जी के बारे में एक बार टिप्पणी करते हुए कहा था कि यह व्यक्ति केवल विद्वान ही नहीं अपितु पुस्तकालय है।

संघर्ष गाथा

परमहंस रामचन्द्र दास जी महाराज ने श्रीराम जन्मभूमि में पूजा-अर्चना के लिए 1950 में जिला न्यायालय में प्रार्थनापत्र दिया। अदालत ने उस प्रार्थना पत्र पर अनुकूल आदेश दिए और निषेधाज्ञा जारी की। मुस्लिम पक्ष ने उच्च न्यायालय में अपील की, उच्च न्यायालय ने अपील रद्द करके पूजा-अर्चना बेरोक-टोक जारी रखने के लिए जिला न्यायालय के आदेश की पुष्टि कर दी। इसी आदेश के कारण आज

तक श्रीराम जन्मभूमि पर श्रीरामलला की पूजा-अर्चना होती चली आ रही है।

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति के 77वें संघर्ष की शुरूआत अप्रैल, 1984 की प्रथम धर्म संसद (नई दिल्ली) में हुई, जिसमें अयोध्या, मथुरा, काशी के धर्म स्थानों की मुक्ति का प्रस्ताव स्वर्गीय दाऊदयाल खन्ना जी के द्वारा रखा गया, जो सर्वसम्मति से पारित हुआ। दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या में परमहंस रामचन्द्र दास जी की अध्यक्षता में 77वें संघर्ष की कार्य योजना के संचालन हेतु प्रथम बैठक हुई थी, जिसमें श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन हुआ। परमहंस जी सर्वसम्मति से यज्ञ समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुने गए।

जन्मभूमि को मुक्त कराने हेतु जन-जागरण के लिए सीतामढ़ी से अयोध्या तक राम-जानकी रथ यात्रा का कार्यक्रम भी इसी बैठक में तय हुआ था। उत्तर प्रदेश में भ्रमण के लिए अयोध्या से भेजे गए 6 राम-जानकी रथों का पूजन परमहंस जी महाराज के द्वारा अक्टूबर 1985 में सम्पन्न हुआ था। पूज्य परमहंस जी महाराज की दूरदर्शिता के परिणामस्वरूप जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी शिवरामाचार्य जी महाराज के द्वारा श्रीराम जन्मभूमि न्यास की स्थापना हुई। दिसम्बर 1985 की द्वितीय धर्म संसद उडुपी (कर्नाटक) में पूज्य परमहंस जी की अध्यक्षता में हुई जिसमें निर्णय हुआ कि यदि 8 मार्च 1986 को महाशिवरात्रि तक रामजन्मभूमि पर लगा ताला नहीं खुला तो महाशिवरात्रि के बाद ताला खोलो आन्दोलन, ताला तोड़ो में बदल जाएगा और 8 मार्च के बाद प्रतिदिन देश के प्रमुख धर्माचार्य इसका नेतृत्व करेंगे।

पूज्य परमहंस रामचन्द्र दास जी महाराज ने अयोध्या में अपनी इस घोषणा से सारे देश में सनसनी फैला दी कि '8 मार्च 1986 तक श्रीराम जन्मभूमि का ताला नहीं खुला तो मैं आत्मदाह करूंगा।' जिसका परिणाम यह हुआ कि एक फ़रवरी 1986 को ही ताला खुल गया। जनवरी, 1989 में प्रयाग महाकुम्भ के अवसर पर आयोजित तृतीय धर्मसंसद में शिला पूजन एवं शिलान्यास का निर्णय परमहंस जी की उपस्थिति में ही लिया गया था। इस अभिनव शिलापूजन कार्यक्रम ने सम्पूर्ण विश्व के रामभक्तों को जन्मभूमि के साथ प्रत्यक्ष जोड़ दिया। श्रीराम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पूज्य स्वामी शिवरामाचार्य जी महाराज का साकेतवास हो जाने के पश्चात् अप्रैल, 1989 में परमहंस जी महाराज को श्रीराम जन्मभूमि न्यास का कार्याध्यक्ष घोषित किया गया।

परमहंस जी महाराज की दृढ़ संकल्प शक्ति के परिणामस्वरूप ही निश्चित तिथि, स्थान एवं पूर्व निर्धारित शुभ मुहूर्त 9 नवम्बर 1989 को शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। देश में अत्यंत उथल-पुथल के बीच 25 सितम्बर 1990 को राम रथ लेकर लालकृष्ण आडवाणी सोमनाथ से निकले थे। इस यात्रा को अयोध्या पहुंचना था। आज के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उस समय आडवाणी जी की इस यात्रा के

ब्रह्मर्षि देवरहवा बाबा की भविष्यवाणी

श्रीराम जन्मभूमि पर अयोध्या जी में मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा होने जा रही है। सदियों की प्रतीक्षा, संघर्ष व हजारों कुर्बानियों के बाद मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त होने पर सनातनी निश्चित तौर पर आह्लादित हैं। श्रीराम मंदिर की भव्यता के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट विशेष तैयारी कर रहा है, पर बहुत कमलोग जानते हैं कि श्रीराम जन्मभूमि में उनके भव्य मंदिर की भविष्यवाणी करीब 31 साल पहले प्रयागराज में संगम तीरे सिद्ध संत देवरहा बाबा ने की थी। मौका था विश्व हिदू परिषद की 'धर्म संसद' का। देवरहवा बाबा ने श्रीराम मंदिर के लिए दो ईंटें संगम में ही परमहंस रामचंद्र दास जी के सिर पर रख दी थीं। परमहंस जी के अनन्य शिष्य और विगत 17 वर्षों से उनके हवनकुंड की निरंतरता बनाए हुए राजेश नाथ त्रिपाठी जी बताते हैं कि देवरहा बाबा का आशीर्वाद मिलने के बाद विहिप ने मंदिर के लिए देशव्यापी आंदोलन शुरू कर दिया। शिला पूजन जैसे कार्यक्रमों के जरिए हिदू समुदाय तन, मन व धन से श्रीराम मंदिर आंदोलन से जुड़ता गया।

प्रयागराज कुंभ 1989 में विश्व हिदू परिषद ने 'धर्म संसद' आयोजन किया था। इसका प्रमुख मुद्दा श्रीराम जन्मभूमि में मंदिर निर्माण, गोरक्षा, गंगा की निर्मलता था। देवरहा बाबा, श्रीराम जन्मभूमि न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष रहे परमहंस रामचंद्र दास, गोरक्ष पीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ, स्वामी वामदेव, महंत नृत्यगोपाल दास, जगद्गुरु स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती, विहिप नेता अशोक सिंहल, आचार्य गिरिराज किशोर, ठाकुर गुर्जन सिंह इसमें मुख्य रूप से शामिल हुए थे। करीब पांच हजार संत-महात्माओं ने धर्मसंसद में हिस्सा लिया था। मंच पर पहली बार चंदन की लकड़ी से बनाए गए श्रीराम मंदिर का भव्य मॉडल रखा गया। मॉडल को देवरहा बाबा सहित हर संत ने स्वीकृति प्रदान की।

धर्म संसद में देवरहा बाबा ने अशोक सिंहल से कहा था कि 'बच्चा श्रीराम जन्मभूमि में जो ढांचा है, वह कायदा बन जाएगा (ध्वस्त हो जाएगा), वहां कुछ नहीं मिलेगा। मंदिर जरूर बनेगा। कानून से मंदिर बनेगा।'

प्रबंधन में थे। आडवाणी की रथ यात्रा को 12 नवम्बर 1990 को बिहार में लालू यादव की सरकार ने रोक दिया। आडवाणी समेत अनेक बड़े नेता गिरफ्तार कर लिये गये। इस घटना के बाद आंदोलन और तेज हो गया।

30 अक्टूबर 1990 की कारसेवा के समय अनेक बाधाओं को पार करते हुए अयोध्या में आये हजारों कारसेवकों का उन्होंने नेतृत्व व मार्गदर्शन भी किया। 2 नवम्बर 1990 को परमहंस जी का आशीर्वाद लेकर कारसेवकों ने जन्मभूमि के लिए कूच किया। उस दिन हुए बलिदान के वे स्वयं साक्षी थे। बलिदानी कारसेवकों के शव दिगम्बर अखाड़े में ही लाकर रखे गए थे। अक्टूबर 1992 में दिल्ली की धर्म संसद में 6 दिसम्बर की कारसेवा के निर्णय में आपने मुख्य भूमिका निभायी और स्वयं अपनी आंखों से उस ढांचे को बिखरते हुए देखा था जिसका स्वप्न वह अनेक वर्षों से अपने मन में संजोए थे। अक्टूबर 2000 में गोवा में केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक में पूज्य परमहंस जी महाराज को मन्दिर निर्माण समिति का अध्यक्ष सर्वसम्मति से चुना गया। जनवरी, 2002 में अयोध्या से दिल्ली तक की चेतावनी सन्त यात्रा का निर्णय पूज्य परमहंस रामचन्द्र दास जी का ही था। 27 जनवरी 2002 को प्रधानमंत्री से मिलने गए सन्तों के प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व भी आपने ही किया।

मार्च 2002 के पूर्णाहुति यज्ञ के समय शिलादान पर अदालत द्वारा लगायी गई बाधा के समय 13 मार्च को पूज्य परमहंस की इस घोषणा ने सारे देश व सरकार को हिला कर रख दिया कि 'अगर मुझे शिलादान नहीं करने दिया गया तो मैं रसायन खाकर अपने प्राण त्याग दूंगा।' आन्दोलन को तीव्र गति से चलाने के लिए सितम्बर, 2002 को केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की लखनऊ बैठक में परमहंस जी की योजना से ही गोरक्ष पीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण आन्दोलन उच्चाधिकार समिति का निर्माण हुआ। 26 मार्च 2003 को दिल्ली में आयोजित सत्याग्रह के प्रथम जत्थे का नेतृत्व कर पूज्य परमहंस रामचन्द्र दास जी महाराज ने अपनी गिरफ्तारी दी। 29 और 30 अप्रैल 2003 को अयोध्या में आयोजित उच्चाधिकार समिति की बैठक में परमहंस जी के परामर्श से ही श्रीराम संकल्पसूत्र संकीर्तन कार्यक्रम की योजना का निर्णय हुआ। इसके द्वारा दो लाख गांवों के दो करोड़ रामभक्त प्रत्यक्ष रूप से मन्दिर के साथ सहभागी बनेंगे। इसके बाद बीमारी की अवस्था में भी वे अपने संकल्प को दृढ़ता के साथ व्यक्त एवं देश, धर्म-संस्कृति की रक्षा हेतु समाज का मार्गदर्शन करते रहे।

1990 में स्थापित हुई कार्यशाला

प्रयागराज में स्वीकृत मॉडल के अनुरूप पत्थर तराशने का काम सितंबर 1990 में शुरू हुआ। अयोध्या के रामघाट पर कार्यशाला बनाई गई। वहां स्वीकृत मॉडल को रखा गया। विहिप के कार्यालय कारसेवकपुरम् में 2002 में उसके अनुरूप दूसरा मॉडल बनवाकर रखा गया है। पुराने मॉडल में 106 खंभे नीचे व 106 खंभे ऊपर, सिंह द्वार, नृत्य मंडप, रंग मंडप बनना है। भूतल व प्रथम तल में बनना था। उसकी चौड़ाई 140 फीट, लंबाई 268 फीट पांच इंच, ऊंचाई 128 फीट थी। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट ने इसे विस्तार दिया है। अब 360 फीट लंबाई, 235 फीट चौड़ाई, 161 फीट ऊंचा एक शिखर व पांच मंडप, दाए-बाएं कीर्तन व प्रार्थना मंडप बनाया जाएगा। तीन मंजिल के बराबर ऊंचाई होगी। गर्भगृह का फाउंडेशन 12 फीट रहेगा। ऊपर के तल में रामदरबार बनाया जाएगा।

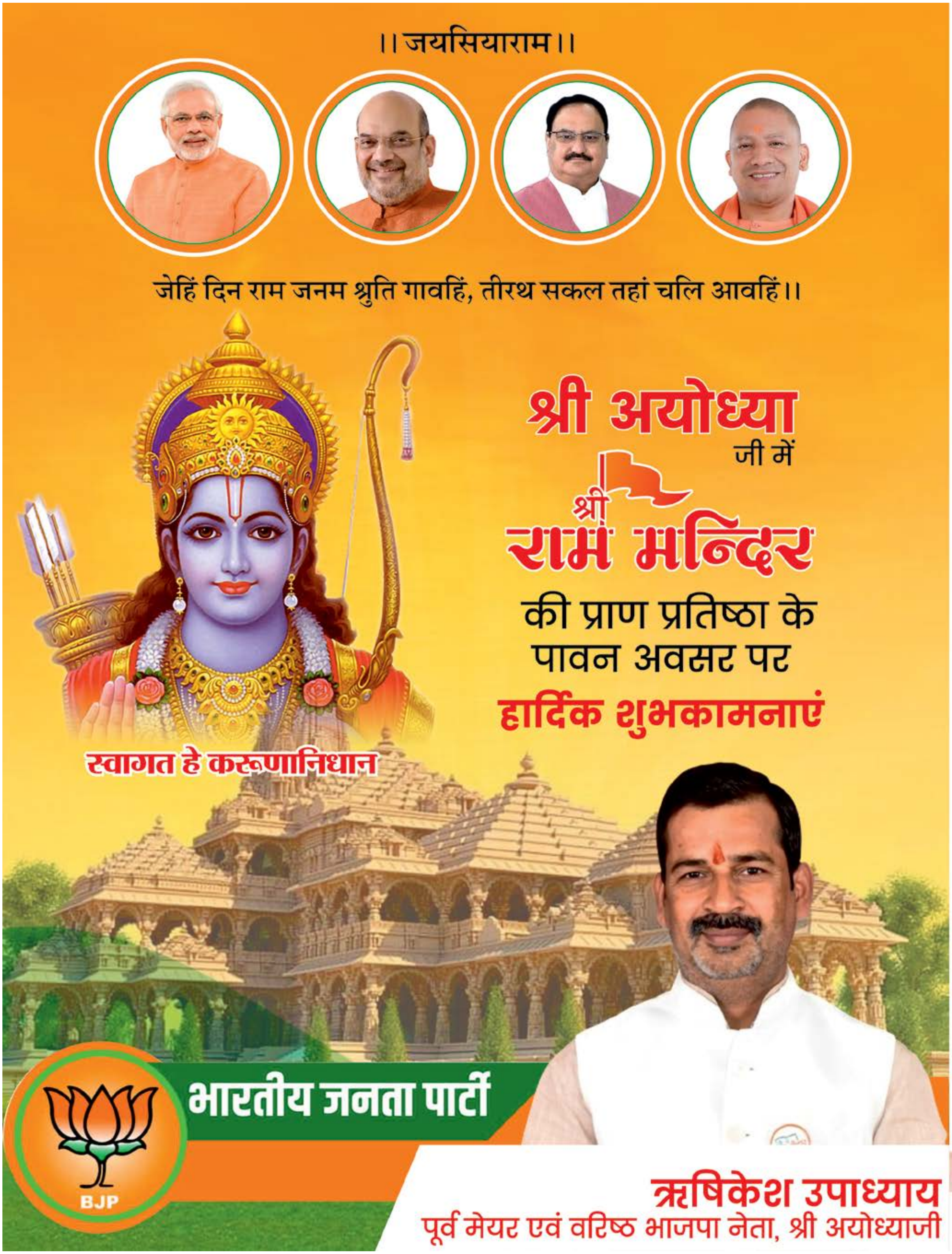
।। जयसियाराम ।।
जेहिं दिन राम जनम श्रुति गावहिं, तीरथ सकल तहां चलि आवहिं।।
श्री अयोध्या
जी में
श्री
राम मन्दिर
की प्राण प्रतिष्ठा के
पावन अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं
स्वागत हे करूणानिधान
भारतीय जनता पार्टी
BJP
ऋषिकेश उपाध्याय
पूर्व मेयर एवं वरिष्ठ भाजपा नेता, श्री अयोध्याजी

अयोध्या

आक्रांता बाबर से सनातन के महानायक मोदी तक

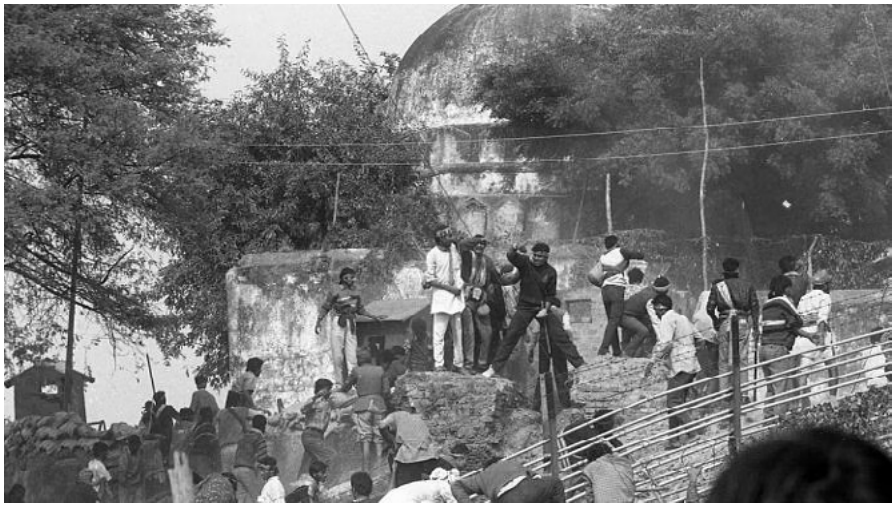

डॉ. ए. के. पाण्डेय

श्री अयोध्या जी में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य श्रीराम मंदिर के निर्माण का सपना पूरा हो चुका है। लगभग 500 वर्षों की प्रतीक्षा, अनगिनत बलिदान और लंबे संघर्ष के बाद श्रीरामलला अपने परिसर में विराजमान हो रहे हैं। आधुनिक भारत में सनातन के महायोद्धा,प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों इस मंदिर का लोकार्पण होने जा रहा। प्राणप्रतिष्ठा के अनुष्ठान 14 जनवरी 2024 से ही शुरू हो जाएंगे। श्री अयोध्या जी में हो रहे इस कालजयी सनातन घटनाक्रम का साक्षी विश्व बन रहा है।

> इतिहासकार कनिंघम लिखता है की ये अयोध्या का सबसे बड़ा हिन्दू मुस्लिम बलवा था। हिंदुओं ने अपना सपना पूरा किया और औरंगजेब द्वारा विध्वंस किए गए चबूतरे को फिर वापस बनाया। चबूतरे पर तीन फीट ऊँची खस की टाट से एक छोटा सा मंदिर बनवा लिया। जिसमे पुनः रामलला की स्थापना की गयी। कुछ जेहादी मुल्लाओं को ये बात स्वीकार नहीं हुई और कालांतर में जन्मभूमि फिर हिन्दुओं के हाथों से निकल गयी।

श्रीराम जन्मभूमि के लिए जीवन खपा देने वाले स्वर्गीय अशोक सिंघल जी की वह बात याद आती है जब 2014 में नरेंद्र मोदी जी के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के समय उन्होंने कहा था, भारत को 800 वर्षों के बाद एक हिंदू सम्राट मिला है। विगत 10 वर्षों में नरेंद्र मोदी के शासन और कार्यों से स्वर्गीय अशोक सिंघल जी की वह बात प्रमाणित भी हो चुकी है। सनातन के पुनरुद्धार के उनके कार्य अब नरेंद्र मोदी को चक्रवर्ती की श्रेणी में स्थापित करते हैं। इससे पहले थोड़ी जानकारी श्रीराम जन्मभूमि के विगत लगभग 500 वर्षों के संघर्ष की ले लेना भी जरूरी है।

बाबर का विध्वंस

जब बाबर दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ उस समय जन्मभूमि सिद्ध महात्मा श्यामनन्द जी महाराज के अधिकार क्षेत्र में थी। महात्मा श्यामनन्द की ख्याति सुनकर ख्वाजा कजल अब्बास मूसा आशिकान अयोध्या आये। महात्मा जी के शिष्य बनकर ख्वाजा कजल अब्बास मूसा ने योग और सिद्धियाँ प्राप्कर ली और उनका नाम भी महात्मा श्यामनन्द के ख्यातिप्राप्त

00000000000

शिष्यों में लिया जाने लगा। ये सुनकर जलालशाह नाम का एक फकीर भी महात्मा श्यामनन्द के पास आया और उनका शिष्य बनकर सिद्धियाँ प्राप्त करने लगा। जलालशाह एक कट्टर मुसलमान था, और उसको एक ही सनक थी, हर जगह इस्लाम का आधिपत्य साबित करना। अतः जलालशाह ने अपने काफिर गुरू की पीठ में छुरा घोंपकर ख्वाजा कजल अब्बास मूसा के साथ मिलकर ये विचार किया की यदि इस मदिर को तोड़ कर मस्जिद बनवा दी जाये तो इस्लाम का परचम हिन्दुस्थान में स्थायी हो जायेगा। धीरे धीरे जलालशाह और ख्वाजा कजल अब्बास मूसा इस साजिश को अंजाम देने की तैयारियों में जुट गए। अयोध्या को खुर्द मक्का बनाने की साजिश

सर्वप्रथम जलालशाह और ख्वाजा बाबर के विश्वासपात्र बने और दोनों ने अयोध्या को खुर्द मक्का बनाने के लिए जन्मभूमि के आसपास की जमीनों में बलपूर्वक मृत मुसलमानों को दफन करना शुरू किया और मीरबाँकी खां के माध्यम से बाबर को उकसाकर मंदिर के विध्वंस का कार्यक्रम बनाया। बाबा श्यामनन्द जी अपने मुस्लिम शिष्यों की करतूत देख के बहुत दुखी हुए और अपने निर्णय पर उन्हें बहुत पछतावा हुआ।

श्यामानंद जी की पीड़ा

दुखी मन से बाबा श्यामनन्द जी ने रामलला की मूर्तियाँ सरयू में प्रवाहित किया और खुद हिमालय की और तपस्या करने चले गए। मंदिर के पुजारियों ने मंदिर के अन्य सामान आदि हटा लिए और वे स्वयं मंदिर के द्वार पर रामलला की रक्षा के लिए खड़े हो गए। जलालशाह की आज्ञा के अनुसार उन चारो पुजारियों के सर काट लिए गए. जिस समय मंदिर को गिराकर मस्जिद बनाने की घोषणा हुई।

भीटी के राजा का संघर्ष

उस समय भीटी के राजा महताब सिंह बद्री नारायण की यात्रा करने के लिए निकले थे,अयोध्या पहुचने पर रास्ते में उन्हें ये खबर मिली तो उन्होंने अपनी यात्रा स्थगित कर दी और अपनी छोटी सेना में रामभक्तों को शामिल कर एक लाख चौहत्तर हजार लोगो के साथ बाबर की सेना के 4 लाख 50 हजार सैनिकों से लोहा लेने निकल पड़े।

70 दिनों का युद्ध

रामभक्तों ने सौगंध ले रक्खी थी रक्त की आखिरी बूंद तक लड़ेंगे जब तक प्राण है तब तक मंदिर नहीं गिरने देंगे। रामभक्त वीरता के साथ लड़े 70 दिनों तक घोर संग्राम होता रहा और अंत में राजा महताब सिंह समेत सभी एक लाख 74 हजार रामभक्त मारे गए। श्रीराम जन्मभूमि रामभक्तों के रक्त से लाल हो गयी। इस भीषण कत्ले आम के बाद मीरबांकी ने तोप लगा के मंदिर गिरवा दिया।

हिंदुओं के रक्त से बना गारा

मंदिर के मसाले से ही मस्जिद का निर्माण हुआ पानी की जगह मरे हुए हिन्दुओं का रक्त इस्तेमाल किया गया नीव में लखौरी इंटों के साथ। इतिहासकार कनिंघम अपने लखनऊ गजेटियर के 66वें अंक के पृष्ठ 3 पर लिखता है की एक लाख चौहतर हजार हिंदुओं की लाशें गिर जाने के पश्चात मीरबाँकी अपने मंदिर ध्वस्त करने के अभियान मे सफल हुआ और उसके बाद जन्मभूमि के चारो और तोप लगवाकर मंदिर को ध्वस्त कर दिया गया.. इसी प्रकार हैमिल्टन नाम का एक अंग्रेज बाराबंकी गजेटियर में लिखता है की ' जलालशाह ने हिन्दुओं के खून का गारा बना के लखौरी ईटों की नीव मस्जिद बनवाने के लिए दी गयी थी।

देवीदीन पांडेय

उस समय अयोध्या से 6 मील की दूरी पर सनेथू नाम का एक गाँव के पंडित देवीदीन पाण्डेय ने वहां के आस पास के गांवों सराय सिसिंडा राजेपुर आदि के सूर्यवंशीय क्षत्रियों को एकत्रित किया। देवीदीन पाण्डेय ने सूर्यवंशीय क्षत्रियों से कहा भाइयों आप लोग मुझे अपना राजपुरोहित मानते हैं ..अप के पूर्वज श्री राम थे और हमारे पूर्वज महर्षि भरद्वाज जी। आज मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जन्मभूमि को मुसलमान आक्रान्ता कब्रों से पाट रहे हैं और खोद रहे हैं इस परिस्थिति में हमारा मूकदर्शक बन कर जीवित रहने की बजाय जन्मभूमि की रक्षार्थ युद्ध करते करते वीरगति पाना ज्यादा उत्तम होगा। देवीदीन पाण्डेय की आज्ञा से दो दिन के भीतर 90 हजार क्षत्रिय इकठ्ठा हो गए दूर दूर के गांवों से लोग समूहों में इकठ्ठा हो कर देवीदीन पाण्डेय के नेतृत्व में जन्मभूमि पर जबरदस्त धावा बोल दिया। शाही सेना से लगातार 5 दिनों तक युद्ध हुआ। छठे दिन मीरबाँकी का सामना देवीदीन पाण्डेय से हुआ उसी समय धोखे से उसके अंगरक्षक ने एक लखौरी ईंट से पाण्डेय जी की खोपड़ी पर वार कर दिया। देवीदीन पाण्डेय का सर बुरी तरह फट गया मगर उस वीर ने अपने पगड़ी से

खोपड़ी से बाँधा और तलवार से उस कायर अंगरक्षक का सर काट दिया। इसी बीच मीरबाँकी ने छिपकर गोली चलायी जो पहले ही से घायल देवीदीन पाण्डेय जी को लगी और वो जन्मभूमि की रक्षा में वीर गति को प्राप्त हुए..जन्मभूमि फिर से 90 हजार हिन्दुओं के रक्त से लाल हो गयी। देवीदीन पाण्डेय के वंशज सनेथू ग्राम के ईश्वरी पांडे का पुरवा नामक जगह पर अब भी मौजूद हैं।

25 हजार लोगों के हंसवर के महाराज मारे गए

पाण्डेय जी की मृत्यु के 15 दिन बाद हंसवर के महाराज रणविजय सिंह ने सिर्फ 25 हजार सैनिकों के साथ मीरबाँकी की विशाल और शस्त्रों से सुसज्जित सेना से रामलला को मुक्त कराने के लिए आक्रमण किया। 10 दिन तक युद्ध चला और महाराज जन्मभूमि के रक्षार्थ वीरगति को प्राप्त हो गए। जन्मभूमि में 25 हजार हिन्दुओं का रक्त फिर बहा।

रानी जयराज कुमारी

रानी जयराज कुमारी हंसवर के स्वर्गीय महाराज रणविजय सिंह की पत्नी थी। जन्मभूमि की रक्षा में महाराज के वीरगति प्राप्त करने के बाद महारानी ने उनके कार्य को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया और तीन हजार नारियों की सेना लेकर उन्होंने जन्मभूमि पर हमला बोल दिया और हुमायूं के समय तक उन्होंने छापामार युद्ध जारी रखा। रानी के गुरु स्वामी महेश्वरानंद जी ने रामभक्तों को इकट्ठा करके सेना का प्रबंध करके जयराज कुमारी की सहायता की। साथ ही स्वामी महेश्वरानंद जी ने सन्यासियों की सेना बनायीं इसमें उन्होंने 24 हजार सन्यासियों को इकठ्ठा किया और रानी जयराज कुमारी के साथ, हुमायूँ के समय में कुल 10 हमले जन्मभूमि के उद्धार के लिए किये। 10वें हमले में शाही सेना को काफी नुकसान हुआ और जन्मभूमि पर रानी जयराज कुमारी का अधिकार हो गया।

लगभग एक महीने बाद हुमायूँ ने पूरी ताकत से शाही सेना फिर भेजी,इस युद्ध में स्वामी महेश्वरानंद और रानी कुमारी जयराज कुमारी लड़ते हुए अपनी बची हुई सेना के साथ मारे गए और जन्मभूमि पर पुनः मुगलों का अधिकार हो गया। श्रीराम जन्मभूमि एक बार फिर कुल 24 हजार सन्यासियों और 3 हजार वीर नारियों के रक्त से लाल हो गयी। रानी जयराज कुमारी और स्वामी महेश्वरानंद जी के बाद यद्ध का नेतृत्व स्वामी बलरामचारी जी ने अपने हाथ में ले लिया। स्वामी बलरामचारी जी ने गांव गांव में घूम कर रामभक्त हिन्दू युवकों और सन्यासियों की एक मजबूत सेना तैयार करने का प्रयास किया और जन्मभूमि के उद्धारार्थ 20 बार आक्रमण किये. इन 20 हमलों में काम से काम 15 बार स्वामी बलरामचारी ने जन्मभूमि पर अपना अधिकार कर लिया मगर ये अधिकार अल्प समय के लिए रहता था थोड़े दिन बाद बड़ी शाही फ़ौज आती थी और जन्मभूमि पुनः मुगलों के अधीन हो जाती थी। जन्मभूमि में लाखों हिन्दू बलिदान होते रहे। उस समय का मुग़ल शासक अकबर था। शाही सेना हर दिन के इन युद्धों से कमजोर हो रही थी। अतः अकबर ने बीरबल और टोडरमल के कहने पर खस की टाट से उस चबूतरे पर 3 फीट का एक छोटा सा मंदिर बनवा दिया. लगातार युद्ध करते रहने के कारण स्वामी बलरामचारी का स्वास्थ्य गिरता चला गया था और प्रयाग कुम्भ के अवसर पर त्रिवेणी तट पर स्वामी बलरामचारी की मृत्यु हो गयी।

इस प्रकार बार-बार के आक्रमणों और हिन्दू जनमानस के रोष एवं हिन्दुस्थान पर मुगलों की ढीली होती पकड़ से बचने का एक राजनैतिक प्रयास की अकबर की इस कूटनीति से कुछ दिनों के लिए जन्मभूमि में रक्त नहीं बहा। यही क्रम शाहजहाँ के समय भी चलता रहा। फिर औरंगजेब के हाथ सत्ता आई वो कट्टर मुसलमान था और उसने समस्त भारत से काफिरों के सम्पूर्ण सफाये का संकल्प लिया था। उसने लगभग 10 बार अयोध्या मे मंदिरों को तोड़ने का अभियान चलकर यहाँ के सभी प्रमुख मंदिरों की मूर्तियों को तोड़ डाला। औरंगजेब के समय में समर्थ गुरु श्री रामदास जी महाराज जी के शिष्य श्री वैष्णवदास जी ने जन्मभूमि के उद्धारार्थ 30 बार आक्रमण किये। इन आक्रमणों मे अयोध्या के आस पास के गांवों के सूर्यवंशीय क्षत्रियों ने पूर्ण सहयोग दिया जिनमे सराय के ठाकुर सरदार गजराज सिंह और राजेपुर के कुँवर गोपाल सिंह तथा सिसिण्डा के ठाकुर जगदंबा सिंह प्रमुख थे। ये सारे वीर ये जानते हुए भी की उनकी सेना और हथियार बादशाही सेना के सामने कुछ भी नहीं है अपने जीवन के आखिरी समय तक शाही सेना से लोहा लेते रहे। लम्बे समय तक चले इन युद्धों में रामलला को मुक्त कराने के लिए हजारों हिन्दू वीरों ने अपना बलिदान दिया और अयोध्या की धरती पर उनका रक्त बहता रहा।

ठाकुर गजराज सिंह और उनके साथी क्षत्रियों के वंशज आज भी सराय मे मौजूद हैं। आज भी फैजाबाद जिले के आस पास के सूर्यवंशीय क्षत्रिय सिर पर पगड़ी नहीं बांधते,जूता नहीं पहनते, छता नहीं लगाते, उन्होने अपने पूर्वजों के सामने ये प्रतिज्ञा ली थी की जब तक श्री राम जन्मभूमि का उद्धार नहीं कर लेंगे तब तक जूता नहीं पहनेंगे,छाता नहीं लगाएंगे, पगड़ी नहीं पहनेंगे।

1640 ईस्वी में औरंगजेब ने मन्दिर को ध्वस्त करने के लिए जबांज खाँ के नेतृत्व में एक जबरजस्त सेना भेज दी थी, बाबा वैष्णव दास के साथ साधुओं की एक सेना थी जो हर विद्या मे निपुण थी इसे चिमटाधारी साधुओं की सेना भी कहते थे। जब जन्मभूमि पर जबांज खाँ ने आक्रमण किया तो हिंदुओं के साथ चिमटाधारी साधुओं की सेना की सेना मिल गयी और उर्वशी कुंड नामक जगह पर जाबाज़ खाँ की सेना से सात दिनों तक भीषण युद्ध किया। चिमटाधारी साधुओं के चिमटे के मार से मुगलों की सेना भाग खड़ी हुई। इस प्रकार चबूतरे पर स्थित मंदिर की रक्षा हो गयी। जाबाज़ खाँ की पराजित सेना को देखकर औरंगजेब बहुत क्रोधित हुआ और उसने जाबाज़ खाँ को हटाकर एक अन्य सिपहसालार सैय्यद हसन अली को

50 हजार सैनिकों की सेना और तोपखाने के साथ अयोध्या की ओर भेजा और साथ मे ये आदेश दिया की अबकी बार जन्मभूमि को बर्बाद करके वापस आना है,यह समय सन् 1680 का था। बाबा वैष्णव दास ने सिक्खों के गुरु गुरुगोविंद सिंह से युद्ध मे सहयोग के लिए पत्र के माध्यम संदेश भेजा। पत्र पाकर गुरु गुरुगोविंद सिंह सेना समेत तत्काल अयोध्या आ गए और ब्रहमकुंड पर अपना डेरा डाला। ब्रहमकुंड वही जगह जहां आजकल गुरुगोविंद सिंह की स्मृति मे सिक्खों का गुरुद्वारा बना हुआ है। बाबा वैष्णव दास एवं सिक्खों के गुरुगोविंद सिंह रामलला की रक्षा हेतु एकसाथ रणभूमि में कूद पड़े। इन वीरों कें सुनियोजित हमलों से मुगलो की सेना के पाँव उखड़ गये सैय्यद हसन अली भी युद्ध मे मारा गया। औरंगजेब हिंदुओं की इस प्रतिक्रिया से स्तब्ध रह गया था और इस युद्ध के बाद 4 साल तक उसने अयोध्या पर हमला करने की हिम्मत नहीं की। औरंगजेब ने सन् 1664 मे एक बार फिर श्री राम जन्मभूमि पर आक्रमण किया। इस भीषण हमले में शाही फौज ने लगभग 10 हजार से ज्यादा हिंदुओं की हत्या कर दी नागरिकों तक को नहीं छोड़ा। जन्मभूमि हिन्दुओं के रक्त से लाल हो गयी। जन्मभूमि के अंदर नवकोण के एक कंदर्प कूप नाम का कुआं था, सभी मारे गए हिंदुओं की लाशें मुगलों ने उसमे फेककर चारों ओर चहारदीवारी उठा कर उसे घेर दिया। आज भी कंदर्पकूप 'गज शहीदा' के नाम से प्रसिद्ध है,और जन्मभूमि के पूर्वी द्वार पर स्थित है। शाही सेना ने जन्मभूमि का चबूतरा खोद डाला बहुत दिनो तक वह चबूतरा गड्ढे के रूप मे वहाँ स्थित था। औरंगजेब के क्रूर अत्याचारो की मारी हिन्दू जनता अब उस गड्ढे पर ही श्री रामनवमी के दिन भक्तिभाव से अक्षत,पुष्प और जल चढाती रहती थी।

नबाब सहादत अली के समय 1763 ईस्वी में जन्मभूमि के रक्षार्थ अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह और पिपरपुर के राजकुमार सिंह के नेतृत्व मे बाबरी ढांचे पर पुनः पाँच आक्रमण किये गये जिसमें हर बार हिन्दुओं की लाशें अयोध्या में गिरती रहीं। लखनऊ गजेटियर मे कर्नल हंट लिखता है की ' लगातार हिंदुओं के हमले से ऊबकर नबाब ने हिंदुओं और मुसलमानो को एक साथ नमाज पढ़ने और भजन करने की इजाजत दे दी पर सच्चा मुसलमान होने के नाते उसने काफिरों को जमीन नहीं सौंपी। 'लखनऊ गजेटियर पृष्ठ 62' नासिरुद्दीन हैदर के समय मे मकरही के राजा के नेतृत्व में जन्मभूमि को पुनः अपने रूप मे लाने के लिए हिंदुओं के तीन आक्रमण हुये जिसमें बड़ी संख्या में हिन्दू मारे गये। परन्तु तीसरे आक्रमण में डटकर नबाबी सेना का सामना हुआ 8वें दिन हिंदुओं की शक्ति क्षीण होने लगी,जन्मभूमि के मैदान मे हिन्दुओं और मुसलमानो की लाशों का ढेर लग गया। इस संग्राम मे भीती, हंसवर, मकर ही, खजुरहट,दीयरा अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह आदि सम्मलित थे। हारती हुई हिन्दू सेना के साथ वीर चिमटाधारी साधुओं की सेना आ मिली और इस युद्ध मे शाही सेना के चिथड़े उड गये और उसे रौंदते हुए हिंदुओं ने जन्मभूमि पर कब्जा कर लिया। मगर हर बार की तरह कुछ दिनो के बाद विशाल शाही सेना ने पुनः जन्मभूमि पर अधिकार कर लिया और हजारों हिन्दुओं को मार डाला गया। जन्मभूमि में हिन्दुओं का रक्त प्रवाहित होने लगा। नावाब वाजिदअली शाह के समय के समय मे पुनः हिंदुओं ने जन्मभूमि के उद्धारार्थ आक्रमण किया।

फैजाबाद गजेटियर में कनिंघम ने लिखा 'इस संग्राम मे बहुत ही भयंकर खूनखराबा हुआ। दो दिन और रात होने वाले इस भयंकर युद्ध में सैकड़ों हिन्दुओं के मारे जाने के बावजूद हिन्दुओं नें राम जन्मभूमि पर कब्जा कर लिया। क्रुद्ध हिंदुओं की भीड़ ने कब्रें तोड़ फोड़ कर बर्बाद कर डाली मस्जिदों को मिसमार करने लगे और पूरी ताकत से मुसलमानों को मार-मार कर अयोध्या से खदेड़ना शुरू किया। मगर हिन्दू भीड़ ने मुसलमान स्त्रियों और बच्चों को कोई हानि नहीं पहुचाई। अयोध्या मे प्रलय मचा हुआ था। इतिहासकार कनिंघम लिखता है की ये अयोध्या का सबसे बड़ा हिन्दू मुस्लिम बलवा था। हिंदुओं ने अपना सपना पूरा किया और औरंगजेब द्वारा विध्वंस किए गए चबूतरे को फिर वापस बनाया। चबूतरे पर तीन फीट ऊँची खस की टाट से एक छोटा सा मंदिर बनवा लिया। जिसमे पुनः रामलला की स्थापना की गयी। कुछ जेहादी मुल्लाओं को ये बात स्वीकार नहीं हुई और कालांतर में जन्मभूमि फिर हिन्दुओं के हाथों से निकल गयी।

सन 1857 की क्रांति मे बहादुर शाह जफर के समय में बाबा रामचरण दास ने एक मौलवी आमिर अली के साथ जन्मभूमि के उद्धार का प्रयास किया पर 18 मार्च सन 1858 को कुबेर टीला स्थित एक इमली के पेड़ मे दोनों को एक साथ अंग्रेज़ो ने फांसी पर लटका दिया। जब अंग्रेज़ो ने ये देखा कि ये पेड़ भी देशभक्तों एवं रामभक्तों के लिए एक स्मारक के रूप मे विकसित हो रहा है तब उन्होने इस पेड़ को कटवा कर इस आखिरी निशानी को भी मिटा दिया।

इस प्रकार अंग्रेज़ो की कुटिल नीति के कारण रामजन्मभूमि के उद्धार का यह एकमात्र प्रयास विफल हो गया। 30 अक्टूबर 1990 को हजारों रामभक्तों ने तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव द्वारा खड़ी की गईं अनेक बाधाओं को पार कर अयोध्या में प्रवेश किया और विवादित ढांचे के ऊपर भगवा ध्वज फहरा दिया। 2 नवम्बर 1990 को मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने कारसेवकों पर गोली चलाने का आदेश दिया, जिसमें सैकड़ों रामभक्तों ने अपने जीवन की आहुतियां दीं। सरकार ने मृतकों की असली संख्या छिपायी परन्तु प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सरयू तट रामभक्तों की लाशों से पट गया था। 4 अप्रैल 1991 को मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने इस्तीफा दिया। उत्तर प्रदेश में जब कल्याण सिंह की सरकार आई तब लाखों राम भक्त 6 दिसम्बर 1992 को कारसेवा हेतु अयोध्या पहुंचे और राम जन्मस्थान पर बाबर के सेनापति द्वार बनाए गए अपमान के प्रतीक मस्जिदनुमा ढांचे को ध्वस्त कर दिया।

पांच सौ वर्षों की संघर्ष यात्रा

डॉ. अर्चना तिवारी

सृष्टि में पांच सौ वर्ष बहुत मायने रखते हैं। कालचक्र कभी थमता नहीं। यह चक्र जीवन के रूप में आगे बढ़ता ही रहता है। यही धर्म चक्र भी है। यही धर्म जीवन को संस्कृति प्रदान कर उसे नियोजित और संयोजित करता है। श्री अयोध्या जी के माध्यम से विश्व विगत 500 वर्षों के धैर्य और प्रतीक्षा की उस सनातन संस्कृति का साक्षी बन रहा है जिसे आज सामान्य भाषा में हिंदू और हिंदुत्व की संज्ञा दी गई है। इतनी लंबी प्रतीक्षा। इतना बड़ा संघर्ष। इतने युद्ध। इतने बलिदान। अब जब श्रीअयोध्या जी की ओर विश्व की दृष्टि लगी है तो यह स्वाभाविक रूप से जिज्ञासा होगी कि इन 500 वर्षों को सनातन समाज ने कैसे जिया होगा। पूरी कथा विस्तार से एक स्थान पर प्रस्तुत कर पाना तो संभव नहीं लेकिन कुछ बिंदुओं को क्रम से अवश्य याद किया जा सकता है। इस अध्याय को उसी रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि पाठक एक नजर में श्री अयोध्या जी में श्रीराम जन्मभूमि की संघर्ष गाथा से परिचित हो सकें।

1528

मुगल बादशाह बाबर के कमांडर मीर बाकी द्वारा विवादित स्थल पर एक मस्जिद के विवादास्पद निर्माण का आदेश दिया गया। हिंदू समुदाय का दावा था कि यह स्थान भगवान राम का जन्मस्थान है और इस स्थान पर एक प्राचीन मंदिर था। हिंदुओं ने दावा किया कि मस्जिद के गुंबदों में से एक के नीचे वाले स्थान पर भगवान राम का जन्मस्थान था।

1853

यह पहली बार था जब अवध के नवाब वाजिद अली शाह के शासनकाल के दौरान सांप्रदायिक हिंसा की कोई घटना दर्ज की गई थी। हिंदू समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों ने कहा कि मस्जिदों का निर्माण हिंदू मंदिर के विध्वंस के बाद किया गया था।

1859

स्थल पर कब्जे के कारण सांप्रदायिक झड़पें हुईं। इसलिए, अंग्रेजों ने एक बाड़ का निर्माण किया जो दोनों धर्म के पूजा स्थलों को अलग करती थी जिसका मतलब था कि आंतरिक स्थान का उपयोग मुसलमानों द्वारा किया जाता था और बाहरी स्थल का उपयोग हिंदुओं द्वारा किया जाता था।

1885

फैजाबाद जिला न्यायालय ने राम चबूतरे पर छतरी बनाने की महंत रघुबीर दास की याचिका खारिज कर दी।

1949

अयोध्या राम जन्मभूमि पर वास्तविक विवाद 23 सितंबर, 1949 को शुरू हुआ, जब मस्जिद के अंदर भगवान राम की मूर्तियाँ पाई गईं। हिंदुओं का दावा था कि भगवान राम वहां स्वयं प्रकट हुए थे। उत्तर प्रदेश सरकार ने मूर्तियों को तत्काल हटाने का आदेश दिया। मुस्लिम कार्यकर्ताओं ने मूर्तियों के पाए जाने का विरोध किया और दोनों पक्षों ने नागरिक मुकदमा दायर किया और अंततः सरकार ने परिसर को विवादित क्षेत्र घोषित कर दिया और गेट पर ताला लगा दिया। जवाहरलाल नेहरू ने मूर्तियों की अवैध स्थापना पर कड़ा रुख अपनाया और जोर दिया कि मूर्ति हटा दी जानी चाहिए, लेकिन स्थानीय अधिकारी के.के.के. नायर (जो अपने हिंदू राष्ट्रवादी संबंधों के लिए जाने जाते हैं) ने यह दावा करते हुए आदेशों को पूरा करने से इनकार कर दिया कि इससे सांप्रदायिक दंगे हो सकते हैं।

18 जनवरी 1850

गोपाल सिंह विशारद ने राम जन्मभूमि पर स्थापित मूर्तियों की पूजा के अधिकार की अनुमति मांगने के लिए मुकदमा दायर किया। अदालत ने मूर्तियों को हटाने पर रोक लगा दी और पूजा की अनुमति दे दी।

1959

निर्मोही अखाड़ा उस स्थान के कब्जे के लिए एक नए दावेदार और मुकदमा दायर करने वाले के रूप में उभरा, जिसने खुद को उस स्थान का संरक्षक होने का दावा किया, जहां पर राम का जन्म हुआ था।

18 दिसंबर 1961

उत्तर प्रदेश सुन्नी वक्फ बोर्ड ने याचिका दायर कर विवादित जमीन पर कब्ज़ा करने और मूर्तियां हटाने की मांग की।

1986

हरि शंकर दुबे की याचिका के आधार पर, जिला अदालत ने हिंदू समुदाय के लिए 'दर्शन' के लिए गेट का ताला खोलने का निर्देश दिया। फैसले के विरोध में मुसलमानों ने बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी का गठन किया। नतीजतन, गेट एक घंटे से भी कम समय के लिए खोला गया और फिर से बंद हो गया।

23 अक्टूबर 1989

विहिप के पूर्व उपाध्यक्ष देवकी नंदन अग्रवाल ने स्वामित्व और कब्जे के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में मुकदमा दायर किया। विश्व हिंदू परिषद (VHP) ने विवादित मस्जिद से सटी जमीन पर शिलान्यास किया।

1990

विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के कार्यकर्ता मस्जिदों को ध्वस्त करने का प्रयास, भारत के समकालीन प्रधान मंत्री चन्द्रशेखर ने बातचीत के माध्यम से विवाद को सुलझाने का असफल प्रयास।

6 दिसंबर 1992

कारसेवकों द्वारा रामजन्मभूमि में स्थित विवादित बाबरी मस्जिद ढांचे को ढहाया गया।

16 दिसंबर 1992

भारतीय गृह मंत्रालय के एक आदेश द्वारा सेवानिवृत्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीश एम.एस. लिब्रहान के अधीन बाबरी मस्जिद के विवादित ढांचे के गिराने की घटना की जांच के लिए लिब्राहन आयोग (लिब्राहन अयोध्या जांच आयोग) की स्थापना की गई थी।

3 अप्रैल 1993

केंद्र द्वारा विवादित क्षेत्र में भूमि अधिग्रहण के लिए 'अयोध्या में निश्चित क्षेत्र का अधिग्रहण अधिनियम' पारित किया गया।

अधिनियम के विभिन्न पहलुओं को चुनौती देते हुए इस्माइल फारुकी की याचिका सहित विभिन्न रिट याचिकाएं इलाहाबाद उच्च न्यायालय में दायर की गईं।

SC ने अनुच्छेद 139A के तहत अपने अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करते हुए रिट याचिकाओं को स्थानांतरित कर दिया, जो उच्च न्यायालय में लंबित थीं।

24 अक्टूबर 1994

ऐतिहासिक इस्माइल फारूकी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मस्जिद इस्लाम का अभिन्न अंग नहीं है।

जुलाई 1996

इस वर्ष के दौरान, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने सभी सिविल मुकदमों को एक ही टेबल के नीचे क्लब कर दिया।

2002

उच्च न्यायालय ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को यह पता लगाने का आदेश दिया कि क्या मस्जिद के नीचे मंदिर के साक्ष्य मौजूद हैं।

अप्रैल 2002

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने बाबरी-मस्जिद विवादित स्थल के असली मालिक का पता लगाने के लिए सुनवाई शुरू की।

जनवरी 2003

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने बाबरी-मस्जिद विवादित भूमि के नीचे मंदिर के साक्ष्य खोजने के लिए खुदाई शुरू की और अपनी रिपोर्ट सौंपी कि पत्थर के स्तंभों और स्तंभों के आधार पर मंदिर के साक्ष्य हैं जो हिंदू, बौद्ध या जैन का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का कथन कि वह एएसआई रिपोर्ट को अदालत में चुनौती देगा।

जून 2009

लिब्रहान आयोग ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की और रिपोर्ट में विध्वंस में उनकी भूमिका के लिए भाजपा के राजनेताओं को दोषी ठहराया गया।

26 जुलाई 2010

इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने अपना आदेश सुरक्षित रख लिया और सभी पक्षों को मैत्रीपूर्ण चर्चा के माध्यम से मुद्दे को हल करने का सुझाव दिया, लेकिन दुर्भाग्य से किसी ने दिलचस्पी नहीं दिखाई।

17 सितंबर 2010

आर सी त्रिपाठी ने फैसले की घोषणा को टालने के लिए उच्च न्यायालय में एक मुकदमा दायर किया जिसे उच्च न्यायालय ने अस्वीकार कर दिया।

21 सितंबर 2010

आरसी त्रिपाठी ने उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने के लिए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया लेकिन अल्तमस कबीर और एके पटनायक की पीठ ने मामले की सुनवाई से इनकार कर दिया, फिर मामले को दूसरी पीठ के पास भेज दिया गया।

21 सितंबर 2010

आरसी त्रिपाठी ने उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने के लिए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया लेकिन अल्तमस कबीर और एके पटनायक की पीठ ने मामले की सुनवाई से इनकार कर दिया, फिर मामले को दूसरी पीठ के पास भेज दिया गया।

दिसंबर 2010

इस वर्ष के दौरान, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने ऐतिहासिक फैसला दिया कि विवादित भूमि को तीन भागों में विभाजित किया जाएगा:

एक तिहाई हिस्सा राम लला (हिंदू महासभा का कम प्रतिनिधित्व) को दिया जाएगा; इस्लामिक वक्फ बोर्ड को एक तिहाई; और बाकी तीसरा निर्मोही अखाड़े को।

इस वर्ष के दौरान, अखिल भारतीय हिंदू महासभा और सुन्नी वक्फ बोर्ड ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी।

2011

सुप्रीम कोर्ट ने विवादित भूमि के बंटवारे पर इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर रोक लगा दी और कहा कि यथास्थिति बनी रहेगी।

2015

विश्व हिंदू परिषद ने बाबरी-मस्जिद की विवादित भूमि पर राम मंदिर के निर्माण के लिए देश भर से पत्थर इकट्ठा करने की घोषणा की। महंत नृत्य गोपाल दास ने कहा कि मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने मंदिर निर्माण को हरी झंडी दे दी है।

अखिलेश यादव के नेतृत्व वाली उत्तर प्रदेश सरकार का कथन कि वह राम मंदिर के निर्माण के लिए पत्थरों को अयोध्या में आने की अनुमति नहीं देगी क्योंकि इससे सांप्रदायिक तनाव पैदा होगा।

मार्च 2017

सुप्रीम कोर्ट ने बाबरी-मस्जिद विध्वंस मामले के आधार पर कहा कि आडवाणी और अन्य नेताओं के खिलाफ आरोप हटाए नहीं जा सकते और मामले को फिर से शुरू किया जाना चाहिए।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय का वक्तव्य कि बाबरी-मस्जिद विध्वंस मामला संवेदनशील है और मुद्दों के एकीकरण के बिना इसे हल नहीं किया जा सकता है। इसलिए, यह बाबरी-मस्जिद मामले के सभी पक्षकारों से एक सौहार्दपूर्ण समाधान खोजने की अपील करता है।

19 अप्रैल 2017

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी और उमा भारती जैसे राजनेताओं के खिलाफ साजिश का मामले की पुनः सुनवाई शुरू की। शीर्ष अदालत ने इलाहाबाद कोर्ट की लखनऊ पीठ को दो साल के भीतर सुनवाई पूरी करने का भी आदेश दिया।

8 फरवरी 2018

सुप्रीम कोर्ट ने सिविल अपीलों पर सुनवाई शुरू की।

27 सितंबर 2018

सुप्रीम कोर्ट ने मामले को पांच जजों की संविधान पीठ के पास भेजने से इनकार कर दिया।

29 अक्टूबर 2018

सुप्रीम कोर्ट ने मामले की सुनवाई जनवरी के पहले सप्ताह में तीन न्यायाधीशों की पीठ के द्वारा किया जाना तय किया। पीठ को सुनवाई की तारीख तय करनी थी।

4 जनवरी 2019

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह मामले में सुनवाई की तारीख तय करने के लिए 10 जनवरी को आदेश पारित करेगा।

8 जनवरी 2019

सुप्रीम कोर्ट द्वारा पांच न्यायाधीशों की पीठ का गठन किया गया और इसकी अध्यक्षता मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई और अन्य न्यायाधीशों- एस ए बोबडे, एन वी रमना, यू यू ललित और डी वाई चंद्रचूड़ ने की। हालाँकि, न्यायमूर्ति यूयू ललित ने खुद को पीठ से अलग कर लिया।

25 जनवरी 2019

सुप्रीम कोर्ट ने मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई और जस्टिस एस ए बोबडे, डी वाई चंद्रचूड़, अशोक भूषण और एस ए नज़ीर की पांच-न्यायाधीशों की पीठ का पुनर्गठन किया।

29 जनवरी 2019

केंद्र सरकार ने विवादित स्थल के आसपास के 67 एकड़ क्षेत्र को मूल मालिकों को वापस करने की अनुमति मांगने के लिए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया।

26 फरवरी 2019

शीर्ष अदालत ने मध्यस्थता का समर्थन किया।

8 मार्च 2019

सुप्रीम कोर्ट ने विवाद को मध्यस्थता पैनल के पास भेज दिया, जिसकी अध्यक्षता सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज एफएम आई कलीफुल्ला ने की।

9 अप्रैल 2019

निर्मोही अखाड़ा ने सुप्रीम कोर्ट में अधिग्रहीत भूमि को मूल मालिकों को वापस करने की केंद्र की याचिका का विरोध किया।

मध्यस्थता पैनल ने शीर्ष अदालत को अंतरिम रिपोर्ट सौंपी।

10 मई 2019

शीर्ष अदालत ने मध्यस्थता पैनल को अपनी रिपोर्ट पूरी करने के लिए 15 अगस्त, 2019 तक का समय बढ़ाया।

11 जुलाई 2019

सुप्रीम कोर्ट ने मध्यस्थता पैनल से रिपोर्ट पर प्रगति मांगी।

अगस्त 2019

मध्यस्थता पैनल ने सीलबंद लिफाफे में अपनी रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट को सौंपी।

6 अगस्त 2019 से रोजाना सुनवाई होनी थी।

4 अक्टूबर 2019

सुप्रीम कोर्ट ने यूपी सरकार को राज्य वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष को सुरक्षा प्रदान करने का निर्देश दिया। इसने आगे कहा कि वह 17 नवंबर, 2019 तक विवादित भूमि पर फैसला सुनाएगा।

16 अक्टूबर 2019

सुप्रीम कोर्ट में अंतिम सुनवाई समाप्त। पीठ ने अंतिम फैसला सुरक्षित रख लिया।

9 नवंबर 2019

सुप्रीम कोर्ट ने विवादित मामले में एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया और अयोध्या में 2.77 एकड़ विवादित जमीन रामलला को दे दी, जिसका कब्जा केंद्र सरकार के रिसीवर के पास रहेगा। इसने केंद्र और यूपी सरकार को मस्जिद बनाने के लिए मुसलमानों को किसी प्रमुख स्थान पर 5 एकड़ जमीन आवंटित करने का भी निर्देश दिया।

12 दिसंबर 2019

शीर्ष अदालत ने विवादित जमीन पर दिए गए अपने फैसले की समीक्षा की सभी याचिकाएं खारिज कर दीं।

5 फरवरी 2020

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की स्थापना को मंजूरी दे दी। यह संस्था राम मंदिर स्थल पर निर्माण की निगरानी करेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में इसकी घोषणा की।

24 फरवरी 2020

उत्तर प्रदेश सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड ने अयोध्या की सोहावल तहसील के धन्नीपुर गांव में मस्जिद निर्माण के लिए राज्य सरकार द्वारा आवंटित पांच एकड़ जमीन स्वीकार कर ली।

5 अगस्त 2020

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में प्रस्तावित राम मंदिर की आधारशिला रखी।

22 जनवरी 2024

अयोध्या में तैयार हो चुके भव्य राम मंदिर में राम लला की मूर्तियों के साथ सभी देवी, देवताओं की मूर्तियों की भी प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी।

नव्य अयोध्या

प्रज्ञा मिश्रा

"श्रीराम के अयोध्या आगमन की खुशी में समस्त अयोध्या की स्त्रियाँ दही, दूब, गोरोचन, फल, फूल और मंगल के मूल नवीन तुलसीदल आदि वस्तुएँ सोने की थालों में भर-भरकर मंगल गीत गाते हुए अयोध्या भर में घूम रही है। श्रीराम को आते देखकर समस्त अयोध्या नगरी सौंदर्य की खान हो गई है। सरयू जल अति निर्मल हो गया है।"

शिथिल मनो दशा धारण किए हुए, क्लांत, हताश अयोध्या के रोम - रोम को पुलकित कर देने वाला सुखद संदेश श्री राम ने कह भेजा है -

' जासु बिरहँ सोचहु दिन राती। रटहु निरंतर गुन गन पाँती॥
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता। आयउ कुसल देव मुनि त्राता॥ '

यह सुखद समाचार प्राप्त होते ही अयोध्या में हर्ष उल्लास की तरंगिणी बह चली है। नगर ने विरहणी का चोला उतर कर राम आगमन के उल्लास का वरण कर लिया है।

श्रीराम के अयोध्या आगमन की खुशी में समस्त अयोध्या की स्त्रियाँ दही, दूब, गोरोचन, फल, फूल और मंगल के मूल नवीन तुलसीदल आदि वस्तुएँ सोने की थालों में भर-भरकर मंगल गीत गाते हुए अयोध्या भर में घूम रही है। श्रीराम को आते देखकर समस्त अयोध्या नगरी सौंदर्य की खान हो गई है। सरयू जल अति निर्मल हो गया है।

श्रीराम के आगमन के अवसर पर अनेक प्रकार के शुभ शकुन हो रहे हैं, आकाश में नगाड़े बज रहे हैं। अयोध्या के नगर के पुरुषों और स्त्रियों को सनाथ (दर्शन द्वारा कृतार्थ) करके भगवान राम महल को चले। इस पावन बेला पर अवधपुर की सारी गलियाँ सुगंधित द्रवों से सींची गई हैं। गजमुक्ताओं से रचकर बहुत-सी चौकें पुराई गईं। अनेक प्रकार के सुंदर-मंगल साज सजाए गए है और हर्षपूर्वक नगर में बहुत-से डंके बज रहे है। नगर के लोगों ने सोने के कलशों को विचित्र रीति से (मणि-रत्नादि से) अलंकृत कर और सजाकर अपने-अपने दरवाजों पर रख लिया है। सब लोगों ने मंगल के लिये बंदनवार, ध्वजा और पताकाएँ भी लगाई है। इसके साथ ही समस्त अयोध्या नगरी को दीपों से सजा दिया गया है। दीपों से सजी अयोध्या नगरी दीपोत्सव अर्थात दीपावली मना रही है।

जिससे जितना बन पड़ा, उससे भी अधिक उत्साह से स्वागत में लग गया। महिलाएं चौक पूरने बैठ गई हैं और नगर के हर रास्ते पर नगरवासी पुष्पों की सजावट से पथ सुगंधमय और सुंदर बनाने में जुट गए हैं। हिय प्रिय राम जब वनवास से लौटें तो उन्हें अपने नगर और

लेखिका संस्कृति पर्व की सह संपादक और राष्ट्रवादी चिन्तक हैं ।

नगरवासियों के प्रेम और उछाह की, बरसों की वेदना की कुछ तो थाह लगे।

महाकवि स्वयंभू ने अपने ग्रंथ ' पयुम चरियु' में लंका विजय के पश्चात राम के अयोध्या आगमन का अत्यंत मोहक वर्णन किया है। अयोध्या की शोभा, नगरवासियों के द्वारा अपने हिय प्रिय राम के स्वागत के आयोजनों का बड़ा ही सुशोभित चित्र स्वयंभू ने उकेरा है।

मंगल-धवलुच्छाह-पओएँहि॥
अइहव-सेसासीस-सहासेंहि।
तोरण-णिवह-छडा-विण्णासेंहि॥
दहि-दोवा-दप्पण-जल-कलसेंहिं।
मोत्तिय-रङ्गावलि-णव-कणिसेंहिं॥
वम्मण-वयणुग्घोसिय-वेएँहिं।
कंडिय-जजु-रिउ-सामा-भेएँहि॥
णढ-कह-कहय-छत्त-फंफावेंहिं।
लङ्घिय-वत्तारुहण-विहावेंहिं॥
भट्टेहिं वयणुच्छाह पढंतेंहिं।
वायालीस वि सर सुमरंतेंहिं॥
भल्लप्फोढण-सरैं हिं विचितेंहिं।
इंदयाल-उप्पाइय-चितेंहि॥
मंद-फेंद-वंदेंहिं कुद्दंतेंहिं।
डोंवेहिँ वंसारुहणु करंतेंहिँ॥
धत्ता
पुरें पइसंतहों राहवहों ण कला-विण्णाणइँ केवलइँ।
दुंदुहि ताडिय सुरेंहिंणहें अच्छरें हि मि गीयइँ मंगलइँ॥

अर्थात, मंगल धवल उत्साह आदि गानों के प्रयोग-द्वारा, जय-जयकार की ध्वनि-द्वारा, अतिशय आरती तथा आशीर्वचनों-द्वारा, तोरण समूह और दृश्यों के निर्माण-द्वारा, दही, दूर्वा, दर्पण, और जल कलशों-द्वारा, मोतियों की रंगोली और नए धान्यों द्वारा, ब्राह्मणों से उच्चरित वेदों-द्वारा, ऋक्, यजुः और सामवेदों के पाठ द्वारा, नट, कवि, कत्थक, छत्र और फंफावों द्वारा, रस्सीपर चढ़ने वाले नटों के प्रदर्शन-द्वारा, भाटों से उच्चारित उत्साह गीतों-द्वारा, बयालीस स्वरों की ध्वनियों-द्वारा, गाते हुए मंद और फेंदों के समूह-द्वारा, बाँसुरी बजाते हुए डोमों के द्वारा नगर प्रवेश करते हुए राम का स्वागत किया गया। राम के नगर में प्रवेश करते ही केवल कला और विज्ञान का ही प्रदर्शन नहीं हुआ, वरन् आकाश में देवताओं ने दुंदुभियाँ बजाईं और अप्सराओं ने मंगल गीतों का गान किया।

वह त्रेता युग था। तब और अब में बहुत कुछ बदल गया। मगर, राम के लिए भक्तों के भाव और उत्साह में कमी नहीं आई। आज जब सदियों के वनवास के उपरांत ' हिय प्रिय राम लला ' अपने स्थान पर पुनर्स्थापित होने जा रहे हैं तो स्वागत में कोई कमी बाकी न रह जाए, इसका खूब ध्यान रखा जा रहा है। आज की तिथि में जब सैकड़ों वर्षों के वनवास के बाद हमारे राम अपने स्थान पर पुनर्स्थापित होने जा रहे हैं तो ' हिय प्रिय ' राम के स्वागत में कोई कमी न रह जाए,इसके लिए उनके सेवक रात दिन एक किए हुए हैं। वर्षों तक सत्तापक्ष की उपेक्षा का शिकार रही राम नगरी धूल धूसरित पड़ी रही। मगर, 2017 से समय चक्र ने करवट ली। उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी जी ने अयोध्या के कायाकल्प के लिए खाका खींचना आरंभ कर दिया।

माननीय सुप्रीम कोर्ट के निर्णय ने सरकार के संकल्पों को मानों नए पंख दे दिए।

त्रेता युग में राम के स्वागत के लिए सजी अयोध्या की हम सिर्फ कल्पना मात्र ही कर सकते हैं, किंतु आज राम के स्वागत में अयोध्या का साज संवार तो हम अपनी आंखों से देख धन्य हो रहे हैं।

राम की नगरी अयोध्या 500 साल से परिवर्तन को तरस रही थी। पीढ़ियों का संघर्ष अब मंदिर निर्माण के रूप में फलित हो रहा है। मात्र चार वर्ष में ही अयोध्या विकास के उस पथ पर अग्रसर है, जिसकी कल्पना मुदित करती है। संकरी गलियों के जाल से मुक्त रामलला के दरबार का विस्तार हो चुका है। कभी जेल नुमा रास्तों से रामलला के दरबार में पहुंचना पड़ता था। वर्तमान में 90 फीट चौड़ा आधुनिक सुविधाओं से युक्त पथ आस्था की राह सुगम कर रहा है। रामनगरी हर उस सुविधा से सुसज्जित हो रही है जो उसकी गरिमा के अनुकूल है। संत तो यहां तक कहते हैं कि अयोध्या का सुंदरीकरण या तो महाराज विक्रमादित्य ने कराया था, या फिर अब हो रहा है।

आइए, एक नजर दौड़ाते हैं नव्य और भव्य अयोध्या पर। देखिए, क्या कुछ बदल गया, क्या बदलने वाला है।

'अवधपुरी प्रभु आवत जानी, भई सकल सोभा कै खानि..'

रामचरित मानस की यह पंक्ति यहां साकार रूप ले रही है। लंका विजय के बाद भगवान श्रीराम जब अयोध्या लौट रहे थे, तब उनके आगमन की खुशी में रामनगरी इस तरह सजाई गई कि शोभा की खान हो गई थी। 22 जनवरी को रामलला की नए मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा है। अयोध्या में इसका उल्लास भगवान राम के आगमन जैसा ही है। सरकार के प्रयासों से रामनगरी को इस तरह सजाया और संवारा जा रहा है, जो निकट भविष्य में पूरी दुनिया को आकर्षित करेगी। रामजन्मभूमि परिसर कभी 70 एकड़ का था। राममंदिर के हक में फैसला आने के बाद मंदिर निर्माण शुरू हुआ तो धीरे-धीरे परिसर का विस्तार होता गया। आज रामजन्मभूमि परिसर करीब 100 एकड़ में विस्तारित हो चुका है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी जब अयोध्या के चतुर्दिक विकास के लिए परिकल्पनाओं, संभावनाओं पर विचार विमर्श कर रहे थे तब उन्होंने विकास परियोजनाओं को आठ परिकल्पनाओं के अंतर्गत विभाजित करने का निर्णय किया। यह

आठ परिकल्पनाएं निम्न हैं -

भगवान विष्णु के चक्र पर स्थित साकेतपुरी को सांस्कृतिक अयोध्या, सक्षम अयोध्या, आधुनिक अयोध्या, सुगम्य अयोध्या, सुरम्य अयोध्या, भावात्मक अयोध्या, स्वच्छ अयोध्या और आयुष्मान अयोध्या के रूप में धरातल पर उतारने का स्वप्न तीव्र गति से आकार ले रहा है।

सांस्कृतिक अयोध्या

इस परिकल्पना के अंतर्गत अवधपुरी का विकास भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में विकसित किया जाना है। मठ, मंदिरों और आश्रमों को भव्य रूप प्रदान करना हो या वैभवशाली नगर द्वारों का निर्माण, इसके अलावा मंदिर संग्रहालय जैसे तमाम कार्य इसी परिकल्पना के आधार पर किए जा रहे हैं।

सक्षम अयोध्या

इस परिकल्पना के अंतर्गत अयोध्या को पूरी तरह से आत्मनिर्भर नगरी के रूप में डेवलप किया जा रहा है। जहां रोजी-रोजगार, पर्यटन, धर्म और सांस्कृतिक गतिविधियों के जरिए बड़े पैमाने पर रोजगार का सृजन होगा।

आधुनिक अयोध्या

आजादी के 70 साल बाद तक अपनी दुर्दशा पर आंसू बहाने वाली इस पवित्र नगरी को आज हर प्रकार की आधुनिक सुविधाओं वाला नगर बनाया जा रहा है। स्मार्ट सिटी, सेफ सिटी, सोलर सिटी, ग्रीन फील्ड टाउनशिप जैसे तमाम योजनाएं इसी विचार के परिणाम स्वरूप आकार ले रही हैं।

सुगम्य अयोध्या

चाहे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट का निर्माण हो, अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का कायाकल्प हो या फिर सरयू को इनलैंड वाटरवे से जोड़ने का कार्य, योगी सरकार अयोध्या तक पहुंच को हर प्रकार से सुगम्य बना रही है। इसके अलावा विभिन्न पथों के जरिए भी इस पुण्यदायिनी नगरी तक आस्थावान आसानी से पहुंच सकेंगे।

सुरम्य अयोध्या

अयोध्या के विभिन्न कुंडों, तालाबों और प्राचीन सरोवरों के सौंदर्यीकरण की बात हो या पुराने उद्यानों का कायाकल्प और नए उद्यानों का निर्माण कार्य या फिर हेरिटेज लाइटों के जरिए शहर को तारों के जंजाल से मुक्ति दिलाकर सुंदर स्वरूप प्रदान करना हो। सड़कों को फसाड लाइटिंग से जगमग करना और इन जैसी तमाम योजनाओं के जरिए अवधपुरी को मनमोहक नगरी के रूप में विकसित किया जा रहा है।

भावात्मक अयोध्या

प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि और लीला स्थली से पूरी दुनिया के सनातनियों का भावनात्मक जुड़ाव है। ऐसे में अवधपुरी के कण कण से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम से जुड़ने का भाव परिलक्षित होना चाहिए। इसे देखते हुए शहर की दीवारों, सड़क के कनारे, चौराहों को सांस्कृतिक रूप से सुसज्जित किया जा रहा है।

स्वच्छ अयोध्या

स्मार्ट सिटी के रूप में स्वच्छ अयोध्या योगी सरकार की सबसे बड़ी प्राथमिकता है। नगर में साफ-सफाई से लेकर ड्रेनेज और सीवर सिस्टम पर अभूतपूर्व कार्य हो रहे हैं। पर्यटन और धार्मिक आस्था के केंद्र के रूप में विकसित हो रही अयोध्या को देश की सबसे स्वच्छ नगरी बनाने का संकल्प भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पहले ही ले लिया है।

आयुष्मान अयोध्या

रोगियों को गुणवत्तापूर्ण और सुविधा आधारित चिकित्सीय सुविधा प्रदान करने के लिए अयोध्या के हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर को पहले से काफी मजबूत किया गया है। यही नहीं राजर्षि दशरथ मेडिकल कॉलेज एम्स द्वारा देश के पांच मेडिकल कॉलेजों में से एक है, जहां आपातकालीन चिकित्सीय सुविधा पर बड़े स्तर पर शोध कार्य भी हो रहा है। राम राज्य की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में योगी सरकार का लक्ष्य अयोध्या को आयुष्मान नगरी के रूप में विकसित करना है।

अब कुछ प्रमुख विकासात्मक कार्यों पर थोड़ा विस्तारपूर्वक दृष्टि डालते हैं जो अयोध्या को नव्य अयोध्या बनाने की दिशा में कार्यान्वित किए गए हैं और किए जाने के लिए योजनाबद्ध हैं।

राम की पैड़ी

गंदे नाले में तब्दील हो चुकी राम की पैड़ी को करीब 50 करोड़ रुपये की लागत से सजाया गया है। यह अब आस्था के साथ पर्यटन का केंद्र बन चुकी है। यहां के पंपिंग स्टेशनों की क्षमता बढ़ाई गई है। हर शाम लेजर शो व लाइट एंड साउंड सिस्टम शो के जरिये रामकथा की प्रस्तुति आकर्षण का केंद्र होती है।

रामनगरी की समृद्ध स्थापत्यकला व प्राचीनता के गवाह मठ-मंदिरों की भी आभा लौट रही है। करीब 65 करोड़ की लागत से रामनगरी के 37 प्राचीन मंदिरों का सुंदरीकरण कराया जा रहा है। अगले कुछ ही महीनों में ये मंदिर भक्तों को आकर्षित करते नजर आएंगे।

सोलर सिटी : अयोध्या

रघुवंशी राम की नगरी सूर्य के प्रकाश से दिन - रात देदीप्यमान हो, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का यह स्वप्न साकार होता दिखाई दे रहा है। रामनगरी सौर ऊर्जा से दूधिया रोशनी से रोशन हो रही है। सीएम ने इस प्राचीन नगरी को सोलर सिटी के रूप में विकसित करने की घोषणा की थी। बिजली पर निर्भरता खत्म करने के लिए उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपीनेडा) पूरी तरह से जुटा है। एक के बाद एक नए प्रयोग किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में पार्कों में लगाए जा रहे सोलर ट्री प्लांट भी अब दूधिया रोशनी बिखेरने के लिए तैयार हो चुके हैं।

अयोध्या की गलियों, प्रमुख चौराहों, मार्गों, घाटों के बाद अब पार्कों में सोलर ट्री लगाए जा रहे हैं। फिलहाल 34 पार्कों में एक किलोवाट, आठ पार्कों में ढाई किलोवाट के सोलर ट्री लगाए जा चुके हैं। इसके अलावा एक किलोवाट के छह व ढाई किलोवाट से जुड़े 10 स्थानों पर तेजी से काम चल रहा है। अयोध्या के पार्कों को सौर ऊर्जा से प्रकाशित करने के लिए काम जारी है।

मल्टी लेवल पार्किंग

अपने प्रिय राम लला के दर्शन को आने वाले दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए मल्टी लेवल पार्किंग की व्यवस्था भी अयोध्या में शुरू हो गई है। कलेक्ट्रेट के पास राज्य स्मार्ट सिटी योजनान्तर्गत 3708.49 लाख रुपये से इसका निर्माण कराया गया है। अयोध्या के वर्तमान डीएम नीतीश कुमार ने नवनिर्मित मल्टी लेवल वाहन पार्किंग का शुभारम्भ करते हुए कहा कि कलेक्ट्रेट के पास नवनिर्मित लक्ष्मण कुंज स्मार्ट व्हीकल मल्टी स्टोरी पार्किंग में 282 चार पहिया तथा 309 दो पहिया वाहन खड़े हो सकेंगे।

इस मल्टीलेवल पार्किंग के साथ ही बिल्डिंग के सामने 1500 से अधिक दो पहिया वाहनों के पार्किंग की सुविधा उपलब्ध होगी। इसमें 15 दुकानें, एक कैंटीन, चार लिफ्ट सहित सभी तलों पर शौचालयों की भी व्यवस्था उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त, अयोध्या में कौशलेश कुंज पर एक, टेढ़ीबाजार में दो मल्टीलेवल पार्किंग का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। यहां भक्त अपने चारपहिया व दो पहिया वाहन पार्क कर सकेंगे।

राममंदिर की परिसर की विशेषताएं

* कुल निर्मित क्षेत्र- 57,400 वर्ग फीट
* मंदिर की लंबाई- 360 फीट, चौ.- 235 फीट- ऊं.- 161 फीट
* कुल तल-तीन, प्रत्येक की ऊंचाई-20 फीट
* मंदिर में शिखर एवं मंडप- पांच
* श्रीराम गर्भगृह में बाल रूप में होंगे विराजमान
* लौह रहित राममंदिर निर्माण, प्राकृतिक प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल
* अपशिष्ट पदार्थों का समुचित प्रबंध

* हाईटेक प्रकाश व्यवस्था, भूमिगत जल प्रबंधन
* त्रिस्तरीय वृक्षारोपण, पुष्पवाटिका व नक्षत्रवाटिका
* बहुद्देशीय पार्किंग सुविधा
* सुरक्षित अमानती घर
* सौर ऊर्जा पटल, ऊर्जा उत्पादन केंद्र
* आपातकालीन चिकित्सा सहायता केंद्र
* बैंक, एटीएम, आवश्यक जनसुविधाएं
* आदर्श गोशाला, यज्ञशाला, तीर्थयात्री केंद्र
* रामलीला केंद्र, 360 डिग्री थियेटर व प्रोजेक्शन थियेटर

लता मंगेशकर चौक

फैजाबाद की ओर जाने वाली सड़क पर स्थित चौक सरयू घाट और राम पथ को जोड़ता है। यह रास्ता श्रीराम जन्मभूमि मंदिर की तरफ जाता है। इसलिए यहीं पर ज्यादातर पर्यटक मंदिर की अपनी यात्रा यहीं से शुरू करते हैं। यह चौराहा अब लता मंगेश्कर चौक के नाम से प्रसिद्ध है। नयाघाट चौराहा पहले मात्र 30 फीट चौड़ा हुआ करता था। मेलों के दौरान यहां भीड़ नियंत्रण में पसीना छूट जाता था। वर्तमान में यह चौराहा 100 फीट चौड़ा हो चुका है। लता मंगेश्कर की स्मृति में चौक पर स्थापित 40 फीट लंबी वीणा भक्तों को आकर्षित करती है। यहां हमेशा लता मंगेशकर के भजन गूंजते रहते हैं।

लता मंगेशकर चौक का मुख्य आकर्षण एक विशालकाय वीणा

है, जिसे पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित शिल्पकार राम सुतार ने बनाया है। इस वीणा पर माता लक्ष्मी और सरस्वती के साथ दो मोर भी बने हुए हैं। एक महीने में 70 कलाकारों द्वारा तैयार की गई इस वीणा की ऊंचाई या लंबाई करीब 12 मीटर यानी 40 फीट है।

रामकथा संग्रहालयः

नयाघाट स्थित रामकथा संग्रहालय वर्षों से निष्प्रयोज्य पड़ा था। अब इसे श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को समर्पित कर दिया गया है। ट्रस्ट इसका नए सिरे से सुंदरीकरण कराने जा रहा है। यहां मंदिर आंदोलन का इतिहास दर्शाया जाएगा। अन्य सांस्कृतिक व धार्मिक गतिविधियां संचालित होंगी। अयोध्या में बनाए गए अंतरराष्ट्रीय श्रीराम कथा संग्रहालय व आर्ट गैलरी में मंदिर से जुड़े दस्तावेजों से लेकर खोदाई में मिली विभिन्न प्रकार की करीब 350 वस्तुओं को संरक्षित किया जाएगा। संग्रहालय को इस प्रकार से व्यवस्थित किया जा रहा है जिससे वहां आने वाले लोगों को पुरातन संस्कृति के गौरव के बारे में जानकारी मिल सके।

नई दिल्ली के तीन मूर्ति भवन के संग्रहालय में बन रही गैलरी की तर्ज पर अत्याधुनिक तकनीकी का इस्तेमाल करके श्रीराम कथा संग्रहालय को विकसित किया जाएगा। यहां पर दस्तावेजों को डिजिटल रूप में प्रदर्शित किया जाएगा।

रामायण एवं वैदिक शोध संस्थानः

अयोध्या शोध संस्थान का नाम भी सरकार ने बदल दिया है। अब अंतरराष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान के नाम से इसे जाना जाएगा। 17 करोड़ की लागत से इसकी रिमॉडलिंग का काम चल रहा है। यहां भगवान राम से जुड़े साहित्य पर अध्ययन होंगे। रामलीला से जुड़े लोगों को रोजगार दिया जाएगा। संस्थान में विश्व के विभिन्न भाषाओं में रचित रामायण पर आधारित ग्रंथों, पुरातन परंपरा के वैदिक मंत्रों व इन पर लिखे गए विभिन्न टीकाओं पर अनुसंधान होगा। देश व विदेश के शोध छात्रों को जोड़ा जाएगा।

अंतरराष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान केंद्र में भगवान राम से जुड़े हुए साहित्य पर अध्ययन और शोध होगा। भगवान राम से जुड़े हुए तमाम साहित्य यहां लोगों को उपलब्ध होंगे और जो भी इस पर अध्ययन या शोध करना चाहेगा वह यहां आकर आसानी से कर सकता है।

प्राचीन कुंडों की लौट रही गरिमा

अयोध्या (Ayodhya) में एक तरफ भव्य राम मंदिर का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है तो वहीं दूसरी तरफ अयोध्या को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए जिला प्रशासन अयोध्या विकास प्राधिकरण और पर्यटन विभाग संयुक्त अभियान चला रहा है। इसी कड़ी में अयोध्या की पहचान कहे जाने वाले उन कुंडों का भी सुंदरीकरण

किया जा रहा है जो अतीत हो चुके थे। रामनगरी की पौराणिकता के गवाह प्राचीन कुंडों का सुंदरीकरण कराया जा रहा है। इनमें से गणेश कुंड, हनुमानकुंड, स्वर्णखनि कुंड का अस्तित्व मिटने के कगार पर था। अब ये कुंड पर्यटन का केंद्र बन चुके हैं। भगवान राम के कुल देवता भगवान भास्कर का पौराणिक सूर्य मंदिर और कुंड इन दिनों पर्यटक के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। योगी सरकार द्वारा सूर्य कुंड का जीर्णोद्धार पूर्ण हो चुका है।

रामचरितमानस के अनुसार, सूर्य कुंड वह जगह है जब भगवान राम अयोध्या में जन्मे थे, तो भगवान सूर्य इसी जगह पर आए थे। इसी जगह से भगवान सूर्य ने भगवान राम की बाल लीलाओं के दर्शन किए थे। सूर्यदेव का रथ यहां करीब एक महीने रहा था जिसकी वजह से अयोध्या में त्रेतायुग में उस वक्त एक महीने रात नहीं हुई थी, इसका वर्णन रामचरितमानस की चौपाइयों में है। इतना ही नहीं धार्मिक मान्यता यह भी है कि अगर किसी को कुष्ठ रोग है और वह इस कुंड में स्नान करता है, तो उसके सारे रोग समाप्त हो जाते हैं।

वर्तमान में, सूर्यकुंड पर हर शाम लेजर शो देखने के लिए भीड़ उमड़ती है। इसी तरह दंतधावन कुंड, अग्निकुंड, खर्जुकुंड, विद्याकुंड की भी गरिमा लौट रही है। ये पर्यटन का केंद्र बन चुके हैं। राम मंदिर तक जाने वाले मार्गों को मुख्यतः तीन रूपों में विकसित किया जा रहा है -

श्रीरामजन्मभूमि पथ

अयोध्या को हर दृष्टिकोण से सजाया और संवारा जा रहा है। राम मंदिर तक जाने वाले हर मार्ग का सौंदर्यीकरण और चौड़ीकरण हो रहा है। इसी कड़ी में राम पथ भी शामिल है। सहादतगंज से नयाघाट तक 13 किलोमीटर के मार्ग को रामपथ के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह मार्ग कभी 40 फीट चौड़ा हुआ करता था। अब 80 फीट हो गया है। इस मार्ग पर सोलर लाइट व सूर्य स्तंभ लगाए जा रहे हैं। मार्ग के डिवाइडर पर हरियाली विकसित की जा रही है। इलेक्ट्रिक बसों के लिए बस स्टॉप और पांच स्थानों पर ई-चार्जिंग

स्टेशन बनाए जा रहे हैं।पथ के दोनों किनारों पर रामकथा के प्रसंगों से सजी दीवारें आकर्षित करेंगी।

कोशिश है कि 22 जनवरी को रामलीला की प्राण प्रतिष्ठा के पहले ये मार्ग बनकर तैयार हो जाए, जिससे कि अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं को राम की नगरी राम के रंग में सराबोर नजर आए। इसे इसलिए भी विकसित किया जा रहा है क्योंकि 22 जनवरी के बाद हर रोज लाखों की तादाद में श्रद्धालु अयोध्या आएंगे।

भक्ति पथ

हनुमानगढ़ी से कनक भवन और राम जन्म भूमि को जोड़ने वाला मार्ग भक्ति पथ है। मान्यता है कि लंका पर विजय प्राप्त कर जब भगवान राम अयोध्या आए थे तो हनुमान जी को रहने के लिए उन्होंने एक स्थान दिया था। इसे हनुमानगढ़ी कहा जाता है। इसके साथ ही ये अधिकार भी दिया था कि मेरे दर्शन के लिए आने वाले हर भक्त को पहले तुम्हारे दर्शन करने होंगे। अयोध्या में अलग-अलग मार्गों

के विकास के साथ इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि भक्त को उसके प्रिय से जोड़ने वाले रास्ते का भी विकास किया जाए , इसीलिए इस मार्ग का नाम भक्तिपथ रखा गया है।

धर्मपथ

लखनऊ- गोरखपुर हाईवे से अयोध्या में प्रवेश करते ही रामजन्मभूमि का अहसास होने लगता है। साकेत पेट्रोल पंप से लता मंगेश्कर चौक तक करीब दो किलोमीटर के रास्ते को धर्मपथ के रूप में विकसित किया जा रहा है। पहले यह मार्ग टूलेन था। अब फोरलेन हो चुका है। यहां 30 स्थानों पर सूर्य स्तंभ लगाए जा रहे हैं। धर्मपथ के दोनों ओर आठ-आठ मीटर पर दीवारों पर लिखे रामकथा के प्रसंग अयोध्या की महत्ता दर्शाएंगे।

महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा

इस एयरपोर्ट को पूरी तरह से भगवान राम से जोड़ा गया है, जिसकी दीवारों पर भी आपको श्री राम से जुड़ी सजावट देखने को मिलेगी।

इस एयरपोर्ट को 20 महीने के रिकॉर्ड समय में तैयार किया गया है। एयरपोर्ट अथॉरिटी ने अप्रैल 2022 में उत्तर प्रदेश की योगी सरकार के साथ करार किया था। योगी सरकार ने एयरपोर्ट के विकास के लिए 821 एकड़ जमीन मुहैया कराई थी।

अयोध्या के लिए हवाई कनेक्टिविटी महत्वपूर्ण है। क्योंकि देश-विदेश से तमाम श्रद्धालु अयोध्या आएंगे। अयोध्या के लोग भी खुश हैं। हवाई अड्डे के विकास से श्री राम मंदिर के साथ-साथ आसपास के प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों जैसे राम की पैड़ी, हनुमान गढ़ी, नागेश्वर नाथ मंदिर, बिड़ला मंदिर आदि जाने वाले तीर्थयात्रियों को इस हवाई कनेक्टिविटी का लाभ मिलेगा। अयोध्या हवाई अड्डे के विकास से पूरे वर्ष व्यवसायों और तीर्थ पर्यटन को भी सुविधा मिलेगी और क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में सुधार होगा।

एयर पोर्ट की कुछ प्रमुख विशेषताएं :

हवाईअड्डे का रनवे 2200 मीटर लंबा है। यह ए-321 प्रकार के विमानों के संचालन के लिए उपयुक्त है। ग्राउंड सपोर्ट इक्विपमेंट (जीएसई) क्षेत्र के साथ दो लिंक टैक्सीवे और आठ ए321 प्रकार के विमानों की पार्किंग के लिए उपयुक्त एक एप्रन का भी निर्माण किया गया है। फेज 2 में 50000 वर्गमीटर के एक नए टर्मिनल भवन के विकास की योजना है, जो पीक आवर्स के दौरान 4000 यात्रियों और सालाना 60 लाख यात्रियों को सेवा प्रदान करने में सक्षम होगा।

हवाई अड्डे को 350 करोड़ रुपए में बनाया गया है। जिसमें टर्मिनल बिल्डिंग, एटीसी टॉवर, फायर स्टेशन, कार पार्किंग जैसी सुविधाएं हैं। टर्मिनल भवन 6500 वर्गमीटर क्षेत्रफल में बना है। पूरे भवन की संरचना भगवान राम के मंदिर पर आधारित है।

एयरपोर्ट को अयोध्या के इतिहास और महत्व को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। टर्मिनल भवन की संरचना अयोध्या के आगामी श्री राम मंदिर की वास्तुकला से प्रेरित है। इमारत के अंदरूनी हिस्सों को भगवान श्री राम के जीवन को दर्शाने वाली स्थानीय कलाकृतियों, चित्रों और भित्ति चित्रों से सजाया गया है। टर्मिनल भवन

को कई शिखरों से सजाया गया है जो संरचना को भव्यता प्रदान करते हैं और आध्यात्मिकता का माहौल बनाते हैं।

अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन

रेलवे स्टेशन के फ्रंट गेट और गुंबद का पूरा निर्माण राजस्थान के उन्हीं पत्थरों से किया गया है, जिनका उपयोग रामलला के मंदिर में किया जा रहा है। इनकी खासियत ये है कि बारिश होने पर चमक और बढ़ जाती है। स्टेशन के फ्रंट और प्लैटफॉर्म दोनों तरफ मंदिर जैसे आठ पिरामिड बनाए जा रहे हैं। स्टेशन के फ्रंट गेट से एंट्री करने पर लोगों को एकदम अयोध्या मंदिर में घुसने जैसी सुखद अनुभूति होगी। यह धार्मिक और आधुनिकता का संगम होगा। जहां एक तरफ राम मंदिर की झलक मिलेगी और वहीं दूसरी तरफ आधुनिक सुविधाएं भी होंगीं। पुनर्विकसित अयोध्या रेलवे स्टेशन का पहला चरण 240 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विकसित किया गया है। अब, अयोध्या धाम जंक्शन रेलवे स्टेशन के रूप में जाना जाने वाला 3 मंजिला आधुनिक रेलवे स्टेशन लिफ्ट, एस्केलेटर, फूड प्लाजा, पूजा की जरूरतों के लिए दुकानें, क्लॉक रूम, वेटिंग हॉल जैसी सुविधाओं से लैस है।

यहां शिशु देखभाल केंद्र, बीमार लोगों के लिए अलग केबिन, पर्यटन सूचना केंद्र के साथ-साथ देश के सबसे बड़े कॉनकोर्स सेटअप को भी बनाया जा रहा है। यहां इंफेंट केयर रूम होगा जहां पैसेंजर अपने दूध पीते बच्चों को किसी भी तरह का मेडिकल चेकअप करा सकते हैं। इसी तरह, इसी तरह अगर आपको किसी भी तरह से यात्रा के दौरान चोट लग जाती है या फिर किसी भी तरह की परेशानी का सामना करना पड़ जाता है, तो यहां सिक रूम में फर्स्ट एड और मेडिकल अटेंशन की सुविधा भी दी हुई है।

अयोध्या धाम स्टेशन के मिडिल फ्लोर पर रियाटरिंग रूम, लेडीज डॉरमेंटरी, एसी रिटायरिंग रूम्स, जेंट्स डॉर्मेंटरी, स्टेयरकेस, रिलीविंग स्टाफ के लिए लॉजिंग रूम, स्टेशन मास्टर और महिला स्टाफ का रूम बनाया गया है। इसके अलावा, फर्स्ट फ्लोर पर फूड प्लाजा, वेटिंग हाल, टॉयलेट, पेयजल, एस्केलेटर्स, लिफ्ट, स्टाफ रूम, दुकानें, वेटिंग रूम समेत एंट्री पुल की सुविधा भी दी गई है। साथ ही, दिव्यांगों के लिए कई खास तरह के शौचालयों को भी तैयार किया गया है।

प्रधानमंत्री देश में सुपरफास्ट यात्री ट्रेनों की नई श्रेणी 'अमृत भारत एक्सप्रेस' को इसी स्टेशन से 31 दिसंबर 2023 को हरी झंडी दिखा चुके हैं। 'अमृत भारत ट्रेन' एक LHB पुश पुल ट्रेन है जिसमें गैर वातानुकूलित कोच हैं। यह रेल यात्रियों के लिए सुंदर और आकर्षक डिजाइन वाली सीटें, बेहतर सामान रैक, उपयुक्त मोबाइल धारक के साथ मोबाइल चार्जिंग पॉइंट, एलईडी लाइट, सीसीटीवी, सार्वजनिक सूचना प्रणाली जैसी बेहतर सुविधाएं प्रदान करता है।

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दृष्टिगत योगी सरकार अयोध्या को वैश्विक नगरी के रूप में तेजी से विकसित करने को लेकर जोर दे रही है। अयोध्या को भव्य दिव्य और नव्य स्वरूप प्रदान करने के लिए अवधपुरी में संचालित हो रहीं 30.5 हजार करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं में से ज्यादातर वर्ष 2024 में ही पूरी हो जाएगीं।

विकास परियोजनाओं के जरिये अयोध्या को समयबद्ध तरीके से नया स्वरूप देने के लिए सरकार ने कैलेंडर तैयार किया है। सूर्यवंशी राजा राम की नगरी को सौर ऊर्जा से प्रकाशमान करने के लिए योगी सरकार मार्च तक अयोध्या को सोलर सिटी के तौर पर विकसित कर देगी।

अयोध्या में मुख्यमंत्री योगी द्वारा संकल्पित आठ परिकल्पनाओं के आधार पर निरंतर कार्य हो रहे हैं। एक के बाद एक लगभग 30.5 हजार करोड़ रुपये की 178 परियोजनाओं के जरिये अयोध्या को विश्वस्तरीय नगरी के रूप में विकसित करने का संकल्प इस वर्ष के अंत तक सिद्धि तक पहुंचने जा रहा है।

इसके अतिरिक्त, अयोध्या विकास प्राधिकरण (एडीए) ने अयोध्या के लिए सस्टेनेबल इंडेक्स प्लेटफॉर्म पर आधारित पहला वैदिक शहर बनाने के लिए अरहास टेक्नोलॉजी लिमिटेड के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) को औपचारिक रूप दिया है। इस पहल का उद्देश्य राज्य सरकार को अपने संसाधनों और आवश्यकताओं का आकलन करने में सक्षम बनाना है, जिससे राम मंदिर के उद्घाटन के बाद लोगों की अनुमानित आमद को समायोजित करने के लिए उन्नयन की सुविधा मिल सके। इस प्रोजेक्ट के पूर्ण होने के बाद अयोध्या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से सतत विकास करने वाला पहला मंदिर शहर होगा।

कुल मिला कर अयोध्या अपने आराध्य के स्वागत के लिए नव सज - धज में तैयार हो चुकी है। राम लला को उनके स्थान पर गरिमामय रूप से पुनर्स्थापित करने के लिए सरकारी तंत्र रात दिन एक किए हुए है। निमंत्रण पत्र बांटें जा रहे हैं। एक बार फिर से पूरा देश दीपावली मनाने के लिए आतुर हो उठा है। प्रतीक्षा के पल लंबे होते हैं, किंतु जब प्रतीक्षा में सदियां बिता लीं तो कुछ दिन और सही।

' हिय प्रिय' हमारे ' राम लला ' के आने में कुछ ही दिन शेष हैं। यह भी बीत जायेंगे अवध की साज संवार करते हुए। वह दिन अब दूर नहीं जब अनेकों अनेक पुलकित मन और दिव्य सुंदरता से आलोकित नगरी अपने आराध्य की झलक पाकर और निखर उठेगी।।

जय श्री राम।।

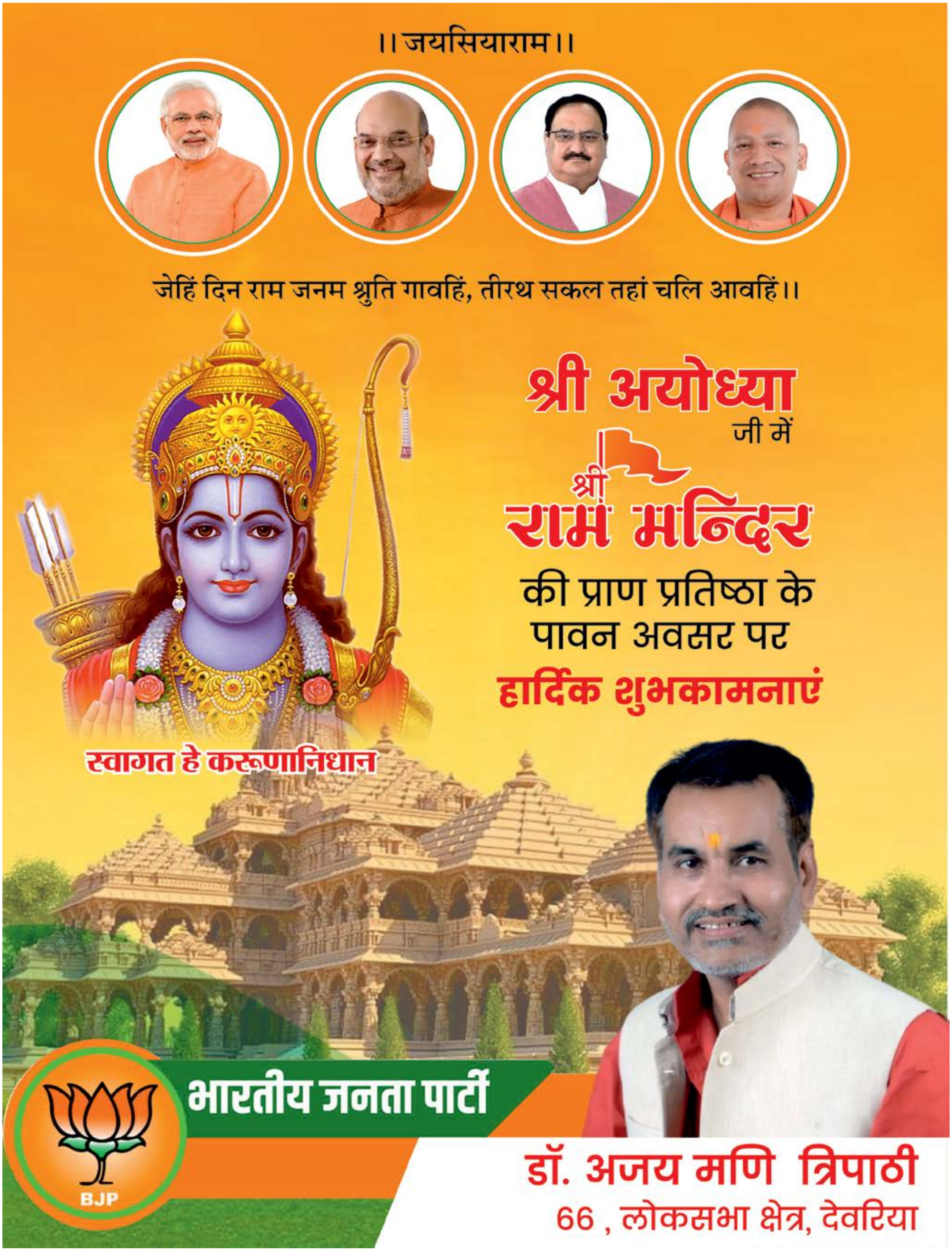

।। जयसियाराम ।।
जेहिं दिन राम जनम श्रुति गावहिं, तीरथ सकल तहां चलि आवहिं।।
श्री अयोध्या
जी में
श्री
राम मन्दिर
की प्राण प्रतिष्ठा के
पावन अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं
स्वागत हे करूणानिधान
भारतीय जनता पार्टी
BJP
डॉ. अजय मणि त्रिपाठी
66 , लोकसभा क्षेत्र, देवरिया

ढांचा गिरा, सांचा उभरा

भास्कर दूबे

कारसेवाकी जिम्मेदारी बजरंग दल को सौंपी गयी

जन्मभूमि खोलनेके लिये सिर्फ १२ घंटेकी चेतावनी

हे राम!

नृशंस हत्याके विरोधमें हम शस्त्र उठानेको मजबूर : वामदेव

(भास्कर दुबे)

फैजाबाद, ३ नवम्बर। विश्व हिन्दू परिषदने रामजन्मभूमि निर्माणके लिये कारसेवा की जिम्मेदारी बजरंगदल को सौंपनेकी आज घोषणा की। परिषद के उच्च पदाधिकारी वामदेव महाराजने आज सायंकाल अयोध्यामें संवाददाता संमेलनमें उक्त जानकारी देते हुये कहा कि सरकारने जिस नृशंसतासे कल कारसेवकोंकी हत्या करायी उसे देखते हुये हम भी शस्त्र उठानेके लिये मजबूर हो रहे हैं। यह संवाददाता सम्मेलन पहले विश्व हिन्दू परिषदके महामंत्री अशोक सिंघल संबोधित करनेवाले थे। उनकी जगह वामदेव महाराजने संबोधित किया। बादमें वहां उपस्थित बजरंगदल के नेता विनय कटियारने बताया कि हमने प्रशासनसे तत्काल कर्फ्यू हटाने जनजीवन सामान्य बनाये जाने और जन्मभूमि मंदिर दर्शनार्थ खोले जानेकी मांग की है। इसके लिये १२ घंटे का समय दिया है।

एक दिन का काला अध्याय

अधिकारियोंको आज भी कारसेवाकी आशंका

मजिस्ट्रेटों ने अयोध्यामें ड्यूटी करने से इन्कार किया

“

अयोध्या की पहचान कोई नई नहीं है, श्रुतियों और स्मृतियों में अयोध्या का अपना एक स्थान रहा है। वेद, पुराण, आगम, निगम में अयोध्या के भव्य और दिव्य स्वरूप की कल्पना की गई है। इन कल्पनाओं के परे 500 वर्ष पूर्व देश में आये आक्रांताओं ने अपनी तरह से भगवान के पावन जन्मस्थल को धूल धूसरित किया और वहां मस्जिद का निर्माण कराया।

”

फरवरी 1986 से 6 दिसम्बर 1992 तक श्रीराम मन्दिर आंदोलन का समय ऐसा रहा है जिसे कवर करने वाले अनेक वरिष्ठ पत्रकार अभी अपने संस्मरणों के साथ सक्रिय हैं। बहुत कम लोग यह जानते हैं कि 1990 की कारसेवा के दौरान हुयी हिंसा के बाद अयोध्या में तैनात अधिकारियों को अपने घरों की महिलाओं के आक्रोश का गंभीर सामना करना पड़ा था। प्रस्तुत है ऐसा ही एक संस्मरण....

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं और अयोध्या आन्दोलन की घटनाओं के साक्षी रहे हैं।

जेलों से कार सेवक भागकर फिर अयोध्या पहुंच रहे हैं

01 फरवरी, 1986 को तत्कालीन जिला जज कृष्ण मोहन पाण्डेय के आदेश पर ताला खुला, क्योंकि काफी ढूंढने के बाद भी यह प्रमाण कहीं नहीं मिला कि ताला कब और किसके निर्देश पर लगाया गया था। इसके बाद 1989 में विश्व हिन्दू परिषद ने विवादित ढांचे के बाहर बाकायदा भूमि पूजन का शिलान्यास किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री ने चुनावी लाभ के लिए वर्ष 1989 में ही राम मंदिर का मुद्दा प्रमुखता से रखा, इसने हिन्दू जनमानस के घाव को फिर से ताजा कर दिया और देश व दुनिया का सनातन सम्प्रदाय राम मंदिर पाने के लिए लालायित और आंदोलित हो उठा।

अयोध्या की पहचान कोई नई नहीं है, श्रुतियों और स्मृतियों में अयोध्या का अपना एक स्थान रहा है। वेद, पुराण, आगम, निगम में अयोध्या के भव्य और दिव्य स्वरूप की कल्पना की गई है। इन कल्पनाओं के परे 500 वर्ष पूर्व देश में आये आक्रांताओं ने अपनी तरह से भगवान के पावन जन्मस्थल को धूल धूसरित किया और वहां मस्जिद का निर्माण कराया। उसी समय से साधु-महात्माओं और आस-पास जमीदारों एवं लड़ाकों ने राम जन्मभूमि मुक्ति के लिए अनेक संघर्ष किये, परन्तु निरंतर चले इन संघर्षों से कोई परिणाम नहीं निकला और इस संघर्ष में हजारों लोगों ने आत्म बलिदान दिया। अब जब 22 जनवरी, 2024 को भगवान श्रीरामलला अपने जन्मस्थान पर पुनः विराजमान हो रहे हैं तो इस काल में हुए संघर्ष को भी याद करना है, जिन घटनाओं का मैं स्वयं साक्षी रहा हूं।

1 फरवरी, 1986 को तत्कालीन जिला जज कृष्ण मोहन पाण्डेय के आदेश पर ताला खुला, क्योंकि काफी ढूंढने के बाद भी यह प्रमाण कहीं नहीं मिला कि ताला कब और किसके निर्देश पर लगाया गया था। इसके बाद 1989 में विश्व हिन्दू परिषद ने विवादित ढांचे के बाहर बाकायदा भूमि पूजन का शिलान्यास किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री ने चुनावी लाभ के लिए वर्ष 1989 में ही राम मंदिर का मुद्दा प्रमुखता से रखा, इसने हिन्दू जनमानस के घाव को फिर से ताजा कर दिया और देश व दुनिया का सनातन सम्प्रदाय राम मंदिर पाने के लिए लालायित और आंदोलित हो उठा। ऐसे समय में सनातनी संस्था विश्व हिन्दू परिषद ने राम जन्मभूमि की बागडोर अपने हाथ में ले ली। शीर्ष महात्मा स्मृति शेष परमहंस रामचंद्रदास जी, स्मृति शेष गोरक्ष पीठाधीश्वर महंत अवैद्यनाथ ने धर्मानुसार इस आंदोलन को धार दी।

देशभर से कारसेवक आने लगे ओर शिलान्यास के लिए शान्तिपूर्वक धर्म अनुष्ठान के माध्यम से एक आंदोलन छेड़ा ताकि आक्रांता ढांचे को गिराकर यहां रामलला को पुनः प्रतिष्ठित किया जाये। देश-विदेश में संचार सुविधाओं का आगमन हो चुका था, इसलिए पूरी दुनिया का सनातनी इस कार्यक्रम में अपनी रुचि लेने लगा और रामजन्मभूमि निर्माण के लिए प्रतिबद्ध हो गया। आये दिन तमाम धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से कारसेवक अयोध्या आने लगे और हर बार भव्य रामजन्मभूमि की कामना करते हुए शांतिपूर्वक इन अनुष्ठानों में अपना योगदान देते रहे। इसी दौरान वर्ष 1990 में मुलायम सिंह यादव के मुख्यमंत्रित्व काल में कारसेवकों पर जघन्य गोलीकांड हुआ और कारसेवक मारे गए। इस गोलीकांड से पावन सरिस सलिला मां सरयू का जल लाल हो गया। यह सनातन धर्म के प्रति एक जघन्य अपराध था, जिससे पूरे देश व दुनिया में सनातन जनमानस आंदोलित हो उठा और किसी भी तरह बाबरी ढांचे को ध्वस्त कर उस स्थान पर भव्य राम मंदिर की कल्पना कर उठा।

इसी बीच धर्माचार्यों ने 6 दिसम्बर, 1992 को शिलान्यास कार्यक्रम की पुनः घोषणा की, जिसके अनुसार कारसेवकों को सरयू नदी से बालू और जल लाकर उस पवित्र स्थान पर रखना था। 4 दिसम्बर को कुछ हजार की संख्या में कार सेवक अयोध्या पहुंचे और 5 दिसम्बर की रात तक लाखों कारसेवक चारों ओर से अयोध्या में गली कूचों व मंदिरों में पहुंच गए। 6 दिसम्बर की सुबह से ही कारसेवकों का हुजूम विवादित परिसर के चारों तरफ इकट्ठा हो गया और मंच से भाषण दे रहे धर्माचार्यों व विश्व हिन्दू परिषद के नेताओं की शांतिपूर्वक कारसेवा की अपील सुनने लगा, लेकिन इस बार वह ढांचा ध्वंस की इच्छा का दृढ़ संकल्प अपने मन में कर चुके थे।

इसी बीच प्रातः 9 बजे के आस-पास कारसेवक विवादित स्थल की ओर बढ़ने लगे और चारों ओर लगी लोहे की रेलिंग व कटीले तारों को तोड़ने लगे, धीरे-धीरे तमाम उत्साही कारसेवक विवादित ढांचे पर चढ़ गए और उसे तोड़ने लगे और शाम 4.30 से 5 बजे के बीच तक पूरा का पूरा ढांचा पीछे बनी खाई में समा गया। अयोध्या में भयंकर जन सैलाब को देखते हुए सुरक्षाबल किनारे हो गए और सायंकाल होते ही जगह को समतल करके वहां निर्माण कार्य शुरू कर दिया, 7 दिसम्बर की सुबह ढांचे की जगह राम मंदिर का सांचा उभर आया और वहां से हटाई गई मूर्ति को कारसेवकों ने लाकर स्थापित कर दिया। धीरे-धीरे कार्य सम्पन्न हुआ और लगभग 10 बजे रैपिड एक्शन फोर्स ने सेनानायक बृजमोहन सारस्वत के नेतृत्व में उस जगह को खाली करा दिया। इस तरह विवादित ढांचा ढहा और राम मंदिर का सांचा उभरकर सामने आ गया।

फिल्मों में राम कथा

अगर हम हिंदी फिल्मों के सौ साल से अधिक के इतिहास पर नजर डालें तो रामकथा अब तक सौ से अधिक फिल्मों का निर्माण हो चुका है। मूक फिल्मों के दौर में 1917 में दादा साहब फाल्के ने 'लंका दहन' के नाम से एक फिल्म बनाई थी। कहना न होगा कि जब लंका दहन के प्रसंग की चर्चा होगी तो राम कथा के अन्य प्रसंग भी इसमें आते चले जाते हैं। इस फिल्म की सफलता के साथ तो कई किवदंतियां भी जुड़ी हुई हैं।

अनंत विजय

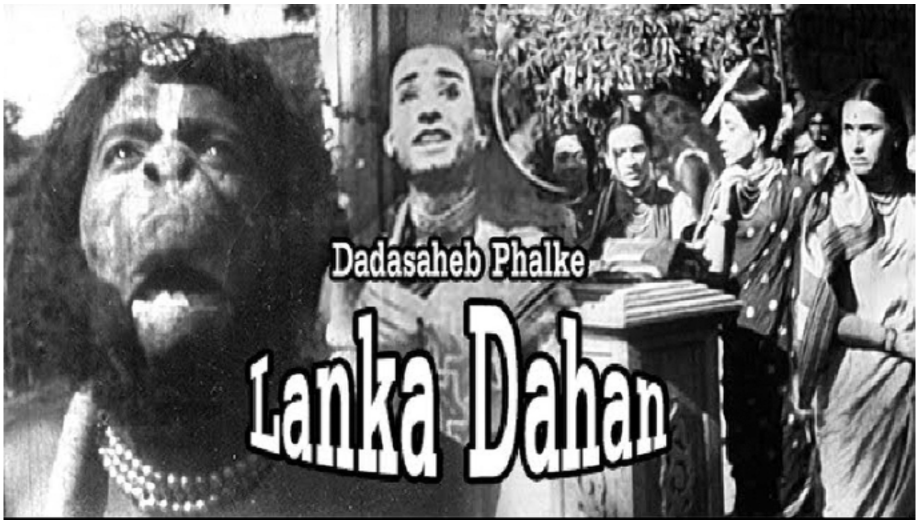

"बंगाल के मशहूर फिल्मकार देवकी बोस ने 'सीता' के नाम से एक फिल्म बनाई थी जो बेहद लोकप्रिय हुई थी। इस फिल्म में राम के मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप को स्थापित करने की कोशिश की गई थी। इस फिल्म में सीता की भूमिका मशहूर अभिनेत्री दुर्गा खोटे ने निभाई थी और पृथ्वीराज कपूर ने राम की। ये हमारे देश में बनी पहली ऐसी फिल्म थी जिसको अंतराष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया था। इस फिल्म का प्रदर्शन 1934 में वेनिस फिल्म फेस्टिवल में किया गया था। प्रकाश पिक्चर्स ने वाल्मीकि के रामयाण के आधार पर चार फिल्में बनाईं, 'भरत मिलाप', 'रामराज्य', 'राम वाण' और 'सीता स्वयंवर'। इन चारों फिल्मों में पूरी रामायण को फिल्माया गया।"

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

सचिन भौमिक को क्या पता था कि राज कपूर से उनकी एक मुलाकात उनको सफलता की ऐसी राह दिखा देगा जिसपर चलकर वो हिंदी फिल्मों के सबसे सफल कहानीकार बन जाएंगे। हिंदी फिल्मों के इतिहास में जितनी सिल्वर जुबली और गोल्डन जुबली फिल्में सचिन भौमिक के खाते में हैं उतनी किसी और के नहीं। सलीम-जावेद की जोड़ी को भी नहीं। सचिन भौमिक की सफलता के पीछे की कहानी बेहद दिलचस्प है। सचिन काम की तलाश में कोलकाता (तब कलकत्ता) से मायानगरी मुंबई (तब बांबे) पहुंचे थे। जब वो मुंबई आए तो उस समय राज कपूर को प्रसिद्धि मिल चुकी थी और उनकी फिल्म 'बरसात', 'सरगम', 'आवारा', 'बूट पॉलिश' और 'श्री 420' जैसी फिल्में लोकप्रिय हो चुकी थीं। सचिन भौमिक किसी तरह से राज कपूर से मिलना चाहते थे। एक दिन वो आर के स्टूडियो पहुंचे और राज कपूर से मिलने की इच्छा जताई। उस दिन राज कपूर से भेंट नहीं हो सकी लेकिन अगले दिन का समय तय हुआ। नियत समय पर सचिन भौमिक चेंबूर के आर के स्टूडियो पहुंचे। वहां उनको राज कपूर के कमरे में ले जाया गया। सचिन भौमिक से राज कपूर ने हाल-चाल पूछा और फिर आने का प्रयोजन। भौमिक ने बताया कि वो फिल्मों के लिए कहानी लिखना चाहते हैं। राज कपूर की सहमति के बाद सचिन ने कहानी सुनाना आरंभ किया और राज कपूर बहुत धैर्यपूर्वक उनकी कहानियां और बातें सुनते रहे। बातचीत जब खत्म हुई तो राज कपूर ने कहा कि आप हिंदी फिल्मों के लिए कहानियां लिखते हो, अच्छी बात है, लिखते भी रहो लेकिन इतना ध्यान रखना कि हिंदी फिल्मों में कहानी तो एक ही होती है, 'राम थे, सीता थीं और रावण आ गया।' सचिन

भौमिक जब राज कपूर से मिलकर निकल रहे थे तो उनके मस्तिष्क में ये बात बार-बार कौंध रही थी। सचिन भौमिक ने एक साक्षात्कार में बताया था कि राज कपूर की ये बात उन्होंने गांठ बांध ली थी और वो कोई भी कहानी लिखते थे तो उनके अवचेतन मन में रामकथा अवश्य चल रही होती थी।

अगर हम हिंदी फिल्मों के सौ साल से अधिक के इतिहास पर नजर डालें तो रामकथा अब तक सौ से अधिक फिल्मों का निर्माण हो चुका है। मूक फिल्मों के दौर में 1917 में दादा साहब फाल्के ने 'लंका दहन' के नाम से एक फिल्म बनाई थी। कहना न होगा कि जब लंका दहन के प्रसंग की चर्चा होगी तो राम कथा के अन्य प्रसंग भी इसमें आते चले जाते हैं। इस फिल्म की सफलता के साथ तो कई किवदंतियां भी जुड़ी हुई हैं। मद्रास (अब चेन्नई) में ये फिल्म इतनी हिट रही थी कि इसकी कमाई के पैसों को बैलगाड़ी में भरकर ले जाना पड़ता था। उस दौर में एक और फिल्मकार हुए जिनका नाम था श्री नाथ पाटणकर। इन्होंने 1918 में 'राम वनवास' के नाम से एक ऐतिहासिक फिल्म बनाई। इस बात का उल्लेख मिलता है कि पाटणकर की कंपनी फ्रेंड्स एंड कंपनी ने इस फिल्म को करीब पच्चीस हजार फीट के रील में शूटिंग की थी। इसको दर्शकों को धारावाहिक के रूप में दिखाया गया था और दर्शकों के लिए एक विशेष प्रकार का टिकट भी बनाया गया था। जब भी इस फिल्म का प्रदर्शन होता था तब उसके पहले राम की महिमा का बखान करनेवाले विशेष प्रकार के गीत-संगीत का कार्यक्रम होता था। उसी दौर में सीक्वल का भी चलन हिंदी फिल्मों में शुरू हो गया था और पाटणकर ने राम वनवास के सीक्वल के तौर पर 'सीता स्वंयवर', 'सती अंजनि' और 'वैदेही जनक' नाम से फिल्में बनाईं थीं। मूक फिल्मों के दौर में तकरीबन हर वर्ष राम कथा पर केंद्रित फिल्में बनती थीं। 'अहिल्या उद्धार', 'श्री राम जन्म', 'लव कुश', 'राम रावण युद्ध', 'सीता विवाह', 'सीता स्वयंवर' और 'सीता हरण' आदि प्रमुख फिल्में हैं।

जब बोलती फिल्मों का दौर शुरू हुआ तब भी रामकथा फिल्मकारों की पंसद बनी रही। बंगाल के मशहूर फिल्मकार देवकी बोस ने 'सीता' के नाम से एक फिल्म बनाई थी जो बेहद लोकप्रिय हुई थी। इस फिल्म में राम के मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप को स्थापित करने की कोशिश की गई थी। इस फिल्म में सीता की भूमिका मशहूर अभिनेत्री दुर्गा खोटे ने निभाई थी और पृथ्वीराज कपूर ने राम की। ये हमारे देश में बनी पहली ऐसी फिल्म थी जिसको अंतराष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया था। इस फिल्म का प्रदर्शन 1934 में वेनिस फिल्म फेस्टिवल में किया गया था। प्रकाश पिक्चर्स ने वाल्मीकि के रामयाण के आधार पर चार फिल्में बनाईं, 'भरत मिलाप', 'रामराज्य', 'राम वाण' और 'सीता स्वयंवर'। इन चारों फिल्मों में पूरी रामायण को फिल्माया गया। इन चार फिल्मों में राम का किरदार अभिनेता प्रेम अदीब और सीता की भूमिका का शोभना समर्थ ने निभाई थी। इन फिल्मों में प्रेम अदीब और शोभना समर्थ ने बेहद शानदार काम किया था। उस दौर में लोग प्रेम अदीब और शोभना समर्थ की तस्वीरें देखकर उनके सामने सर झुकाकर प्रणाम करते थे। आज की पीढ़ी ने दूरदर्शन पर रामानंद सागर की रामायण की लोकप्रियता देखी। प्रकाश पिक्चर्स की ये चारों फिल्में भी अपने दौर में इसी तरह लोकप्रिय हुई थीं। इनमें से 'रामराज्य' को महात्मा गांधी ने देखी।

1967 में प्रकाश पिक्चर्स ने जब 'रामराज्य' को नए अंदाज में बनाने तैयारी शुरू की तो इसके निर्देशक विजय भट्ट ने नूतन से सीता के रोल के लिए संपर्क किया था। उनको लगा था कि शोभना समर्थ की बेटी नूतन इस भूमिका के लिए उपयुक्त होंगी। नूतन ने तब ये कहते हुए मना कर दिया था कि उनके अभिनय की तुलना उनके मां के अभिनय से होगी और वो ऐसा नहीं चाहती। नूतन के इंकार के बाद सीता की भूमिका वीणा राय ने निभाई थी। लेकिन ये फिल्म सफल नहीं हो पाई थी। इसके बाद भी नियमित अंतराल पर राम कथा पर फिल्में बनती रहीं हैं जो इस बात को साफ तौर पर इंगित करती हैं कि राम और उनसे जुड़ी कहानियां भारतीय जनमानस को हमेशा आकर्षित करती हैं। इसी आकर्षण को पकड़ने हुए राज कपूर ने सचिन भौमिक को कहा था कि कहानी तो एक ही है राम थे, सीता थीं और रावण आ गया।

त्रेता युग से पूर्व, त्रेता युगोपरांत और वर्त्तमान स्वरुप

अयोध्या : अवतरण से अब तक

इस ब्रह्माण्ड में सृष्टि की कल्पना के साथ ही अयोध्या का भी अस्तित्व कल्पित होने लगता है। आज का विज्ञान जिन करोडो ब्रह्मांडो की बात कहता है उनमें से जिस ब्रह्माण्ड पर हम हैं उसकी पृथ्वी और उस पर रची जा चुकी सृष्टि की जानकारी भी बहुत जरूरी है। पृथ्वी के अस्तित्व का इतिहास क्या है। इसी विषय पर प्रस्तुत है संजय तिवारी का शोध आलेख . . .

पृथ्वी पर सृष्टि के अस्तित्व का इतिहास क्या है। सृष्टि के जीवो का इतिहास क्या है। जीवो की सभ्यताका इतिहास क्या है। यह सब सदा से ही कौतुक के विषय रहे है। समय समय पर सभ्यताओ के विकासके साथ ही तत्समय के विद्वान् लोग इन सभी विषयो को जानने की चेष्टा करते रहे है। हमें फिलहालउसके भेद, विभेद या तर्क आदि में नहीं जाना। यह प्रश्न भारत भूमि पर अवस्थित एक नगर केइतिहास से जुड़ा है जिसका नाम है अयोध्या। यह इतिहास भी इसलिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योकिभारत भूमि की यह अयोध्या कोई सामान्य नगरी या बस्ती या शहर मात्र नहीं है।

प्राचीन भारतीय वांग्मय, ग्रंथो, श्रुतियो, स्मृतियों, पुराणों और इतिहास के गहन विचरण और अध्ययन के बाद जब भी अयोध्या शब्द सामने आता है तो उसी के साथ धरती पर मनुष्य के आविर्भाव की गाथा भी सामने आने लगती है। हजारो प्रमाण इस बात के मौजूद है कि अयोध्या नाम का नगर किसी ख़ास वर्ग, जाती, धर्म, मज़हब, सम्प्रदाय, या अर्वाचीन शिल्पी द्वारा बसाया या बनाया गया नहीं है। अयोध्या इस पृथ्वी पर तब से है जब से यह सृष्टि है। अयोध्या ही वह स्थल है जहां मनुष्य नाम के प्राणी का सबसे पहले आविर्भाव हुआ और मानव सभ्यता का भी जन्म हुआ। भारतीय वांगमयो के अध्ययन और आचार्यो तथा चिंतको का निष्कर्ष है कि सृष्टि की रचना के समय मनुष्य के रूप में पहले मानव का आविर्भाव इसी अयोध्या में

हुआ। धरती पर जब सृष्टिकर्ता ने मनुष्य को उतार उससे पहले उसने अयोध्यापुरी दी और साथ में दिया श्रुति ग्रन्थ, ताकि जिस प्राणी को वह सृष्टि के लिए भेज रहे या उतार रहे है वह श्रुति से संस्कार प्राप्त कर संसार का सृजन कर्म आगे बढाए।

यह तो हमारी अज्ञानता या लापरवाही है कि सृष्टि की उत्पत्ति की उस कहानी को हम पढ़ और पढ़ा रहे है जिसमे मनुष्य को बन्दर की संतान बताया जाता है। वास्तव में यह हमारे अज्ञान का ही परिचायक है। हम पश्चिम के उस कथित विज्ञान को सबकुछ मानने लगे है जो चौक चौक कर एक एक कदम चलता है, अपने ही प्रतिपादन को आगे आकर खारिज़ करता है। पश्चिम की नक़ल के इस युग में हम अपने ही इतिहास को पूरी तौर पर भूल गए। वे कथित सभ्य लोग जिनमे से किसी का इतिहास दो हजार साल, किसी का डेढ़ हजार साल का है, उनकी धारणाओ और उनके कथन को मील का पत्थर बना कर हम पाठ्यक्रम बना लिए और अपने खुद के उपलब्ध लाखो वर्ष के इतिहास को कूड़े में दाल दिए। एक पश्चिमी आदमी ने कह दिया की मनुष्य के पूर्वज बन्दर थे, और हमने मान लिया। यह जानने का भी प्रयास नहीं किया कि मनुष्य शब्द आया कहा से है। यही से अयोध्या की भी कहानी शुरू होती है। भारतीय श्रुतियो और अन्य वांग्मयो में हजारो ऐसे प्रमाण है जो साबित करते है कि धरती पर प्रथम मानव हमारे आदि पुरुष मनु ही थे। हम सभी मनु की ही संतान है। इसी मनु शब्द से मनुष्य शब्द का भो जन्म हुआ है। मनु के वंशज अर्थात मानव। यह कितने दुःख की बात है कि खुद की वंशावली होते हुए भी आज का मानव बंदरो में अपनी वंशावली की तलाश कर रहा है।

बहरहाल, यहाँ चर्चा अयोध्या की हो रही है। अयोध्या के उस इतिहास की जो त्रेता युग से पहले, त्रेता युग में और त्रेता युग के बाद का है। इसको समझने के लिए जरूरी है की पहले युगों की काल गणना को संक्षेप में जान लिया जाय। सृष्टि का इतिहास कल्प में और सृष्टि में मानव उत्पत्ति व उत्थान का इतिहास मन्वंतरों में वर्णित किया गया है और उसके पश्चात् मन्वन्तरों का इतिहास युग-युगान्तरों में विस्तार से समझाया गया है।

प्राचीन ग्रन्थों में मानव इतिहास को पाँच कल्पों में बाँटा गया

1. हमत् कल्प 1 लाख 9 हजार 8 सौ वर्ष विक्रमीय पूर्व से आरम्भ होकर 85800 वर्ष पूर्व तक,
2. हिरण्य गर्भ कल्प 85800 विक्रमीय पूर्व से 61800 वर्ष पूर्व तक, ब्राह्म कल्प 60800 विक्रमीय पूर्व से 37800 वर्ष पूर्व तक।
3. ब्राह्म कल्प 60800 विक्रमीय पूर्व से 37800 वर्ष पूर्व तक।
4. पाद्म कल्प 37800 विक्रम पूर्व से 13800 वर्ष पूर्व तक।
5. वराह कल्प 13800 विक्रम पूर्व से आरम्भ होकर इस समय तक चल रहा है।

यह भी सौभाग्य का विषय है कि सृष्टि का सबसे शुद्ध काल मापन की व्यवस्था भारतीय प्रणाली में मौजूद रही है। भारत का प्राचीन साहित्य स्पष्ट करता है कि सृष्टि के उद्भव से अब तक का कितना समय बीत चूका है और सृष्टि की अब तक की उम्र क्या है?

वैदिक संवत के अनुसार

' द्वितीयपरार्धे वैवस्तमन्वन्तरे अष्टाविशंति – कलौ युगे ५११६ गताब्दे ' अर्थात यह वैवस्त मनु का अठाईसवा कलि है जिसके ५११६वर्ष बीत चुके है । ब्रह्मा के एक दिन को कल्प अथवा सृष्टि समय कहते है । यह कल्प १४ मन्वन्तरो अथवा एक सहस्त्र चतुर्युगियो का होता है । अब तक छह मन्वन्तर बीत चुके है । एक मन्वन्तर लगभग ७१ चतुर्युगियो का होता है । वैवस्त मनु की २७ चतुर्युगी बीत चुकी है ।

अठाईसवीं में भी (कृत, त्रेता और द्वापर) तीन युग बीत चुके है । चौथे कलि के भी ५११९ वर्ष बीत चुके है । एक मन्वन्तर में 71 चतुर्युगियां होती हैं। एक चतुर्युग में सतयुग, त्रेता,द्वापर और कलियुग होते हैं। सतयुग में 1728000 वर्ष, त्रेता में 1296000 वर्ष, द्वापर में 864000 वर्ष और कलियुग में 432000 वर्ष होते हैं। इन चारों युगों में कुल 4320000 वर्ष होते हैं। 71 चतुर्युगियों में कुल306720000 वर्ष होते हैं। छः मन्वन्तर अर्थात 1840320000 वर्ष पूरे बीत चुके हैं और अब सातवें मन्वन्तर की 28वीं चतुर्युगी चल रही है। गणित करके देखा गया है कि इस गणना के अनुसार यह समय 1960853115 वर्ष बनते है। यही समय मानव उत्पत्ति का है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकाड्र्स ने कल्प को समय का सर्वाधिक लम्बा मापन घोषित किया है।

अयोध्या, मनु और मानव

भारतीय वाग्मय में उपलब्ध साक्ष्य साफ़ साफ़ कहते है की साथ ही स्थापित आदि पुरुष मनु के साथ जो संस्कृति शुरू हुई उस संस्कृति की राजधानी अयोध्या को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जन्म के साथ ही दैवी मर्यादा भी प्राप्त हो गयी। त्रेता युग में भगवान् राम के अवतरण के बाद अयोध्या को अगणित ग्रंथो ने नए ढंग से व्याख्यायित करना शुरू कर दिया। आज अयोध्या की स्थापना को संसार प्रभु श्री राम की जन्मस्थली के रूप में पहचानता है। शास्त्र कहते हैं कि अयोध्या पुण्यनगरी है। अयोध्या की महत्ता के बारे में पूर्वांचल में एक लोकगीत प्रचलित है -

गंगा बड़ी गोदावरी,

तीरथ बड़ो प्रयाग,

सबसे बड़ी अयोध्यानगरी,

जहँ राम लियो अवतार।

इससे पूर्व कि अयोध्या और मनु के उद्भव पर बात की जाय, यह जरूरी लगता है कि श्री राम और उनकी पूर्व वंशावली पर दृष्टिपात कर ली जाय। इस को देखने से बहुत से तथ्य स्वयम मिल जाते है जिससे त्रेता के पूर्व तथा त्रेता में अयोध्या की स्थिति और महत्ता प्रमाणित होती है।

राम के पूर्वजो का इतिहास

ब्रह्माजी की उन्चालिसवी पीढ़ी में भगवाम श्रीराम का जन्म हुआ था। वैवस्वत मनु के दस पुत्र थे -

इल, इक्ष्वाकु, कुशनाम, अरिष्ट, धृष्ट, नरिष्यन्त,करुष, महाबली, शर्याति और पृषध।

"श्री राम का जन्म इक्ष्वाकु के कुल में हुआ था और जैन धर्म के तीर्थंकर निमि भी इसी कुल के थे।

मनु के दूसरे पुत्र इक्ष्वाकु से विकुक्षि, निमि और दण्डक पुत्र उत्पन्न हुए।

इस तरह से यह वंश परम्परा चलते-चलते हरिश्चन्द्र, रोहित, वृष, बाहु और सगरतक पहुँची।

इक्ष्वाकु प्राचीन कौशल देश के राजा थे और इनकी राजधानी अयोध्या थी।

रामायण के बालकांड में गुरु वशिष्ठजी द्वारा राम के कुल का वर्णन किया गया है जो इस प्रकार है .....

1 - ब्रह्माजी से मरीचि।

2 - मरीचि के पुत्र कश्यप।

3 - कश्यप के पुत्र विवस्वान।

4 - विवस्वान के वैवस्वत मनु हुए.वैवस्वत मनु के समय जल प्रलय हुआ था।

5 - वैवस्वतमनु के दस पुत्रों में से एक का नाम इक्ष्वाकु था। इक्ष्वाकु ने अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया और इस प्रकार इक्ष्वाकु कुलकी स्थापना की।

6 - इक्ष्वाकु के पुत्र कुक्षि हुए।

7 - कुक्षि के पुत्र का नाम विकुक्षि था।

8 - विकुक्षि के पुत्र बाण हुए।

9 - बाण के पुत्र अनरण्य हुए।

10- अनरण्य से पृथु हुए

11- पृथु से त्रिशंकु का जन्म हुआ।

12- त्रिशंकु के पुत्र धुंधुमार हुए।

13- धुन्धुमार के पुत्र का नाम युवनाश्व था।

14- युवनाश्व के पुत्र मान्धाता हुए।

15- मान्धाता से सुसन्धि का जन्म हुआ।

16- सुसन्धि के दो पुत्र हुए- ध्रुवसन्धि एवं प्रसेनजित।

17- ध्रुवसन्धि के पुत्र भरत हुए।

18- भरत के पुत्र असित हुए।

19- असित के पुत्र सगर हुए।

20- सगर के पुत्र का नाम असमंज था।

21- असमंज के पुत्र अंशुमान हुए।

22- अंशुमान के पुत्र दिलीप हुए।

23- दिलीप के पुत्र भगीरथ हुए। भागीरथ ने ही गंगा को पृथ्वी पर उतारा था.भागीरथ के पुत्र ककुत्स्थ थे।

24- ककुत्स्थ के पुत्र रघु हुए। रघु के अत्यंत तेजस्वी और पराक्रमी नरेश होने के कारण उनके बाद इस वंश का नाम रघुवंश हो गया,तब से श्री राम के कुल को रघु कुल भी कहा जाता है।

25- रघु के पुत्र प्रवृद्ध हुए।

26- प्रवृद्ध के पुत्र शंखण थे।

27- शंखण के पुत्र सुदर्शन हुए।

28- सुदर्शन के पुत्र का नाम अग्निवर्ण था।

29- अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्रग हुए।

30- शीघ्रग के पुत्र मरु हुए।

31- मरु के पुत्र प्रशुश्रुक थे।

32- प्रशुश्रुक के पुत्र अम्बरीष हुए।

33- अम्बरीष के पुत्र का नाम नहुष था।

34- नहुष के पुत्र ययाति हुए।

35- ययाति के पुत्र नाभाग हुए।

36- नाभाग के पुत्र का नाम अज था।

37- अज के पुत्र दशरथ हुए।

38- दशरथ के चार पुत्र राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न हुए। इस प्रकार ब्रह्मा की उन्चालिसवी (39) पीढ़ी में श्रीराम का जन्म हुआ।

मनु की उत्पत्ति और अयोध्या

अभगच्छत राजेन्द्र देविकां विश्रुताम्।

प्रसूर्तित्र विप्राणां श्रूयते भरतर्षभ॥

– महाभारत

सप्तचरुतीर्थ के पास वितस्ता नदी की शाखा देविका नदी के तट पर मनुष्य जाति की उत्पत्ति हुई।

प्रमाण यही बताते हैं कि आदि सृष्टि की उत्पत्ति ब्रह्मावर्त क्षेत्र में ही हुई। स्वायंभुव को आदि भी कहा जाता है। सभी भाषाओं के मनुष्य-वाची शब्द मैन, मनुज, मानव, आदम, आदमी आदि सभी मनु शब्द से प्रभावित है। यह समस्त मानव जाति के प्रथम संदेशवाहक हैं। इन्हें प्रथम मानने के कई कारण हैं। संसार के प्रथम पुरुष स्वायंभुव मनु और प्रथम स्त्री थी शतरूपा। इन्हीं प्रथम पुरुष और प्रथम स्त्री की सन्तानों से संसार के समस्त जनों की उत्पत्ति हुई। मनु की सन्तान होने के कारण वे मानव कहलाए। मानव उसे कहते हैं जिसमें जड़ और प्राण से कहीं ज्यादा सक्रिय है- मन। मनुष्य में मन की ताकत है, विचार करने की ताकत है, इसीलिए उसे मनुष्य कहते हैं। चूँकि यह सभी की संतानें हैं इसीलिए मनुष्यत को मानव भी कहा जाता है। स्वायंभुव मनु के ही कुल में आगे चलकर स्वायंभुव सहित कुल क्रमशः 7 मनु हुए और 7 होना बाकी है। महाभारत में 8 मनुओं का उल्लेख मिलता है। श्वेतवराह कल्प में 14 मनुओं का उल्लेख है। इन चौदह मनुओं को ही जैन धर्म में कुलकर कहा गया है।

चौदह मनुओं के नामः

1. स्वायम्भु 2. स्वरोचिष 3. औत्तमी 4. तामस मनु 5. रैवत, 6. चाक्षुष 7.वैवस्वत 8.सूर्यसावर्णि 9. दक्ष सावर्णि 10. ब्रह्म सावर्णि 11. धर्म सावर्णि 12. रुद्र सावर्णि 13. रौच्य या देव सावर्णि 14. भौत या इन्द्र सावर्णि।

प्रजापत्य कल्प में ब्रह्मा ने रुद्र रूप को ही स्वयंभु मनु और स्त्री रूप में शतरूपा को प्रकट किया। स्वायंभुव मनु एवं शतरूपा के कुल पाँच सन्तानें थीं जिनमें से दो पुत्र प्रियव्रत एवं उत्तानपाद तथा तीन कन्याएँ आकूति, देवहूति और प्रसूति थे। आकूति का विवाह रुचि प्रजापति के साथ और प्रसूति का विवाह दक्ष प्रजापति के साथ हुआ। देवहूति का विवाह प्रजापति कर्दम के साथ हुआ। रुचि के आकूति से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम यज्ञ रखा गया। इनकी पत्नी का नाम दक्षिणा था। कपिल ऋषि देवहूति की संतान थे। पुराणों अनुसार इन्हीं तीन कन्याओं से संसार के मानवों में वृद्धि हुई।

दक्ष ने प्रसूति से 24 कन्याओं को जन्म दिया। इसके नाम श्रद्धा, लक्ष्मी, पुष्टि, धुति, तुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, ऋद्धि, और कीर्ति हैं। तेरह का विवाह धर्म से किया और फिर भृगु से ख्याति का, शिव से सती का, मरीचि से सम्भूति का, अंगिरा से स्मृति का, पुलस्त्य से प्रीति का पुलह से क्षमा का, कृति से सन्नति का, अत्रि से अनसूया का, वशिष्ट से ऊर्जा का, वह्व से स्वाह का तथा पितरों से स्वधा का विवाह किया। आगे आने वाली सृष्टि इन्हीं से विकसित हुई। दो पुत्र- प्रियव्रत और उत्तानपाद। उत्तानपाद की सुनीति और सुरुचि नामक दो पत्नी थीं। राजा उत्तानपाद के सुनीति से ध्रुव तथा सुरुचि से उत्तम नामक पुत्र उत्पन्न हुए। ध्रुव ने बहुत प्रसिद्धि हासिल की थी। स्वायंभुव मनु के दूसरे पुत्र प्रियव्रत ने विश्वकर्मा की पुत्री बहिर्ष्मती से विवाह किया था जिनसे आग्नीध्र, यज्ञबाहु, मेधातिथि आदि दस पुत्र उत्पन्न हुए। प्रियव्रत की दूसरी पत्नी से उत्तम तामस और रैवत- ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए जो अपने नामवाले मनवंतरों के अधिपति हुए। महाराज प्रियव्रत के दस पुत्रों मे से कवि, महावीर तथा सवन ये तीन नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे और उन्होंने संन्यास धर्म ग्रहण किया था। महाराज मनु ने बहुत दिनों तक इस सप्तद्वीपवती पृथ्वी पर राज्य किया। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। इन्हीं ने मनु स्मृति की रचना की थी जो आज मूल रूप में नहीं मिलती। उसके अर्थ का अनर्थ ही होता रहा है। उस काल में वर्ण का अर्थ रंग होता था और आज जाति। प्रजा का पालन करते हुए जब महाराज मनु को मोक्ष की अभिलाषा हुई तो वे संपूर्ण राजपाट अपने बड़े पुत्र उत्तानपाद को सौंपकर एकान्त में अपनी पत्नी शतरूपा के साथ नैमिषारण्य तीर्थ चले गए, लेकिन उत्तानपाद की अपेक्षा उनके दूसरे पुत्र राजा प्रियव्रत की प्रसिद्धि ही अधिक रही। मनु ने सुनंदा नदी के किनारे सौ वर्ष तक तपस्या की। दोनों पति-पत्नी ने नैमिषारण्य नामक पवित्र तीर्थ में गौमती के किनारे भी बहुत समय तक तपस्या की। उस स्थान पर दोनों की समाधियां बनी हुई है।

स्वायम्भु मनु के काल के ऋषि मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलह, कृतु, पुलस्त्य, और वशिष्ठ हुए। राजा मनु सहित उक्त ऋषियों ने ही मानव को सभ्य, सुविधा संपन्न, श्रमसाध्य और सुसंस्कृत बनाने का कार्य किया।

मानव संस्कृति की राजधानी अयोध्या

अयोध्या केवल एक नगर मात्र नहीं है। वास्तव में यह पृथ्वी पर मानव जाति की उत्पत्ति, उसकीसंस्कृति और उसके समग्र सभ्यताओ के विकास की वास्तविक राजधानी है। आदि पुरुष मनु का आविर्भाव इसी अयोध्या के साथ हुआ और उन्ही मनु से मानव समुदाय का विकास संभव हो पाया, इसके लिए पश्चिम की किसी अवधारणा में जाने की आवश्यकता नहीं बल्कि केवल अपनी श्रुतियो, स्मृतियों और स्वयं के इतिहास को ही जानने की आवश्यकता है। पश्चिमी इतिहासकारो, जीवशास्त्रियों, पुरावैज्ञानिको, जीवाश्म विज्ञानियों अथवा दार्शनिको ने सृष्टि और मनुष्य की उत्पत्ति को लेकर चाहे जीतनी व्याख्याए दी हो परंतु उनकी कोई व्याख्या अभी तक सटीक नहीं पायी गयी। उनकी सारी खोज कुछ हज़ार वर्षो पूर्व से शुरू होकर मिट जाती है और इसीलिए वे कोई नतीजा नहीं दे पाते। उनके

पास आधार साहित्य ही नहीं है। इसलिए उनकी अवधारणाओं को वास्तविकता की कसौटी खारिज़ कर देती है। उदाहरण के लिए उनकी बन्दर से मनुष्य के विक्सित होने की अवधारणा यदि सही होती तो आज धरती पर बंदर नहीं होने चाहिए थे क्यों की बंदर को विक्सित होकर मनुष्य बन जाना चाहिए था। वास्तविकता यह है कि सृष्टि के उद्भव और उसके समग्र विकास की गाथा हमारी श्रुतियो और अन्य वांग्मयो में उपलब्ध है लेकिन दुर्भाग्य है कि हमारे यहाँ उन पर कोई कारगर अध्ययन या शोध नहीं हो पाया। श्रुति परंपरा का ज्ञान हमें मिलता तो रहा लेकिन बीते हज़ार वर्षो में भारत पर दूसरी सभ्यताओ के हमलो ने हमारो उस विरासत को तोड़ा और हमारी ज्ञानार्जन की अपनी परंपरा विलुप्त हो गयी। अभी मात्रा 70 साल पहले ही हम आज़ाद हुए है लेकिन विडम्बना है कि अब ज्ञानार्जन की केवल पश्चिमी परम्पराओ पर हम जीने लगे है। वह पश्चिम जिसके पास शिक्षा और ज्ञान का कुल अनुभव ही महज कुछ सौ सालो का है।

सभी महापुरुषों का उद्भव स्थल अयोध्या

भारत वर्ष के चाहे जितने नाम हो। इसके चाहे जितने भी स्वरुप और दर्शन रहे हो पर सभी के मूल में अयोध्या ही मिलती है। चाहे भरत हो, ध्रुव हो, मान्धाता हो, बलि हो, सगर, भगीरथ, दिलीप, पृथु, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, या विदेह महाराज जनक ही क्यों न हो, सभी पर भारत को गर्व है और इन सभी का सम्बन्ध अयोध्या से ही है। इसी प्रकार हमारी ऋषि परम्परा में गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, शरभंग, श्रृंगी, परशुरामसे लेकर शतानंद तक सभी ऋषि मुनि और तपस्वियो के लिए अयोध्या ही कर्मभूमि रही है।

वास्तव में इस सृष्टि में केवल एक मात्रा अयोध्या ही है जिसने सभी युगों के सभी सभ्यताओ को जन्म लेते, फलते फूलते, विक्सित होते और नष्ट देखा है। अयोध्या ही साक्षी है सतयुग की, अयोध्या ही साक्षी है सतयुग में देव, मानव और उस समय की अन्य संस्कृतियों के संघर्ष की। अयोध्या ने ही त्रेता युग में मानव और रक्ष सभ्याताओ का संघर्ष देखा है। अयोध्या ने ही द्वापर में संस्कारो और परिवारों का संघर्ष भी देखा है। अयोध्या ही है जो अब मनुष्य और उसकी श्वास के बीच का संघर्ष भी देख रही है।

इतिहास में अयोध्या

ऐतिहासिक दस्तावेज बताते है कि अयोध्या रघुवंशी राजाओं की बहुत पुरानी राजधानी थी। ऐसी धारणा है कि स्वयं मनु ने अयोध्या का निर्माण किया था। वाल्मीकि रामायण सेपता चलता है कि स्वर्गारोहण से पूर्व रामचंद्रजी ने कुश को कुशावती नामक नगरी का राजा बनायाथा। श्रीराम के पश्चात अयोध्या उजाड़ हो गई थी, क्योंकि उनके उत्तराधिकारी कुश ने अपनी राजधानी कुशावती में बना ली थी। कालिदास के महाकाव्य रघुवंश से ज्ञात होता है कि अयोध्या की दीन-हीन दशा देखकर कुश ने अपनी राजधानी पुनः अयोध्या में बनाई थी। महाभारतमें अयोध्या के दीर्घयज्ञ नामक राजा का उल्लेख है जिसे भीमसेन ने पूर्वदेश की दिग्विजय में जीता था। घटजातक में अयोध्या (अयोज्झा) के कालसेन नामक राजा का उल्लेख है। गौतमबुद्ध के समय कोसल के दो भाग हो गए थे- उत्तरकोसल और दक्षिणकोसल जिनके बीच में सरयूनदी बहती थी। अयोध्या या साकेत उत्तरी भाग की और श्रावस्ती दक्षिणी भाग की राजधानी थी। इस समय श्रावस्ती का महत्त्व अधिक बढ़ा हुआ था। बौद्ध काल में ही अयोध्या के निकट एक नई बस्ती बन गई थी जिसका नाम साकेत था। बौद्ध साहित्य में साकेत और अयोध्या दोनों का नाम साथ-साथ भी मिलता है जिससे दोनों के भिन्न अस्तित्व की जानकारी प्राप्त होती है। बाल्मीकि रामायण में अयोध्या का उल्लेख कोशल जनपद की राजधानी के रूप में किया गया है। पुराणों में इस नगर के संबंध में कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता है, परन्तु इस नगर के शासकों की वंशावलियाँ अवश्य मिलती हैं, जो इस नगर की प्राचीनता एवं महत्त्व के प्रामाणिकसाक्ष्य हैं। ब्राह्मण साहित्य में इसका वर्णन एक ग्राम के रूप में किया गया है। ऐसा वर्णन मिलता है कि सूत और मागध उस नगरी में बहुत थे। अयोध्या बहुत ही सुन्दर नगरी थी। अयोध्या में ऊँची अटारियों पर ध्वजाएँ शोभायमान थीं और सैकड़ों शतघ्नियाँ उसकी रक्षा के लिए लगी हुई थीं। राम के समय यह नगर अवध नाम की राजधानी से सुशोभित था। अभी उपलब्ध बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अयोध्या पूर्ववती तथा साकेत परवर्ती राजधानी थी। भारतवर्ष के पवित्र स्थानों में इसका नाम मिलता है। प्रख्यात चीनी यात्री फ़ाह्यान ने इसका 'शा-चें' नाम से उल्लेख किया है,जो कन्नौज से 13 योजन दक्षिण-पूर्व में स्थित था।

एक इतिहासकार मललसेकर ने पालि-परंपरा के साकेत को सई नदी के किनारे उन्नाव ज़िले में स्थित सुजानकोट के खंडहरों से समीकृत किया है। नालियाक्ष दत्त एवं कृष्णदत्त बाजपेयी ने भी इसका समीकरण सुजानकोट से किया है। थेरगाथा अट्ठकथा में साकेत को सरयू नदी केकिनारे बताया गया है। अतः संभव है कि पालि का साकेत, आधुनिक अयोध्या ही हो।

अयोध्या के प्राचीन अभिलेख

शुंग वंश के प्रथम शासक पुष्यमित्र (द्वितीय शती ई. पू.) का एक शिलालेख अयोध्या से प्राप्त हुआ था जिसमें उसे सेनापति कहा गया है तथा उसके द्वारा दो अश्वमेध यज्ञों के लिए जाने का वर्णन है। अनेक अभिलेखों से ज्ञात होता है कि गुप्तवंशीय चंद्रगुप्त द्वितीय के समय (चतुर्थशती ई. का मध्यकाल) और तत्पश्चात काफ़ी समय तक अयोध्या गुप्त साम्राज्य की राजधानी थी। गुप्तकालीन महाकवि कालिदासने अयोध्या का रघु वंश में कई बार उल्लेख किया है। कालिदास ने उत्तरकौशल की राजधानी साकेत और अयोध्या दोनों ही का नामोल्लेख किया है, इससे जान पड़ता है कि कालिदास के समय में दोनों ही नाम प्रचलित रहे होंगे। मध्यकाल में अयोध्या का नाम

अधिक सुनने में नहीं आता था। युवानच्वांग के वर्णनों से ज्ञात होता है कि उत्तर बुद्धकाल में अयोध्या का महत्त्व घट चुका था।

काव्य साहित्य में अयोध्या

अयोध्या का उल्लेख महाकाव्यों में विस्तार से मिलता है। रामायण के अनुसार यह नगर सरयू नदी के तट पर बसा हुआ था तथा कोशल राज्य का सर्वप्रमुख नगर था। अयोध्या को देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि मानों मनु ने स्वयं अपने हाथों के द्वारा अयोध्या का निर्माण किया हो। अयोध्या नगर 12 योजन लम्बाई में और 3 योजन चौड़ाई में फैला हुआ था, जिसकी पुष्टि वाल्मीकि रामायण में भी होती है। एक परवर्ती जैन लेखक हेमचन्द्र ने नगर का क्षेत्रफल 12×9 योजन बतलाया है जो कि निश्चित ही अतिरंजित वर्णन है। साक्ष्यों के अवलोकन से नगर के विस्तार के लिए कनिंघम का मत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लगता है। उनकी मान्यता है कि नगर की परिधि 12 कोश (24 मील) थी, जो वर्तमान नगर की परिधि के अनुरूप है। अयध्या हिन्दुओं और जैनियों का एक पवित्र तीर्थस्थलहै और इसका उल्लेख सप्तपुरियों में सर्वप्रथम किया जाताहै। पुराणों के अनुसार इन सात पुरियों या तीर्थों को मोक्षदायक कहा गया है। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

काशी कांची चमायाख्यातवयोध्याद्वारवतयपि,

मथुराऽवन्तिका चैताः सप्तपुर्योऽत्र मोक्षदाः

अयोध्या-मथुरामायाकाशीकांचीत्वन्तिका,

पुरी द्वारावतीचैव सप्तैते मोक्षदायिकाः।

1. अयोध्या

श्रीराम का जन्म यहीं हुआ था। राम की जन्म-भूमि अयोध्या उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के दाएँ तट पर स्थित है। अयोध्या हिन्दुओं के प्राचीन और सात पवित्र तीर्थस्थलों में से एक है। अयोध्या को अथर्ववेद में ईश्वर का नगर बताया गया है और इसकी संपन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है। रामायण के अनुसार अयोध्या की स्थापना मनु ने की थी। कई शताब्दियों तक यह नगर सूर्य वंश की राजधानी रहा। अयोध्या एक तीर्थ स्थान है और मूल रूप से मंदिरों का शहर है। यहाँ आज भी हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम और जैन धर्म से जुड़े अवशेष देखे जा सकते हैं। जैन मत के अनुसार यहाँ आदिनाथ सहित पाँच तीर्थंकरों का जन्म हुआ था।

2. मथुरा

पुराणों में मथुरा के गौरवमय इतिहास का विषद विवरण मिलता है। अनेक धर्मों से संबंधित होने के कारण मथुरा में बसने और रहने का महत्त्व क्रमशः बढ़ता रहा। ऐसी मान्यता थी कि यहाँ रहने से पाप रहित हो जाते हैं तथा इसमें रहने करने वालों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। वराह पुराण में कहा गया है कि इस नगरी में जो लोग शुध्द विचार से निवास करते हैं, वे मानव के रूप में साक्षात देवता हैं। श्राद्ध कर्म का विशेष फल मथुरा में प्राप्त होता है। मथुरा में श्राद्ध करने वालों के पूर्वजों को आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है। उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव ने मथुरा में तपस्या कर के नक्षत्रों में स्थान प्राप्त किया था। पुराणों में मथुरा की महिमा का वर्णन है। पृथ्वी के यह पूछने पर कि मथुरा जैसे तीर्थ की महिमा क्या है? महावराह ने कहा था- मुझे इस वसुंधरा में पाताल अथवा अंतरिक्ष से भी मथुरा अधिक प्रिय है। वराह पुराण में भी मथुरा के संदर्भ में उल्लेख मिलता है, यहाँ की भौगोलिक स्थिति का वर्णन मिलता है। यहाँ मथुरा की माप बीस योजन बतायी गयी है। इस मंडल में मथुरा, गोकुल, वृन्दावन, ोवर्धन आदि नगर, ग्राम एवं मंदिर, तड़ाग, कुण्ड, वन एवं अनगणित तीर्थों के होने का विवरण मिलता है। इनका विस्तृत वर्णन पुराणों में मिलता है। गंगा के समान ही यमुना के गौरवमय महत्त्व का भी विशद विवरण किया गया है। पुराणों में वर्णित राजाओं के शासन एवं उनके वंशों का भी वर्णन प्राप्त होता है।

3. हरिद्वार

हरिद्वार उत्तराखंड में स्थित भारत के सात सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में एक है। भारत के पौराणिक ग्रंथों और उपनिषदों में हरिद्वार को मायापुरी कहा गया है। गंगा नदी के किनारे बसा हरिद्वार अर्थात हरि तक पहुंचने का द्वार है। हरिद्वार को धर्म की नगरी माना जाता है। सैकडों सालों से लोग मोक्ष की तलाश में इस पवित्र भूमि में आते रहे हैं। इस शहर की पवित्र नदी गंगा में डुबकी लगाने और अपने पापों का नाश करने के लिए साल भर श्रद्धालुओं का आना जाना यहाँ लगा रहता है। गंगा नदी पहाड़ी इलाकों को पीछे छोड़ती हुई हरिद्वार से ही मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है।

4. काशी

वाराणसी, काशी अथवा बनारस भारत देश के उत्तर प्रदेश का एक प्राचीन और धार्मिक महत्ता रखने वाला शहर है। वाराणसी का पुराना नाम काशी है। वाराणसी विश्व का प्राचीनतम बसा हुआ शहर है। यह गंगा नदी किनारे बसा है और हज़ारों साल से उत्तर भारत का धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। दो नदियों वरुणा और असि के मध्य बसा होने के कारण इसका नाम वाराणसी पडा। बनारस या वाराणसी का नाम पुराणों, रामायण, महाभारत जैसे अनेकानेक ग्रन्थों में मिलता है।

5. कांचीपुरम

कांचीपुरम तीर्थपुरी दक्षिण की काशी मानी जाती है, जो चेन्नई से 45 मील की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। कांचीपुरम को कांची भी कहा जाता है। यह आधुनिक काल में कांचीवरम के नाम से

भी प्रसिद्ध है। ऐसी अनुश्रुति है कि इस क्षेत्र में प्राचीन काल में ब्रह्मा जी ने देवी के दर्शन के लिये तप किया था। मोक्षदायिनी सप्त पुरियों अयोध्या, मथुरा, द्वारका, माया(हरिद्वार), काशी और अवन्तिका (उज्जैन) में इसकी गणना की जाती है। कांची हरिहरात्मक पुरी है। इसके दो भाग शिवकांची और विष्णुकांची हैं।

6. अवंतिका

उज्जयिनी का प्राचीनतम नाम अवन्तिका, अवन्ति नामक राजा के नाम पर था। इस जगह को पृथ्वी का नाभिदेश कहा गया है। महर्षि सान्दीपनि का आश्रम भी यहीं था। उज्जयिनी महाराज विक्रमादित्य की राजधानी थी। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में देशान्तर की शून्य रेखा उज्जयिनी से प्रारम्भ हुई मानी जाती है। इसेकालिदास की नगरी के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ हर 12 वर्ष पर सिंहस्थ कुंभ मेलालगता है। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में एक महाकाल इस नगरी में स्थित है।

7. द्वारका

द्वारका का प्राचीन नाम है। पौराणिक कथाओं के अनुसार महाराजा रैवतक के समुद्र में कुश बिछाकर यज्ञ करने के कारण ही इस नगरी का नाम कुशस्थली हुआ था। बाद में त्रिविकम भगवान ने कुश नामक दानव का वध भी यहीं किया था। त्रिविक्रम का मंदिर द्वारका में रणछोड़जी के मंदिर के निकट है। महाराज रैवतक (बलराम की पत्नी रेवती के पिता) ने प्रथम बार, समुद्र में से कुछ भूमि बाहर निकाल कर यह नगरी बसाई होगी। हरिवंश पुराण के अनुसारकुशस्थली उस प्रदेश का नाम था जहां यादवों ने द्वारका बसाई थी। विष्णु पुराण के अनुसार, अर्थात् आनर्त के रेवत नामक पुत्र हुआ जिसने कुशस्थली नामक पुरी में रह कर आनर्त पर राज्य किया। विष्णु पुराण से सूचित होता है कि प्राचीन कुशावती के स्थान पर ही श्रीकृष्ण ने द्वारका बसाई थी। कुशस्थली या तव भूप रम्या पुरी पुराभूदमरावतीव, सा द्वारका संप्रति तत्र चास्ते स केशवांशो बलदेवनामा।

सात पुरियो के अन्तर्सम्बन्ध :

इस बात के भी ऐतिहासिक प्रमाण है कि इन सातो पुरियो के अंर्तसंबंध भी बहुत गहरे है। अयोध्या, मथुरा, काशी, हरिद्वार, कांचीपुरम, अवंतिका या उज्जैयिनी और द्वारिका के बारे में विस्तार से चर्चा समीचीन नहीं है किन्तु भारत वर्ष में निवास करने वाले प्रत्येक सनातन मनुष्य के लिए इन सभी सात पुरियो की ख़ास महत्ता है। ख़ास यह है कि इनमे से किसी की चर्चा शुरू की जाती है तो सातो की चर्चा हो ही जाती है।

मध्यकाल में अयोध्या

मध्यकाल में मुसलमानों के उत्कर्ष के समय, अयोध्या बेचारी उपेक्षिता ही बनी रही, यहाँ तक कि मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के एक सेनापति ने बिहार अभियान के समय अयोध्या में श्रीराम के जन्मस्थान पर स्थित प्राचीन मंदिर को तोड़कर एक मस्जिद बनवाई,जिसकोलेकर विगत कई दशको से विवाद बना हुआ है। मस्जिद में लगे हुए अनेक स्तंभ और शिलापट्ट उसी प्राचीन मंदिर के के ही थे।

अयोध्या के वर्तमान मंदिर कनकभवन आदि अधिक प्राचीन नहीं हैं, और वहाँ यह कहावत प्रचलित है कि सरयू को छोड़कर रामचंद्रजी के समय की कोईनिशानी नहीं है। कहते हैं कि अवध के नवाबों ने जब फ़ैज़ाबाद में राजधानी बनाई थी तो वहाँ के अनेक महलों में अयोध्या के पुराने मंदिरों की सामग्री उपयोग में लाई गई थी।

बौद्ध साहित्य में अयोध्या

बौद्ध साहित्य में भी अयोध्या का उल्लेख मिलता है। गौतम बुद्ध का इस नगर से विशेष सम्बन्ध था। उल्लेखनीय है कि गौतम बुद्ध के इस नगर से विशेष सम्बन्ध की ओर लक्ष्य करके मज्झिमनिकाय में उन्हें कोसलक (कोशल का निवासी) कहा गया है।

धर्म-प्रचारार्थ वे इस नगर में कई बार आ चुके थे। एक बार गौतम बुद्ध ने अपने अनुयायियों को मानव जीवन की निस्वारता तथा क्षण-भंगुरता पर व्याख्यान दिया था। अयोध्यावासी गौतम बुद्ध के बहुतबड़े प्रशंसक थे और उन्होंने उनके निवास के लिए वहाँ पर एक विहार का निर्माणभी करवाया था। संयुक्तनिकाय में उल्लेख आया है कि बुद्ध ने यहाँ की यात्रा दो बार की थी। उन्होंने यहाँ फेण सूक्त और दारुक्खंधसुक्त का व्याख्यान दिया था।

अयोध्या और साकेत

अयोध्या और साकेत दोनों नगरों को कुछ विद्वानों ने एक ही माना है। कालिदास ने भी रघुवंश में दोनों नगरों को एक ही माना है, जिसका समर्थन जैन साहित्य में भी मिलता है। कनिंघम ने भी अयोध्या और साकेत को एक ही नगर से समीकृत किया है। इसके विपरीत विभिन्नविद्वानों ने साकेत को भिन्न-भिन्न स्थानों से समीकृत किया है। इसकी पहचान सुजानकोट, आधुनिकलखनऊ, कुर्सी, पशा (पसाका), और तुसरन बिहार इलाहाबाद से 27 मील दूर स्थित है) से की गई है। इस नगर के समीकरण में उपर्युक्त विद्वानों के मतों में सवल प्रमाणों काअभाव दृष्टिगत होता है। बौद्ध ग्रन्थों में भी अयोध्या और साकेत को भिन्न-भिन्न नगरों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वाल्मीकि रामायण में अयोध्या को कोशल की राजधानी बताया गया है और बाद के संस्कृत ग्रन्थों में साकेत से मिला दिया गया है। अयोध्याको संयुक्तनिकाय मेंएक ओर गंगा के किनारे स्थित एक छोटा गाँव या नगर बतलाया गया है। जबकि साकेत उससे भिन्न एक महानगर था। अतएव किसी भी दशा में ये दोनों नाम एक नहीं हो सकते हैं।

जैन ग्रन्थ के अनुसार

जैन ग्रन्थ विविधतीर्थकल्प में अयोध्या को ऋषभ, अजित, अभिनंदन, सुमति, अनन्त और अचलभानु- इन जैन मुनियों का जन्मस्थान माना गया है। नगरी का विस्तार लम्बाई में 12 योजन और चौड़ाई में 9 योजन कहा गया है। इस ग्रन्थ में वर्णित है कि चक्रेश्वरी और गोमुख यक्षअयोध्या के निवासी थे। घर्घर-दाह और सरयू का अयोध्या के पास संगम बताया है और संयुक्त नदी को स्वर्गद्वारा नाम से अभिहित किया गया है। नगरी से 12 योजन पर अष्टावट या अष्टापद पहाड़ पर आदि-गुरु का कैवल्यस्थान माना गया है। इस ग्रन्थ में यह भी वर्णित है किअयोध्या के चारों द्वारों पर 24 जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित थीं। एक मूर्ति की चालुक्य नरेश कुमारपाल ने प्रतिष्ठापना की थी। इस ग्रन्थ में अयोध्या को दशरथ, राम और भरत की राजधानी बताया गया है। जैनग्रन्थों में अयोध्या को विनीता भी कहा गया है।

जैन ग्रंथ महापुराण (आदिपुराण) के अनुसार करोड़ों वर्ष पूर्व अयोध्या में पांच तीर्थंकरों के जन्म तो हुए ही हैं, साथ ही वहाँ अन्य अनेक इतिहास भी जुड़ें। अयोध्या में वर्तमान में रायगंज परिसर में 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। वहाँ प्रतिवर्ष चैत्रकृष्ण नवमी के दिन भगवान ऋषभदेव के जन्म कल्याणक दिवस का वार्षिक मेला आयोजित होता है। जिसमें हज़ारों श्रद्धालु भक्त भाग लेकर पुण्यलाभ प्राप्त करते हैं। अयोध्या में स्वर्गद्वार मोहल्ले में ऋषभदेव का सुन्दर जिन मंदिर बना है। वह भगवान का वास्तविक जन्म स्थानमाना जाता है। सरयू नदी के निकट ही भगवान ऋषभदेव उद्यान बहुत सुंदर बना हुआ है, जहाँ देश- विदेश के हज़ारों पर्यटक प्रतिदिन आकर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हैं।

राज डेविड्स के अनुसार

राज डेविड्स का कथन है कि दोनों नगर वर्तमान लंदन और वेस्टमिंस्टर के समान एक-दूसरे से सटे रहे होंगे जो कालान्तर में विकसित होकर एक हो गये। अयोध्या सम्भवतः प्राचीन राजधानी थी और साकेत परवर्ती राजधानी। विशुद्धानन्द पाठक भी राज डेविड्स के मत का समर्थनकरते हैं और परिवर्तन के लिए सरयू नदी की धारा में परिवर्तन या किसी प्राकृतिक कारण को उत्तरदायी मानते हैं, जिसके कारण अयोध्या का संकुचन हुआ और दूसरी तरफ़ नई दिशा में परवर्ती काल में साकेत का उद्भव हुआ।

साक्ष्य :

साक्ष्यों के अवलोकन से दोनों नगरों के अलग-अलग अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध हो जाती है तथा साकेत के परवर्ती काल में विकास की बात सत्य के अधिक समीप लगती है। इस सन्दर्भ में ई. जे. थामस रामायण की परम्परा को बौद्ध परम्परा की अपेक्षा उत्तरकालीन मानते हैं। उनकीमान्यता है कि पहले कोशल की राजधानी श्रावस्ती थी और जब बाद में कोशल का विस्तार दक्षिण की ओर हुआ तो अयोध्या राजधानी बनी, जो कि साकेत के ही किसी विजयी राजा द्वारा दिया हुआ नाम था।

पुरातत्त्वविदों का मत

कुछ पुरातत्त्वविदों यथा-प्रो. ब्रजवासी लाल तथा हंसमुख धीरजलाल साँकलिया ने रामायण इत्यादि में वर्णित अयोध्या की पहचान नगर की भौगोलिक स्थिति, प्राचीनता एवं सांस्कृतिक अवशेषों का अध्ययन किया, रामायण में वर्णित उपर्युक्त विवरणों के अन्तर की व्याख्या भी प्रस्तुत की है। इन दोनों विद्वानों का यह मत था कि पुरातात्विक दृष्टि से न केवल अयोध्या की पहचान की जा सकती है, रामायण में वर्णित अन्य स्थान यथा- नन्दीग्राम, श्रृंगवेरपुर, भारद्वाज आश्रम, परियर एवं वाल्मीकि आश्रम भी निश्चित रूप से पहचाने जा सकतेहैं। इस सन्दर्भ में प्रो. ब्रजवासी लाल द्वारा विशद रूप में किए गए पुरातात्विक सर्वेक्षण एवं उत्खनन उल्लेखनीय है। पुरातात्विक आधार पर प्रो. लाल ने रामायण में उपर्युक्त स्थानों की प्राचीनता को लगभग सातवीं सदीई. पू. में रखा। इस साक्ष्य के कारण रामायण एवं महाभारत कीप्राचीनता का जो क्रम था, वह परिवर्तित हो गया तथा महाभारत पहले का प्रतीत हुआ। इस प्रकार प्रो. लाल तथा साँकलिया का मत हेमचन्द्र राय चौधरी के मत से मिलता है। श्री रायचौधरी का भी कथन था कि महाभारत में वर्णित स्थान एवं घटनाएँ रामायण में वर्णित स्थान एवं घटनाओं के पूर्व की हैं।

मुनीश चन्द्र जोशी का मत :

श्री मुनीश चन्द्र जोशी ने प्रो. लाल एवं सांकलिया के इस मत की खुलकर आलोचना की, तथा तैत्तिरीय आरण्यक में उद्धृत अयोध्या के उल्लेख का वर्णन करते हुए यह मत प्रस्तुत किया-

जब तैत्तिरीय आरण्यक की रचना हुई, उस समय मनीषियों की नगरी अयोध्या एवं उसकी संस्कृति (अगर यह थी तो) को लोग पूर्णतः भूल गये थे। अयोध्या पूर्णतः पौराणिक नगरी प्रतीत होती है। आधुनिक अयोध्या और राम से इसका साहचर्य परवर्ती काल का प्रतीत होता है। इन आधारों पर श्री जोशी ने कहा कि वैदिक या पौराणिक सामग्री के आधार पर पुरातात्विक साक्ष्यों का समीकरण न तो ग्राह्य है और न ही उचित। उनका यह भी कथन था कि अधिकतर भारतीय पौराणिक एवं वैदिक सामग्री का उपयोग धर्म एवं अनुष्ठान के लिए किया गया था।ऐतिहासिक रूप से उनकी सत्यता संदिग्ध है।

प्रो ब्रजवासी लाल का मत :

श्री जोशी के मतों का खण्डन प्रो. ब्रजवासी लाल ने पुरातत्त्व में छपे अपने एक लेख में किया है। श्री लाल का कहना है कि श्री जोशी का प्रथम मत उनके तृतीय मत से मेल नहीं खाता। उनका कहना है कि प्रथम तो जोशी यह मानने को तैयार ही नहीं होते एवं द्वितीय यह

स्पष्ट नहीं हैकि राम एवं आधुनिक अयोध्या का सम्बन्ध किस काल में एवं कैसे जोड़ा गया। प्रो. लाल का कहना है कि अयोध्या शब्द न केवल तैत्तिरीय आरण्यक में है, बल्कि इसका उल्लेख अथर्ववेद में भी मिलता है। इसके विस्तृत अध्ययन से अयोध्या शब्द का प्रयोग अयोध्या नगरी से ही नहींबल्कि अजेय से लिया जा सकता है। तैत्तिरीय आरण्यक में वर्णित अयोध्या नगरी का समीकरण उन्होंने मनुष्य शरीर से किया है तथा श्रीमद्भागवदगीता में आए उस श्लोक का जिक्र किया है, जिसमें शरीर नामक नगर का वर्णन है। श्री लाल का कहना है कि तैत्तरीय आरण्यक,अथर्ववेद तथा श्रीमदभगवदगीता में शरीर के एक समान उल्लेख मिलते हैं। जिसमें कहा गया है कि देवताओं की इस स्वर्णिम नगरी के आठ चक्र (परिक्षेत्र) और नौ द्वार हैं, जो कि हमेशा प्रकाशमान रहता है। नगर के प्रकाशमान होने की व्याख्या मनुष्य के ध्यानमग्न होने के पश्चातज्ञान ज्योति के प्राप्त होने की स्थिति से की गई है। आठ चक्रों (परिक्षेत्रों) का समीकरण आठ धमनियों के जाल-नीचे की मूलधारा से शुरू होकर ऊपर की सहस्र धारा तक-से की गई है। नवद्वारों का समीकरण शरीर के नवद्वारों-दो आँखें, नाक के दो द्वार, दो कान, मुख, गुदा एवंशिश्न- से किया गया है।

प्रो. ब्रजवासी लाल ने श्री मुनीशचन्द्र जोशी के शोधपत्र एवं सम्बन्धित सामग्री का विस्तृत विवेचन करके अपने इस मत का पुष्टीकरण किया कि आधुनिक अयोध्या एवं रामायण में वर्णित अयोध्या एक ही है। यदि पुरातात्विक सामग्री एवं रामायण में वर्णित सामग्री में मेल नहीं खातातो इसका अर्थ यह नहीं कि अयोध्या की पहचान ग़लत है या कि वह पौराणिक एवं काल्पनिक नगर था। वास्तव में दोनों सामग्रियों के मेल न खाने का मुख्य कारण रामायण के मूल में किया गया बार-बार परिवर्तन है।

चीनी यात्रियों का यात्रा विवरण

चीनी यात्री फ़ाह्यान ने अयोध्या को शा चेनाम से अभिहित किया है। उसके यात्रा विवरण में इस नगर का अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन मिलता है। फ़ाह्यान के अनुसार यहाँ बौद्धों एवं ब्राह्मणों में सौहार्द नहीं था। उसने यहाँ उन स्थानों को देखा था, जहाँ बुद्ध बैठते थे और टहलते थे। इसस्थान की स्मृतिस्वरूप यहाँ एक स्तूप बना हुआ था।

ह्वेन त्सांग

ह्वेन त्सांग नवदेवकुल नगर से दक्षिण पूर्व 600 ली यात्रा करके और गंगा नदी पार करके अयुधा (अयोध्या) पहुँचा था। यह सम्पूर्ण क्षेत्र 5000 ली तथा इसकी राजधानी 20 ली में फैली हुई थी। यह असंग एवं बसुबंधु का अस्थायी निवास स्थान था। यहाँ फ़सलें अच्छी होती थीं और यह सदैव प्रचुर हरीतिमा से आच्छादित रहता था। इसमें वैभव शाली फलों के बाग़ थे तथा यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यवर्धक थी। यहाँ के निवासी शिष्ट आचरण वाले, क्रियाशील एवं व्यावहारिक ज्ञान के उपासक थे। इस नगर में 100 से अधिक बौद्ध विहार और 3000 से अधिक भिक्षुक थे, जोमहायान और हीनयान मतों के अनुयायी थे। यहाँ 10 देव मन्दिर थे, जिनमें अबौद्धों की संख्या अपेक्षाकृत कम थी।

ह्वेन त्सांग लिखते हैं कि नगर के उत्तर 40 ली दूरी पर गंगा के किनारे एक बड़ा संघाराम था, जिसके भीतर अशोक द्वारा निर्मित एक 200 फुट ऊँचा स्तूप था। यह वही स्थान था जहाँ पर तथागत ने देव समाज के उपकार के लिए तीन मास तक धर्म के उत्तमोत्तम सिद्धान्तों काविवेचन किया था। इस विहार से 4-5 ली पश्चिम में बुद्ध के अस्थियुक्त एक स्तूप था। जिसके उत्तर में प्राचीन विहार के अवशेष थे, जहाँ सौतान्त्रिक सम्प्रदाय सम्बन्धी विभाषा शास्त्र की रचना की गई थी।ह्वेन त्सांग के अनुसार राजधानी में एक प्राचीन संघाराम था। यह वह स्थान हैजहाँ देशबंधु ने कठिन परिश्रम से विविध शास्त्रों की रचना की थी। इन भग्नावशेषों में एक महाकक्ष था। जहाँ पर बसुबंधु विदेशों से आने वाले राजकुमारों एवं भिक्षुओं को बौद्धधर्म का उपदेश देते थे। ह्वेन त्सांग के अनुसार नगर के दक्षिण-पश्चिम में 5-6 ली की दूरी पर एक आम्रवाटिका में एक प्राचीन संघाराम था। यह वह स्थान था जहाँ असङ्ग.बोधिसत्व ने विद्याध्ययन किया था। आम्रवाटिका से पश्चिमोत्तर दिशा में लगभग 100 क़दम की दूरी पर एक स्तूप था, जिसमें तथागत के नख और बाल रखे हुए थे। इसके निकट ही कुछ प्राचीन दीवारों की बुनियादें थीं। यह वही स्थान है जहाँ पर वसुबंधु बोधिसत्व तुषित स्वर्ग से उतरकर असङ्ग.बोधिसत्व से मिलतेथे।

पुरातात्विक उत्खनन

भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास को समझने में पुरातात्विक साक्ष्यो का बड़ा महत्व है। उत्खनन से ही प्राचीन सभ्यताओ के बारे में आज का मनुष्य जान सका है। अयोध्या के सीमित क्षेत्रों में पुरातत्त्ववेत्ताओं ने उत्खनन कार्य किए। इस क्षेत्र का सर्वप्रथम उत्खनन प्रोफ़ेसर अवध किशोर नारायण के नेतृत्व में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के एक दल ने 1967-1970 में किया। यह उत्खनन मुख्यतः जैन घाट के समीप के क्षेत्र, लक्ष्मण टेकरी एवंनल टीले के समीपवर्ती क्षेत्रों में हुआ। उत्खनन से प्राप्त सामग्री को तीन कालों में विभक्त किया गया है-

प्रथम काल

उत्खनन में प्रथम काल के उत्तरी काले चमकीले मृण्भांड परम्परा (एन. बी. पी., बेयर) के भूरे पात्र एवं लाल रंग के मृण्भांड मिले हैं। इस काल की अन्य वस्तुओं में मिट्टी के कटोरे, गोलियाँ, ख़िलौना, गाड़ी के चक्र, हड्डी के उपकरण, ताँबे के मनके, स्फटिक, शीशा आदि के मनके एवंमृण्मूर्तियाँ आदि मुख्य हैं।

दूसरा काल

इस काल के मृण्भांड मुख्यतः ईसा के प्रथम शताब्दी के हैं। उत्खनन से प्राप्त मुख्य वस्तुओं में मकरमुखाकृति टोटी, दावात के ढक्कन की आकृति के मृत्पात्र, चिपटे लाल रंग के चपटे आधारयुक्त लम्बवत धारदार कटोरे, स्टैंप और मृत्पात्र खण्ड आदि हैं।

तृतीय काल

इस काल का आरम्भ एक लम्बी अवधि के बाद मिलता है। उत्खनन से प्राप्त मध्यकालीन चमकीले मृत्पात्र अपने सभी प्रकारों में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त काही एवं प्रोक्लेन मृण्भांड भी मिले हैं। अन्य प्रमुख वस्तुओं में मिट्टी के डैबर, लोढ़े, लोहे की विभिन्न वस्तुएँ, मनके, बहुमूल्यपत्थर, शीशे की एकरंगी और बहुरंगी चूड़ियाँ और मिट्टी की पशु आकृतियाँ (विशेषकर चिड़ियों की आकृति) हैं।

अयोध्या के कुछ क्षेत्रों का पुनः उत्खनन

अयोध्या के कुछ क्षेत्रों का पुनः उत्खनन दो सत्रों 1975-1976 तथा 1976-1977 में ब्रजवासी लाल और के. वी. सुन्दराजन के नेतृत्व में हुआ। यह उत्खनन मुख्यतः दो क्षेत्रों- रामजन्मभूमि और हनुमानगढ़ी में किया गया। इस उत्खनन से संस्कृतियों का एक विश्वसनीय कालक्रमप्रकाश में आया है। साथ ही इस स्थान पर प्राचीनतम बस्ती के विषय में जानकारी भी मिली है। उत्खनन में सबसे निचले स्तर से उत्तर कालीन चमकीले मृण्भांड एवं धूसर मृण्भांड परम्परा के मृत्पात्र मिले हैं। धूसर परम्परा के कुछ मृण्भांडों पर काले रंग में चित्रकारी भी मिलती है।

हनुमानगढ़ी क्षेत्र में उत्खनन

हनुमानगढ़ी क्षेत्र से भी उत्तरी काली चमकीली मृण्भांड संस्कृति के अवशेष प्रकाश में आए हैं। साथ ही यहाँ अनेक प्रकार के मृतिका वलय कूप तथा एक कुएँ में प्रयुक्त कुछ शंक्वाकार ईंटें भी मिली हैं। उत्खनन से बड़ी मात्रा में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ मिली हैं, जिनमें मुख्यतः आधादर्जन मुहरें,70 सिक्के, एक सौ से अधिक लघु मृण्मूर्तियाँ आदि उल्लेखनीय हैं। इस उत्खनन में सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि आद्य ऐतिहासिक काल के रोलेटेड मृण्भांडों की प्राप्ति है। ये मृण्भांड प्रथम, द्वितीय शताब्दी ई. के हैं। इस प्रकार के मृण्भांडों की प्राप्ति से यह सिद्ध होता है कि तत्कालीन अयोध्या में वाणिज्य और व्यापार बड़े पैमाने पर होता था। यहव्यापार सरयू नदी के जलमार्ग द्वारा गंगा नदी से सम्बद्ध था।

आद्य ऐतिहासिक काल के पश्चात यहाँ के मलबों और गड्ढों से प्राप्त वस्तुओं के आधार पर व्यावसायिक क्रम में अवरोध दृष्टिगत होता है। सम्भवतः यह क्षेत्र पुनः11वीं शताब्दी में अधिवासित हुआ। यहाँ से उत्खनन में कुछ परवर्ती मध्यकालीन ईंटें, कंकड़, एवं चूने की फ़र्श आदि भीमिले हैं। अयोध्या से 16 किलोमीटर दक्षिण में तमसा नदी के किनारे स्थित नन्दीग्राम में भी श्री ब्रजवासी लाल के नेतृत्व में उत्खनन कार्य किया गया। उल्लेख है कि राम के वनगमन के पश्चात् भरत ने यहीं पर निवास करते हुए अयोध्या का शासन कार्य संचालित किया था। यहाँ केसीमित उत्खनन से प्राप्त वस्तुएँ अयोध्या की वस्तुओं के समकालीन हैं।

सीमित क्षेत्र में उत्खनन

1981- 1982 ई. में सीमित क्षेत्र में उत्खनन किया गया। यह उत्खनन मुख्यतः हनुमानगढ़ी और लक्ष्मणघाट क्षेत्रों में हुआ। इसमें 700से 800 ई. पू. के कलात्मक पात्र मिले हैं। श्री लाल के उत्खनन से प्रमाणित होता है कि यह बौद्ध काल में अयोध्या का महत्त्वपूर्ण स्थान था। बुद्ध रश्मि मणि और हरि माँझी के नेतृत्व में

नमूना सख्या नमूनों की तिथि पुर्नगणना वर्ष में

संख्या-7, अयोध्या-1, 2152 जी-7 (16) 9.15 मीटर 2830 100 बी. पी. (880 ई. पू.) 1190- 840 ई. पू.

संख्या-8, अयोध्या-1, 2153 जी-7 (19) 11.00 मीटर 2860 100 बी. पी. (910 ई. पू.) 1210- 900 ई. पू.

संख्या-9, अयोध्या-1, 2154 जी-7 (20) 11.53 मीटर 3200 130 बी. पी. (1250 ई. पू.) 1680-1320 ई. पू.

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा बुद्ध रश्मि मणि और हरि माँझी के नेतृत्व में 2003 ईसवी में रामजन्म भूमि क्षेत्र में उत्खनन कार्य किया गया। यह उत्खनन कार्य सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश परवर्ष 2002से संचालित हुआ। उत्खनन से पूर्व उत्तरी कृष्णपरिमार्जित संस्कृति से लेकर परवर्ती मुग़लकालीन संस्कृति तक के अवशेष प्रकाश में आए। प्रथम काल के अवशेषों एवं रेडियो कार्बन तिथियों से यह निश्चित हो जाता है कि मानव सभ्यता की कहानी अयोध्या में 1300 ईसा पूर्व से ही प्रारम्भ होती है।

मनु ही मानव समाज के आदि पुरुष

महर्षि मनु ही पहले व्यक्ति है जिन्होंने एक व्यवस्थित बी, नियमबद्ध, नैतिक आदर्श मानवीय जीवन जीने की पद्धति सिखाई है। मनु ही वह धर्म गुरु है जिन्होंने यज्ञ परम्परा का प्रवर्तन किया। उनके द्वारा रचित धर्मशास्त्र, जिसको की आज मनुस्मृति के नाम से जाना जाता है, सबसे प्राचीन स्मृति ग्रन्थ है। इतिहास उठा कर देख लीजिये वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक काल तक एक परम्परा उन शास्त्रकारो, साहित्यकारों, लेखको, कवियों और राजाओं की मिलती है जिन्होंने मुक्तकंठ से मनु की प्रशंशा की है। वैदिक5 संहिताओ एवं ब्राह्मण ग्रंथो में मनु की वचनों को ' औषध के समान हितकारी और गुणकारी कहा है '। महर्षि बाल्मीकि रामायण में मनु को एक प्रमाणिक धर्म शास्त्रज्ञ के रूप में उद्धत ठहराते है और श्री राम अपने आचरण को शास्त्र सम्मत सिद्ध करने के लिए उसके समर्थ में मनु के श्लोको को उद्धत करते है। महाभारत में अनेक स्थानों पर उनके धर्म शास्त्र को परीक्षा सिद्ध घोषित किया है। अनेक पुरानो में उन्हें आदि राजऋषि, शास्त्रकार आदि विशेषणों से विभूषित किया है। निरुक्त में आचार्य यास्क ने मनु के मत को उद्धत करके पुत्र पुत्री के समान दायभाग के विषय में प्रमाणिक माना है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में चाणक्य ने मनु के मत को प्रमाण रूप में उद्धत किया है। स्मृतिकार बृहस्पति मनु की स्मृति को सबसे प्रमाणित मान कर

विरुद्ध समृतियो को अमान्य घोषित करते है । बौद्ध कवी अश्वघोष ने अपनी कृति ' वज्रकोपनिषद ' में मनु के प्रमाणों को प्रमाण रूप माना है । याज्ञवल्क्य स्मृति मनु स्मृति पर ही आधारित है । श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, डाक्टर राधाकृष्णन, जवाहरलाल नेहरु आदि राष्ट्र नेताओं ने मनु को आदि **'लॉ गिवर'** के रूप में उल्लिखित किया है । अनेक कानुनविदो जस्टिस डी एन मुल्ला, एन राघवाचार्य आदि ने स्वरचित हिन्दू लॉ सम्बन्धी ग्रंथो में मनु के विधान को ' अथारिटी ' घोषित किया है । मनु के मंतव्यो का समर्थन करते हुए अपनी पुस्तकों में मैक्समुलर, ए ए मैकडोनाल्, ए बी कीथ, पी थॉमस आदि पाश्चत्य लेखको ने मनु स्मृति को धर्म शास्त्र के साथ साथ एक लॉ बुक भी माना है। जर्मन के प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रीडरिच नीत्से ने तो यहाँ तक कहा है की ' मनुस्मृति बाइबिल से उत्तम ग्रन्थ है ' बल्कि ' उससे बाइबिल की तुलना करना भी पाप है ' कहने का तात्पर्य यह है की मनुस्मृति को पूरी दुनिया के विद्वानों ने महत्व दिया है । यदि मनुस्मृति न होती तो न ही न्याय व्यवस्था न अर्थ व्यवस्था न कर्म व्यवस्था अर्थात कोई भी व्यवस्था नहीं होती। लव ने बसाया लाहौर और कुसूर थी कुश की राजधानी धर्माचार्य और इतिहासवेत्ता कहते हैं कि पाकिस्तान के लाहौर शहर को भगवान राम के पुत्र लव ने बसाया था। वहां सनातन धर्मियों ने हजारों साल तक वैष्णव धर्म का झंडा फहराया। यहाँ से कुछ दूर स्थित कुसूर नगर को कुश द्वारा बसाया गया माना जाता है। इस बारे में कई अभिलेख भी सामने आये है। लाहौर पुराने पंजाब की राजधानी है जो रावी नदी के दाहिने तट पर बसा हुआ है। यह बहुत प्राचीन नगर है। लाहौर, कराची के बाद पाकिस्तान में दूसरा सबसे ज्यादा आबादी वाला शहर है। इसे पाकिस्तान का दिल भी कहा जाता है क्योंकि इस शहर का इतिहास, संस्कृति एवं शिक्षा में अत्यंत समृद्ध रहा है।

पाकिस्तान में इसे बागों के शहर के रूप में भी जाना जाता है। लाहौर को संभवतः ईसवी सन् की प्रारम्भिक शताब्दियों में बसाया गया था और सातवीं शताब्दी ई. में यह इतना महत्त्वपूर्ण था कि उसका उल्लेख चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने किया है। शत्रुंजय के एक अभिलेख में लवपुर या लाहौर को लामपुर कहा गया है। लाहौर शहर रावी एवं वाघा नदी के तट पर भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्थित है।

मान्यताओं के अनुसार लाहौर नगर का प्राचीन नाम लवपुर या लवपुरी था, और इसे श्रीरामचन्द्र के पुत्र लव ने बसाया था। कहते हैं कि लाहौर के पास स्थित कुसूर नामक नगर को लव के बड़े भाई कुश ने बसाया था। लाहौर के पंजाब विश्वविद्यालय में 8671 संस्कृत-हिंदी की पांडुलिपियां पुस्तकालय में आज भी सुरक्षित हैं। यहां अरबी, फरसी, तुर्की, उर्दू और क्षेत्रीय भाषाओं की कुल बाइस हजार पांडुलिपियां रखी हैं। काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी संस्कृत ने इस संबंध में महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की हैं। पौराणिक दृष्टि से माना जाता है कि यह नगर भगवान श्रीरामचंद्र के पुत्र लव ने बसाया था। लाहौर किले के अंदर उनका मंदिर है। लाहौर सांस्कृतिक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। ब्रह्मर्षि प्रचेता के पुत्र हैं बाल्मीकि सृष्टि के आदि कवि और श्रीमद रामायण के रचयिता ब्रह्मर्षि बाल्मीकि कोई चोर अथवा डाकू नहीं है। हमारे आदि कवि वास्तव में ब्रह्मर्षि प्रचेता के पुत्र हैं। वरुण देव का ही एक नाम प्रचेता भी है। बाल्मीकि जी इन्ही के दसवे पुत्र है। इन्होने अयोध्या के दक्षिण तमसा नदी के तट पर अपना आश्रम स्थापित किया था। प्रभु श्रीराम ने जब सीता जी को वनवास दिया तब वह इन्ही बाल्मीकि जी के आश्रम में आ कर रही थी। श्रीमद रामायण जी में ही बाल्मीकि जी ने अपना पूरा परिचय लिखा है। जब वह सीता जी को लेकर राम के दरबार में पहुचाते है तब वह स्वयं कहते है कि राम, आपकी सीता उतनी ही पवित्र है जितना आपकी अपेक्षा है। मैंने अपने जीवन में न तो कभी झूठ बोला है और ना ही किसी प्रकार का कोई गलत कार्य किया है। ऐसे में यदि सीता में कोई भी दोष हो तो वह सारा पाप मुझे लग जाय। स्वयं पर इतना आत्मविश्वास करने वाले बाल्मीकि जी कि बात पर प्रभु श्री राम भी चकित है। बाल्मीकि जी लव, कुश और सीता जी को लेकर श्री राम के पास आये है। यहाँ वह अपना परिचय भी देते है कि मै प्रचेता का दसवा पुत्र बाल्मीकि हूँ। अब यह स्वयं प्रमाण है कि रामायण के रचयिता बाल्मीकि कभी डाकू नहीं थे। इस प्रसंग को जगतगुरु स्वामी राघवाचार्य जी महाराज ने भी विस्तार से व्याख्यायित किया है।

अब यह प्रश्न सामने आता है कि वह बाल्मीकि कौन थे जो डाकू थे। इस बारे में श्रीमद रामायण के स्थापित भाष्यकार आचार्य नागेश भट्ट ने लिखा है कि एक ही समय में दो बाल्मीकि हुए है। एकबाल्मीकि वह है जो तमसा के तट पर रहते थे। उन्होंने ही रामायण कि रचना की। दूसरे बाल्मीकि वह है जो चित्रकूट में राम से मिले थे। वह बाल्मीकि किसी ऋषि या ब्रह्मर्षि के पुत्र नहीं थे बल्कि पहले दस्यु थे और नारद जी से मिलने के बाद सन्यासी बने। इस प्रकार से यह भ्रान्ति अब दूर कर लेने की आवश्यकता है कि सृष्टि के आदि कवि बाल्मीकि पहले चोर या डाकू रहे थे। ऐसा समझना आदिकवि का अपमान होगा।

यह आज जो अयोध्या है आज की अयोध्या चाहे जैसी हो पर वैसी नहीं है जैसी मनु के समय रही होगी। सृष्टि के साथ ही पृथ्वी पर उतारी गयी अयोध्यापुरी का वर्त्तमान बहुत ही विकृत हो चुका है। अयोध्या की प्रकृति और संस्कृति के बीच विकृति की खाई काफी गहरी हो गयी है। जिस अयोध्या पर श्रीराम के शासन का वैभव सभी वांग्मय गाते नहीं थकते है उसी अयोध्या में उसी राम की प्रातिमा को एक छत इसलिए नसीब नहीं हो पा रही क्योकि राम के ही वंशजो में उसी राम के जन्मस्थल को लेकर झगड़ा चल रहा है। अयुधा, अर्थात जहां कभी युद्ध न हो, वैसी अयोध्या ने पिछली सदी के उत्तरार्ध में भयकर खून खराबा भी देख लिया। जिस अयोध्या में राम के काल में किसी प्रकार के दैहिक, दैविक, भौती ताप का प्रकोप नहीं होता था उस अयोध्या में आज बहुत विकृतियां भरी पड़ी है। अयोध्या का

दुर्भाग्य यह रहा की पिछले लगभग एक हज़ार साल से अधिक समय में भारत पर होने वाले हरेक विदेशी आक्रमण की मार इसे झेलनी पड़ी है। यहाँ श्रुति परम्परा में युगों से चलती आने वाली ज्ञान की धारा को इन आक्रमणों ने बहुत नुक्सान पहुचाया। परिणाम यह हुआ की जिस अयोध्या से ज्ञान लेकर संसार प्रकाशमान होता था उस अयोध्या के ज्ञान के पुंज विलुप्तप्राय हो चुके है। अब भारत की आधुनिक ताहाकाथित मेधा पश्चिम के कथित प्रगतिशील आख्यानों को आधार बना कर मानव सभ्यता और विकास की कहानी पढ़ और पढ़ा रही है।

सन्दर्भ :

01- अयोध्या मथुरा माया काशी काचिरवन्तिका, पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिकाः बालकाण्ड 5, 6 के अनुसार

02- वाल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड 108, 4

03- रघु वंश सर्ग 16

04- अयोध्यां तु धर्मज्ञं दीर्घयज्ञं महाबलम्, अजयत् पांडवश्रेष्ठो नातितीव्रेणकर्मणा- सभापर्व 30-2

05- जातक संख्या 454

06- रायसडेवीज बुद्धिस्ट इंडिया, पृष्ठ 39

07-ब्रह्म पुराण,2। 1-33"

08- श्रीमद् भागवत, तृतीय स्कंध, 12। 52-56। 13

09-(ऋग्वेद 1.80, 16;8.63,1;10.100,5) 14.2,41; तैत्ति. संहिता1.5,1,3;7.5,15,3;6,7,1;3, 3,2,1;5.4,10,5;6.6,6,1;शतपथ ब्राह्मण 1.1,4,14)

10- ऋग्वेद 8.52,1)"

11- (अथर्ववेद 8.10,24)"

12- (ऋग्वेद 8.51,1)"

13- विष्णु पुराण

14- एस. सी. डे, हिस्टारिसिटी ऑफ़ रामायण एंड दि इंडो आर्यन सोसाइटी इन इंडिया एंड सीलोन (दिल्ली, - अजंता पब्लिकेशंस, पुनर्मुदित, 1976), पृष्ठ 80-81

15- ऐतरेय ब्राह्मण, 7/3/1; देखें, ज. रा. ए. सो, 1971, पृष्ठ 52 (पादटिप्पणी #39; सूतमागधसंबाधां श्रीमतीमतुलप्रभाम्, उच्चाट्टालध्वजवतीं शतघ्नीशतसंकुलाम् #39; बालका 5, 11

16- नंदूलाल डे, दि जियोग्राफ़िकल डिक्शनरी ऑफ़, ऐंश्येंट एंड मिडिवल इंडिया, पृष्ठ 14

17- जेम्स लेग्गे, दि ट्रैवेल्स ऑफ़ फ़ाह्यान ओरियंटल पब्लिशर्स, दिल्ली, पुनर्मुद्रित 1972, पृष्ठ 54

18- जी पी मललसेकर, डिक्शनरी ऑफ़ पालि प्रापर नेम्स, भाग 2 पृष्ठ 1086

19- नलिनाक्ष दत्त एवं कृष्णदत्त बाजपेयी, उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास (प्रकाशन ब्यूरो, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 1956) पृष्ठ 7 एवं 12

20-थेरगाथा अट्ठकथा, भाग 1, पृष्ठ 103

21-#39;जलानि या तीरनिखातयूपा वहत्ययोध्यामनुराजधानीम्
#39; रघु वंश 13, 61;
#39;आलोकयिष्यन्मुदितामयोध्यां प्रासादमभ्रंलिहमारुरोह
#39;- रघु वंश 14, 29

22- रघु वंश 5,31; 13,62

23-कोसलो नाम मुद्रितः स्फीतो जनपदो महान्, निविष्टः सरयूतीरे परभूत धनधान्यवान (रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 5, पंक्ति 5 'मनुना मानवेंद्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्य। तत्रैव, पंक्ति 12

24-विनोदविहारी दत्त, टाउन प्लानिंग इन ऐश्येंट इंडिया (कलकत्ता, थैंकर स्पिंक एंड कं., 1925), पृष्ठ 321- 322; विविध तीर्थकल्प, अध्याय 34

25-आयता दश च द्वे योजनानि महापुरो, श्रीमती त्रणि विस्तीर्ण सुविभक्तमहापथा। रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 5, पंक्ति 7

26-द्वादशयोजनायामां नवयोजन विस्तृताम्। अयोध्येल्यपराभिख्यां विनीतां सोऽकरोत्पुरीम्।। त्रिशस्तिसलाकापुरुशचरित, पर्व। अध्याय 2, श्लोक 912

27- ए. कनिंघम, ऐश्येंट ज्योग्राफ़ी ऑफ़ इंडिया (इंडोलाजिकल बुक हाउस, 1963), पृष्ठ 342

28- मललसेकर, डिक्शनरी ऑफ़ पालि प्रापर नेम्स, भाग 1, पृष्ठ 165

29- संयुक्तनिकाय (पालि टेक्ट्स सोसाइटी), भाग 3, पृष्ठ 140 और आगे तत्रैव, भाग 4, पृष्ठ 179 अध्याय 5, श्लोक 31

30- आदि पुराण 12, पृष्ठ 77; विविधतीर्थकल्प, पृष्ठ 55; विशुद्धानंद पाठक, हिस्ट्री ऑफ़ कोशल (मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी 1963 ई.) पृष्ठ 55

31- ऐलक्जेंडर कनिंघम, ऐश्येंट ज्योग्राफ़ी ऑफ़ इंडिया (इंडोलाजिकल बुक हाउस, वाराणसी, 1976), पृष्ठ 405

32- नंदूलाल डे, दि जियोग्राफ़िकल डिक्शनरी ऑफ़ ऐश्येंट एंड मिडिवल इंडिया, पृष्ठ 174

33- फर्गुसन, आर्कियोलाजी इन इंडिया, पृष्ठ 110

34- बी. ए. स्मिथ, ज. रा. ए. सो., 1898, पृष्ठ 124

35- विलियम होवी, ज. ऐ. सो. ब., 1900 पृष्ठ 75

36- डब्ल्यू, बोस्ट, ज. रा. ए. सो., 1906, पृष्ठ 437 और आगे

37- भरतसिंह उपाध्याय, बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 2018), पृष्ठ 254

38- आवस्सक कमेंट्री, पृष्ठ 24

39- राज डेविड्स, बुद्धिस्ट इंडिया, पृष्ठ 39

40- हेमचन्द्र राय चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, (किताब महल, इलाहाबाद, 1976 ई.), पृष्ठ 91

41- विशुद्धानंद पाठक, हिस्ट्री ऑफ़ कोशल, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1963, पृष्ठ 58

42- ई. जे. थामस, दि लाइफ़ ऑफ़ बुद्ध ऐज लीजेंड इन हिस्ट्री, (स्टलेज एंड केगन पाल लिमिटेड, लन्दन, तृतीय संस्करण, पुनर्मुद्रित, 1952), पृष्ठ 15

43- ब्रजवासी लाल, आर्कियोलाजी एंड टू इंडियन इपिक्स, एनल्स ऑफ़ दि भण्डारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, जिल्द 54, 1973 ई.

44- हंसमुख धीरजलाल साँकलिया, रामायण मिथ आर रियलिटी, नई दिल्ली, 1973 ई.

45- हेमचन्द्र राय चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, पृष्ठ 7

46- मुनीशचन्द्र जोशी आर्कियोलाजी एंड इंडियन ट्रेडिशंस, सम आब्जर्वेशन, पुरातत्त्व, जिल्द 8, 1978 ई. पू., पृष्ठ 89-102

47- तैत्तिरीय आरण्यक 1/27 अष्टाचक्र नवद्वारा देवनां पुरयोध्यां तस्याम् हिरन्म्यकोशाह स्वर्गलोको जयोतिषावृतः यो वयताम् ब्रह्ममनो वेद अमृतेनावृतमपुरीम् तस्मै ब्रह्म च आयुः कीर्तिम् प्रजाम् यदुह विभ्राजमानाम् हरिणीम् यशशा संपरीवृत्ताम् पुरम् हिरण्यमयोम् ब्रह्माविवेशापराजिताम्।

48- ब्रजवासी लाल, बाज अयोध्या ए मिथिकल सिटी, पुरातत्त्व, जिल्द 10, पृष्ठ 47

49- अथर्ववेद, 10/2/28-33

50- श्रीमद्भागवदगीता, 5/13

51- पूर्वउल्लेखित, 1/27

52- पूर्वउल्लेखित, पुरातत्त्व, जिल्द 10, पृष्ठ 47

53- पूर्वउल्लेखित, पुरातत्त्व, जिल्द 8, पृष्ठ 98-102

54- जेम्स लेग्गे, दि ट्रैवेल्स ऑफ़ फ़ाह्यान, (ओरियंटल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1972), पृष्ठ 54-55

55- थामस वाटर्स, ऑन युवॉन च्वाँग्स ट्रैवेल्स इन इंडिया, भाग 1, पृष्ठ 355

56- बसुबंधु का अध्यापन एवं परिश्रम आदि अयोध्या में ही हुआ था।

57- थामस वाटर्स, ऑन युवॉन च्वाँग्स ट्रैवेल्स इन इंडिया, भाग 1, पृष्ठ 357

58- इ. आ. रि., 1959-70, पृष्ठ 40-41

59- इ. आ. रि. 1976-77, पृष्ठ 52

60- हरि माँझी और बी. आर. मणि, अयोध्या 2002-2003, एक्सकैवेशन्स ऐट दी "डिस्प्यूटेड साइट" भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, नई दिल्ली, 2003, छाया प्रति।

61- कार्बन-4 के अर्द्धजीवन पर आधारित (5570 30 वर्ष

62- #39; जलानि या तीरनिखातयूपा वहत्ययोध्यामनुराजधानीम्
#39; रघु वंश 13, 61;
#39;आलोकयिष्यन्मुदितामयोध्यां प्रासादमभ्रंलिहमारुरोह #39;- रघु वंश 14, 29

63- रघु वंश 5,31; 13,62

64- कोसलो नाम मुद्रितः स्फीतो जनपदो महान्, निविष्टः सरयूतीरे प्रभूत धनधान्यवान (रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 5, पंक्ति 5

65- #39;मनुना मानवेंद्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्य। तत्रैव, पंक्ति 12

66- विनोदविहारी दत्त, टाउन प्लानिंग इन ऐश्येंट इंडिया (कलकत्ता, थैंकर स्पिंक एंड कं., 1925), पृष्ठ 321-322; विविध तीर्थकल्प, अध्याय 34

67- आयता दश च द्वे योजनानि महापुरो, श्रीमती त्रणि विस्तीर्ण सुविभक्तमहापथा। रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 5, पंक्ति 7

68- अद्भुत भारत : ए एल वाशम

69- प्रो आर आर पांडेय , भारतीय दर्शन

70- प्रो विस्वमभारशरण पाठक , प्राचीन भारत

71- स्वामी अखंण्डानन्द सरस्वती , श्री राम कथा एवं श्रीमद भागवत

72- महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द जी , श्री राम कथा एवं श्रीमद भगवत

73- जगतगुरु स्वामीराघवाचार्य जी , श्रीमद बाल्मीकीय रामायण

74- श्री रामकथा , स्वामी रामकिंकर जी

75- श्रीमद रामचरित मानस , गोस्वामी तुलसी दास

76- संस्कृति के चार अध्याय , रामधारी सिंह दिनकर

77- साकेत , मैथिलीशरण गुप्त।

मेरे राम

भारत की सांस्कृतिक चेतना राममय रही है। आजादी के आन्दोलन की चेतना का मूल मंत्र राम है। इसलिए रघुपति राघव राजाराम मूल अर्थों में लोक मंत्र बना। स्वाधीनता संग्राम में वाहे गुरू श्री गुरूगोविन्द सिंह की सेना ने सन् 1858 में अयोध्या में धावा बोलकर ''मस्जिदें'' जन्मभूमि की दीवार पर राम राम लिखा था जिसे तत्कालीन कोतवाल शीतला प्रसाद दुबे ने थाना-रिपोर्ट में लिखा है।

कैप्टन सुभाष ओझा

"राम भारत के रोम रोम में हैं। भारत के लोक में राम हैं, भारत की साँस में राम हैं, भारत की मिट्टी, हवा, जल में राम हैं। राम भारत की सम्पदा, वैभव, यष, मर्यादा जीवन पद्वति हैं। मुस्लिम तुष्टीकरण का परिणाम संप्रदाय जनित वातावरण की गर्माहट से नये युग के प्रारम्भ होने की दिषा में एक नये अध्याय की ओर हिन्दू संगठन बढ़ने लगा जिसकी परिणति राम रथ यात्रा ने भारत की राजनीति के नये आयाम गढ़ने लगे, भारत की मौलिक राष्ट्रीय चेतना को आगे नेतृत्व मिला।"

संयोजक, नदी संरक्षण, लोकभारती
9415217404

कालखण्ड अपनी गति से बढ़ता रहा, प्रति सोपान राम हमारी आस्था है। यह मंत्र जाप अनवरत होता रहा है। मीरबाकी ने स्वयं लिखा ''यह फरिश्ते के उतरने की जगह है''।

30 दिसम्बर 1949 मूर्तियों का प्रकाट्य हुआ, राम की धुन धड़कन बन धड़कने लगी। राम आस्था है, राम मर्यादा है, राम सभ्यता है, राम संस्कृति है, राम भाषा है, राम जन्म में है, राम मृत्यु में, राम मोक्ष है, राम अध्यात्म है।

12 वर्ष में कुछ माह शेष थे- 19 दिसम्बर 1961 को विवाद का जन्म होता है, श्रीराम के जन्म के 7100 वर्ष बाद भूमि विवाद का मुस्लिम पक्ष द्वारा मुकदमा दायर होता है।

इस समय भारतीय राजनीति में मुस्लिम तुष्टीकरण शुरू हो गया था। अबुल कलाम आजाद को शिक्षा मन्त्री नेहरू ने बनाया था इसलिए अकबर महान मजबूरी में पढ़ना पड़ा। तेजोमय मन्दिर से ताजमहल और वाराह मिहिर की दूरबीन को कुतुबमीनार पढ़ाया जाने लगा। क्योंकि कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण में लगी थी- सभी स्थानों में नामों की पट्टिका गाँधी, नेहरू परिवार तक सिमटी रही। आजादी के शहीदों को भी याद नहीं किया जा रहा था। आजादी के 25 वर्षों में ही जनता जनांदोलन के लिए तैयार हो रही थी। आपातकाल के दौरान जनान्दोलन हिन्दुत्व संगठनों और विपक्षी संगठनों को देशहित में एक साथ आने में स्वाभाविक सरलतापूर्वक संयुक्त संगठन बना।

राजीव गाँधी ने शाहबानो प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को वापस लेने के उपरान्त हिन्दुत्व संगठन ने समाज का आह्वान कर दिया। अब हिन्दुत्व राष्ट्रीय पटल पर स्थापित होने की ओर बढ़ने लगा।

मनुष्यता में आम तत्व राम हैं

ब्रह्मा के पुत्र प्रचेता थे उनके दसवें पुत्र बाल्मीकि जी जिनको नारद जी ने राम कथा सुनायी और राम के जीवन काल में रामायण लिखी गयी। बाल्मीकि जी सीता और लव कुष को लेकर अयोध्या आते हैं- राजाराम से कहते हैं ''मैं प्रचेता पुत्र कहता हूँ'' सीता उतनी पवित्र है, जितना मेरे पुण्य और यदि ऐसा ना हो तो मेरे समस्त पुण्य क्षीण हो जाएं। राम भारत के रोम रोम में हैं। भारत के लोक में राम हैं, भारत की सांस में राम हैं, भारत की मिट्टी, हवा, जल में राम हैं। राम भारत की सम्पदा, वैभव, यश, मर्यादा जीवन पद्वति हैं। मुस्लिम तुष्टीकरण का परिणाम संप्रदाय जनित वातावरण की गर्माहट से नये युग के प्रारम्भ होने की दिशा में एक नये अध्याय की ओर हिन्दू संगठन बढ़ने लगा जिसकी परिणति राम रथ यात्रा ने भारत की राजनीति के नये आयाम गढ़ने लगे, भारत की मौलिक राष्ट्रीय चेतना को आगे नेतृत्व मिला।

रथयात्रा संस्मरण में - आडवाणी जी के साथ आज के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रथयात्रा के संपूर्ण कार्य योजना के प्रमुख थे और भारत परस्त संगठन और सज्जन शक्ति को संगठित कर रहे थे। देश में रथ अपनी यात्रा पर था एक दिन एक वरिष्ठ पदाधिकारी से रात्रि भोजन के उपरान्त टहलते हुए आडवाणी जी ने एक प्रश्न किया - यह जनता जनार्दन रथ के आगे मिट्टी में लोट रही है और रथ के पीछे की मिट्टी को कागज पुड़िया में रख कर माथे चढ़ा रही है! आडवाणी जी ने कहा मैं हतप्रभ और आश्चर्यचकित हूं! वह पदाधिकारी भी अनुत्तरित रहे। बाद में उन्होंने बताया कि आडवाणी जी अंग्रेजी संस्कृति में पढ़े पले होने के कारण उनके मन मस्तिष्क में राम मय मिट्टी में लोट-पोट रही जनता जनार्दन के प्रति विस्मय रहा था।

भारत की तासीर-तेवर, कलेवर समझने के लिए राममय होना पड़ेगा। राम की भेष-भूषा में आने मात्र से रावण का मन राममय हो गया था। राम की मर्यादा के आचरण, तपस्या, त्याग और परोपकार संत संस्कृति का जीवन जीने से रामराज्य जन्म लेता है। मोदी जी ने संकल्प ले लिया था कि श्री राम जन्मभूमि का मंदिर अवश्य बनेगा उसके लिए हमें चाहे जो कीमत चुकानी पड़े मोदी जी का संकल्प सिद्ध हुआ मोदी जी ने सबका साथ, सबका विकास , सबका विश्वास , सबका प्रयास की आधारशिला रखी है. मोदी जी के आवाहन पर कोरोना के समय लोग अनुशासित होकर घरों में रहे पूरी दुनिया को वैक्सीन देकर मोदी जी ने पूरे विश्व में भारत का डंका बजा दिया पूरे विश्व में एक बार फिर श्री राम के आदर्श पर चलने वाले प्रधानमंत्री के हाथों में बागडोर आई है लोक कल्याण के लिए संकल्पित जीवन का चरित्र दिखाई पड़ने लगा आतंकवाद के राक्षसों को मारने के लिए दूसरे देश की सीमाओं में भी जाकर उनका एयर स्ट्राइक से वध किया और धारा 370 समाप्ति के साथ ही नए भारत का उदय हुआ है सन 1990 में रथ यात्रा में लिए गए संकल्प को सिद्ध करने के लिए मोदी जी ने एड़ी चोटी का जोर लगाया चक्रवर्ती सम्राट की तरह ही प्रधानमंत्री भविष्य में चक्रवर्ती नरेंद्र मोदी के नाम से जाने जाएंगे पूरे विश्व के सभी नेताओं के द्वारा उनके प्रति विशेष आदर ,सम्मान का भाव समय-समय पर व्यक्त करते रहते हैं यह सचमुच भगवान राम की कृपा ही कहीं जाएगी #रामचरितमानस में बाबा ने कहा है जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करें सब कोई!!

छद्म सेकुलरवाद अब सेकुलरवाद की जगह पा चुका था। 6 दिसम्बर, 1992 दोपहर में श्री कल्याण सिंह मुख्यमन्त्री उ०प्र० अपने आवास पर दो मन्त्री के साथ बैठे थे। अयोध्या में कार सेवा चल रही थी। कारसेवक बाबरी मस्जिद के गुंबद पर चढ़ गये और कुदालों से तोड़ने लगे वहां पर्याप्त संख्या में अर्ध सैनिक बल था लेकिन कार सेवकों ने उनके और बाबरी मस्जिद के बीच एक घेरा बना दिया था। उस समय कल्याण सिंह के आवास पर पुलिस महानिदेशक उ०प्र० एल०एम० त्रिपाठी, भागते हुए आये,

मुख्यमंत्री से मिलना चाहा, अन्दर से सन्देश आया भोजन समाप्त होने तक प्रतीक्षा करें। कुछ देर बाद जब डी०जी०पी० अन्दर गये तो ''कारसेवकों पर गोली चलाने की अनुमति मांगी, ताकि बाबरी मस्जिद को गिरने से बचाया जा सके- कल्याण सिंह ने पूछा - अगर गोली चली तो कारसेवक मारे जायेंगे? डी०जी०पी० ने जवाब दिया हां। तब मुख्यमंत्री ने कहा मैं आपको गोली चलाने का आदेश नहीं दूंगा। आप अन्य साधनों से नियंत्रण करें। शाम को बाबरी मस्जिद का ढांचा ढह गया। माननीय कल्याण सिंह ने अपना त्याग पत्र राज्यपाल को सौंप दिया। बाबरी मस्जिद की एक एक ईंट कार्यकर्ता उठा ले गये। सेकुलरवादियों के अन्यायपूर्ण जिद की प्रतिक्रिया में कारसेवकों ने ढांचा गिरा दिया। कार सेवकों ने श्री हनुमान जी की शक्ति से बाबरी मस्जिद का पटाक्षेप कर दिया था। मस्जिद के ध्वस्त होते ही छदम सेक्युलर ने आलाप शुरू कर दिया लेकिन सभी राम भक्तों ने इस दिन गौरवमय सांस्कृतिक शौर्यता की अनुभूत की चारों तरफ विजय पर्व का हर्षनाद हो रहा था भारत ही नहीं अपितु विश्व भर में हिंदू समाज ने सांस्कृतिक कलंक के गिरते ही गौरव की अनुभूति की थी, कौन इस सत्य को ठुकरा सकता है कि अयोध्या ही प्रभु श्री राम का जन्म स्थान है अब तो न्यायालय द्वारा भी यह बात सिद्ध हो चुकी है की वही श्री राम जन्मभूमि है भारत में हजारों वर्षों से रहने वाला मुस्लिम समुदाय विदेशी नहीं है उनके पुरखे तथा हिंदुओं के पुरखे एक ही है धर्म परिवर्तित करने से पुरखे नहीं बदला करते हैं मुस्लिम समाज को स्वीकार करना होगा जब उनके पूर्वजों ने तलवार के भय से इस्लाम स्वीकार कर लिया था अन्य समाज की तरह उन्हें भी यहां की मूल धारा में समरस होना ही पड़ेगा हम सब एक ही धारा के अंग है! इन सभी कार्यों के पीछे देवी शक्ति निहित थी अशोक सिंघल जी बताते थे कि एक बार जब अपने गुरुदेव के पास मंदिर पर चर्चा कर रहे थे तो गुरुदेव ने उत्तर दिया था जो तुमको मुक्त करता है उसे तुम क्या मुक्त करोगे? फिर कहने लगे ठीक है हिंदू संगठन का कार्य है सो होना ही चाहिए सन 1989 में पूज्य देवराहा बाबा की उपस्थिति में शिला पूजन का निर्णय लिया गया पूरे देश से 3 लाख पूजित शिला अयोध्या पहुंची 9 नवंबर 1989 को राम मंदिर का शिलान्यास संपन्न हुआ शिला पूजन के कारण देश की राजनीति में भी परिवर्तन आया केंद्र की सरकार बदल गई-#दूरदर्शन पर रामायण और महाभारत का दिग्दर्शन ने भारतीय जनमानस का मानस बनाया। रामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण की मांग और बाबरी मस्जिद की मांग सार्वजनक गली नुक्कड, मोहल्लों, गॉवों में बहस होने लगी।

आम चर्चा में राम का जीवन मर्यादा, मूल्यों, त्याग, करूणा, दया, वात्सल्य, प्रेम, स्नेह, बन्धुत्व, क्षमा, अपार धैर्य, साहस, वीरता, उधम, न्यायप्रियता, नैसर्गिक ईश्वरीय गुणों से सम्पूर्ण चरित्र चर्चा चल रही थी जिसे बाबा गोस्वामी तुलसीदास जी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की स्तुति कहते हैं। समस्त संसार रामनाम दीखने में भगवान के बामन रूप जैसा है दीखने में छोटा किन्तु वास्तविक स्वरूप में प्रकट करने पर अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों को अपने में समा सकता है। सभी ब्रह्माण्डों के नायक श्रीराम जी हैं।

सूर्य के केन्द्र में जो सविता है वो साक्षात नारायण हैं इसिलए श्रीराम सूर्यवंशी हैं आस्था के प्राणतत्व का प्रतिफल मेरे राम हैं। भारत का जीवन दर्शन मेरे राम हैं। भारत की पहचान आन, मान, सम्मान मेरे राम हैं। हम राम जी के, रामजी हमारे हैं, तभी अन्तिम समय में राम नाम सत्य है सभी की यह गति है। सांस्कृतिक जागरण के कारण उस समय की खुदाई होने पर मन्दिर के प्रमाणिक साक्ष्य ने न्यायालय में जन्मभूमि की न्याय में सहायता दिलाया।

राम जन्मभूमि विवाद उच्च न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंचने में भारत की सांस्कृतिक चेतना पूर्ण रूप से एक मत होने लगी कि राम भारत के प्राण तत्व हैं। भारत के संविधान की मूल प्रति पर भगवान राम सपरिवार पुष्पक विमान सहित चित्र संयोजित है तो भारत के संविधान में मेरे राम हैं।

राम के प्राकट्य स्थल पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्राप्त निर्णय पर अन्य स्थापत्य के बिना भारत की अस्मिता पर प्रश्न चिह्न लगा रहता। राष्ट्रवादी चेतना ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सरकार बनायी दूसरी ओर स्वयं सेवक विद्वान अधिवक्ता, सन्तों, महन्तों, शंकराचार्यों, आचार्यों, विद्वानजन, सज्जन शक्तियों के द्वारा तर्क, साक्ष्य, स्मृति चिह्न, प्राकट्य प्रमाण जुटाने में लगे रहे जिसे संवैधानिक अर्थों में न्यायपूर्ण निर्णय द्वारा प्राप्त आदेश के बाद अब 22 जनवरी 2024 पौष मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी , विक्रम संवत 2080 को भव्य और वैभवशाली श्री राम लला मन्दिर निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों से नये भारत का गौरवाशाली इतिहास रचेगा। यह श्री राम मंदिर पूरी दुनिया में एक ऐसा संदेश देगा जो श्री राम के आदर्श को स्थापित करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को युगों युगों तक स्वर्ण अक्षरों में याद किया जाएगा पूरे देश में हर्ष उल्लास है, पूरा देश राम ज्योति, जला रहा है घर-घर दीपावली मनाई जा रही है 500 वर्षों में पहली बार पूरे देश में एक साथ इतना उत्साह दिखाई पड़ता है श्री राम लला के दर्शन के लिए देश- विदेश की संपूर्ण जनता प्राण प्रतिष्ठा पूर्ण होने की प्रतीक्षा में है यह सम्पूर्ण संसार के समक्ष एक आत्मतत्व राम की प्रतिमूर्ति विश्व को एक वैशिष्ट्य उदाहरण प्रस्तुत करेगा। जिसमें हिन्दुत्व सनातन की सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना का गौरव स्थापित होगा और मोदी जी ने गारंटी से कहा है कि भारत पूरी दुनिया की तीसरी महाशक्ति होने जा रहा है इसका साक्षात प्रमाण अयोध्या में दिखाई पड़ने लगा है श्री राम के आदर्श के अनुसार ही शस्त्र और शास्त्र में समन्वय मोदी जी ने स्थापित किया है भगवान श्री राम की मूर्तियां और भारतीय संस्कृति की छाप पूरी दुनिया में दिखाई पड़ती है इटली, मिश्र ,कंबोडिया ,यूरोप, अमेरिका, सोवियत संघ, ऑस्ट्रेलिया और छोटे से छोटे टापू पर भी भगवान श्री राम के चिन्ह आज भी प्रस्तुत है यह सत्य कि मेरे राम अविनाशी कण-कण में है- घट-घट में हैं। मेरे राम। मेरे राम...

।। जयसियाराम ।।
जेहिं दिन राम जनम श्रुति गावहिं, तीरथ सकल तहां चलि आवहिं।।
श्री अयोध्या
जी में
श्री
राम मन्दिर
की प्राण प्रतिष्ठा के
पावन अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं
स्वागत हे करूणानिधान
भारतीय जनता पार्टी
BJP
सुग्रीव सिंह चौहान
लोकसभा, 19 - फतेहपुर सीकरी

संस्मरण

कैसा था वह ज्वार

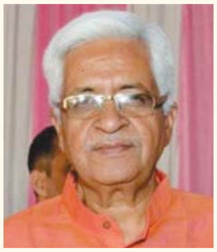

हरिहर शर्मा

"कार सेवकों में सबसे आगे संतो की टोली थी। साधुओं ने त्रिशूल आदि की सहायता से दीवार को तोड़ दिया। दीवार टूटते ही लगभग 4000 कार सेवक आगे बढ़ने लगे। पुलिस ने कार सेवकों की गिरफ्तारी शुरू कर दी। लेकिन संख्या इतनी अधिक थी कि सबको गिरफ्तार करना प्रशासन के लिए संभव ही नही था।"

लेखक अयोध्या आन्दोलन से बहुत गहरे। जुड़े रहे हैं

हम भव्य राम मंदिर निर्माण पूर्ण होने के साक्षी बनने जा रहे हैं। सैकड़ों वर्षों के संघर्ष उपरांत, लाखों बलिदानियों के रक्त से सिंचित अयोध्या अपने गौरव को पुनः प्राप्त करने जा रही है। पुरातन काल से चले आ रहे संघर्ष को तो हमने नहीं देखा, किन्तु 1990 और 1992 के आंदोलन की घटनाओं के तो हम प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं। मेरी आँखों के आगे तो वे सारे दृश्य चलचित्र के समान आज भी घूम रहे हैं -

संतों का नेतृत्व -

1990 में कार सेवा का आव्हान हुआ, 28 अक्टूबर 1990 को मध्य भारत की 40 वाहनियाँ अयोध्या के लिये रवाना हुईं। मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार होने के कारण उत्तर प्रदेश में मुलायमसिंह की सरकार कुछ ज्यादा ही सतर्क थी। भिंड इटावा मार्ग से कोई आगे ना बढ़ सके इसके पुख्ता इंतजाम किये गए थे। इटावा मुलायम सिंह का गृह जिला होने से उनके छोटे भाई शिशुपाल यादव खुद इस व्यवस्था को देख रहे थे।

चम्बल के पुल पर तीन दीवालें बनाकर यातायात को बाधित किया था, बही इस बात की भी पूरी व्यवस्था थी कि कोई पैदल भी उत्तर प्रदेश में प्रवेश ना कर सके। ईंटो की पक्की दीवारो के बीच में लोहे की चादरें रखी गई थीं। इसके बाद ड्रम रखकर उसके पीछे सशस्त्र पुलिस बल तैनात था। चम्बल में चलने बाली सारी नावों पर पुलिस ने कब्जा कर लिया था। नदी के उस पार शिशुपाल सिंह सारी व्यवस्थाओं का निरीक्षण कर रहे थे। उनके साथ हथियार बंद गुंडे भी थे।

कार सेवकों में सबसे आगे संतो की टोली थी। साधुओं ने त्रिशूल आदि की सहायता से दीवार को तोड़ दिया। दीवार टूटते ही लगभग 4000 कार सेवक आगे बढ़ने लगे। पुलिस ने कार सेवकों की गिरफ्तारी शुरू कर दी। लेकिन संख्या इतनी अधिक थी कि सबको गिरफ्तार करना प्रशासन

के लिए संभव ही नही था।

गिरफ्तारी से काम ना बनता देखकर नदी पार से शिशुपाल सिंह यादव तथा उसके साथ खड़े एक पत्रकार और डिप्टी कलेक्टर ने स्वयं गोली चलाना प्रारम्भ कर दिया। पहली गोली भिंड के एक कार्यकर्ता सत्य पाल को लगी। गंभीर रूप से घायल सत्यपाल की बाद में मृत्यु हो गई। कोकसिंह नरवरिया की इतनी पिटाई हुई कि उनकी रीढ़ की हड्डी ही टूट गई। उन्हें 6 माह अस्पताल में बिताना पड़े। रामसिया के पैर में गोली लगी और वे जीवन भर के लिए अपाहिज हो गए। कारसेवकों ने हर प्रकार के कष्ट सहकर भी कारसेवा में उत्साह पूर्वक भाग लिया।

कारसेवकों को रोकने के लिए मुलायमसिंह ने उत्तर प्रदेश की सीमा पर सड़कें खुदवा दीं -

उत्तर प्रदेश की सीमा से सटे शिवपुरी से भी सेंकडों स्वयंसेवक रवाना हुए ! शिवपुरी झांसी मार्ग पर उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह सरकार ने पुल पुलिया तोड़ दिए थे ताकि कोई अयोध्या तो दूर उत्तर प्रदेश में भी ना पहुँच सके ! कारसेवक जब झांसी की ओर पैदल रवाना हुए, उनमें से अनेकों गिरफ्तार कर लिये गए ! झांसी की लक्ष्मी व्यायामशाला को अस्थाई जेल बनाया गया ! जहाँ इन लोगो ने अपनी आँखों के सामने पुलिस गोली चालन में हताहत होते कारसेवको को देखा जो एक दुखद अनुभव था !

अत्याचार की पराकाष्ठा -

पुलिस को चकमा दे अनेकों कारसेवक अयोध्या के मार्ग पर आगे निकलने में सफल हुए, किन्तु अंततः वे भी गिरफ्तार कर उन्नाव जेल भेज दिए गए ! इस जेल में प्रशासन की शह पर मुस्लिम कैदियों ने लोहे की छड़ों वा पलटो इत्यादि से इनपर हमला कर दिया ! श्री विमलेश गोयल को तो इतना पीटा गया कि वे बेहोश हो गए वा आक्रमण कारी उन्हें मृत समझकर छोड़ गए ! सात दिन बाद अस्पताल में श्री गोयल को होश आया !

कोलारस गुप्त वाहिनी के ग्यारह कारसेवक लखनऊ से 200 कि.मी. पैदल चलकर सर्व श्री गणेश मिश्रा, आलोक बिंदल, प्रेम शंकर वर्मा, फूलसिंह जाट, शिब्बूसिंह जाट (हम्माल), रामेश्वर बिंदल, संतोष गौड़, विनोद मिश्रा, लाडली प्रसाद गोयल आदि अयोध्या पहुँचने में सफल हुए ! इन सभी ने 2 नवम्बर को हुए नरसंहार को अपनी आँखों से देखा व भोगा !

आमजन का अद्भुत योगदान -

पिपरिया से पहला जत्था जिला प्रमुख श्री अनंतराम जी के नेतृत्व में तथा दूसरा श्री द्वारका प्रसाद खंडेलवाल के नेतृत्व में रवाना हुआ ! इलाहावाद के आगे प्रताप गढ़ चेकपोस्ट पर इन लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा नव निर्मित पोलीटेक्निक कालेज में बंदी बनाकर रखा गया ! बहां प्रशासन द्वारा भोजन आदि की कोई व्यवस्था नही की गई थी ! इतना ही नही तो बाहर से स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा की गई भोजन व्यवस्था को भी नहीं लेने दिया जा रहा था !

उस परिसर में लगभग 3000 लोग भेड बकरियों की तरह भर दिए गए थे ! अव्यवस्था से नाराज इन लोगों ने गेट पर लगा ताला तोड़ दिया ! बहां उपस्थित मुट्ठीभर अधिकारी इस जन सैलाब को नहीं रोक पाए ! पैदल ही ये कार सेवक आगे अयोध्या के मार्ग पर बढ़ चले ! मार्ग में स्थानीय जनता का अभूतपूर्व सहयोग इन लोगों को देखने को मिला !

अंधेरी रात में भी लोग लालटेन लेकर गाँवों में हर जगह इनका स्वागत करते ! पुआल पर बोरी या दरी बिछाकर इनके विश्राम की व्यवस्था, भोजन, नाश्ता, मेवा आदि से इनका आतिथ्य होता ! सूखे भोजन के पैकेट तो रास्ते भर मिले ! इन कार सेवकों को खिलाने के लिए गन्नों के कई खेत साफ़ कर दिए स्थानीय जन सामान्य ने ! आगे यदि पुलिस होने की संभावना होती तो वे ही लोग इन्हें सावधान करते और सुरक्षित मार्ग भी सुझाते ! राम भक्ति का अद्भुत ज्वार था उन दिनों में !

फैजावाद से कुछ किलोमीटर पूर्व रामगंज नामक गाँव में रात को एक बजे लगभग 700 - 800 कारसेवक पहुंचे ! इनके पहुँचने की सूचना मिलते ही गाँव की माता बहिनें एकत्रित हो गईं और देखते ही देखते सबने मिलकर एक घंटे के अंदर गरम ताजा भोजन तैयार कर खिलाया ! ग्राम वासियों ने अपने सोने के स्थान खाली कर कारसेवकों को सुलाया और स्वयं बाहर सोये ! सर्दियों के दिन थे तो सुबह खेतों में कडाव चढ़ाकर इन लोगों के स्नान आदि के लिए पानी की व्यवस्था की गई ! गाँव की महिला सरपंच ने अपनी जीप और गांव के ट्रेक्टरों से कारसेवकों को अयोध्या के नजदीक गोमती किनारे तक पहुंचाया ! और तो और गोमती पार कराने बाले नाविकों ने भी इनसे पैसे लेने से इंकार कर दिया !

राजमाता स्व. विजयाराजे सिंधिया का आंदोलन से लगाव -

राम जन्म भूमि आन्दोलन के लिए आर्थिक सहयोग की अपेक्षा के साथ अशोक जी सिंघल व अन्य वरिष्ठ जन राजमाता साहब के पास पहुंचे। संयोग से उस समय राजमाता के पास अपेक्षित धनराशि नहीं थी। कुछ क्षण विचार के उपरांत उन्होंने अपनी उंगली में पहनी हुई रत्न जटित अंगूठी उतारकर नेताओं को प्रदान कर दी। परिषद् के वरिष्ठ जनों को अत्यंत संकोच हुआ तथा उन्होंने अंगूठी लेने से इंकार किया। किन्तु राजमाता जी ने हठ पूर्वक वह अंगूठी लेने के लिए उन लोगों को विवश किया। राजमाता साहब की पुत्रियों को जब यह समाचार मिला तो वे अत्यंत हैरान हो गईं। क्योंकि वह अंगूठी कैलाशवासी महाराज जीवाजीराव सिंधिया ने राजमाता जी को विवाह के समय उपहार स्वरुप प्रदान की थी। वह अंगूठी तो राजमाता जी की पुत्रियों ने उचित राशि देकर विश्व हिन्दू परिषद् के नेताओं से प्राप्त कर ली, किन्तु इस घटना से राम जन्म भूमि के प्रति राजमाता जी का गहरा लगाव तो प्रगट होता ही है।

विशेष आलेख

राम, तुलसी और मानस का मर्म

आचार्य गोविंद शर्मा

> राम को भगवान राम बनाने के लिए स्वयं को खल पात्र बना लेने वाली माता कैकेयी हैं तो सूर्य उदय का मार्ग देने वाली पूरब दिशा के समान माता कौशल्या हैं। सेवा और परिवार का आदर्श स्थापित करने वाली माता सुमित्रा हैं तो महा तपस्विनी उर्मिला भी हैं। जगजननी माता सीता तो इस ग्रंथ की आधार हैं। श्री हनुमान जी, जामवंत जी, सुग्रीव जी से लेकर महाराज जनक तक के बारे में केवल कह पाने भर से उनके साथ न्याय नही हो सकता। मानस के मनुष्य, जड़, स्थावर, पशु, पक्षी, नदी, समुद्र, सेवक, नाविक से लेकर सम्पूर्ण परिवेश में जीवन के संदेश सुरक्षित हैं। मानस आदर्श मानव जीवन का महासमुद्र है जिससे प्रति पल कुछ सीखने को मिलता है।

लेखक काशी विद्वत परिषद् के संगठन मंत्री हैं।

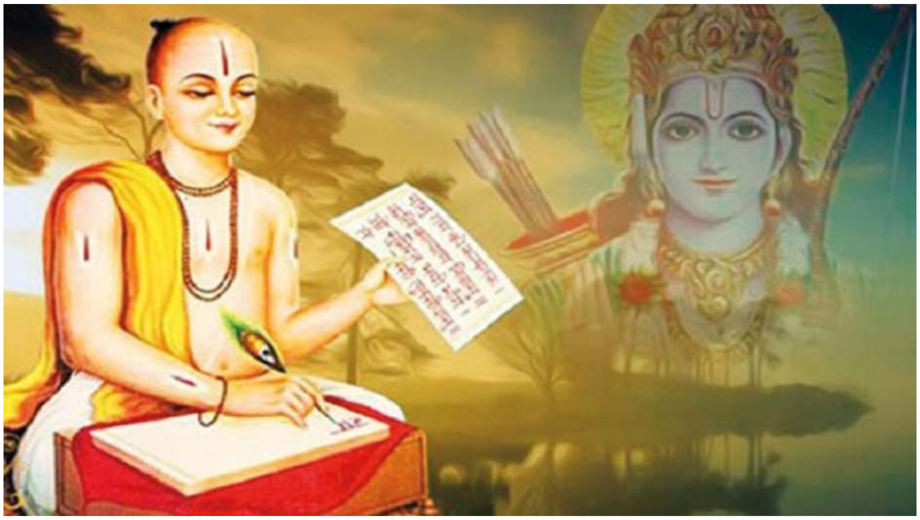

श्रीरामचरित मानस केवल एक पुस्तक भर नहीं है। श्रुति, स्मृति, उपनिषद, इतिहास, विज्ञान और जीवन का यह वह दर्शन है जो भगवान शिव के मानस में रचा गया, गोस्वामी तुलसी दास जी की कलम से अवतरित हुआ। सनातन जीवन संस्कृति का यह आधार ग्रंथ है जिसे गोस्वामी जी के माध्यम से हमे प्राप्त हुआ है। यह ग्रंथ केवल कोई कथा कहानी भर नहीं है। यह साक्षात भगवान का शब्दविग्रह है। श्री रामचरित मानस पर कुछ समय मे कुछ बातें कहने के लिए भी बहुत शक्ति और चिंतन की सामर्थ्य चाहिए। इस ग्रंथ के एक एक पात्र महत्वपूर्ण हैं। यदि नायक के रूप में भगवान श्रीराम हैं तो प्रतिनायक के रूप में महापंडित रावण भी है। दसों इंद्रियों पर सम्पूर्ण नियंत्रण रखने वाले चक्रवर्ती दशरथ जी हैं तो उसी अनुपात में दसगुना नियंत्रण रखने वाला दशानन है। भक्ति और पोषक के साक्षात विग्रह भरत जी हैं तो सेवा के प्रतिमूर्ति लक्षमण जी भी हैं। राम को भगवान राम बनाने के लिए स्वयं को खल पात्र बना लेने वाली माता कैकेयी हैं तो सूर्य उदय का मार्ग देने वाली पूरब दिशा के समान माता कौशल्या हैं। सेवा और परिवार का आदर्श स्थापित करने वाली माता सुमित्रा हैं तो महा तपस्विनी उर्मिला भी हैं। जगजननी माता सीता तो इस ग्रंथ की आधार हैं। श्री हनुमान जी, जामवंत जी, सुग्रीव जी से लेकर महाराज जनक तक के बारे में केवल कह पाने भर से उनके साथ न्याय नही हो सकता। मानस के मनुष्य, जड़, स्थावर, पशु, पक्षी, नदी, समुद्र, सेवक, नाविक से लेकर सम्पूर्ण परिवेश में जीवन के संदेश सुरक्षित हैं। मानस आदर्श मानव जीवन का महासमुद्र है जिससे प्रति पल कुछ सीखने को मिलता है।

गोस्वामी जी ने मानस को आकार देते समय जैसे सृष्टि का संविधान ही रच दिया है। उन्होंने विधि प्रपंच गुन अवगुन साना लिख कर यह पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि विधाता ने सृष्टि में सकारात्मक और नकारात्मक सभी प्रकार की रचनाओं को सान दिया है यानी एक ही धरातल पर उतार दिया है। इस तथ्य को गोस्वामी जी ने संत-असंत वंदना में ही प्रस्तुत कर दिया है। ग्रंथ के आरंभ में ही वह लिखते हैं-

बंदउँ संत असज्जन चरना।
दुःखप्रद उभय बीच कछु बरना॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं।
मिलत एक दुख दारुन देहीं॥

अब मैं संत और असंत दोनों के चरणों की वन्दना करता हूँ, दोनों ही दुःख देने वाले हैं, परन्तु उनमें कुछ अन्तर कहा गया है। वह अंतर यह है कि एक (संत) तो बिछुड़ते समय प्राण हर लेते हैं और दूसरे (असंत) मिलते हैं, तब दारुण दुःख देते हैं। (अर्थात् संतों का बिछुड़ना मरने के समान दुःखदायी होता है और असंतों का मिलना।)

उपजहिं एक संग जग माहीं।
जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू।
जनक एक जग जलधि अगाधू॥

दोनों (संत और असंत) जगत में एक साथ पैदा होते हैं, पर (एक साथ पैदा होने वाले) कमल और जोंक की तरह उनके गुण अलग-अलग होते हैं। (कमल दर्शन और स्पर्श से सुख देता है, किन्तु जोंक शरीर का स्पर्श पाते ही रक्त चूसने लगती है।) साधु अमृत के समान (मृत्यु रूपी संसार से उबारने वाला) और असाधु मदिरा के समान (मोह, प्रमाद और जड़ता उत्पन्न करने वाला) है, दोनों को उत्पन्न करने वाला जगत रूपी अगाध समुद्र एक ही है। (शास्त्रों में समुद्रमन्थन से ही अमृत और मदिरा दोनों की उत्पत्ति बताई गई है।)॥

भल अनभल निज निज करतूती।
लहत सुजस अपलोक बिभूती॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू।
गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू॥
गुन अवगुन जानत सब कोई।
जो जेहि भाव नीक तेहि सोई॥

भले और बुरे अपनी-अपनी करनी के अनुसार सुंदर यश और अपयश की सम्पत्ति पाते हैं। अमृत, चन्द्रमा, गंगाजी और साधु एवं विष, अग्नि, कलियुग के पापों की नदी अर्थात् कर्मनाशा और हिंसा करने वाला व्याध, इनके गुण-अवगुण सब कोई जानते हैं, किन्तु जिसे जो भाता है, उसे वही अच्छा लगता है॥

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु॥

भला भलाई ही ग्रहण करता है और नीच नीचता को ही ग्रहण किए रहता है। अमृत की सराहना अमर करने में होती है और विष की मारने में॥

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा।
उभय अपार उदधि अवगाहा॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने।
संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने॥

दुष्टों के पापों और अवगुणों की और साधुओं के गुणों की कथाएँ- दोनों ही अपार और अथाह समुद्र हैं। इसी से कुछ गुण और दोषों का वर्णन किया गया है, क्योंकि बिना पहचाने उनका ग्रहण या त्याग नहीं हो सकता॥

भलेउ पोच सब बिधि उपजाए।
गनि गुन दोष बेद बिलगाए॥
कहहिं बेद इतिहास पुराना।
बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना॥

भले-बुरे सभी ब्रह्मा के पैदा किए हुए हैं, पर गुण और दोषों को विचार कर वेदों ने उनको अलग-अलग कर दिया है। वेद, इतिहास और पुराण कहते हैं कि ब्रह्मा की यह सृष्टि गुण-अवगुणों से सनी हुई है॥

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥

विधाता ने इस जड़-चेतन विश्व को गुण-दोषमय रचा है, किन्तु संत रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुण रूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं।

अस बिबेक जब देइ बिधाता।
तब तजि दोष गुनहिं मनु राता॥
काल सुभाउ करम बरिआईं।
भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाईं॥

विधाता जब इस प्रकार का (हंस का सा) विवेक देते हैं, तब दोषों को छोड़कर मन गुणों में अनुरक्त होता है। काल स्वभाव और कर्म की प्रबलता से भले लोग (साधु) भी माया के वश में होकर कभी-कभी भलाई से चूक जाते हैं॥

सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं।
दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू।
मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू॥

भगवान के भक्त जैसे उस चूक को सुधार लेते हैं और दुःख-दोषों को मिटाकर निर्मल यश देते हैं, वैसे ही दुष्ट भी कभी-कभी उत्तम संग पाकर भलाई करते हैं, परन्तु उनका कभी भंग न होने वाला

मलिन स्वभाव नहीं मिटता॥
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ।
बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ॥
उघरहिं अंत न होइ निबाहू।
कालनेमि जिमि रावन राहू॥

जो (वेषधारी) ठग हैं, उन्हें भी अच्छा (साधु का सा) वेष बनाए देखकर वेष के प्रताप से जगत पूजता है, परन्तु एक न एक दिन वे चौड़े आ ही जाते हैं, अंत तक उनका कपट नहीं निभता, जैसे कालनेमि, रावण और राहु का हाल हुआ।

किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू।
जिमि जग जामवंत हनुमानू॥

हानि कुसंग सुसंगति लाहू।
लोकहुँ बेद बिदित सब काहू॥

बुरा वेष बना लेने पर भी साधु का सम्मान ही होता है, जैसे जगत में जाम्बवान् और हनुमान्जी का हुआ। बुरे संग से हानि और अच्छे संग से लाभ होता है, यह बात लोक और वेद में है और सभी लोग इसको जानते हैं।

धूम कुसंगति कारिख होई।
लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता।
होइ जलद जग जीवन दाता॥

कुसंग के कारण धुआँ कालिख कहलाता है, वही धुआँ (सुसंग से) सुंदर स्याही होकर पुराण लिखने के काम में आता है और वही धुआँ जल, अग्नि और पवन के संग से बादल होकर जगत को जीवन देने वाला बन जाता है॥

ग्रह भेजष जल पवन पट
पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग
लखहिं सुलच्छन लोग॥

ग्रह, औषधि, जल, वायु और वस्त्र- ये सब भी कुसंग और सुसंग पाकर संसार में बुरे और भले पदार्थ हो जाते हैं। चतुर एवं विचारशील पुरुष ही इस बात को जान पाते हैं॥

सम प्रकास तम पाख दुहुँ
नाम भेद बिधि कीन्ह।
ससि सोषक पोषक समुझि
जग जस अपजस दीन्ह॥

महीने के दोनों पखवाड़ों में उजियाला और अँधेरा समान ही रहता है, परन्तु विधाता ने इनके नाम में भेद कर दिया है (एक का नाम शुक्ल और दूसरे का नाम कृष्ण रख दिया)। एक को चन्द्रमा का बढ़ाने वाला और दूसरे को उसका घटाने वाला समझकर जगत ने एक को सुयश और दूसरे को अपयश दे दिया॥

मानस से आत्मसात करने योग्य बातें

रिश्ते क्या होते है, इसको मानस से सीखना चाहिए। पिता पुत्र, माता पुत्र, भाई भाई, बड़ा छोटा, आदेश और उसका निर्वहन। मित्र धर्म राम चाहते तो बाली से मित्रता करके रावण पर विजय पा सकते थे लेकिन उन्होंने सुग्रीव से मित्रता की और मित्र धर्म का पूरा निर्वहन किया। यहां तक कि सुग्रीव एक बार राम से किये अपने वादे को भूल भी गए लेकिन इसके बावजूद राम ने अपना धर्म निभाया और सुग्रीव को उनकी गलती का सलीके से आभास भी कराया। सेवक का सम्मान केवट ने बहुत जिद की थी। राम उस पर कुपित नहीं हुए बल्कि उसकी हर बात मानते गए। वह केवट को सजा भी दे सकते थे। केवट निषादराज गुह्य के राज्य में ही था लेकिन राम ने उसकी सेवा का सम्मान किया। व्यक्ति का समाज से संबंध और दायित्व सृष्टि और प्रकृति के मध्य समन्वय, मानव का पशु, पक्षी, प्रकृति से संबंध, आसुरी शक्तियों के नाश के लिए समाज के अग्रगण्य व्यक्तियों से लेकर आखिरी तबके तक को एकजुट करने का संदेश अपने हर कदम पर राम ने दिया है। अपने वनगमन के हर चरण में एक तरफ वह अपने से श्रेष्ठ ऋषियों मुनियों के आशीर्वाद ले रहे हैं और दूसरी ओर वनवासी समाज को जोड़ कर उन्हें भयमुक्त वातावरण उपलब्ध करा रहे हैं। वह समग्र वनक्षेत्र को ही आसुरी शक्तियों से मुक्त कर वनवासी समाज को सौप देते हैं। कही भी वह स्वयं राजा नहीं बनते बल्कि जिस समाज का सम्बंधित क्षेत्र है उसी में से राजा बनाते चलते हैं। यहां तक कि लंका का जीता हुआ राज्य भी वह विभीषण को सौंपते हैं।

जटायु और शबरी प्रसंग जटायु गीध हैं। पक्षी हैं लेकिन राम उनको परमधाम में स्थापित करते हैं। शबरी स्वयं को अधम कह रही है लेकिन राम उसे भामिनि कह कर संबोधित करते हैं। यह वह संबोधन है जिसका प्रयोग उन्होंने अपनी माता के लिए किया है। प्रेम भक्ति और ईश्वर की आस्था के साथ समाज मे निम्नतर माने गए को श्रेष्ठतर साबित करने का चरित्र अद्भुत है।

स्त्री और दलित का सम्मान पक्षियों में चांडाल कहे जाने वाले कौवे द्वारा रामकथा का व्याख्यान और श्रोता में पक्षियों के राजा, यह मानस की बहुत बड़ी शिक्षा है। यहां ज्ञान को भरपूर सम्मान है। इस सम्मान में कोई जाति, वर्ण या वय का भेद नहीं है। आज भी कोई कितना ही दलित और नारी विमर्श की बात करता हो लेकिन किसी दलित स्त्री का जूठन नही खा सकता। राम ने शबरी का जूठन खाया। इससे बड़ा सम्मान क्या हो सकता है। राम राजा भी थे और उनके पास अनेक सेवक और तब तक वनवासियों की बहुत बड़ी सेना भी तैयार थी। वह शबरी को अपने पास भी बुलवा सकते थे। उसका जूठन नहीं भी खाते तो कोई प्रश्न नही उठता।

आदर भाव आदर भाव तो मानस की आत्मा है। मानस का नायक समाज के सभी श्रेष्ठ लोगो का अत्यंत आदर कर रहा है। सभी ऋषियों और मुनियों के साथ संत जनों को राम बहुत आदर देते हैं। यहां तक कि परशुराम के क्रोध के बीच भी राम ने उन्हें केवल आदर ही दिया है। बाल्मीकि और भारद्वाज को दंडवत करते हैं। शरभंग जी को स्वयं अग्निदान कर बैकुंठ भेजते हैं।

राम चरित मानस के अरण्य कांड में दोहा संख्या 34,35,36 के मध्य की जो चौपाइयां हैं, इसमें इसका पूरा वर्णन है। इसमें गोस्वामीजी ने बड़े भाव से शबरी के संकोच को प्रदर्शित किया है जिसमें शबरी भगवान से कहती हैं कि वो कैसे उनकी भक्ति प्राप्त कर सकती हैं जबकि वो जाति से अधम और मति से भी जड़ हैं। शबरी कहती हैं-

केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी,
अधम जाति मैं जड़मति भारी।

शबरी के इस सवाल के जवाब में गोस्वामी जी भगवान श्रीराम से उत्तर दिलवाते हैं कि राम को जाति-पांति के भेदभाव का कोई सवाल

भक्ति के मामले में मंजूर नहीं है। राम कहते हैं-

कह रघुपति सुनु भामिनी बाता।
मानऊं एक भगति कर नाता।
जाति-पाति कुल धर्म बड़ाई।
धन बल परिजन गुन चतुराई।
भगति हीन नर सोहइ कैसा।
बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।
नवधा भगति कहऊं तोहि पाहीं।
सावधान सुनु धरू मन माहीं।।

पहली बात तो राम के जरिए गोस्वामी जी शबरी के लिए अत्यंत आदरसूचक भामिनी संबोधन देते हैं। कहते हैं कि जात-पांत, परिवार, कुल, गोत्र, पैसा, पावर, परिवार, बुद्धि और चतुराई जैसी बातों का मेरे लिए कोई मतलब ही नहीं है। क्योंकि जिस मनुष्य में भक्ति नहीं है, श्रद्धा नहीं है, उसकी किसी बात का वैसे ही कोई महत्व नहीं है जैसे बिना जल के बादलों का। मतलब है तो केवल प्रेम का, श्रद्धा का, भक्ति का। ईश्वर से नाता जोड़ने के लिए यही चीजें महत्व रखती हैं। इसमें जाति का कोई मतलब नहीं है।

नवधा भगति के सूत्रों को भारत के आध्यात्मिक जगत में बड़े आदर के साथ सुनाया जाता है जो सूत्र शबरी और शाबर संप्रदाय से जुड़े हैं। शायद उन्हें शाबर संप्रदाय से ही गोस्वामी जी ने उठा लिया। इसमें कहा गया है -

1- पहली भक्ति संतों का सत्संग है। और संतों की कोई जाति नहीं होती। जाति न पूछो साधू की पूछ लीजिए ज्ञान। यही लोक परंपरा कहती है। इसी लोक को तुलसी अपनी आंखों के सामने रखते हैं और आगम-निगम यानी आगम मतलब लोकमान्यताओं और निगम मतलब शास्त्र को साथ लेकर चलते हैं।

2- नवधा भक्ति का दूसरा सूत्र है कि भगवान की कथा चर्चा जहां हो वहां मन लगाओ, जिस रूप में हो, उसे सुनो, उस पर ध्यान दो। ध्यात्मिक बातों और धर्ममय चरित्र पर चलने का यहां बड़ा महत्व है।

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा,
दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।

3- अपने जो गुरु हैं, उनकी सेवा करो, यही तीसरी भक्ति है।

4- भक्ति में कपट, छल मत करो और शुद्ध भाव से करो। कोई न कोई मंत्र नियमित जपो और ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखो। गुरु पद पकंज सेवा तीसरि भगति अमान, चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान।..मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा।

5- पंचम भजन सो बेद प्रकासा

6- छठ दम सील बिरत बहु करमा, निरत निरंतर सज्जन धरमा। पांचवीं भक्ति के बारे में कहा है कि परमात्मा का भजन करो, उनका सुमिरन करो, उनके गीत गाओ, हो सके तो इसी भजन मार्ग से वेद के ज्ञान का प्रसार करो। छठी भक्ति का सूत्र वही है जो भगवान बुद्ध ने भी बताया है कि दम और शील को धारण करो। यानी आत्म नियंत्रण रखो और जीवन में शुद्ध चरित्र को महत्व दो। बहुत सारे विषयों में एक साथ मत फंसो। जो सज्जन हैं, उनका साथ करो, सज्जनों के धर्म मार्ग पर चलो।

7- सातवं सम मोहि मय जग देखा, मोतें संत अधिक करि लेखा सातवां भक्ति सूत्र सब सवालों का जवाब है जिसमें गोस्वामी जी कहते हैं कि सारे जगत को राम मय ही देखो। और उसमें भी संतों की बात को सबसे ज्यादा महत्व दो। यही कबीर कहते हैं कि राम को महत्व दो। संतों भाई आई ज्ञान की आंधी रे। देश और मानवता को संत ही संभालते हैं और मार्गदर्शन करते हैं।

8- आठवं जथा लाभ संतोषा, सपनेहुं नहिं देखइ परदोषा। आठवां भक्ति सूत्र और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि कर्म तो पूरी ईमानदारी से करो किन्तु जो भी लाभ हो या न हो उसमें संतोष करो। और जीवन में कर्म करते समय दूसरे लोगों में दोष को मत खोजो। हमेशा कमियां खुद में देखो और दूसरों के लिए अच्छे शब्दों का ही इस्तेमाल करो।

9- नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियं हरष न दीना।। नौवां भक्ति सूत्र भी अद्भुत है कि सबके साथ अति सरल भाव से रहो और किसी के साथ छल और कपट मत करो। राम नाम पर दृढ़ भरोसा रखो और मन में किसी प्रकार का अवसाद मत आने दो, सदा खुश रहो, हर हाल में खुश रहना सीखो।

नव महुं एकउ जिन्हके होई, नारि पुरुष सचराचर कोई,
सोई अतिसय प्रिय भामिनि मोरे।

अब यहां गोस्वामी जी रचित रामचरित मानस में भगवान के साथ शबरी की इन नौ विशेष भगति सूत्रों पर चर्चा हुई। गोस्वामी जी इसका सार संक्षेप लिखते हैं कि इसमें से नौ की नौ तो छोड़िए, कोई मनुष्य एक सूत्र को भी यदि जीवन में पाल ले तो चाहे वो स्त्री हो या पुरुष किसी जाति का हो, वही ईश्वर का सबसे प्रिय बन जाता है। गोस्वामीजी के मौलिक चिंतन में तो भक्ति भेदभाव नहीं कर सकती है। नवधा भक्ति सूत्र लिखने वाले गोस्वामी जी फिर कैसे भेदभाव की बात कर सकते हैं? गोस्वामी तुलसी दास के जीवन की यथार्थ और कटु सच्चाई तो यही है कि उनकी मां उन्हें जन्म देते ही परलोक सिधार गई। उनके ज्योतिषी पिता ने ग्राम पर किसी आपदा के आने की भविष्यवाणी देखते हुए उन्हें पड़ोसी गांव की एक शूद्र महिला को पालन-पोषण के लिए दे दिया। उनका बचपन तो एक शूद्र अर्थात आज की प्रचलित परिपाटी के अनुसार अनुसूचित या दलित महिला की गोद में ही पला-बढ़ा। क्योंकि उनके पिता का भी कुछ ही दिनों में निधन हो गया और गांव भी शायद गंगा की बाढ़ में या मुगल सेना की लूट की भेंट चढ़ गया।

सीय राम मय सब जग जानी।।
जय तुलसी दास जी और जय जय सियाराम।।

विशेष आलेख

राम जन्म भूमि आंदोलन

गोरक्षपीठ की तीन पीढियां

डॉ. सिन्धु कुमार मिश्र

"श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन से लेकर श्रीराम की प्राण-प्रिय नगरी अयोध्या धाम के कायाकल्प तक श्रीगोरक्षपीठ का पूर्ण ऊर्जा और प्रतिबद्धता के साथ निःस्वार्थ भावना से किया गया अविराम योगदान निःसंदेह अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक संगठनों के लिए नज़ीर है। गुरु परम्परा में विश्वास रखने वाले सभी व्यक्तियों/संगठनों के लिए यह प्रेरणाप्रद है कि योगी आदित्यनाथ की भांति गुरु के अधूरे संकल्प को पूर्ण करने के लिए पूरे जीवन को खपा देना ही हर शिष्य का धर्म होता है।"

अयोध्या अयोध्या धाम में बंद रहे भव्य और दिव्य श्रीराम मंदिर के लिए गोरक्षपीठ की तीन पीढियां ने जो अथक साधना की उसकी परिणति अब 22 जनवरी को देखने को मिलेगी जब प्रभु श्रीराम अपने मंदिर में विराजेंगे। वर्ष 1528 में प्राचीन मंदिर तोड़कर विवादित ढांचा बनाने के बाद श्रीराम जन्मभूमि के लिए अनेक संघर्ष हुए। बाद में अंग्रेजों का शासन हुआ तो उन्होंने वहां ऐसी व्यवस्था कर दी गई कि श्रीराम भक्त पूजा न कर सकें।

जब देश आजाद हुआ तब वर्ष 1949 में अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए गोरक्षपीठ के तत्कालीन महंत दिग्विजयनाथ महाराज ने वहां पहुंचकर अपनी धमक दिखाई और संतो के साथ विवादित ढांचा के बाहर भजन कीर्तन का आयोजन करवाया। 22/23 दिसंबर 1949 को जब श्रीराम लला का प्राकट्य हुआ तब वह वहीं मौजूद थे। वह अपने जीवन पर्यंत प्रभु राम के मंदिर के लिए संघर्ष करते रहे। उसके बाद यह कमान उनके उत्तराधिकारी महंत अवेद्यनाथ ने संभाल ली। वर्ष 1984 में मंदिर आंदोलन के लिए धर्मचार्यों ने श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ का गठन किया और महंत अवेद्यनाथ को सर्वसम्मति से इसका अध्यक्ष चुना गया। 1986 में जब न्यायालय के आदेश पर मंदिर का ताला खुला तो तत्कालीन महंत अवेद्यनाथ महाराज वहां मौजूद रहे।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

नवंबर1989 में उन्होंने मंदिर का प्रतीकात्मक शिलान्यास कराया और दलित समाज के कामेश्वर चौपाल से पहली शिला रखवाकर एक व्यापक सामाजिक संदेश भी दिया। अक्टूबर/नवंबर 1990 और 6 दिसंबर 1992 के निर्णायक कारसेवा में भी महंत जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

शीर्ष न्यायालय के निर्णय के बाद 5 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंदिर के लिए भूमि पूजन कर चुके हैं। मंदिर का निर्माण अब अंतिम चरण में है। इस बीच आगामी 22 जनवरी को अयोध्या के अपने नव्य मंदिर में श्रीरामलला विराजमान होने जा रहे हैं। इस समारोह का निमंत्रण दोनों ब्रह्मलीन महंत के सूक्ष्म शरीर को भी आया है। अपने गुरुजन के सपनों को अपने मुख्यमंत्रित्व काल में साकार करने वाले वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ प्राण प्रतिष्ठा समारोह को दिव्य बनाने में जुटे हैं।

योगी के करीबी बताते हैं कि श्रीराम मंदिर आंदोलन और इसमें महंत अवेद्यनाथ के नेतृत्व से प्रभावित होकर ही योगी आदित्यनाथ उनके शिष्य बने। 1994 में बसंत पंचमी के दिन उन्होंने नाथपंथ की दीक्षा ली महंत अवेद्यनाथ के उत्तराधिकारी के रूप में मंदिर आंदोलन से सीधे तौर पर जुड़ गए। गुरु के आदेश पर 1998 से राजनीति में भी आ गए और लगातार पांच बार सांसद के रूप में लोकसभा में श्रीराम मंदिर के लिए जनता की आवाज बने। राम मंदिर के निर्माण के लिए जनता को जागरूक करने के उद्देश्य से उन्होंने वर्ष 2002 और 2006 में विराट हिंदू संगम का आयोजन कराया। सितंबर 2014 में गुरु के ब्रह्मलीन होने के बाद तो उन्होंने उनके द्वारा शुरू आंदोलन की बागडोर पूरी तरह खुद संभाली। वह हमेशा यही कहते रहे कि श्रीराम मंदिर उनके जीवन का मिशन है। अयोध्या में मंदिर के निर्माण का मार्ग तो 2019 में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद हुआ लेकिन योगी आदित्यनाथ ने उसके पहले से अयोध्या को अपना दूसरा घर मान लिया था। मुख्यमंत्री बनने के बाद वह अब तक 63 बार अयोध्या की यात्रा कर चुके हैं। हजारों करोड़ की तमाम योजनाओं की सौगात देकर अयोध्या धाम को दुनिया की सुंदरतम नगरी बनाने में जुटे हुए हैं।

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष के रूप में महंत अवेद्यनाथ ने जातियों में बिखरे हिंदू समाज को राम मंदिर आंदोलन हेतु एकजुट करने के लिए श्रीराम जानकी रथयात्रा निकाली। यह यात्रा देश भर में निकली। जन जागरण हो रहा था। अब आस्था और अस्मिता की रक्षा के लिए जन जागृति की अरुणिमा से समाज आच्छादित होने लगा था।

इस आंदोलन से जुड़े सभी छोटे-बड़े कार्यक्रमों और गतिविधियों जैसे धर्मस्थल रक्षा समिति, वंचित समाज के एक बंधु द्वारा मंदिर की आधारशिला रखवाना, मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु गठित 'श्रीरामजन्मभूमि न्यास', दूसरा शिलापूजन कार्यक्रम से लेकर शिलान्यास के संबंध में सरकार के साथ वार्ता, 30 अक्टूबर 1990 को श्रीराममंदिर के गर्भगृह में विश्व हिंदू परिषद द्वारा कारसेवा की घोषणा तथा 06 दिसंबर 1992 में विवादित ढांचे के ध्वंस तक गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ केंद्रीय भूमिका में रहे। उनके सरल व्यक्तित्व, पारदर्शी कार्यशाली और ओजपूर्ण संवाद शैली ने पूरे सनातन समाज को श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन से सहज ही जोड़ लिया था।

उनके शिष्य और वर्तमान पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ अपने गुरु और दादा गुरु के पग चिन्हों पर चलते हुए सदैव श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन से पूर्ण सक्रियता से जुड़े रहे। उन्होंने सिर्फ मंदिर निर्माण तक ही स्वयं को सीमित नहीं रखा बल्कि वे तो अयोध्या के कायाकल्प के शिल्पकार हैं। अध्यात्म नगरी को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस कर उसके पुरातन गौरव को पुनर्स्थापित करने का रामकाज सिर्फ योगी के ही बस की बात थी। वे कहते भी हैं कि 'हम चाकर रघुवीर के, पटौ लिखौ दरबार' जब ऐसी भावना होती है तभी 'कायाकल्प' हो भी पाता है।

श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन से लेकर श्रीराम की प्राण-प्रिय नगरी अयोध्या धाम के कायाकल्प तक श्रीगोरक्षपीठ का पूर्ण ऊर्जा और प्रतिबद्धता के साथ निःस्वार्थ भावना से किया गया अविराम योगदान निःसंदेह अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक संगठनों के लिए नज़ीर है। गुरु परम्परा में विश्वास रखने वाले सभी व्यक्तियों/संगठनों के लिए यह प्रेरणाप्रद है कि योगी आदित्यनाथ की भांति गुरु के अधूरे संकल्प को पूर्ण करने के लिए पूरे जीवन को खपा देना ही हर शिष्य का धर्म होता है।

इससे सुखद व अविस्मरणीय और क्या हो सकता है कि श्री गोरक्षपीठ ने जिस राम मंदिर आंदोलन की नींव का पत्थर रखा था, आज उसी पीठ के महंत की अगुवाई में उसी नींव पर असंख्य सनातनियों की आस्था तथा विश्वास का केंद्र श्रीराममंदिर आकार ले रहा है और इसके साथ ही अगणित रामभक्तों की 'मंदिर वहीं बनाने' की 'शपथ' भी पूरी हो रही है।

गोली नहीं चलेगी चाहे सरकार चली जाय

सिद्धार्थ मणि त्रिपाठी

भगवान शिव के आराध्य भगवान श्रीराम ने 21 अगस्त 2021 कोसावन के आखिरी दिन की पूर्वसंध्या पर उन्हें अपने श्री चरणों मे स्थान दे दिया। श्रीराम मंदिर आंदोलन के महानायक कल्याण सिंह अपनी महायात्रा पर निकल पड़े। जाते जाते श्री अयोध्या जी मे श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण की आधारशिला भी देख लिया और श्रीराम की प्रसंगिकता भी। वे पुनः श्री अयोध्या जी लौटेंगे, किसी अन्य स्वरूप में क्योकि ऐसा उनका सपना भी था और संकल्प भी।

> मुझे अपने फैसले पर गर्व है क्योंकि आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि मैंने अपनी सरकार खो दी होगी, मगर कार सेवकों को बचा लिया। अब मुझे लगता है कि उस विध्वंस ने अंततः राम मंदिर का मार्ग प्रशस्त कर दिया। 1990 में कार सेवकों पर गोलीबारी गलत फैसला था। लोगों को मारना कोई मज़ाक नहीं है।

कल्याण सिंह का जन्म 6 जनवरी 1932 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री तेजपाल लोधी और माता का नाम श्रीमती सीता देवी था। कल्याण सिंह के एक पुत्र एक पुत्री है। वे जून 1991 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद उन्होंने इसकी नैतिक जिम्मेदारी लेते हुये 6 दिसम्बर 1992 को मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया।

अपने एक साक्षात्कार में कल्याण सिंह ने कहा था कि उन्हें 6 दिसंबर, 1992 को अयोध्या में कार सेवकों पर गोलीबारी करने की अनुमति देने के सवाल पर लिखित में अनुमति देने से इनकार करने के अपने फैसले पर गर्व है। दरअसल, राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद स्थल पर मस्जिद का विरोध करने के लिए कार सेवक एकत्र हुए थे। माना जाता है कि मस्जिद का निर्माण वहीं हुआ है, जहां कभी भगवान राम का जन्म हुआ था और राम मंदिर था। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल दशकों पुराने विवाद पर फैसला सुनाया और उस विवादित स्थल पर राम मंदिर के निर्माण का आदेश दिया।

बाबरी ध्वंस

यह तो सभी जानते हैं कि 6 दिसंबर, 1992 को विरोध प्रदर्शन बेकाबू हो गया और कथित

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

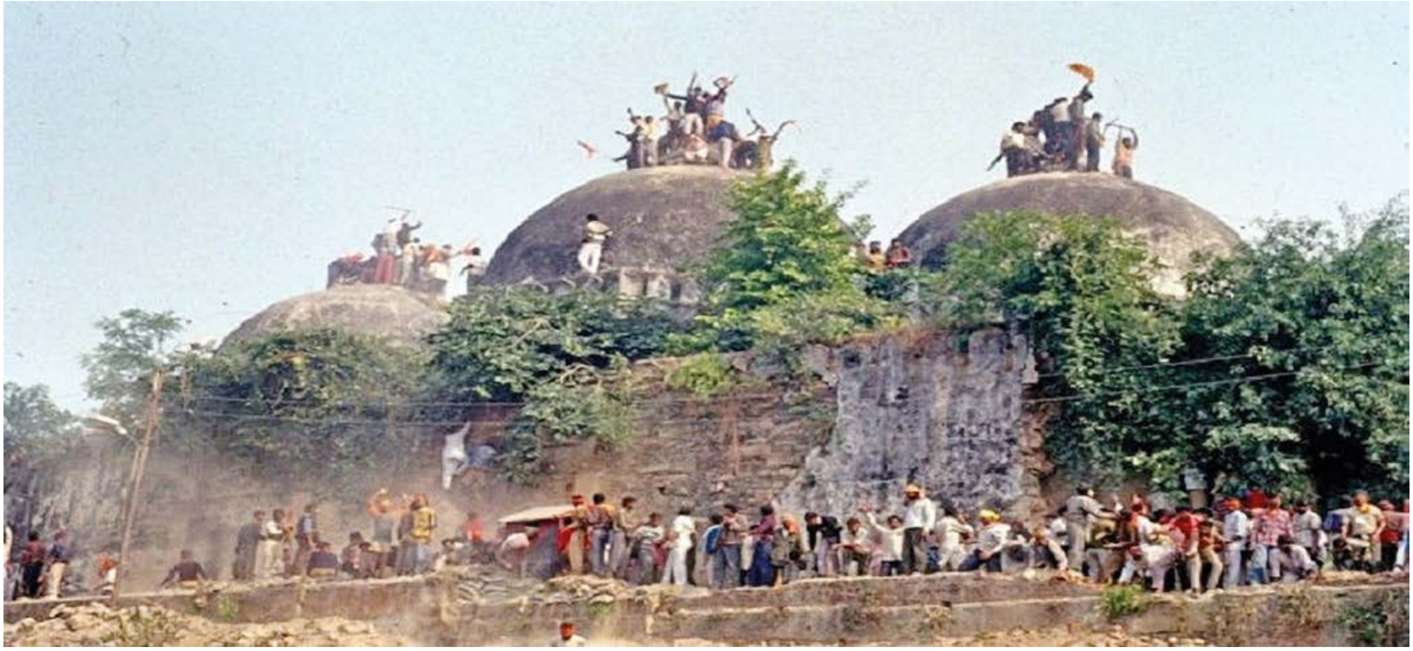

कार सेवकों ने बाबरी मस्जिद को ध्वस्त कर दिया गया। उस वक्त उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह की सरकार थी। इस घटना के बाद कल्याण सिंह की सरकार गिर गई और राज्य में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया। कल्याण सिंह ने एक इंटरव्यू में कहा कि एक तरह से देखा जाए तो बाबरी विध्वंस ने ही 5 अगस्त को होने वाले राम मंदिर भूमि-पूजन कार्यक्रम के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने कहा, 'मैं अयोध्या में मंदिर के दर्शन करने के बाद मरना चाहता हूं और फिर राम नगरी में ही दोबारा जन्म लेना चाहता हूं। मैं इसे विधि का विधान कहूंगा। साल 1528 में मुगल शासक बाबर के सेनापति मीर बाक़ी ने अयोध्या में राम मंदिर को ध्वस्त कर दिया, ऐसा इसलिए नहीं कि वह पूजा का दूसरा स्थान बनाना चाहता था, बल्कि इसलिए कि वह हिंदुओं का अपमान करना चाहता था। शायद यह तय था कि मुख्यमंत्री के रूप में मेरे साथ ही ढांचा ध्वस्त हो जाएगा। अगर कोई विध्वंस नहीं हुआ होता, तो शायद अदालतें भी यथास्थिति का आदेश दे देतीं। इसलिए एक अर्थ में देखा जाए तो इस विध्वंस ने ही वास्तव में 5 अगस्त को भूमि-पूजन का मार्ग प्रशस्त किया ।

सरकार से महत्वपूर्ण था कारसेवकों को बचाना

वह कहते थे कि 6 दिसंबर 1992 को मेरे लिए सरकार बचाने से ज्यादा महत्वपूर्ण कारसेवकों का जीवन बचाना था। कल्याण सिंह के सामने हमेशा ये सवाल उठे कि क्या मुख्यमंत्री के रूप में आपने अपने कर्तव्य का निर्वहन किया और मस्जिद की रक्षा के लिए कुछ पर्याप्त किया? इस प्रश्न का उत्तर वह बहुत बेबाकी से देते रहे। वह बताते थे- उस दिन (6 दिसंबर) तनाव के बीच मुझे अयोध्या के जिला मजिस्ट्रेट का फोन आया, जिसमें कहा गया था कि करीब 3.5 लाख कार सेवक एकत्र हुए हैं। मुझे बताया गया कि केंद्रीय बल मंदिर की ओर आ रहे हैं, मगर साकेत कॉलेज के बाहर कार सेवकों द्वारा उनके मुवमेंट को रोक दिया गया था। मुझसे पूछा गया था कि फायरिंग (कार सेवकों पर) करने का आदेश देना है या नहीं। मैंने लिखित रूप में अनुमति देने से इनकार कर दिया और अपने आदेश में कहा, जो अभी भी फाइलों में दर्ज है, उस गोलीबारी से देश भर में कई लोगों की जानें जाएंगी, अराजकता फैलेगी और कानून-व्यवस्था का मुद्दा आ जाएगा। मुझे अपने फैसले पर गर्व है क्योंकि आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि मैंने अपनी सरकार खो दी होगी, मगर कार सेवकों को बचा लिया। अब मुझे लगता है कि उस विध्वंस ने अंततः राम मंदिर का मार्ग प्रशस्त कर दिया। 1990 में कार सेवकों पर गोलीबारी गलत फैसला था। लोगों को मारना कोई मज़ाक नहीं है।

5 अगस्त 2020 को अयोध्या में श्रीराम मंदिर के भूमि पूजन के कार्यक्रम में प्रमुख विपक्षी नेताओं जैसे कांग्रेस के प्रमुख सोनिया गांधी, समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायम सिंह यादव, बसपा प्रमुख मायावती और अन्य लोगों को निमंत्रण नहीं दिए जाने को सही ठहराते हुए उन्होंने कहा था- यद्यपि राम सभी के हैं, मगर इनमें से अधिकांश ने राम मंदिर का विरोध किया है। ऐसे में इन्हें बुलाया ही क्यो जाए।

नई अयोध्या, नया भारत

वह हमेशा कहते थे - राम रोटी भी सुनिश्चित करेंगे। राम मंदिर अयोध्या को विश्व स्तर पर प्रसिद्ध पर्यटन स्थल बनाएगा। एक नई अयोध्या आने वाली है, जो प्राचीन के साथ सह अस्तित्व में होगी। ये सब नौकरियों और समृद्धि की शुरूआत करेगा। मैं राम मंदिर बन जाने तक जीना चाहता हूं और फिर अयोध्या में ही जन्म लेना चाहता हूं। नई अयोध्या और नए भारत मे श्रीराम की शरण ही सौभाग्य है।

भारत की संत परपम्परा के आधुनिक उन्नायक स्वामी जीतेन्द्रानन्द सरस्वती

वह सन्यासी हैं। संवेदनशील हैं। संघर्षशील हैं। सनातन क्रांतिवीर हैं। ऊर्जावान हैं। राष्ट्रवन्दना के अप्रतिम गायक हैं। भगवान आद्यशंकराचार्य की ज्योतिर्पीठ पर विराजमान शंकराचार्य भगवान स्वामी वासुदेवानंद जी सरस्वती के शिष्य हैं। अखिल भारतीय संत समिति के महामंत्री हैं। महामना की श्रीगंगामहासभा के राष्ट्रीय महामंत्री हैं। ओजस्वी एवं प्रखर राष्ट्रवादी वक्ता है। विद्वान हैं। सनातन संस्कृति के अध्येता हैं।

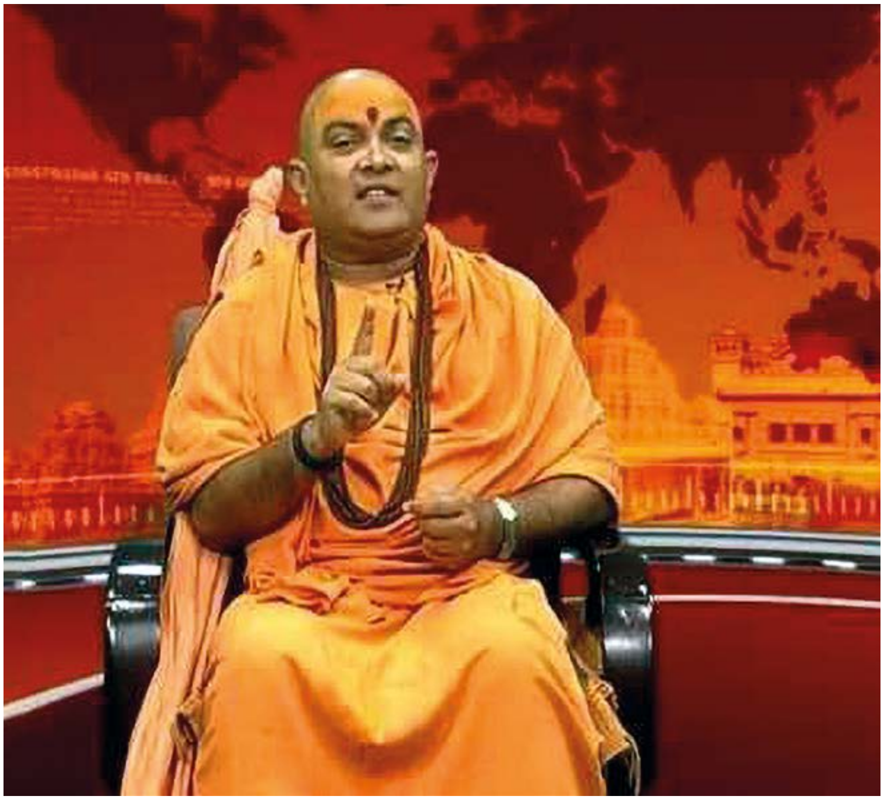

भगवान भास्कर की स्वर्णिम रश्मियों सी तेजस्वी ज्योतिपुंज के साथ सनातन संत परपम्परा के प्रज्जवलित नक्षत्र हैं। वह वह आधुनिक भारत की संत परंपरा के नायक भी हैं और कुशल समन्वयक भी। ये ही स्वामी जीतेन्द्रानन्द जी सरस्वती हैं ।सनातन संत परंपरा में तीन अनियों , 13 अखाड़ों और 127 संप्रदायों को एक साथ लाने और सनातन के उत्कर्ष के लिए समन्वित प्रयास स्वामी जी की बहुत बड़ी उपलब्धि है। इससे पूर्व कि स्वामी जी की उपलब्धियों की चर्चा करें, पहले उनके प्रारंभिक जीवन पर थोड़ा प्रकाश डालना आवश्यक है। उत्तर प्रदेश के अति पिछड़े जिले कुशीनगर के अंतिम छोर पर स्थित खड्डा तहसील क्षेत्र के ग्राम रामपुर गोनहा में एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे जितेंद्र पाठक एक ऐसे तत्व मर्मज्ञ है जो अपनी योग्यता एवं समाजसेवी स्वभाव के बल पर आज जीतेंद्रानंद सरस्वती के नाम से विख्यात है। जीतेन्द्रानंद सरस्वती की प्रारंभिक शिक्षा खड्डा के भारतीय शिशु मंदिर में हुई। स्नातक की शिक्षा उन्होंने उदित नारायण डिग्री कॉलेज पडरौना से ली। इसी के बाद वह आरएसएस के संपर्क में आये और प्रचारक बन गए । प्रचारक रूप में उन्होंने बनारस और सोनभद्र जिले का कार्य संभाला। गांव-गांव गली-गली घर घर लोगों के अंदर हिंदुत्व की भावना जागृत की। इसी बीच महामना पंडित मदन मोहन मालवीय के पौत्र व सुप्रीम कोर्ट के जज गिरधर मालवीय के संपर्क में आने के बाद जितेंद्रानंद सरस्वती गंगा महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री हो गए ।अविरल मोक्षदायिनी गंगा को स्वच्छ सुंदर बनाने के लिए उन्होंने गंगा स्वच्छता आंदोलन का बिगुल बजा दिया ।निरंतर एक के बाद एक कार्यक्रमों के माध्यम से सोए हुए तंत्र को जागृत कर गंगा को स्वच्छ बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहे। संगम तट पर इलाहाबाद में एक कॉलोनी के निर्माण के दौरान गंगा को प्रदूषित करने की संभावना पर उन्होंने इलाहाबाद हाई कोर्ट में याचिका दाखिल कर निर्माण कार्य रोके जाने की याचिका दायर की। जिसका अधिवक्ता संघ इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सहृदय स्वागत किया। न्यायालय ने आदेश जारी कर कॉलोनी के निर्माण पर रोक लगा दिया। इसी बीच दंडी स्वामी ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य वासुदेवानंद

सरस्वती के संपर्क में आकर ज्ञान अर्जित कर उनके शिष्य बन गए और दंडी स्वामी हो गए। अभी उनका सफर यहीं नहीं थमा। कुछ कर दिखाने की प्रतिभा मन में सजाएं जितेंद्रानंद सरस्वती ने अखिल भारतीय संत समिति के राष्ट्रीय महामंत्री बनकर दुनिया का मार्गदर्शन किया और संतों को सहेजने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति को जीवंत करने के लिए अपने यात्रा को अनवरत जारी रखते हुए विलुप्त हो चली सभ्यता परंपरा को जीवंत करने के लिए दिन रात एक कर दिया। इनकी प्रतिभा और समर्पण के देखते हुए विश्व हिंदू परिषद के उच्च अधिकार समिति का सदस्य बनाया गया।

स्वामी जीतेंद्रनंद सरस्वती जी श्री राम मंदिर आंदोलन के अग्रिम कतार के समाजसेवियों में अपना नाम दर्ज कराते हुए दिसंबर 2018 में धर्म आदेश रैली के संयोजक बने जिसमें देश के सभी प्रमुख संतो को साथ लेकर इस कार्यक्रम का संचालन करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया। 1990 में शिला पूजन के दौरान राम जन्मभूमि आंदोलन के समय इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।एक दिन देवरिया जेल में रहने के उपरांत इन्हें उनके साथियों के साथ 1 माह 14 दिन के लिए बस्ती जेल भेज दिया गया। एक क्रम में यदि स्वामी जी की अब तक की जीवन यात्रा को देखा जाय तो वह कुछ इस प्रकार दिखता है_

वह बाल्यकाल से ब्रह्मचारी हैं। 14 वर्षों तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे हैं। इस दौरान संघ परिवार के विभिन्न संगठनों में कार्य किया। संस्कार भारती के संगठन मंत्री के रूप में काशी के गंगातट पर हिन्दू नववर्ष महोत्सव की नींव डाली। स्वामी जी जन्मजात आन्दोलनकारी हैं। आन्दोलनों में सफलता का स्वामी जी का रिकोर्ड शत-प्रतिशत है।

1999 में सनातन संस्कृति पर प्रहार के लिए दीपा मेहता वॉटर फ़िल्म बनाना चाह रही थी। आडवाणी जी का आशीर्वाद उसे प्राप्त था। फ़िल्म की शूटिंग के लिए टीम काशी आयी। स्वामी जी के नेतृत्व में ज़बर्दस्त आन्दोलन हुआ और फिर दीपा मेहता काशी ही क्या, भारत में कहीं भी इस फ़िल्म की शूटिंग नहीं कर सकी।

2003 में स्वामी जी ने बिहार के मुज्जफ़्फ़रपुर में प्रेम के द्वापरकालीन उत्सव 'कौमुदी महोत्सव' को पुनर्जीवित किया।

2004 में गंगाजी के कार्य को हाथों में लेकर गंगा महासभा के महामन्त्री के रूप में देशव्यापी जनजागरण अभियान चलाया। जिसके फलस्वरूप गंगाजी को राष्ट्रीय नदी घोषित किया गया और अब संसद के शीतकालीन सत्र में गंगाजी पर विशेष क़ानून बनाने के लिए विधेयक लाया जा रहा है।

2014 में ज्योतिष पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज ने दण्डी संन्यासी के रूप में दीक्षित किया। तब से लगातार स्वामी जी श्रीराम जन्मभूमि, काशी विश्वनाथ की मुक्ति, मठ-मन्दिरों पर से सरकारी नियंत्रण समाप्त हो, फ़र्ज़ी बाबाओं का सामाजिक बहिष्कार हो, जैसे धार्मिक विषयों पर मुखर रहे हैं और अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

2016 के उज्जैन कुम्भ में स्वामी जी को सनातन धर्म के सभी सम्प्रदायों के शीर्ष संगठन अखिल भारतीय सन्त समिति का महामन्त्री बनाया गया।

2016 में ही स्वामी जी ने हिन्द-बलोच फ़ोरम की नींव डाली। तब से स्वामी जी पाकिस्तान के निशाने पर हैं। हिन्द-बलोच फ़ोरम बलोचिस्तान की आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहे बलोच भाई-बहनों का समर्थन करता है।

2018 के नवम्बर में दिल्ली में स्वामी जी के संयोजन में धर्मादेश कार्यक्रम में देश भर से हज़ारों सन्त का आगमन हुआ। श्रीराम मन्दिर के लिए क़ानून या अध्यादेश की माँग की गयी। श्रीराम जन्मभूमि का मुद्दा देश में फिर से उभर गया और सुप्रीम कोर्ट को जल्द सुनवाई के लिए बाध्य होना पड़ा।

2019 के प्रयागराज कुम्भ में स्वामी जी ने हज़ारों सफ़ाई कर्मियों के साथ ऐतिहासिक गंगास्नान कर उन्हें सनातन के अंग होने का एहसास कराया। स्वामी जी के प्रयासों से सन्तों ने किन्नरों को सनातन धर्म में अंगीकार कर कुम्भ में शाही स्नान की अनुमति प्रदान की। सम्प्रति स्वामी जी गंगा महासभा और अखिल भारतीय सन्त समिति दोनों संगठनों के महामंत्री हैं। साथ ही विश्व हिन्दू परिषद की उच्चाधिकार समिति के सदस्य हैं। स्वामी जी इस समय बहुत उत्साहित हैं। उनकी सनातन की स्थापना की यात्रा को अब गति मिली है। वह कहते हैं, श्रीराम मंदिर का निर्माण और प्राणप्रतिष्ठा अभी आंदोलन का प्रारंभ है। काशी में भगवान विश्वनाथ जी और मथुरा में योगेश्वर श्रीकृष्ण की भूमि को मुक्त करना प्राथमिकता में है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को सनातन का महायोद्धा बताते हुए वह कहते हैं कि मोदी जी की दृढ़ इच्छाशक्ति और संकल्प के कारण ही भारत विश्वगुरु बन रहा है। आज दुनिया केवल अयोध्या पर नजर लगाए है । श्री अयोध्या जी से ही अब नए विश्व का निर्माण शुरू हो रहा है। उनका प्रिय मंत्र है_

लोकाभिरामं रणरंगधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।

।। जय श्रीसीताराम।।

सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास-सबका प्रयास

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कृषकों के हितार्थ मण्डी परिषद
द्वारा संचालित
कल्याणकारी योजनायें

श्री योगी आदित्यनाथ
मा. मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
एवं मा. अध्यक्ष, मण्डी परिषद

श्री दिनेश प्रताप सिंह
मा. राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
कृषि निर्यात, कृषि विपणन एवं
कृषि विदेश व्यापार, उत्तर प्रदेश

मुख्यमंत्री कृषक उपहार योजना

- बिक्री मूल्य के आधार पर प्रत्येक रू. 5,000/- के गुणांक पर एक कूपन देय।
- त्रैमासिक एवं छमाही लाटरी ड्रा से विजेता कृषकों का चयन।

त्रैमासिक ड्रा में पम्पिंग सेट/रोटावेटर, हैप्पी सीडर, पावर स्प्रेयर एवं मिक्सर ग्राइन्डर तथा छमाही ड्रा में 35 हार्स पावर ट्रैक्टर, पावर टिलर, राउण्ड स्ट्राबेलर, मल्चर/चोपर, पावर ड्रिवेन हार्वेस्टर/रीपर एवं सोलर पावर पैक संयंत्र उपहार सम्मिलित

मुख्यमंत्री कृषक छात्रवृत्ति योजना

मेरिट के आधार पर कृषकों एवं खेतिहर मजदूरों के पुत्र/पुत्रियों को कृषि शिक्षा हेतु रू. 3,000/- प्रतिमाह की छात्रवृत्ति।

मुख्यमंत्री खेत-खलिहान अग्निकांड दुर्घटना सहायता योजना

ढ़ाई एकड़ तक क्षेत्रफल की फसल क्षतिग्रस्त होने पर अधिकतम रू. 30,000/-, ढ़ाई से पांच एकड़ तक अधिकतम रू. 40,000/- तथा पांच एकड़ से अधिक हेतु अधिकतम रू. 50,000/- की सहायता।

मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना सहायता योजना

कृषि कार्य में संलग्न दुर्घटना पीड़ित कृषक, खेतिहर मजदूर, पल्लेदार, तोलक/मापक को न्यूनतम रू. 5,000/- से अधिकतम रू. 75,000/- एवं मृत्यु होने की दशा में रू. 3,00,000/- की सहायता।

मुख्यमंत्री व्यापारी एवं आढ़ती दुर्घटना सहायता योजना

लाईसेन्स प्राप्त व्यापारियों/आढ़तियों की मण्डी परिसरों की सीमा में व्यापारिक कार्य के दौरान दुर्घटना से मृत्यु होने पर अधिकतम रू. 3,00,000/- की सहायता।

मुख्यमंत्री मण्डी स्थल/उपमण्डी स्थल अग्निकांड दुर्घटना सहायता योजना

वाह्य दृष्टिगत कारणों अथवा तड़ित प्राकृतिक बिजली गिरने से आग लगने की दशा में मण्डी/उपमण्डी स्थल परिसरों में कार्यरत लाईसेन्स प्राप्त व्यापारियों/आढ़तियों को वास्तविक क्षति अथवा रू. 2 लाख, जो भी कम हो, की आर्थिक सहायता।

कृषक कल्याणार्थ नई पहल

- ई-मण्डी
- ई-नाम
- आधुनिक मण्डी समितियां
- ग्रामीण हाट बाजार
- कृषक छात्रावास
- जैविक बाजार

जैविक बाजार, खुशहाल किसान

1. मण्डी परिषद द्वारा जैविक कृषि विपणन केन्द्र संचालित।
2. विपणन केन्द्रों में किसानों को अपने जैविक उत्पाद सीधे उपभोक्ताओं को बेचने की सुविधा।
3. उपभोक्ताओं/जन-सामान्य को रसायनमुक्त कृषि उत्पादों की उपलब्धता।
4. जैविक (रसायनमुक्त) खेती कर रहे किसानों तथा व्यापारियों को बाजार की उपलब्धता।
5. चिन्हित मण्डी समिति परिसरों में जैविक (रसायनमुक्त) कृषि उत्पाद के बाजार संचालित।

जैविक बाजारों के संचालन दिवस

नौएडा	प्रथम व तृतीय गुरूवार	वाराणसी	प्रत्येक रविवार	अयोध्या	द्वितीय व चतुर्थ गुरूवार
मेरठ	द्वितीय व चतुर्थ गुरूवार	गोरखपुर	द्वितीय व चतुर्थ शनिवार	बहराइच	प्रत्येक मंगलवार
बरौली अहीर (आगरा)	प्रथम व तृतीय गुरूवार	किसान बाजार, लखनऊ	प्रथम व तृतीय शनिवार व रविवार	मिर्जापुर	द्वितीय व चतुर्थ गुरूवार
किसान बाजार (झांसी)	प्रत्येक मंगलवार व गुरूवार	बरेली	प्रथम व तृतीय शनिवार	सहारनपुर	प्रथम व तृतीय गुरूवार
बांदा	प्रथम व तृतीय शनिवार	मंझोला (मुरादाबाद)	प्रथम व तृतीय शनिवार	बस्ती	द्वितीय व चतुर्थ शुक्रवार
फतेहपुर एवं प्रयागराज	द्वितीय व चतुर्थ गुरूवार	नौबस्ता (कानपुर)	द्वितीय व चतुर्थ गुरूवार	अलीगढ़	प्रथम व अन्तिम गुरूवार

किसानों एवं व्यापारियों हेतु प्लास्टिक क्रेट्स तथा प्लास्टिक शीट का मण्डी समितियों द्वारा निःशुल्क वितरण

विस्तृत जानकारी के लिए किसी भी कार्य दिवस में सम्बन्धित मण्डी समिति के सचिव/सभापति से सम्पर्क करें अथवा वेबसाइट पर http://www.upmandiparishad.upsdc.gov.in पर जायें।

राज्य कृषि उत्पादन मण्डी परिषद, उत्तर प्रदेश
किसान मण्डी भवन विभति खण्ड गोमती नगर लखनऊ

सम्पर्क करें : दूरभाष संख्या : 2720383, 2720384, 2720405
टोल फ्री/हेल्प लाइन नं. : 18001804555/155241 (समय प्रातः 8:00 बजे से रात्रि 10:00 बजे तक)
ई/मेल: dirmandi@gmail.com, वेबसाईट: http://www.upmandiparishad.upsdc.gov.in

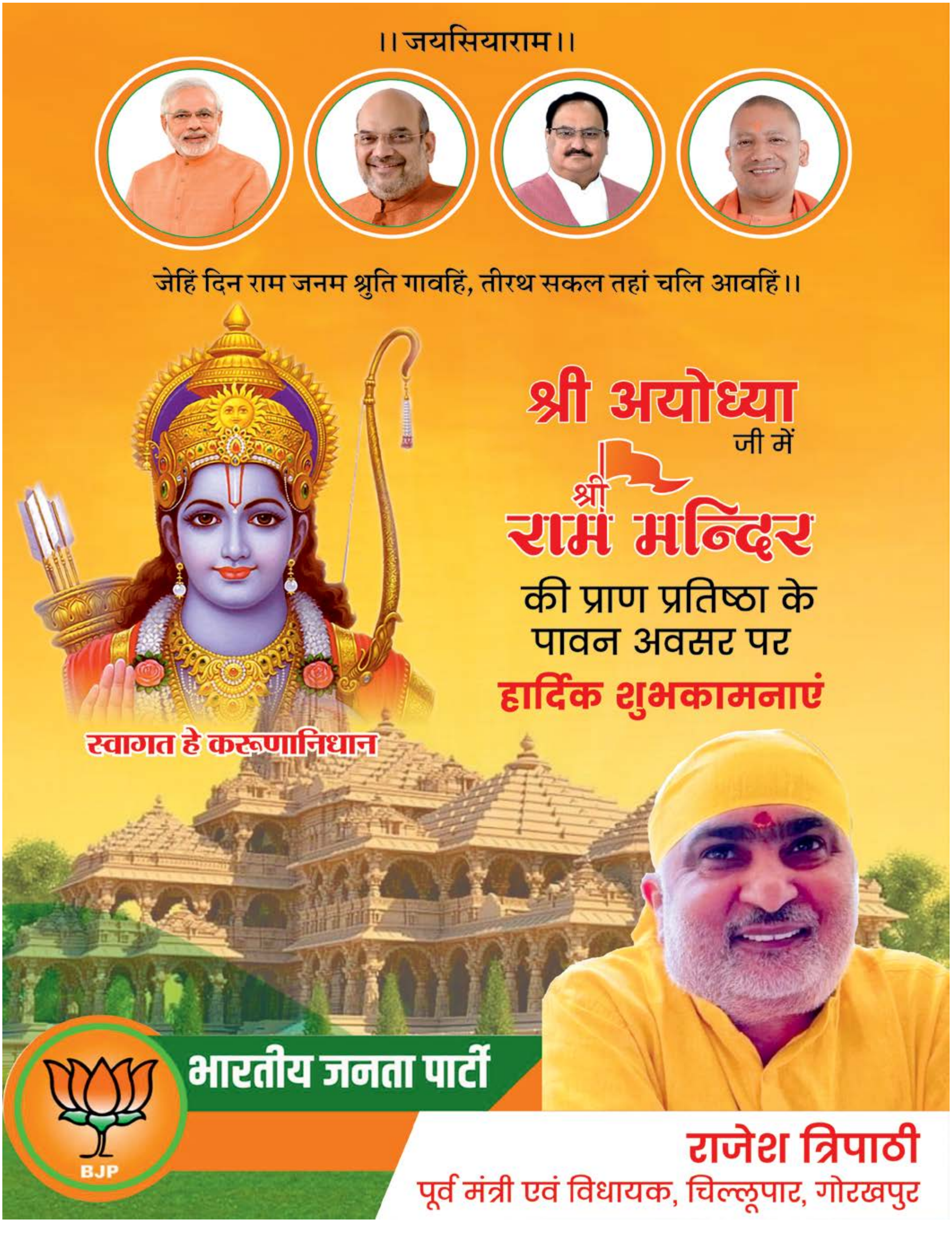

।। जयसियाराम ।।
जेहिं दिन राम जनम श्रुति गावहिं, तीरथ सकल तहां चलि आवहिं ।।
श्री अयोध्या
जी में
श्री राम मन्दिर
की प्राण प्रतिष्ठा के
पावन अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं
स्वागत हे करूणानिधान
भारतीय जनता पार्टी
BJP
राजेश त्रिपाठी
पूर्व मंत्री एवं विधायक, चिल्लूपार, गोरखपुर

मनोजकान्त मिश्र

आओ राम

आओ राम विराजो,
तोड़ो मन की कारा;

युग-युग से जिसमें
जकड़ा मानव है हारा.

आओ राम,विराजो!
हम कृत-कृत्य हुए;
जीवन के सौभाग्य जगे,
तव भृत्य हुए.

तुमने निज ऐश्वर्य समेटा,
थे आहत अपमानित हम ;
तुम लौटे सैश्वर्य आज,
फिर हैं सुमुक्त-सम्मानित हम.

आओ राम! विराजो;
आओ राम!!

आ गये आराम देने, राम तुम!

आज तुम लौटे,
मेरे मन की अयोध्या में
भरा उल्लास;
जीवन में पुलक छाया,
प्रकृति विहँसी ,
लगे मिटने सभी संत्रास !

प्रकृति सारी लहलहायी,
विहँस वन-तरु खिलखिलाये;
मेघ-मालाएँ सजीं,
सब उल्लसित,
तुम लौट आये!!

ध्येय, जिनके तुम युगों से,
वे उठे तद्रूप बनने;
सब अमंगल धराशायी,
सब लगे संसार बुनने!!

आ गये आराम देने राम!तुम,
उपराम करने;
घाव,
जो नासूर होते जा रहे थे,
उन्हें भरने!

साँझ आते,
राँभ से गुंजित हुई फिर,
धूलि बेला;
फिर लगे भरने कुलाँचें
बृषभ-शावक,
शुरू खेला!!
आ गये तुम,
राम मेरे !
थिर उदासी की सभी घड़ियाँ
सुघण्टित हो गयीं ;
नयन सबके तर गये,
आधार लख,
तव आगमन से,
फिर प्रतीक्षा की सभी घड़ियाँ
सुवन्दित हो गयीं!

आज तुम आये,
मेरे उर की अयोध्या का
मिटा वनवास;
गमक उठा फिर
मृदंगित थाप से चंचल
सुनीदित पुनः पागल दास!!

आज तुम लौटे!
अरे हाँ,
आज फिर लौटे!!

राम, मानवताके रखवाले!

राम, तेरा नाम जपते जग जिया है.
हम तुम्हारी प्रजा-पद पा गर्व करते.
भीलनी-घर बेर जूठे खा रहे तुम,
हम तुम्हारी मूर्ति से आदर्श वरते.

तुम आये, फिर चहक उठी शबरी की कुटिया.
कितने गिद्ध-जटायु तिरे ले डुबती लुटिया.

तुम भटके वन-वन लेकर मानवता का प्रतिमान,
धर्मस्थापन हेतु त्याग सुख-सुविधा-राज्य महान्.

फिर निषाद के घर लौटा उल्लास युगों में,
चमक उठे हैं तिरने के सद्भाव दृगों में.

पत्थर भी इनके पग छूकर नारि बने

ये भी सुना है कि पत्थर भी इनके पग छूकर नारि बने हैं,
गौतम की पत्नी के लिए इनके पग ही उपकारी बने हैं,
लाल सुमित्रा के लक्ष्मण है वे जो फूल लिए धनुधारी खड़े हैं,
कोशिला पुत्र वे राम है जो ऋषियों के लिए हितकारी बड़े हैं।

देखते देखते नैन थके ना थके श्री राम ना जानकी हारी,
जानकी है रघुनन्दन पे रघुनन्दन जानकी पे बलिहारी,
कौन कहे कितना कोई सुंदर कौन भला किसपे हुआ भारी,
राम हैं सुंदर तो विधि ने शुभ सुन्दरता सिय रूप उतारी।
नैन से ओट हुए पल में पल में रघुनन्दन सामने आए,
प्राण बसे रघुनन्दन में रघुनन्दन प्राण में जाते समाए,
नैन झुके रघुनंदन हैं रघुनन्दन ही दिखें नैन उठाए,
नैन खुले रघुनन्दन सामने बंद हुए रघुनन्दन छाए।

नैन का ताप मिटा मुख देख हृदय मरुभूमि था चंदन लागे,
स्वर्णमयी महलों से विराग हुआ घर सा यह नंदन लागे,
कुंज के पुष्प कली वट पादप में प्रभु का अभिनंदन लागे,
है रघुनन्दन में यह विश्व या विश्व मुझे रघुनन्दन लागे।

धन्य हुई है विदेह सुता रघुनन्दन का जिन्हें प्यार मिला है,
जो अधिकार रखे जग पे उस पे सिय को अधिकार मिला है,
कण्ठ में प्राण में राम बसे उन्हें राम के कंठ का हार मिला है,
धन्य हुई मिथिला जिसको अवधेश लला का दुलार मिला है।

डॉ भुवन मोहिनी

वह कौन ?

वह कौन है
एक प्रश्न
इस चंचल मन में उभरता है
और उसे
जल-सा कँपाता है
वह कौन है
जो सृष्टि को
किसी पुण्य में
किसी मंत्र में
किसी अर्थ में बदलता है
वह कौन है
जो नदियों, पहाड़ों जंगलों
वनस्पतियों का निर्माता है
जो उनमें रंग, रूप, आकर्षण
छवियाँ भेजता है
उन्हें एक दूसरे से बदलता है
वह कौन है
जो इस विविध वैचित्र्य को
कहीं राग-सा
एकाग्र करता है
उसे नाम देना कठिन है
वह कौन है
जो सृष्टि के लौकिक रूपों को
लाँघकर
असीम लोकोत्तर हो जाता है।

जादू का शहर

मेरी कल्पना में
एक जादू का शहर है
उसमें मेरा ईश्वर रहता है
सूरज की सुनहरी धूल
रास्तों में बिछी होती है
रंगारंग मंडप होते हैं
होते हैं
स्वप्निल सरोवर
मैं घूमती हूँ
तैरती हूँ
बेरोक

अनिता अग्रवाल

Preston College
Preston College, Gwalior
Khureri, Badagaon Road, Morar, Gwalior 474006 (M.P.)
Quality Education for Quality Future
Education:-
D.El.Ed.,B.Ed., M.Ed.,
B.Ed.+M.ed.(Integrated)
Nursing:-
GNM, B.Sc.(N), M.Sc.(N)
Hotel Management:-
B.Sc. HHA,
Diploma in All Streams of Hotel Management
ENROLL NOW
More information call us
+91 9301100880
+91 7000406297
+91 8463095714
Visit at:-
www.prestoncollege.info

India's energy anchor
ओएनजीसी
ONGC
ONGC
ENERGY
Now AND Next
IEW
INDIA ENERGY
WEEK 2024
The agility of a corporate
The reliability of a PSU
Get the best of both worlds at ONGC
#IndiaEnergyWeek
/ONGC_
/ONGCLimited/
@ongcofficial
company/ongc
www.ongcindia.com
profile/ONGC_

गेल
GAIL
गेल (इंडिया) लिमिटेड
G20
भारत 2023 INDIA
IEW
INDIA ENERGY WEEK 2024
भारत की अग्रणी प्राकृतिक गैस कंपनी
एनर्जाइजिंग पॉसिबिलिटीज
देश में बेची जाने वाली प्राकृतिक गैस में 53% का योगदान
भारत में प्राकृतिक गैस ट्रांसमिशन में लगभग 68% की बाजार हिस्सेदारी
www.gailonline.com
पर हमें फॉलो करें

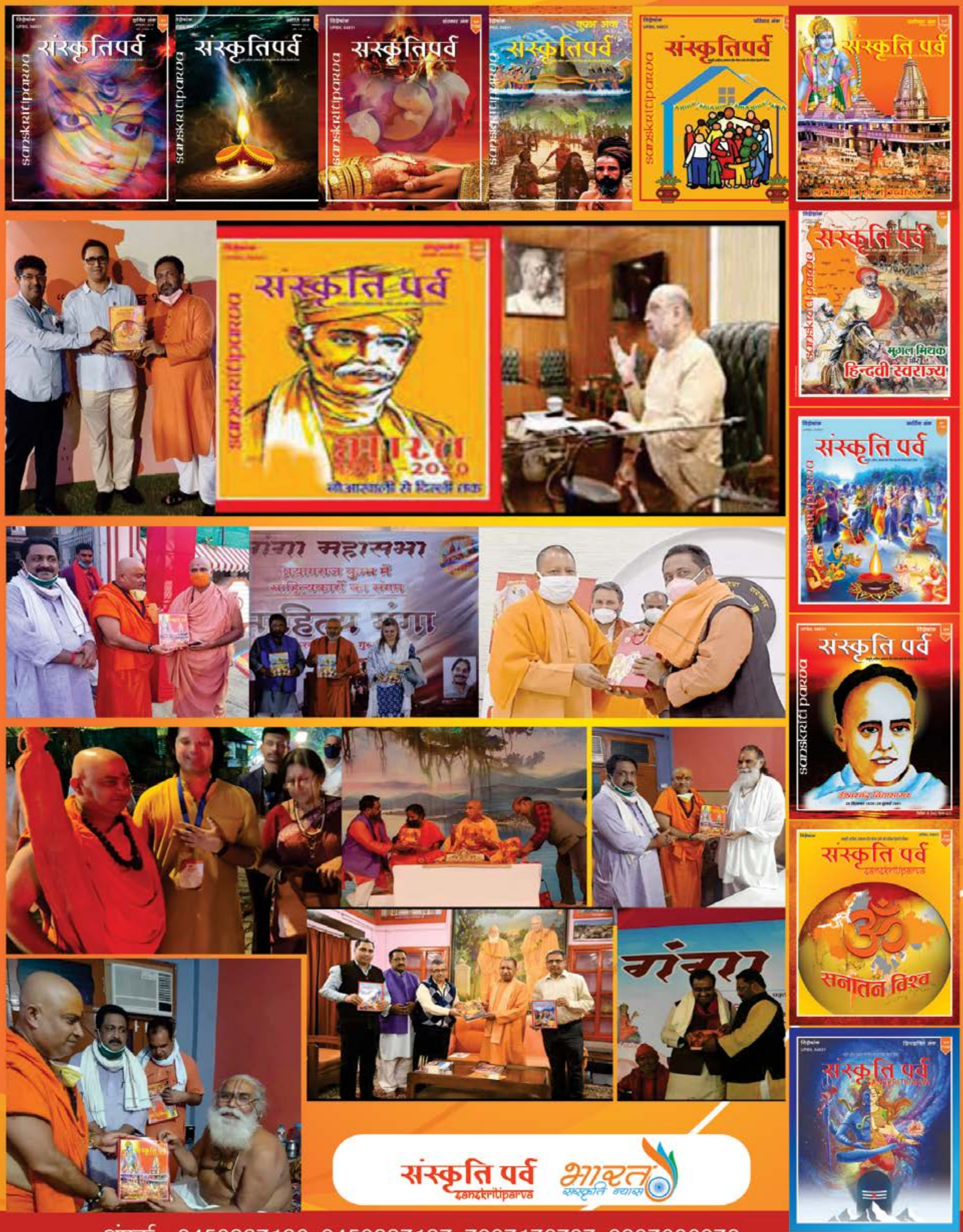

संपर्क:- 9450887186, 9450887187, 7007172707, 9807636072
email- editor.sanskritiparva@gmail.com

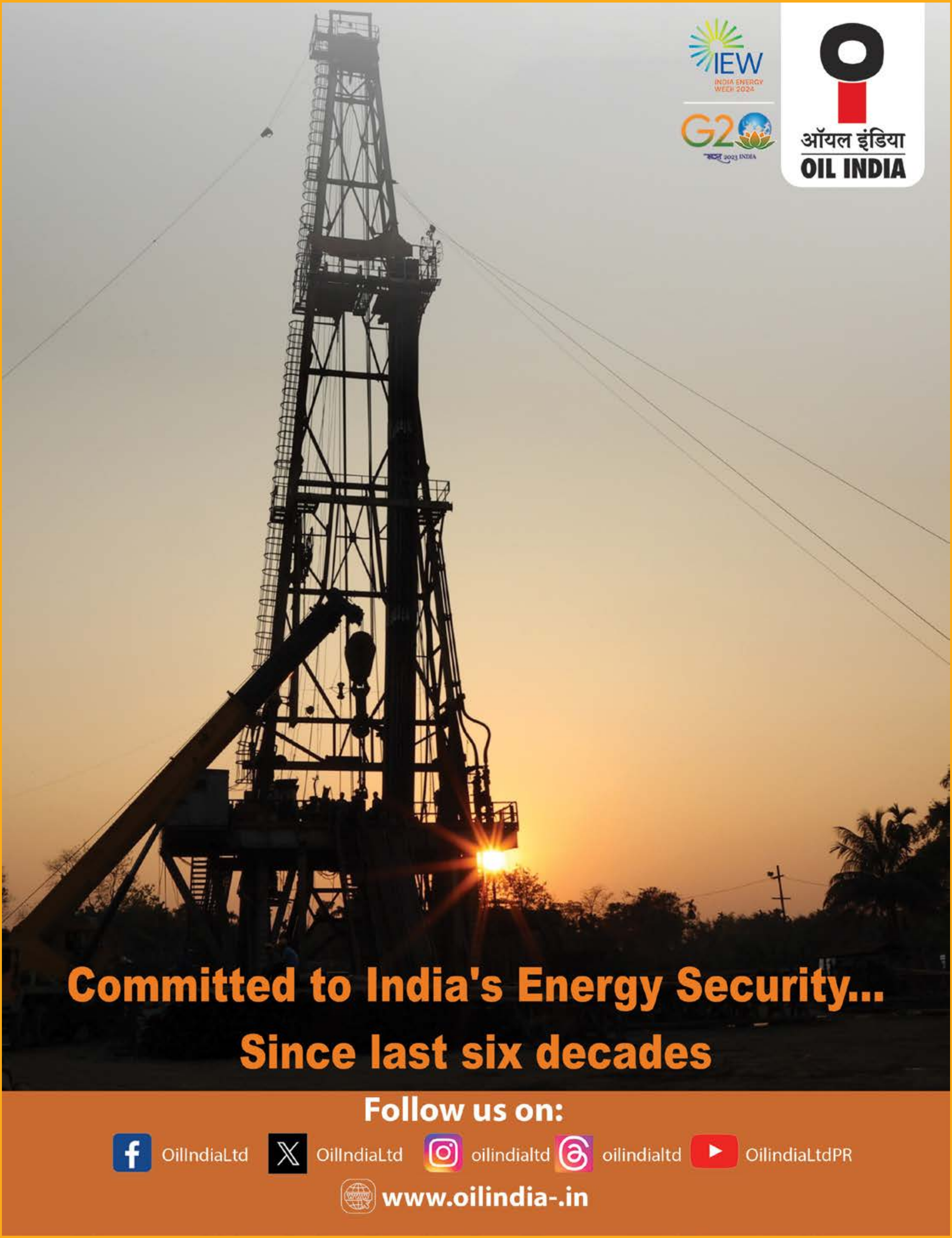

IEW
INDIA ENERGY WEEK 2024
G20
ऑयल इंडिया
OIL INDIA
Committed to India's Energy Security...
Since last six decades
Follow us on:
OilIndiaLtd
OilIndiaLtd
oilindialtd
oilindialtd
OilindiaLtdPR
www.oilindia-.in